॥ श्री शांतिनाथायनमः ॥

॥ श्री स्वामीजी श्री ऋखराजजी ॥

॥ महाराज कृत ॥

श्री सत्यार्थ सागर नवीन ग्रंथ

धर्माचरण, प्रश्नोत्तर, धर्मसार, सम्यक्त स्थिर करण
ए चारो भाग सुधर्म उपदेशके लिये अनेक
शास्त्रानुं सारांश संग्रह किया

इह ग्रंथ

साधु, साधवी, श्रावक, श्राविका तथा सम्यक्ति
साधर्मी भाईयां वास्ते ज्ञान वृध्यर्थ सरल
भाषामे किया सो

नाना दादाजी गुंड इणने
पुनामे आपका "व्यापारी" छापेखानेमे छपायाहे
सवत १९९२ अने सन १८९९
ओ पुस्तक पुना पेठ नानाकी आठे
भाई भगवानदासजी लालचदजी नाहारकी
दुकान उपर मिलशी
किंमत २ रुपया.

प्रस्तावना

समस्त चतुरविधि संघको विदित होकि इस पाचमे आरेमे शुद्ध सम्यक्त व्रतादि धर्म्म आराध्यासे इस लोक और परलोकमे तेह जीव सुखी होय सिद्ध स्थानक प्राप्त होय ऐसा श्री जैन धर्म अनादी श्री वीतराग उपदेश दयामय धर्म भव्य जीवोंको आनंद करता है जिसते अंतस्करण शुद्ध होताहै इस ग्रंथ सत्यार्थ सागर नाम का प्रथम भाग नाम धर्मा चरण रक्खाहै जो इसको शीखणे वा वाचनेका उद्यम करेगा शुद्ध श्रावक धर्म्म वा साधु धर्म्म मारगकी पहचान होगी और विना शास्त्रके पढे इस जीवकी कुमति दूर नही होती और शास्त्रके पढने वालो को ज्ञान दर्सन चारित्र तपका जाणपना शुद्ध होताहै सो इस वास्ते इस पुस्तकमे धर्म मारग प्रधान लक्षण सम्यक दृष्टी जीवोके योग्य दरसायाहै और एह पुस्तक भव्य जीवोंके उपगारार्थ श्री स्वामी ऋखराजजीने सत्यार्थ सागर का धर्म्माचरन नाम प्रथम भाग प्रसिद्ध किया

समस्त चतुर विधि संघसे ग्रंथ करता पूर्वक यह प्रार्थना करताहै कि शीघ्रता लिखनेमे वा तुछ बुद्धि के प्रभावसे कोई लिपी दोप जरूर रह्या होगा यह निश्चै नियमहै और इस ग्रंथमे जो कोई सूत्र पाठो वा अर्थोंमे मेरी अज्ञान बुद्धीके दोपकर जो अर्थ

वा पाठ अशुद्ध लिखे होय तो सज्जन पुरुषोंसे मेरी प्रार्थनाहै कि कृपा नजरसें शुद्ध कर वाचना उचित है और जो इस ग्रंथमे सूत्र पाठ लिखहै सो सूत्रों से मिलते हुएहै जो कही अक्षर मात्रा का फरक हो तो शुद्ध करलेना और धर्म्म श्री जीव दया जिना ज्ञा परिमाण जहां होय वोही धर्म्म प्रधान है ग्रंथ की जो रचना बुद्धिमान जन करतेहै सो दुष्ट जनो के वास्ते नही करते परंत तत्वार्थि वा सम्यक्ती जी वोके लिये तथा गुण ग्राहिक मनुषोंके लिये जो जि नेश्वर देव धर्मके रागी पुरुषहै उनको सनातन धर्म मे लानेके वास्ते ग्रथ करता उद्यम ग्रथ रचनेका करते है और इस ग्रंथमे किसीका नाम सें निंदा रूप कथन नही लिखा फकत् प्रश्नोका भावार्थ सि द्ध कियाहै और ग्रंथ संग्रह करतानें अपनी बडाई करानेका आशय नही रकखा सिर्फ विवेकी जन जो मूलसे नकलके जैन मतको यथार्थ समझतेहै सो तिनोके उद्धारके लिये सत्य धर्म्म असली तप संज मादि मारग दरसानेके लिये इस सत्यार्थ सागर के उद्धार भाग अनेक सूत्र या ग्रंथोके परिमानसे संग्र ह करने का परिश्रम कराहै जो कोई ग्रथको समझ कर बाचकर देखेंगेतो सुध देव सुधगुर सुध धर्म्म सुध शास्त्रको परख लेंगे.

साधु श्रावको को चाहिये कि एकांत वादी नहो

य क्यों कि श्री वीतरागदेवका उपदेस अनेकांत नय मत करिकेहै, एकेक बात पहिले जिस अपेक्षासे निषेध करी है, फिर वोही वात दुसरी अपेक्षासे लीन करीहै और भगवती सूत्रमेभी साधुकंखा मोहनी कर्म बांधता कह्या सोई ऐसी अपेक्षा अर्थात (रीती) जाननेसे साधु कंखा मोहनी कर्म बांधे तो अब चाहिये कि शुद्ध धर्म्म पहिचानकर समकित निर्मल करे और इस सत्यार्थ सागर के तीसरे भागमे सूत्र पाठ वहोत लिखेहै वो समझने बांचने योग्यहै परंत राग द्वेष वडाना योग्य नहीहै फकत तत्व बातको समझ तथा सरध कर अंगीकार करलेनी योग्यहै और यथा शक्ति साधु तथाश्रावक धर्म्म पालना युक्तहै और पराई निंद्या वा ईर्षा करणी युक्त नही दस पूर्वधारी तथा १४ पूर्वधारीयोंके प्रश्नोके उत्तर यथार्थ केवली महाराजोने दीये है तथा आहारीक लब्धधारी मुनीओने लब्धि से प्रश्न पूछे है जब उनके संदेह दुर हुये अवपूर्ण शुद्ध शद्द शास्त्रार्थ तो समझने आताही नही बुद्धी तुच्छ प्रश्नसमुद्र सरीखे गंभीर बुद्धी बिना कैसेसमझे जाय इस वास्ते साधु श्रावको को विद्या वा शास्त्रार्थ का जाणपणा चाहोतो व्याकर्ण तथा संस्कृत ग्रंथादि पढकर अनेक अपेक्षासे गुरु महाराजके उपदेश से देखो तब न्यायवंत होकर शुद्ध मारग मुक्तिका समझो और प्रश्न व्याकर्ण सूत्र वा अनुयोग द्वार सूत्रमे व्या

कर्ण शास्त्र पढनेकी आज्ञा है और जो नहीइतना वोध होय तो दया सहित देस वृत्ती तथा सर्व वृती धर्म्मे वा शुद्ध भावसे दान देणा दया पालणी पंच इंद्री दमन अर्थात बस्य करणी इत्यादि ऐसे श्रद्धावान गुरुकी सम्यक्त सहित आज्ञा आराधन करो ज्यूं मनुष जनम सुफल होय ॥ तथास्तु ॥

इस सत्यार्थ सागर ग्रंथमे जैन मतके अनेक मत जो हो रहेहै तिनके प्रश्न उत्तर लिखेहै प्रथम तो जैन धर्म निश्चैमे एक धर्म है परंतु इस समेके प्रभावसे जैन धर्म वृक्षमेसे कितनी साखा प्रतिसाखा हो रहीहै अपनी अपनी ग्रहण करी साखा वा प्रति साखा पर खैचतान कर रहेहै सो तत्वार्थी पुरुषो को चाहिये कि जिन धर्म्ममे ईर्षा भाव न करे और यथार्थ बातको समझे कोई सा जैन शास्त्र हो तिस्का भावार्थ वा हेय ज्ञेय उपादेय इनको जाणकर गुण ग्राहिक होवे अवगुण ग्राहिक होनेसे अनेक दोषोमे सामिल होना पडताहै और इस समेकी मूजिब श्री जिन धर्म्ममे वहोत साध साधवी श्रावक श्राविका धर्म्मे स्थिर होरहेहै और कोई चतुर्थ कालकी वृत्ती ऊपर ख्याल करे तो इसकालमे वह उतनी वृती नही क्यों कि सरीरके शक्ति प्रमाण मे वृती साधु वो साधवी श्रावक वा श्राविकाओंकी है कि जैसे पहिले वक्तोके संघेण संठाण आयु सरीरकी उचाई वैसी नही

है तैसेही उतनी वृती नही ह परंतु भगवांन श्री म हावीर के वचन है कि मेरा धर्म २१ हजार वर्ष त क साध साधवी श्रावक श्राविका इन चारो तीर्थोसे रहेगा पाचमे आरे के उतरते समे तांई इस वास्ते चाहिये कि जो समकित सहित महाव्रतादि तथा दे स व्रतादि धर्म पालते है ते येही च्यार तीर्थ प्रधान है. शुद्ध भावाश्री जिन धर्मको पालनेसे स्वर्गा पवर्ग के धारक होते है.

चूक दुरुस्ती

इस ग्रंथके पहिले भागके पृष्ठ २९ केमे आठमा वडा व्रतके आगे नवमा वडा व्रत छापना भूलसे र हगयाहै सो नवमा वडा व्रत इसतरे है सो लिख्यते

॥ नवमा सामायिक व्रत सावज्जं जोगं पचखामि जाव नेम पज्जुवासामी दुविहं तिविहेणं नकरेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा एहवी सद्दहणा परू पणा फरसना करूं तिवारे सुद्ध यहवा नवमा सामा यिक विरतना पंच अईयारा पियाला जाणीयवा नस मारियवा तंजहा ते आलोउं मण दूप्पडीहाणे वय दूप्पडीहाणे काय दुप्पडी हाणे सामायियस्स अक रणियाए सामायियस्स अणवाठियस्स कराणिआए जो मे देवसी अईयारको तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ ९ ॥

॥ अथ सत्यार्थ सागर ग्रंथकी अनुक्रमणिका ॥

विषयांक ॥ प्रथम भागस्य अनुक्रमणिका ॥ पृष्ठांक

विषयांक द्वितीय भागस्थ अनुक्रमणिका पृष्टांक

विषयाक तृतीय भागस्य अनुक्रमणिका पृष्ठांक

विषयांक चतुर्थ भागस्यानुक्रमणिका पृष्टांक

सत्यार्थ सागर शुद्धि पत्र चार पाने आगे है पांचवा पाना पहेले एहै सो जानना

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
बुडता	बूडता	४८३	१२	पूंजी	पूजी	५२३	२१
अज्ञनी	अज्ञानी	४८५	२३	बोलोजी	वालोजी	५२५	१९
हाय	होय	४८६	५	नपारेपि	नपारेमि	५३०	११
काहेकऐ	कायकहे	४८७	१४	उझोयगेर	उज्झोयगरे	५३०	१६
समझे	समेछे	४८८	१७	विचार	निवार	५४६	१३
महाज	महाराज	४९०	१९	कछव	कच्छप	५४७	१४
आज्ञा	ज्ञाता	४९४	१	आर	अरे	५४९	४
भषरो	भाख्यारो	४९७	१९	केहैथी	कहैथी	५५०	१०
वाजे	बीजे	४९९	९	दूख	दुख	,,	१६
तारर्तीनें	तीर्थानें	४९९	१८	कार	कर्ण	,,	२२
वतारे	वतावेरे	४९९	२३	पुण्फनाम	पुप्पकनाम	५५१	२१
नहा	नहीं	५०२	९	मुहपति	मुहमति	५५२	१४
थामोरे	ठामोरे	५०२	१३	गवा	गदा	५५८	६
ढोपदो	ढोपता	५०६	७	किसको	किसकी	,,	१४
उपना	उपना	५०६	१०	नजरांद	नजरांजद	५५९	२
त्यागी	त्यागी	५११	२३	प्राय	मिय	,,	७
उढाया	उठाया	५१२	११	श्रुध	शुध	,,	१५
भागा	भाग	५१२	१६	दूरमे	दुरमे	५६०	२
जगानें	जगानेपाप	५१४	२	लीनी	लानी	,,	८
वनाके	वतावे	,,	२	॥ टेक	टेक ॥	५६१	११
दुष्ट	दुष्टा	,,	२	ग्रामेरे	ग्राममेरे	५६२	१०
पुतजी	पूतजी	,,	१६	भाखी	भाखीवोर	,,	१४
धींगजी	धींगजो	५१५	१८	वनढा	वनगानादी	,,	२२
स्त्रा	स्त्री	५१७	१५	सदाही	सदा	५६३	१
भागाछे	भागाछे	५१८	१	धन	घन	,,	१५
उठपर	उठरप	,,	४	दुर	दूर	५६५	२३
ठेणारे	ठाणेरे	,,	२२	च्यार	०	५६८	९
उलखीख	उलख	५२१	१२	होवेगा	होवैगा	,,	१३
भागोती	भगोती	५२२	१५	तावद्	तावद	,,	२१

॥ अथ सत्यार्थ सागर शुद्धी पत्र लिख्यते ॥

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति
दुर	दूर	२	३
समकीत	समकित	२	७
पशु	पशू	३	१९
तार	तारो	४	७
दिधा	दीधा	४	१२
सुद	सुध	४	२२
चालिस	छयालिस	५	६
चास्त्र	चाख	५	१३
करनेको	करनको	५	१९
नहीआखे	नहीभाखे	५	२३
साल	साठ	६	१
जगा	जग्ग	६	२
होज	होजग	८	६
"	साथ	९	२
जीवकी	जीवाकी	९	४
यात्रा	पात्रा	१२	११
पाईजी	प्याईजी	१३	१०
"	तीज	१३	२३
लौय	लोये	१४	७
महा	मह	१४	१३
भगवान	भगवन्	१४	२०
तिन्हंगुणं	तिन्हगुत्तीण	१७	१८
"	परिभोग	२२	५
"	कोई	२३	८
घुद्दी	वुद्धी	२७	२०
करी	कारी	२८	८
"	तत्थणंजेते	२८	१२
"	कम्मोयस	"	१३
"	मणो	"	"
कीयाछे	कीधीछे	२९	१५
"	नसमारि	३०	२१
"	यच्चा	३०	'
पहणीया	पेहणीया	३०	२२
सवं	सव्वं	३१	२०
पार	पर	३२	११
"	नवदर्सना	३४	८
	वयसम	"	"
"	धारणया	३६	१५
	कायस	"	"
	मधारणया	३६	"
अत	अंत	३६	२०
सवं	सव्वं	३७	१६
वरिस्स	वीरस्स	३९	२१
दिडी	दिठी	३९	२१
श्माण	पमाण	४३	५
कछेक	कुछेक	४३	१६
समझावा	समझावो	४५	३
नही	"	४७	६
भिण	पिण	४७	८
झुटो	झूठो	४८	१६
सात्र	सत्र	५०	२२
"	किम	५९	२
बुद्दो	बुद्धी	५९	१४
आहारीका	आहारीके	६१	८
आहारना	आहारनी	६१	८
करता	करना	६१	१७
सुधा	शुध्द	६२	१८
तेहनो	देहनो	६३	२
वातेंछे	खातेंछे	६३	२२
निरमे	निरमे	६४	७
निया	निया	६४	८
उतानें	उनानें	६६	१५

अशुध्द	शुध्द	पृष्ट	पंक्ति	अशुध्द	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति
अकर	अक	७१	७	पछ	पच्च	१२२	३
वाई	खाई	७१	७	णनहा	न्हाया	,,	७
लागरहे	लागस्ये	७४	७	यव	यव्वं	१२३	३
ऋपभा	ऋपभा	७६	१२	मंझाण	मंज्जण	,,	४
स्वामी	स्वामि	७७	१	वस्त्रहिरी	वस्त्रपहिरी	,,	६
,,	मारीयोजी	७८	४	हसीतरें	इसीतरें	,,	१९
जिमछै	जिमवै	,,	११	सिखना	लिखना	,,	२२
वाणीना	वाणीया	,,	१२	लिकम्मा		,,	२२
लीवेजी	लीयेजी	,,	१३	शब्दनो अ,		,,	,,
विपेजी	हिवेजी	,,	१६	श जिन म,,		,,	२३
देवदी	देवढी	८८	१४	तिमा पूजा,,		,,	,,
देवद्दीगाणी	देवढीगणी	,,	१९	नो अ	,,,	,,	,,
पगपंडावे	पगमंडावे	८९	१०	दुवाक्षिता	दुर्वाक्षता	१२४	५
पर्व	पूर्व	,,	१४	अर्थात	अर्थात्	,,	११
भगवंरो	भगवंतरो	९२	११	पूर्वइति	इतिपूर्व	,,	२२
रुख	रिख	९२	१४	प्रतिओके	प्रतिमाओके	१२९	१०
पार	पर	९३	८	वक्षए	वक्षए	,,	१८
सूर्चा	सूत्रां	९४	२२	वद्द	वढ	१३२	२३
हिस्या	हिंस्या	९५	३	कुच	कुछ	१३६	११
वखण	वखाण	९६	१	जिनो	जनो	,,	१४
गणिविक	गणिविक्षा	९८	१०	एव	एव	१३६	२०
लियते	लिख्यते	,,	२०	जीयंस	सीयंस	१३८	११
अहं	अर्ह	,,	२१	गरु	गऊ	१३९	,,
सूत्रो	सूत्रों	१००	७	तुकडा	टुकडा	१४२	१४
,,	प्रश्न	१०६	२	प्रतिमाकुं	,,	,,	,,
कासी	किसी	११०	,,	देखके	,,	,,	१८
गदवुधकी	गऊवुधकी	,,	८	विकाणस	ठिकाणेसें	१४३	६
वचनाथा	वचनात्	,,	१९	उपरजा	उपरजा	,,	७
नंदी	नदी	११२	११	घणा	पणा	१४४	१९
लागनेसें	लगनेस	११३	१८	मलव	मतलब	१४७	१२
नाव	नाम	११६	१	करी	करा	,,	१५
वांधयवा	वधायवा	११८	२३	पन्नवा	पन्नवा	१५१	१९
काहिके	काहिये	१२०	१९	रुक्या	रुक्खा	१५२	१

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति
रखवे	रुक्खे	१५२	४	अभिला	अभिला	१७२	१२
साधुका	साधुको	,,	७	खा	खी	,,	,,
उपास	उवास	,,	,,	करीसँ	कारीसँ	,,	१८
दसा	गदसा	,,	११	राकद्यो	येकद्यो	१७३	७
पुठि	पुठ्वि	१५२	५०	परिएसा	परितसंसा	१७५	१७
वुंदु	वंदु	१५३	१४	रीए	रीए	,,	,,
कारणं	करणा	१५४	२१	परवेवे	परखेवे	१७६	१
पशु	पशु	१५५	१६	थीरथी	तीरथी	१७७	२३
जैन	जेन	,,	१७	पुजतेहै	पूजतेहै	१७८	१०
तिसरा	तीसरा	१५६	३	उंचरा	उंदरा	१८१	१८
रुध्दि	ऋध्दि	१५७	१८	महिमानँ	प्रतिमानँ	१८८	८
भारतार	भरतार	१५८	१४	होततो	होतातो	१९७	२१
वांछवो	वाछयो	१५९	२०	खाढयो	खाटयो	२००	१६
हिस्या	हिस्या	१६०	१५	अनेकाथी	अनेकार्थी	२०१	१२
तिरथकी	तिर्थकरकी	१६०	२२	सगृह	संगृह	२०२	२१
वीतराग्गो	वीतरागो	१६२	१३	वर्णणा	वर्गणा	२०४	१५
संभलना	संभलनो	१६६	९	ओरके	आरेके	२१०	१४
परिक्षा	,,	,,	१३	वीदीया	वींदीया	२१७	२
थलयनी	वलयनी	१७०	१६	निरमला	निरमलो	,,	२१
विउध्दई	विउव्वई	,,	,,	काले	,,	२१८	२०
,,	विउव्वई	,,	२१	जिन	जन	२२०	९
खेद	स्वेद	१७१	७	आगा	आया	२२१	१३
कीटेः	कोटः	,,	१०	उववाहे	उववाई	,,	२१
ध्रुव्र	ध्रुग्य	,,	१४	सी	सीत	२२२	४
स्वधर्म	खेधर्म	,,	१५	सद्दहणा	सद्दहणा	,,	१४
मुज्वल	सुज्वलं	,,	१६	काकानो	कायानो	२२४	४
ध्वजा द्रि	ध्वजाऽद्रि	,,	१७	मध्थे	मध्ये	,,	८
चतुर्मुर्वा	चतुर्मुखा	,,	१८	निनृव	निन्हव	,,	,,
कंटका	कंटकाः	,,	१९	लोअकाम	,,	२२७	२
द्रुमान	द्रुमान	,,	,,	तो	,,	,,	,,
कुलत्व	कूलत्व	,,	२२	दिसे	हिंसे	२२९	१५
श्रतुर्स्त्रि	श्चतुर्स्त्रि	,,	,,	गर्मता	गर्भता	२३०	१५
शत्र	शत्रु	,,	२३	मायचित्	मायच्छित	२३२	१८

अशुध्द	शुध्द	पृष्ट	पांक्ति
मो	,,	२३९	१८
क	,,	२४०	१
,,	ल	,,	१४
वोलवो	वोलोछो	,,	१८
केताला	केतला	,,	,,
एक	एक	,,	१८
वतिंने	वर्तिनें	२४७	५
सिलादिक	सीलादिक	२४८	७
लेना	लेतां	२५२	८
एए	एदोयमा	,,	१८
जाड	उजाड	२५६	५
केरो	फेरचो	२६७	२२
सोनीनी	सोनानी	२६८	५
हिएयं	हिरायं	२७०	८
उथापकनां	उथापता	,,	१८
वद्दणं	वद्दणं	२७५	१०
देना	देतां	२८२	१०
वरजेछ	वरजसी	२८३	११
दरगण	दरसण	२८५	८
अधमी	अधरमी	२८७	१२
तत्तणं	तन्नेणं	३०७	३
गामाणगाम	गामाणुगामं	३१०	१३
लझइ	लभइ	३१७	१४
कोई	कोई	३२२	२३
मार	भार	३२३	४
कमी	कर्मा	३२३	१८
भोगसु	भोगसु	३४१	२०
वाली	वली	३५४	८
एब्नएसु	पव्वयेसु	३६६	५
महदियाउ	महदियाओ	,,	१२
मातके	शतके	३६८	८
सभ्याय	सभ्पाय	४०२	८
भ्याणा	झाणा	,,	,,

अशुध्द	शुध्द	पंक्ति	पांक्ति
एवंवयाति	एवंवयासि	४०३	२
गंधवदि	गंधवाट्टि	४०४	१७
पूजानिक	पूजनीक	४११	१०
थडलो	थंडलो	४१२	१२
कहगें	कहेगो	४१४	३
आहरादि	आहारादि	४१९	१७
मनसं	मनसुं	४२१	९
थास्याहै	स्थाप्याहै	४२२	८
सस्यक्तदृष्टी	सम्यक्तदृष्टी	,,	८
मिथ्यादृष्टी	मिथ्यादृष्टी	,,	१०
जोगम	जोगमें	४२४	१४
मोनछे	मानेंछे	४२५	९
साठा	साठ	४३०	२१
अव्वमि	अठमि	४३२	१७
सजोपकारी	सजमोपकारी	४३५	,,
हुई	हुई	४३७	९
,,	काणें	४४०	१६
दुरो	गुरो	४४२	६
समजणें	सत्यजणे	४४७	१९
पुरा	पूरा	४५३	९
मसग्गन्ना	मग्गसन्ना	४५५	१४
मसग्गाना	मग्गसन्ना	,,	१५
अजोव	अजीव	,,	१५
दुर	दूर	४५६	९
कावा	कीधा	४६६	६
सुग	सूग	,,	१७
मघवा	मघवा	४६९	,,
देसको	देसके	४७४	२०
वंदनी	वंदना	४७५	२१
अर्थ	अर्थ	४७६	९
गुणम	गुणमे	४८०	३
समभिरुद्द	समभिरुढ	,,	१४
सत्तने	सम्यक्तनें	४८३	१०

॥ श्रीशांतिनाथायनमः ॥

॥ अथ सत्यार्थसागर ग्रंथस्य प्रथमोभागप्रारंभः॥



॥ अथ श्री पंचपरमेष्ठी स्तुति ॥ मंगला चरण ॥

अर्हंतो ज्ञानभाजः सुरवरमहिताः सिद्धिसौधस्थ सिद्धाः। पचाचार प्रवीणाः प्रगुण गणधराः पाठका आगमानां ॥ लोके लोकेश वन्द्याः सकल यतिवराः साधुधर्माभि लीनाः ॥ पञ्चाप्येतसदाप्ता विदधतु कुश लं विघ्ननाशं विधाय ॥ १॥ श्रीवीरं क्षीरसिंधूदक विमलगुणं मन्मथारिप्रवातं ॥ श्रीपार्श्वं विघ्न वल्ली वन दलन विधौ विस्फुरत् कान्तिधारं ॥ सानदंचन्द्रभू त्याहत वचन रसं दत्तदक्कर्णबोधं ॥ वन्देहं भूरि भक्त्या त्रिभुवन महितं वाङ्मनः काय योगै ॥ २॥

॥ दोहा ॥ सुमति देव प्रणमी कहूं, धर्माचरण इत नाम ॥ सत्यार्थसागरतनों, प्रथमभाग सुखधाम ॥ १॥ स्याद्वाद वाणी कठिन् वहोसुरती मुनिराय ॥ सुगम करी उपदेसदें, समकित योतिदिपाय ॥ २॥

॥ श्रीॐ नमःसिद्धं॥

॥ अथ प्रथम वीस वेहरमान स्तवन लिख्यते ॥

श्रीसीमंदिर साहिबाजी,प्रणमुं तुह्मारे पाय॥ जुग मंदिर मुक्ऊपरेजी, मेहर करो महाराय ॥ जिनेश्वर धन धन तुम अवतार ॥ १॥ बाहूस्वामी सेवताजी, जनम जनम दुःख जाय॥ सुबाहू जिन ध्यावताजी,

संकट दूर पलाय ॥ जि० ॥ ध० ॥ २ ॥ ध्याउं श्री सुजातनेजी, स्वयंप्रभू भगवान ॥ ऋषभानन वंदू सदाजी, धर तन मनसें ध्यान ॥ जि० ॥ ३ ॥ अनंत वीर्य सुरे प्रभूजी, विशाल प्रभू जिनराय ॥ वज्रधर चद्रानननेजी, चंद्रवाहू सुखदाय ॥ जि० ॥ ४ ॥ भुजंगम ईश्वर प्रभुजी, नेमीश्वर जगतात ॥ वीरसेन महाभद्रजेजी, देवजस्स विख्यात ॥ जि० ॥ ५ ॥ अजितवीर जिनदीपताजी, महाविदेहमें जान ॥ दोय कोम्बे केवलीजी, जघन कहे भगवान ॥ जि० ॥ ६ ॥ लाख चौरासी पूर्वनीजी, आयू तने परिमान ॥ काया पाचसें धनुपनीजी, दीपे सोवनवान ॥ जि० ॥ ७ ॥ जंबूद्वीपना भरथमेंजी, ध्याउं तुह्मारा ध्यान ॥ सुख दायक तुम नामसेंजी, होवें परम कल्याण ॥ जि० ॥ ॥ ८ ॥ जंबूद्वीपनें धात्रकीजी, पुस्कर अर्द्ध बखान ॥ महा बिदेह इन पंचमेजी, बीस कहे भगवान ॥ जि० ॥ ९ ॥ इनका ध्यान धरूं सदाजी, मन वचनें कारि काय ॥ मनुष जन्म सुफलो करूंजी, श्रीजिनना गुण गाय ॥ जि० ॥ १० ॥ संवत उन्नीसे जाणियेजी, विक्रम अवधि प्रमाण सेंतालिस उपर कह्याजी, लिसाढ ग्राम परधान ॥ जि० ॥ ११ ॥ चतुरमासमे वीनतीजी, एम कहे ऋखराय॥ देव धर्म गुर आदरो जी, भव भवमें सुख दाय ॥ जिनेश्वर धन धन तुम अवतार ॥ १२ ॥ इति

॥ अथ उपदेश लावणी लिख्यते ॥

इस जगमे फिरता समकित दुर्लभ पाई, पिण सुणी घणाने सरधा बिरलें आई ॥ दोष अठारह दुर करें जिन देवा, निग्रथ गुरुकी कीजो मनसे सेवा ॥ नय निखेपा परिमान कही जिनवांनी, बहुश्रुती मुनि राय अपेक्षा जानी ॥ इनका सत गुरसें भेद लहो तुम भाई ॥ इस जगमें फिरतां समकीत दुर्लभ पाई ॥ १ ॥ ज्ञानध्यानसें देख धर्म सुधताई, थिर श्रद्धा मनआन कुमत तजि भाई ॥ सुध चारितसे रोक कर्मकी नाली, तपकर पूर्व कर्म इधन कर जाली ॥ जब चेतनतज करम अचल पद पावे, जनम जरा और मरन रोग टल जावे ॥ तज अब मनसें क्रोध सुमति चित लाई ॥ इस० ॥ २ ॥ जबहो अधिका पाप नरकमें जावे, और पुन्न परभावें देवगती नर पावे ॥ दगा कपट कर पशुजोंन दुख पायो, जब वध्यो पुण्य तव मानुप कुलमे आयो ॥ तु सत गुरुकी कर सेव सुनो जिनवांनी, धरम तनी कर परख दया मन आनी ॥ अब देस विरत वा सरव विरत कर भाई ॥ इस० ॥३ ॥ समकित सरधा सहित बिर्तजो पाले, ते पशुजोन और नरक तना दुख टाले ॥ उत्तम आरज देश मनुप कुलपावे, आराधिकहोकर देवलोकमें जावे ॥ ए विक्रम संवत उन्नीसे उनचासें, वडसत ग्रामके मांहि कीया चोमासे, ॥ यह धर्म तना उपदेश कहे ऋख राइ, इस जगमें

फिरता समकीत दुर्लभ पाइ० ॥ ४ ॥ इती

॥ अथ उपदेश लावणी ठुमरी लिख्यते ॥

तु सुन सतगुरकी सीख समझकर प्राणी, अब कर तु सरधा शुद्ध परख जिनवानी ॥ यह उतम नरभव पाय द्वादशांगवानी, निश्चे कर मनधार विरतहित आनी ॥ विन समकित पाये जीव अनंत भव धारो ॥ नवग्रीवेग के माहिलीयो अवतारे ॥ जहां इकतीस सागर लगें सुख वहुपायो, फिर विन समकित सुर लाख चोरासी आयो ॥ १ ॥ रागद्वेषके जीत कहे जिनदेवा, सुरनर इंद्र जास करतहैं सेवा ॥ जिनवचनोंके परमान धर म सुध पालो, समकितको कीजे सुद्ध कुमति तुम टालो ॥ निरमल सरधा धार प्रदेसी राया, राणीने दिधा जहर क्रोध नहीं आया ॥ तव समकितका रस शुद्ध भावसें पायो, फिर विन समकित सुर लाख चौरासी आयो ॥२॥ देवधरम गुर पायो राय उदाई, समकि तमें परधान हुवो मन भाई ॥ वेरिने मारा व्रत पोस हके माहिं,नही आना मन क्रोध करी द्रिढताई ॥ करमतना सहु दोष दोस नही केहना, असा उजला ध्यान हुवा तव तेहना ॥ तीर्थंकर गोत्र बांध भव सुर भव पायो ॥ फिर वि० ॥ २ ॥ विनसमकित मिथ्यात मतीकी करनी, कहीं सूत्रोंके मांहिसक नही धरनी ॥ उत्राध्येनके वीच देखो सुद ज्ञानी, नोमें अध्येनके मांहि कथा जिन आनी ॥ जो मास मासका कष्ट करे

अज्ञानी, तो विन जिन आज्ञा परिमान नही सुध प्रानी ॥ तिन करनीके परिमान देव सुख पायो ॥ फिर० ॥ ३॥ मनुप जनमको पाय सुफल मन करगे, तु सुन नरकाके दुःख उनोसें डरे ॥ गरभा वासका वास महा दुख दाई, सो जाने जिनदेव कहु कहाताई॥ यह सवत उन्नीसे उपर चालिस जानो, वडसत ग्राम के वीच चोमासा मानो ॥ ऋखराज कहें अव प्रभु चरणे चितलायो ॥ सरनाचित्तलायो ॥ फिर० ॥ ५ ॥

॥ अथ उपदेश लावणी त्रीजी लिख्यते ॥

तु सुन सतगुरके वचन सुमत कर प्रानी, यह भवजीवाके काज कही जिन वानी ॥ चारगतीके माहिमनुप देह पाई, करले श्रीजिनधरम सुफल कर भाई ॥ समता रसको चाख दया दिल लाई, जिनमारगका सार समझ सुखदाई ॥ छोड कुमतिका संग सुमतिकर प्राणी, अव इक चित्त कर सुनो जिनेसर वाणी ॥ १ ॥ तीर्थंकरके समोसरण सुर आवें, फूलोंके वादल करी फूल वरसावें ॥ रायप्रेमनीके वीच अचित तुम जानो, मत कीजो कोई संक दया मन आनो ॥ राजादिक जो दर्सन करनेको आवें, फूलादिकको त्याग दरस मन चावे ॥ वहु सूत्राके मांहि कहें सुधज्ञानी ॥अव० ॥ २ ॥ अवसुनो प्रश्नव्याकरणकी साखे, पहिलें हिंस्या द्वार श्रीजिन भाखें ॥ जहां छहकायाके आरंभमें कारन, नही आखे जिनराज

यहीकहीं तारन ॥ दयातणे कहे नाम सालके तांई, पूजा भाव और जगा दयाके मांहिं ॥ फिर हिंस्या करिकें धरम कहें अभिमानी ॥ अबइक० ॥ ३ ॥ मनुष गती परधान कहें जिनदेवा, इंद्रादिक जिनकी आन करतहें सेवा ॥ साध श्रावकका धर्म इहांसे पावे, जनम मरणका दोष सभी टल जावे ॥ सुरथितका कुल करम अविरती जानो, तीनों गतिसें नहीं मुक्त कही जिनवानो ॥ पालो सुधविरती समकितमें हितआनी ॥ अबइक० ॥ ४ ॥ अब धन वो दिवस होय कब मेरा, जिन आज्ञा आराध मिटे भव फेरा, ऋखराज कहे करजोड मुझे भव भवमें, ए जिनवरजीको धर्म लहु इस जगमे ॥ ए संवत उन्नीससे बयालिस वडसत जानो,आसोज सुदीकी तीज शुक्र दिन मानो ॥ यह कही लावणी सरधा द्रिढमन आणी, अब इक चित्तकर ० ॥ ५ ॥

॥ अथ चोवीसी स्तवन लिख्यंत ॥

ए नर भव आई मिल्याहो,पुर्व पुन्यजु सार ॥ दुख संकट दूरें टल्याहो,पाम्या धर्म उदार ॥ए टेक ॥ ऋषभ अजित जिन ध्यावताहो, होवें शुभ परिणामें ॥ संभव अभिनंदन प्रभूहो, आनंद कारी स्वामें ॥ सुमत पदम मुझ मन वसोहो, वीतराग भगवाने ॥ सुपारस चंदाप्रभूहो,चंद्रसरिखाध्यानें ॥ ए न०॥ १ ॥ सुवद्दनाथ सीतल प्रभुहो, बंधा सीतल भावें ॥ श्रेआंस वासपु

जजीहो, सिमरथा मिवसुख पावें ॥ विमल अनंत अ रिहंतजीहो, अनंत गुणोके धामे ॥ धर्मनाथ अरु शां तिजीहो, साता कारी स्वामें ॥ ए न० ॥ २ ॥ कुंथुना थ अर्हेनाथजीहो, अतिसें चौतीस धारें॥मल्लि मुनिसुव्रत स्वामिजीहो, पेंतीसवांणी उचारें ॥ नमीनाथ अरु नेम जीहो, सब जीवा हितकारें ॥ पारस प्रभु महावीर जीहो, सासणके सिरदारें ॥ ए न० ॥ ३ ॥ चौदासे बाव न नमुंहो, गणधरमहा गुणधारें ॥ चौबीसों जिनजो त णाहो, आगम अर्थ भंडारे ॥ वेहेरमान वंदुसदाहो बी स जुहे जिनरायें ॥ मन वचनें काया करीहो, ध्यांन धरुं चितलायें ॥ ए न० ॥ ४ ॥ आर्य देस उत्तम कुलें हो, मनुप तणा भव पायें ॥ श्रीजिनवर गुण गावतांहो, जनम सुफल होजायें ॥ संवत उन्नीस पंचासमेहो क रनाल नगर चोमासें ॥ ऋखराज कहें जिन ध्यावतां हो ,पुरें मनकी जु आसें ॥ ए नरभव आई ०॥ ५ ॥

॥ अथ साधुजी ऋषिराज कृत ॥ दस लक्षण मुनीधर्मके

कुलणे दोहा सहित लिख्यते

दोहा ॥ सिव सुख दायक जिन चरन, नमता होय कल्यान ॥ मुनिके दस लक्षण कहुं, द्यो बांणी बरदान ॥१॥कुलणा॥अजी द्यो बांणी बरदानके,मानजो सेवगनें सुखकारीजी ॥ तुमरी कीरत अब मुखसें गांऊं. सुनो सहु नर नारीजी ॥ अष्ट करम को जीत लीये तुम, हु ये सुद्ध आचारीजी ॥ ऋपराज कहे में,बेकर जोडुं, तु

महो गुणके धारीजी ॥ २ ॥ दोहा ॥ अतिसे चोतिस के धणी, बांणी गुण पैंतीस ॥ एक सहिस अठ लक्षणें, तुम तन सोभें ईस ॥ ३ ॥ झुलणा ॥ अजी तुमतन सोभे ईसके, निस दिन सुरपत सेवा सारेजी इस भव दधिके बीच, तुमारो नामतणो आधारेजी ॥ तिरण तारण तुम होज स्वामी, कीजो खेवा पारेजी ॥ ऋपराज कहे में तुम परसादें, कहुं धरम सुविचारेजी ॥ ४ ॥ दोहा ॥ बीत्तरागके ब चनमें ॥ दस विध धर्म बखान ॥ तिनका अब बरन न करूं ॥ सुनो चतुर दे ग्यान ॥५॥ झुलणा ॥ अजी सुनो चतुर दे ग्यानके, ध्यान जो निरमल होवे थारा जी ॥ तुम धरम भावना धर कर मनसें, करोजु सुध्ध विचाराजी ॥ नरक देव तिरजंच मनुषमें, भमतां अंत न पाराजी ॥ ऋप राज कहे अब धरम रतन, कोई पुण्य उदेसें धाराजी ॥ ६ ॥ दोहा ॥ मनुष जनम अब पाईकें ॥ सुफल करो हित आण॥दुरगतिके दुख से डरो ॥ तजो मिथ्या अग्यांन ॥ ७ ॥ झुलणा ॥ अजी तजो मिथ्या अज्ञानके, ज्ञान दिल अंतर मांहि विचारोजी ॥ ए नर भव रतन चिंतामणि सम तुम, कुमति संग मति हारोजी ॥ सुमत भावसें बिरत आ राधो, अरु समकित सुख कारोजी ॥ ऋपराज क हे धन जिन बाणीको ॥ जिस तें हो निस्तारोजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तारण तिरण मुनिश्वरू, छहकायाके

ाथ ॥ पांचों इंद्री वसकरें ॥ टाले मोह मिथ्यात॥९॥
ुलणा ॥ अजी टाले मोह मिथ्यातके, कुटबको तिन
ाग्याहै॥ तन मन को वस कर धरें ध्यान, मुनि मु
ह पंथ चित लाग्याहै॥ दया करतहें सब जीवकी, ति
ा कुमतीमें मन लाग्याहै॥ ऋषराजकहे धन ते मुनिव
को, जो मोह नीदसें जाग्याहै ॥१०॥ दोहा॥ पहिला
लक्षण धरमका ॥ सुनो सवि चित लाय ॥ मुक्तिपंथ
ाधनतणा ॥ कह्या श्री जिनराय ॥ ११ ॥ झुलणा ॥
अजी कह्या श्री जिनरायके, लायक भव जीवाके ता
जी ॥ क्षिमा धरमकी करी बडाई, प्रथम मुनीके मां
हेंजी ॥ कठिन वचन लोकोके सुनके, क्षिमा करे सु-
ख दाईजी ॥ ऋषराज कहे धन ते मुनिवरको, सिव
रमणी जिनपाईजी ॥ १२ ॥ दोहा ॥ क्रोध अगन सी
तल करे, धरें क्षिमा परिणाम ॥ आतम गुण आरा
धतां, पांवे अविचल ठाम ॥ १३ ॥ झुलणा ॥ अजी
पांमें अविचल ठामके, तामस मनका जिन सब मारा
है ॥ अरी मितर जानें एक सरीखे, तव समण विर
त गुण धाराहै, जो कंचन काच बराबर जाणें ॥ चा
कर ठाकर इक साराहै, ऋषराज कहे ए परथम ल
क्षण, धारत मुनि सुखकाराहै ॥ १४ ॥ दोहा ॥ दूजा
लक्षण मुनि तणा, कह्या आप भगवान ॥ श्रोता ज
न सुणज्यो हिवे, मनमें धारिके ज्ञान ॥ १५ ॥ झूलणा
अजी मनमें धारिकें ज्ञानके, जानत जिन बानीकु सुख

दाईजी, तो तजे जगतसें लोभ महा मुनि, ते जाने दुरगतिकी शाईजी ॥ मात पिता नारी सुत ममता, त्यागे चितने समझाईजी ॥ ऋषराज कहे मुनिवर ते बैठे, जिन चरणो चितलाईजी ॥ १६ ॥ दोहा ॥ अब तीजो लक्षण कहुं, आगमके परिमाण॥ भविजन इक चित सांभलो, जिनवाणी हित आण ॥ १७ ॥ झूलणा॥ अजी जिन वाणी हित आणके, मानत भव भवमे सुख कारीहे, अथिर जान संसार जगतसे, मुनि महा व्रत धारीहे ॥ जिन आज्ञा परिमाण करी मुनि, कप टाई दूर निवारीहे ॥ ऋखराज कहे कीया सरल भाव, जिन आतम को निस्तारीहे ॥१८॥ दोहा ॥ भविजन कपटाई तजो, सरल भाव मन राख ॥ धरम ध्यान चित लाइये, जिन वाणी रस चाख ॥ १९ ॥ झूलणा॥ अजी जिन वाणी रस चाखके, भाषत मुखसे मीठी वाणीजी ॥ करम मेलको दूर करत हे, मुनि आतमने हित जाणीजी, जप तप करिके जो पूर्व भवके, करम छूटे दुःख दानीजी ॥ ऋषराज कहे तब ते सिवपुर पावे, जगमें उत्तम प्राणीजी ॥२०॥ दोहा॥ चौथा लक्षण मुनि तणा, कह्या श्री अरिहंत ॥ भविजन अब तुम सांभलो, राखी मन एकांत ॥ २१॥ झूलणा॥ अजी राखी मन एकांतके, भ्रांति सब दूर करो भवि प्राणीजी, मद आठ तजो मन अपनेसे ए, खोटी गतिके दानीजी; मान त्यागके विने करें मुनि ते जगमें

कहिए ग्यानीजी ॥ ऋषराज कहे जे सिव पद साधें, मुनिवर आतम ध्यानीजी ॥२२॥ दोहा॥ सुध संजम, मुनिवर धरें, करे नही अभिमान ॥ ग्यान दरिसन चारित्र तप, इनमें राखे ध्यान ॥ २३ ॥ झूलणा ॥ अजी इनमें राखे ध्यानके, दान अभे जिन दीनाहे, करुणा करतेहें सब जीवापर, तत्व धरम जिन लीनाहे॥ ज्ञानादिक गुणका मद नही आणे, क्रिया मांहि परवीनाहे॥ ऋषराज कहे मुनि अथिर जान जग उत्तम कारज कीनाहे ॥ २४ ॥ दोहा ॥ पांचो इंद्री वस करे, पाले सुद्ध आचार ॥ तिनका लक्षण पांचमां, सुणो सहु नर नार ॥ २५ ॥ झूलणा ॥ अजी सुनो सहु नर नारके, तारक मुनी महा विरत धारीजी, वस्त्र पात्र हलके राखें, छोडें वहु मोला भारीजी ॥ राग द्वेष और हास रितारत, जिन मोह दसा को टारीजी ॥ ऋषराज कहे धन उनकी करणी, जिन तनसें ममत निवारीजी ॥ २६ ॥ दोहा ॥ छह कायाके नाथजी, छठा लक्षण धार ॥ नाम कहुं अब तेहना, भवि जन सुणों विचार ॥ २७ ॥ झूलणा ॥ भविजन सुणो विचारके, सार वचन भग सत वाणीजी, झूठी भाषा टालें मुनिवर, सत्य कहें हित आणीजी ॥ कोई नर खडगादिक करि मारें, होकर दुष्ट अग्यानीजी, ऋषराजकहे तहं झूठन बोले, दोष असतका जानीजी ॥ २८ ॥ दोहा ॥ अब कहुं ल-

क्षण सातमा, सुणो सवि हित लाय ॥ संजम सतेर भेदका, पाले श्री मुनिराय ॥ २९ ॥ झूलणा ॥ अजी पाले श्री मुनिरायके, राज मुक्तिका ते पावेजी, धरे ध्यान जतनसें संजम साधे, जीव दया मन ल्यावेंजी ॥ पांचों थावर चार तरस का, संजम जिनंजी बतावेंजी ॥ ऋषराज कहे ए नव परकारें, संमज तो मन भावेंजी ॥ ३० ॥ दोहा ॥ जतना वस्त्र पात्रकी, लेई धरें मुनि आप ॥ पडिलेहन विध आदरें, संजममें मन थाप ॥ ३१ ॥ झुलणा ॥ अजी संजममें मन थापके, आप मुनि चित्तन चलावेंजी ॥ परिठवणे की विध सुध देखे, दया धरम मन भावेंजी ॥ यात्रादिकको आगी विध करिकें, देखत धरम कहावेंजी ॥ ऋषराज कहें मन बचन काया करि ये, सतरा संजम थावेंजी ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ अब मुनि लक्षण आठमा, सुणिये मन धरज्ञान॥बारा भेदी तप तपै. तिनका करु बखान ॥ ३३ ॥ झूलणा ॥ आजी तीनकाकरू बखानके, ग्यानवान मुनि तप साधेहे ॥ धरे नही देही पर ममता, जिन आज्ञा आराधेहे॥ पाचो इंद्री जीत करे वस मन तो, ग्यान धरम अति वाधेहे, ऋषराज कहे ते मुनिवर जगमें, सिव पदवीको लाधेहे ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ अनसन और अनोदरी, भिक्षाचरी प्रवान ॥ रस परित्याग मुनिकरे कायकिलस बखान ॥ ३५ ॥ झूलणा ॥ अजी काय किलेस बखानके, पडिसलेहन जा

णोजी ॥प्रायछित्त और विनय वियावच, सिझाय ध्यां
न मन आणोजी ॥ द्वादसमा तप वितसग मुनिवर
का, श्री जिनराज वखाणोजी॥ऋुपराज कहे ए तप आ
राध्या, पावें कोड कल्यांनोजी ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ नों
मा लक्षण अब कहुं, सुणिये भविजन लोग ॥ ग्या
न धरम चितमें बसे, जब मुनि साधे जोग ॥ ३७ ॥
झूलणा ॥ अजी जब मुनि साधें जोग के, जोग तजें
दुःख दाईजी, समकित ज्ञान करी सहु जानें, जो कि
रिया जिनबतलाईजी ॥ आप तिरें औरोको त्यारे,
समकित का रस पाईजी ॥ ऋषराज कहे जो ग्यान
सहित मुनि, सिव रमणी तिन पाईजी ॥ ३८ ॥ दोहा ॥
दसमें लक्षणमे मुनी, पालें सील रतन ॥ सब बिरता
में मोटका, बस कर राखे मन्न ॥ ३९ ॥ झूलणा ॥
अजी बसकर राखें मन्नके, तन साधक गुणधारीहे ॥
निंद्या विकथा दूर तजें मुनि, सुध मारग सुविचारीहे॥
सुध बुध करिकें बहु जीवाकी, दुरगतितो दूरि निवारी
हे; ऋुपराज कहे ए दस लक्षण मुनिके, आतम गुण
हित कारीहे ॥ ४० ॥ दोहा ॥ दस लक्षण मुनि झू
लणें, दोहे बाच वखान, कहे निरपडे ग्राममें ॥ जिन
आज्ञा परिमाण ॥ ४१ ॥ झूलणा ॥ अजि जिन आ
ज्ञा परिमानके, ग्यान करि समझे उत्तम प्राणीजी॥ अ
सुभ करमको टाली होवे, ते नर अमर विमाणीजी
उन्नीसै ॥ चुमालीस संवत, भादों सुकल व

खाणीजी ॥ ऋषराज कहे नव जीव आराधो, श्री जिन
वरकी बांणीजी ॥ ४२ ॥ इति दस लक्षण मुनी ध
र्मके झूलणे दोहे सहित साधु ऋषराज कृत संपूर्ण ॥
॥ अथ सामाईक पडिकोणा श्रावकका लिख्यते ॥
॥ श्रीजिनायनमः ॥ णमोअरिहंताणं ॥ णमोसि
द्धाणं ॥ णमोआयरीयाणं ॥ णमोउवज्झायाणं ॥ णमो
लोयेसव्वसाहूणं ॥ एसोपंचणमोक्कारो ॥ सवेपावप्प
णासणं ॥ मंगलाणंचसवेसिं ॥ पढमं हवई मंगलं ॥
॥ १ ॥ नव पदके, सरव अडसट वर्ण ॥ ६८ ॥
॥श्रीगुरूभ्योनमः॥ तिखुत्तो आयाहीणं ॥ पयाही
णं ॥ करिकरित्ता वंदामी नमो स्वामी ॥
सक्कारेमि॥ सम्मानेमि॥ कल्लाणं॥ मंगल ॥ देवयं ॥ चेईयं
पज्जुवासुवासी ॥ मथेण वंदामि ॥ १ ॥ अरिहंतोमहा
देवो ॥ जाव जीव सुसाहुणं गुरुणं जिनपनत्तं तत्तं
एसमत्तं ॥ संगाहियं पंचिंदियसंवरनो ॥ तहय ॥ नव
विह बंभचेर गुत्तिधरो, चउविहकसायमुक्को ॥ ए अ
ठारे गुण संजुतो, पंचम हवए जुत्तो ॥ पंचवीहे आ
चार पालणा समत्तो ॥ पंचसमाइतिगुतो, इहवत्ती
सो गुण गुरमज्झ ॥ १ ॥ इच्छा कारेण संदेसह भग
वान इरिया वहियं पडिकमामि ॥ इच्छम इच्छामि पडिक
मीयो, इरिया वहियाए विराहणाए ॥ गमणा गमणे
पाणकमणे बीयकमणे ॥ हरीएकमणे ॥ उसाउतिंग॥
पणगदग ॥ माटी मकडा ॥ संताणा संकमणे ॥ जोमें

जीव बिराहिया ॥ इकंदिया वेइंदेया तेइंदीया चउ इंदिया ॥ पचेंदीया ॥ अभिहया ॥ वत्तीया लेसीसा ॥ सिंघाईया ॥ सघट्टिया ॥ पराविया किलामिया उद्दवीयी ॥ ठाणाउठाण संकामिया ॥ जीवियाउविवरोविया ॥ जो में देवसी अइयारको तस्स मिछामि दुकडं ॥ २ ॥ तस्सोत्तरी करणेण, पायछितकरणेणं ॥ विसोही करणेणं ॥ विसल्ली करणेणं ॥ पावाणं कम्माणं निग्घाए ॥ नठाए ठामिकाउसग्गं ॥ अन्नत्थ ऊसैसीणं नीसैसीणं ॥ खासिएणं ॥ छीएणं जंभाइएणं उरूवेणं ॥ वायनिं संग्गेणं भमलीए ॥ पित्तमुछाए सुहु मेहुं अंगसंचालेहं ॥ सुहुमेहिं खेलं संचालेहिं सहुमेहिंदिठसंचालेहं ॥ एवं मायेहं आगारेहं अभग्गो ॥ अविराहियो ॥ हूजम्मे कावसग्गं ॥ जाव अरिहंताणं ॥ भगवंत्ताणं नमोकारेमि ॥ नप्पारेमि ॥ ताउ काईयं ठाणेणं ॥ मोणेण झाणेणं अप्पाणं वोसरामि ॥ ३ ॥ लोगस्सउज्ञोयगरे, धम्म तित्थयरे जिणे ॥ अरिहंते कितियसं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ मजीयंच वंदे ॥ संभव मभीनंदनं च सुमियंच ॥ पउमप्पहं सुपासं जिण चा चंद प्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहं च पुप्फदंतं ॥ सीयल सीयंस वासपुजंच ॥ विमलमणं तच जिणं धम्मसांतिच वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथु अरि च मल्लिं वंदे मुनि सुव्रयं ॥ नमी जिणंच वंदामि ॥ रिठनेमी पासंतह वद्धमाणंच ॥ ४ ॥ एवमए अभि

थुवा ॥ बिहुय रय मिला पहीण जर मरणा ॥ चउ
वीसंपिजिनवरा, तित्थयरामेपसियंतु ॥ ६ ॥ कित्तिय
वंदियमहिया ॥ जेयेलोगस्सेउत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग
बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दितु ॥ ६ ॥ चंदेसुनिम्म
लयरा ॥ आइच्चेसुअहियं पयाः सागरा सागरवरगं
भीरा ॥ सिद्धासिद्धं ममदिसंतु ॥ ७ ॥ करेमिभंते
सामाइयं ॥ सावजजोगं पच्चखामी, जावनेममहूरत्त प
ज्जुवास्वामी ॥ दुविहं तिविहेणं ॥ न करेमि नकारवे
मि ॥ मनसा वायसा कायसा तस भंते पडकमामि ॥
निंदामि गिरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥ ८ ॥ णमो
त्थुणं अरिहंताणं ॥ भगवंताणं, आदिगिराणं ॥ ति
त्थगिराणं, सयंसुबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं ॥ पुरिससिहाणं पु
रिसबर पुंडरीयाणं ॥ पुरिस वरगंध हत्थिणं, लोगुत्तमाणं
॥ लोगनाहाणं लोगहियाणं ॥ लोगपईवाणं, लोगपज्जोय
गराणं ॥ अभयदयाणं, चखुदयाणं ॥ मग्गदयाणं सरण
दयाणं जीवदयाणं ॥ बोहीदयाणं धम्म दयाणं, धम्मदे
सियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं ॥ धम्मोवर चाउ
रंतचक्कवट्टीणं ॥ दीवोत्ताणं सरण गईपईठा, अप्पमी
हे वरनाणं ॥ दसणधराणं, वियट्ट छउमाणं ॥ जिन्नाणं
जावियाणं ॥ तिन्नाणं तारियाणं बुद्धाणं ॥ वोहियाणं
मुत्ताणं मोयगाणं ॥ सवनुणं सव दरसीणं सिव मयल
मरुय मणंत मखे मबावाह ॥ मपुणरावती ॥ सिद्धगति ना
मधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं नमोजिणाणं जियभयाणं ठा

णं सपाविथो कामस्स नमो जिणाणं जियभयाणं॥ ७॥
। नोमासामाईक विरतके विषें जोकोई अतिचारला
ग्याहोय ते आलोउं ॥ मन वचन कायाकाजोग पाड
ध्याध्यानं॥ माठा पर वरतायाहोय, समायकमें समतान
आणीहोय बिन पुगेंपारी होय ॥ पारतां बिसारी
होय ॥ दस मनके दस वचनके बारें कायाके यह ब
तीस दोषां माहिं जोकोई पापदोष लगायाहोय तस
मिछामिदुकडं ॥ ८ ॥

॥ अथ श्रावक पडिकमणा लिख्यते ॥

आवसही इछा कारेण संदेसह भगवन् ॥ देवसी प
डिकमणाउठायमि देवसी ग्यान दरसन चरिता च
रिते तप अतीचार चिंतवणा अरथं करेमि काव
सग्गं ॥१॥ णमोअरिहंताणं॥ पांच पद कहना॥ करे
मिभंतेकी पट्टी कहणी ॥ इछामिठायमी कावसग्गं ॥
जोमें देवसी अईयारको काईयो वाईयो माणसीयो उ
सुत्तो उमग्गो अकप्पो अकरणीज्जोदुज्जाउ दुचिंतियो
अणियारो अणछियवो असावगो पावगो नांणतह
दंसण चरित्ता चरित्त सुयसमाहियं ॥ तिन्हगुणं ॥
चउन्ह कसायाणं ॥ पचन्हं अणुवयाणं तिन्हंगुणब
याणं ॥ चउन्हं ॥ सिखावयाणं ॥ बारस्स विहस्स सा
वग धम्मस्स जंखंडियं जविराहियं ॥ जोमेंदेवसी अई
यारको तसमिछामिदुकडं॥१॥तसोत्तरीकी पट्टी पढणी॥
निन्याणवें अतिचारका ध्यानकरणा ॥ णमोअरिहं

ताणं ॥ ध्यानके विषें मन वचन कायाका जोग माठा परवरताया होय तसामिछामि दुक्कडं॥पहिला आवसक पूराहुवा॥दुजे आवसककी आज्ञा लोगस्स उजोयगरे॥ सर्व पाठ कहे ॥ दूजा आवसक पूरा हुवा ॥ तीजे आव सककी आज्ञा इछामि खिमासमणो ॥ वंदिए ॥ जव णिज्जाए ॥ निस्सहीआए ॥ अणुज्जाणहमेमी ॥ उग्ग हं निस्सही ॥ अहो कायं काय ॥ संफासं खमणजोभे ॥ कल्लामो ॥ अप्प ॥ किलंताणं वहुसभेनभे ॥ देवसी वइकंतो ॥ जत्ताभेजवणी जंचभे खामेमि खि मासमणो ॥ देवसी बइक्कमं ॥ आवसीयाए ॥ पडक मामी ॥ खिमासमणो देवसीआए ॥ आसायणाए ॥ तेतीसणयराए ॥ जंकिंचि मिछाए ॥ मन दुक्कडाए बय दुक्कडाए कायदुकडाए ॥ कोहाए ॥ माणाए ॥ मायाए ॥ लोहाए ॥ सवकालियाए ॥ सवमिछोवियाराए सव धम्म अईकम्मणाए ॥ जोमें देवसी अईयारको तस्स खिमा समणो ॥ पडकमामी निंदामि ॥ गिरिहा मि ॥ अप्पाणंवोसरामि ॥ एहपाठ दो बार पढणा ॥ गुरुको वंदना करिकें कहे, तीन आवसग पूरा हुवा ॥ चोथें आवसग की आज्ञा.

अथ निन्याणवे अतिचारका पाठ लिख्यते.

आगमें तिविहे पन्नते तंजहा सुत्तागम्में अत्थागमें ॥ तदुभयागमें ॥ येहवा श्रुतज्ञानके विषें जो कोई अ तिचार लाग्या होयते आलोऊ ॥ जंभाईद्धं १ वच्चा

मेलियं २हीणखरं ३ अचखरं ४ पयहीणं ५ बिनै हीण ६ जोगहीणं ७ घोपहीणं ८ सुठुदिन्नं ९ दुठुप डिछियं १० अकालेको सिझाउं ११ कालेनको सिझा उं १२ असिझाय सिझाईय १३ सिझाय नसिझाईयं १४ जोमें देवसी अईयारको तरस मिछामि दुक्कडं॥ दरसण श्रीसमकत रतन पदारथके विषे जो कोई अ तिचार लाग्याहोय ते आलोउं॥ श्री जिन वचन स में साचा सरधा न होय प्रतिता ना होय रुचा नां होय॥ १ ॥ पर दरसनीकी कंख्या कीधी होय॥२॥ फल परते संदेह आण्याहोय॥ ३ ॥ पर पाखंडी की पररांसा कीधीहोय॥ ४ ॥ पर पाखंडीसें संचा परचा कीधा होय॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको तस मिछामि दुकडं ॥ पहिला थूला प्राणाति पात बेरमन बरतके बिपे जो कोई अतिचार लाग्या होय ते आलोउं॥ रीस बसें गाढा बंधन बांधा होय ॥ १ ॥ गाढा घाव घाला होय॥ २॥ अती भार घा ला होय ॥ ३ ॥ अबयवना बिछेद कीधा होय ॥ ॥ ४ ॥ भात पाणीना बिछेद कीधा होय॥ ५ ॥ जोमें देवसी अइयारको तस मिछामि दुकडं ॥ १ ॥ बीजा थूल मृखा बाद बेरमण बरतके विषे जो कोई अतीचार लाग्या होय ते आलोउं, सहसातकारें क ही परतें कूडा आल दीधा होय॥ १ ॥ रहस गानी बात परगट कीधी होय ॥ २ ॥ इस्त्री पुरसका मर

म प्रकास्या होय॥३॥कही परतें पाय पाडवा भणी मृपा उपदेस दीधा होय ॥ ४ ॥ कूम लेख लिखा होय ॥ ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयार को तस्स मिछामि दुक ड ॥ २ ॥ तीजा थूल अदत्ता दान बेरमन, बिरतके विषे जे कोई अतिचार लाग्या होय ॥ ते आलोऊं चोरकी चुराई बसत लीधी होय ॥ १ ॥ चोरकुं साहज दीधा होय ॥ २ ॥ राज बिरुद्द कीधा होय॥ ॥ ३ ॥ कूडा तोल कूडा माप कीधा होय ॥ ४ ॥ बस तु मांहि भेल संभेल कीधा होय ॥ ५ ॥ जोमें देव सी अईयारको तस्स मिछामि दुकडं ॥ ३ ॥ चोथा थूल मेहुणाउ, बेरमण बरतके विषे जे कोई अतीचा र लाग्या होय ते आलोउं ॥ इतरिया थोडा कालकी राखीसें गमण कीधा होय ॥ १ ॥ अपरि गहियासें गमण कीधा होय ॥ २ ॥ अनंग क्रीमा कीधा होय॥ ॥ ३ ॥ पर बिबाहना नाता जोडाया होय ॥ ४ ॥ काम भोगकी तिव्र अभिलापा कीधा होय ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको, तस्स मिछामि दुकडं ॥ ६ ॥ पांचमा थूल परिग्रह परिमान बेरमन बिरत के विषें जो कोई, अतिचार लाग्या होय ते आलोउं खेत्र व थु प्पमाणाई कम्मे ॥ १ ॥ हिरन सुवन पमाणाई कम्मे ॥ २ ॥ धन धान पमाणाइ कम्मे ॥ ३ ॥ दोप द चोपद पमाणाई कम्मे ॥ ४ ॥ कुवि धात पमणाइ कम्मे ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको तस मिछामि

दुकडं ॥ ६ ॥ छठा दिस परमाण वेरमन व्रितके वि
षे जो कोई अतीचार लाग्या होय ते आलोउं ॥ उंची
दिस पमाणाई कम्मे ॥ १ ॥ नीची दिस पमाणाई क
म्मे ॥ २ ॥ तिरिछी दिस पमाणाई कम्मे ॥ ३ ॥ षे
त्रवधायाहोय ॥ ४ ॥ पंथना संदेह पडा आगें चलो हो
य ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको तस मिछामि दुकडं
॥ ६ ॥ सातमा भोग परिभोग वेरमन बरतके विषें जे
कोई अतीचार लाग्या होय ते आलोउं ॥ पचखांन
उप्रांत, सुचितनों आहार कीधा होय ॥ १ ॥ सुचित
पडी बधनो आहार कीधा होय ॥ २ ॥ अपक्कना आ
हार कीधा होय ॥ ३ ॥ दुपक्कना आहार कीधा होय
॥ ४ ॥ तुछ वसतु ना आहार कीधाहोय ॥
॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको तस्स मिछामि दुकडं
॥ ७ ॥ पंदरा करमादान समणों वासएणं जाणीय
वा नसमारीयवा तजहा ते आलोउं ॥ इंगाल कम्मे ॥
॥ १ ॥ वण कम्मे ॥ साडी कम्मे ॥ ३ ॥ भाडी कम्मे
॥ ४ ॥ फोडी कम्मे ॥ ५ ॥ दंत बणिज्जे ॥ ६ ॥ लख
बणिज्जे ॥ ७ ॥ रस बणिज्जे ॥ ८ ॥ विस बणिज्जे ॥ ९ ॥
केस बणिज्जे ॥ १० ॥ जंतु पिलणीया कम्मे ॥ ११ ॥
नलंछणीया कम्मे ॥ १२ ॥ दवग दावणीया कम्मे ॥ १३ ॥
सरदह तलाव सोसणीया कम्मे ॥ १४ ॥ असई जन
पोसणिया कम्मे ॥ १५ ॥ जोमें देवसी, अईयारको त
स्स मिछामि दुकडं ॥ ७ ॥ आंठमा अनरथा दंड वे

रमन बरतके विषे जो कोई अतिचार लाग्या होय
ते आलोउं, कंदरप्पनी कथा कीधी होय ॥ १ ॥ भंड
चेष्टा कीधी होय ॥ २ ॥ मुखारी वचन बोला होय
॥ ३ ॥ अधिकरण जोफी मुक्या होय ॥ ४ ॥ उप
जोग अधिका बधाया होय ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अई
यारको तस्स मिछामि दुकडं ॥ ८ ॥ नवमा समायक
विरतके विषे जो कोई, अतीचार लाग्या होय ते
आलोउं मन १ वचन २ कायाका ३ जोग पाऋव
ध्यान परवरताया होय समायकमें समता न कीधी हो
य ४ बिन पूगें पारी होय ५ जोमें देवसी अईयार
को तस्स मिछामि दुकडं ॥ ९ ॥ दसमा दिसा बिगा
सी बरतके विषें जो कोई अतीचार लाग्या होय ते
आलोउं, निवी भूमिका बाहरथी वस्तु अनाई होय
१ अथवा मोकलाई होय २ सबद करी जनाई होय
३ रूप कारि दिषाई होय ४ पुदगल नाखीनें अपना
आपा जणाया होय॥५॥जोमें देवसी अईयारको तस्स
मिछामि दुकडं ॥ १० ॥ ग्यारमा पफिपुन पोषद
विरत के विषे जो कोई अतिचार लाग्या होय ते
आलोउं ॥ अपफीलेहिये, दुपडीलेहिये सिज्जा सं
थारा ॥ १ ॥ अप्पडी लेहीये दुप्पडी लेहीये उच्चार पा
स बण भोमिका ॥ २ ॥ अप्पमांजिए दुप्प मंजिए
सिज्जा संथारा ॥ ३ ॥ अप्प माजिएं दुप्पमंजीए उच्चा
रपास बणभोमिका ॥ ४ ॥ पोसह मांहि जो बि

कथा परमाद कीधा होय ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको, तस्स मिछामि दुकरं ॥ ११ ॥ बारमा अतिथ्य सविभाग वरतके विखे जोकोई अतीचार लाग्या होय ते आलोउं ॥ सुजती वसतु सुचित उपर मुकी होय ॥ १ ॥ सुचित करढांकी होय ॥२॥ काल अतिक्रमा होय॥३॥अपनी वसतु पारकी कीधी होय ॥ ४ ॥ मछर भावें दान दीधा होय ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयार को तस मिछामि दुकरं ॥१२॥ संलेपनाके विखे जो अतीचार लाग्या होय ते आलोउं ॥ इहलोगा संसपउगा ॥ १ ॥ परलोगा संसपउग ॥ २ ॥ जीवीयासंसपउगा ॥ ३ ॥ मरना मंसपउगा ॥ ४ ॥ कामभोगा संसपउगा ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ चउदाग्यानके ॥ पांचसमकतके॥साठ बारा बरतांके॥ पंद्राकरमादानके ॥ पांचसंलेपनाके ॥ ए निन्याणवें अतिचार मांहिं कोई दोष पाप लाग्या होय जोमें देवसी अईयार को तस्स मिछामि दुकरं ॥ अठारे पाप थानक ते आलोउं प्राणातिपात १ मृपाबाद २ अदत्तादांन ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ९ लोभ राग १० द्वेप ११ कलह १२ अभिख्यान १३ पिशुन १४ परपरवाद १५ रत्तारत्त१६ मायामोसो १७ मिथ्या दंसन सल्ल १८ ए अठारे पाप थानक सेवेहोय १ सेवाये होय २ सेवता प्रतें अनुमोद्या होय ३ जोमें दे

वसी अईयारको तस्स मिछामि दुकडं॥ पच अनुव्रत मूल गुन सात सिपा वरत उतरगुन ॥ इनविषे कोई अतिकरम ॥ बतीकरम अतीचार अणाचार नाण तें अजाणतें ॥ कोई दोष पाप लाग्या होय जोमें देव सी अईयारको तस मिछामि दुकडं ॥ इछामि ठामि आलोइयं जोमें देवसी अईयारकोसवे पाठ कहणा ॥ सव्व सवदेवसीयं दुब्भासियं दुचिंतियं दुचिठियं हिवे समणो वासग सूत्र नणेमि वंदना करिकहे ॥ श्रावक सूत्र पढनेकी आग्या ॥ नवकार कहना ॥ करेमिभंते का पाठ कहना॥ चत्तारिमंगलं॥अरिहंतामंगलं॥सिद्धा मंगलं॥साधु मगलं केवली पन्नते धम्मो मंगलं॥ चत्ता रि लोगुत्तमा॥ अरिहंता लोगुत्तमा॥ सिद्धा लोगुत्तमा॥ साधु लोगुत्तमा॥केवली पन्नते धम्मो लोगुत्तमा॥चित्तारि रि सर्णं पवज्जामि ॥ अरिहंता सर्णं पवज्जामि ॥ सिद्धा सर्णं पवज्जामि ॥ साधु सर्णं पवज्जामि ॥केवली पन्नते धम्मो सरण पवज्जामि ॥ इछामिठामि पडकमीयो जो में देवसी अईयारको सरव पाट कहणा॥इछाकारेणका पाट कहणा॥ आगमें तिविहे पन्नते का पाठ कहणा॥ दरसन समकत परमथ सथवोवा सुदिठ परमथ से वणा वावि॥वावन्न कुदंसन बज्जणाए॥ ए समत्त सद्दह णा ॥ येहवा समकतना ॥ समणो बासएणं, समत्त स पंच अइयारा ॥ पियाला जानियवा नसमारीयवा, तंजहा ते आलोउं ॥ संक्या ॥ कंख्या ॥ बिदिगिंछा

॥ परपाखंडीकी प्ररसंसा, परंपाखंडीसंथोवा ॥ जोमें देवसी अईयारको, तस्स मिछामि दुकडं ॥ १ ॥ पहिला अनुविरत थूलाउ पानाईवायाउ वेरमणं तस्सजीव बेइंद्री तिइंद्री, चउइंद्री पंचइंद्री जानी पूगी संकलपी सिगा सबंधी सिरीर माहिला पीडाकारी सअपराधी तिस उपरांत निरअपराधी ॥ आकूटीनें हणवांसो वृवसे हणवांनो पचखांण ॥ जावजिवाए दुविहं ॥ तिविहेणं ॥ नकरेमि नकारवेमि ॥ मनसा वायसा कायसा यिहवा पहिला थूल प्ररनातपात वेरमन विरतनां पंच अईयार पियाला जानियवा नसमारीयवा तजहा ते आलोउं ॥ बंधे वहे छवी छेय अईभारे भातपाणी वोछेये जोमें देवसी अइयारको तस्समिछामि दुकडं ॥ १ ॥ बीजा अनुविरत थूलाउमुसावायाउवेरमणं कन्नाली, गोवाली, भोमाली, थापनमोसा सोटकीकुडीसाख ॥ ५ ॥ इत्यादिक मोटका कुठ बोलनेका पचखांन जावजीवाए दुविहं तिविहेनं नकरेमि नकारवेमि मनसा वायसा कायसा येहवा बीजा थूलम्रषावाद वेरमण विरतना पंचअईयारा पियाला जाणियवा नसमारीयवा तंजहा ते आलोउं ॥ सहसाभखाने रहसाभखाने ॥ सदारमतभेये मुसो वयेसे. कूडलेहकरने ॥ जोमें देवसी अईयारको तस्स मिछामि दुकडं ॥ २ ॥ तीजा अनुवरत थूलाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं खातरखणी १ गाठडी गोडी २ तालापडकुची ३

वाटपामी ४ पडीवसतु मोटकी धनाती जाणी ५ इत्या दिक मोटका अदत्तादान सगा संवंधी पडी वसतु नि रन्तरमी इत्यादिक मोटका अदित्ता दान लेवानो पच खानं ॥ जावजिवाए दुविहं तिविहेनं, नकरेमि नकार वेमी मनसा वयसा कायसा येहवा तीजाथूल अदित्ता दान वेरमन विरतना ॥ पंच अईयारा पियाला जानी यवा नसमारीयवा ॥ तंजहा ते आलोउं ॥तेनाहरे तक्क रपउगे विरुधरजाई कम्मे कुरूतोले कूडमाणे तप्प डी रुवग विवहारे ॥ जोमें देवसी अईयारको, तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ ३ ॥ चौथा अणुवरत थूलाउ मेहु णाउ वेरमणं सदार संतोस ॥ अवसेस मेहुण सेवा नो पचखान जावजिवाये देवता देवी संवंधी दुविहं तिविहेणं न करेमी नकारवेमी मनसा वायसा का यसा तथा मनुष्य तिरजंच संवंधी इकविहं इकवीहे णं नकरेमी कायसा येहवा चौथा थूल मेहुणका वेरम ण विरतना पंच अईयारा पियाला जाणियवा नस मारीयवा तंजहा ते आलोउं॥इत्तरीया परिगहिया गा मणे अपरी ग्रहिया गमणे अनंग कीडा परविवाहक रणे कामभोगतिवाभिलासा जोमें देवसी अईयारको तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ ४ ॥ पाचमाथूल परिग्गहाउ वेरमणं ॥ षेत्रवथूनो यथा परिमाण ॥ हिरन सोवननों यथा परिमाण ॥ धन धाननो यथा परमाण ॥ दोपद चोपदनो यथा परिमाण ॥ कुविधातनो यथा परिमा

ए येहवा यथा परिमाणकीधाछे तेउपरांत पोताना करी परिग्रह राखवाना पचखाण ॥ जाव जिवाए इक विहं तिविहेणं नकरोमि वयसा कायसा येहवा पांचमा थूल परिग्रह परिमान वेरमन बिरतना पंच अईयारा पियाला जानियवा नसमारीयवा तंजहा तेअलोउं ॥ पेत्रवथु पमाणाई कम्मे हिरन सोवनपमाणाई कम्मे ॥ धनधान पमाणाई कम्मे ॥ दोपद चौपद पमाणाई कम्मे कुविधात पमाणाई कम्मे ॥ जोमेंदेवसी अईयारको ॥ तस्समिछामि दुकडं ॥५॥ छठा दिस विरत उडदिसनों जथा परमान ॥ अधो दिसनो जथा परिमाण तिरछी दिसनो यथा परिमाण येहवा यथा परिमाण कीधाछे ते उप्रांछ पोतानी सइ छा कायाकरी जाईनें ॥ पाच आश्रव सेवानों पचखान जाव जिवाए दुविहं तिविहेणं नकरेमि ॥ नकारवेमी मनसा वयसा कायसा ॥ तथा ॥ मांहि रहीने इक वीहं तिविहेणं नकरेमी मनसा वायसा कायसा यहवा छठा दिस वेरमण विरतनां पंच अईयारा पियाला जाणियवा ॥ नसमारीयवा तंजहा तेआलाउं ॥ उडदि स पमाणाई कम्मे अधो दिस पमाणाई कम्मे तिरछी दिस पमाणाई कम्मे खेत्तर बुही सयंतरधा ॥ जोमें देवसी अईयारकोतस्स मिछामि दुकडं ॥ ६ ॥ सातमा उपभोग परिभोगबिरत, विहंपचखायमाने ॥ उल्ल णियाबीहं ॥ १ ॥ दंतनवीहं २ फलविहं ३ अभंगण

विहं ४ उवट्टण विहं ५ मंजण विहं ६ वत्थ विहं ७ विलेवण विहं ८ पुप्फविहं ९ आभरन विहं १० धुप विहं ११ पेजविहं १२ नखण विहं १३ उवट्टन विहं १४ सूप विहं १५ विघे विहं १६ सागविहं १७ महोर विहं १८ जीमन विहं १९ पाण विहं २० मुखवासविहं २१ वाहन विहं २२ पणही विहं २३ सयन विहं २४ सूचित विहं २५ दरव विहं २६ पोतांना भोग विना हिंस्या करी, तथा सय विकारी सबद रूपादिक पदारथ उदारीने जोवा जावानो पच्चखान जावजीवाए दुविहं तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मनसा वयसा कायसा एहवा सातमा भोग परिभोग ॥ दुविहे पन्नते ॥ तंजहा भोयनाय ॥ कम्मोय ॥ भोयनाय ॥ वासएणं ॥ पंच अईयरा पियाला जाणियवा नसमारियव्वा ॥ तंजहा ते आसुचित आहारे सुचित पडी बध आहारे अपोलीसही भखनीया ॥ दपोली सही भखणीया ॥ तुछसही भखणीया ॥ जोमे देवसी अईयारको तस्स मिछामि दुकडं ॥ ७ ॥ कम्मोय पन्नरस्स कम्मादाणाय ॥ जाणियव्वा ॥ नसमारियव्वा तंजहा ते आलोउ, इंगालकम्मे ॥ १ ॥ जाव असई जन पोसणीयाकम्मे ॥ १५ ॥ जोमे देवसी अईयारको तस्स मिछामि दुकड ॥ ७ ॥ आठमा अनरथादंड ॥ चउ बीहे ॥ पन्नते ॥ तंजहा ॥ अवझाय चरियं ॥ पमायचरियं ॥ हिंसप्पयाणे ॥ पावकम्मो व

थस्स ॥ येहवा अनरथा दंड सेवानो पचखान ॥ जा वजिवाये दुविहं तिविहेणं ॥ नंकरेमि नकारवेमी मनसा वायसा कायसा येहवा आठमा अनरथादंड वेरमन विरतना पचअईयारा ॥ पियाला जाणीयवा नसमारीयवा ॥ तंजहा ॥ ते आलोउं ॥ कंदप्पे ॥ कुकुईए ॥ मोहरीए ॥ संजुत्ता अहिगरणे ॥ भोग परिभोग अईरते ॥ जोमें देवसी, अईयारको तस्स मिछामि दुक्कड ॥ ८ ॥ दसमो दिसा विगासी वरत दिन दिन प्रते परभातथी प्रारंभीने पूरवादिक छहंदिस मांहि ॥ जेतली भूमिका मोकली राखीछे ते उपरात सइछा काया करी ॥ जाईने पांच आश्रव सेवानो पचखान ॥ जाव अहोरत्त ॥ पुजवास्वामी दुविहं तिविहेणं ॥ नकरेमि नकारवेमी मनसा वायसा कायसा ॥ तथा जेतली भूमिका मोकली राखीछे ॥ तिसांहि जे द्रव्यादिकनो मरजादा कीधाछे ॥ ते उपरात भोग परिभोग भोगवा ॥ निमंत भोगवानो पचखान ॥ जाव दिवस पुजवास्वामी इकवीहं तिविहेणं नकरेमी मनसा वयसा कायसा एहवी सरधना परुपना फरसना करु तिवारेसुध येहवा दसमा दिसा विगासी वरतना पंच अईयारा पियाला जानीयवा नसमारीयवा तंजहा ते आलोउं आणमणे पउगे पेसमणे पउगे ॥ सद्दाणुवाये ॥ रूवाणुवाए ॥ वहिया ॥ पोगल परिखेवे जोमें देवसी अईयारको तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ १० ॥ इग्यारमा

पमीपुन पोषद विरत चउविहंपी आहारं असणं पाणं खायमं सायमं नो पचखान अबंभ सेवानो पच खाण उमुकमणी सेवानो पचखाण माला विले वणनो पचखाण ससतर मूसलादिक सावज जोगनो पच खान जाव अहोरत्तं पुजवास्वामी दुविहं तिविहेणं न करेमी नकारवेमी मनसा वायसा कायसा येहवी सर धना परूपना फरसना करुं तिवारे सुध॥ येहवा ग्या रमा पोषध वरतना पंच अईयारा पियाला जानीयवा नसमारीयवा तंजहा ते आलोउं अप्पडीलेहिय दुप्पडी लहियेसिज्जा संथारा॥अप्पडीलेहिय दुप्पडीलेहियउच्चा र पास वणनोमिका अप्पमंजीए दुप्पमंजीए सिज्या सं थारा॥अप्पमंजीए दुप्पमंजीए उच्चार पास वणनोमि का॥पोसह सम अणुपालणया, जोमें देवसी अईयारका तस्स मिछामि दुकडं॥ ११॥ बारमा अतिथ सविभाग वरत समणे निगंथे फासुएसणीज्जेणं॥ असणं १ पाणं २ खायमं ३ सायमं ४ वत्थं ५ पडिग्गहं ६ क बलं ७ पाय पुछणं ८ पडिहारे॥ पीढ ९ फलग १० सिज्या ११ संथारा १२ उसही १३ भेसेजेणं १४ पडि लाभेमाणे॥ विहरामि येहवी सरधना परूपना फरस ना करूं तिवारे सुध येहवा बारमा अतिथ संविभा ग विरतना पंच अईयारा पियाला जाणीयवा तंजहा ते आलोउं सुचित निखिवणीया सुचितपहणीया कालाई कम्मे परोवयसे मछरीयाये जोमें देवसी अईयारको त

स्सेमिछामि दुकडं॥१२॥अपछिमा मरणंतीय संलेहणा झूसणा आराहणा पोपदमाला पुंजी पुजीनें॥ उच्चारपासू वणञोमिका पमिलेही पमिलेहीनें॥ गमणा गमणे पडकम्मी पडकम्मीनें॥दाभादिक संथारा संथरी संथरीनें दाभादिक संथारा दुरही दुरहीनें॥ पूर्व तथा उत्तर दिस पलंकादि॥ आसण बैसी बैसीनें करयल संपगहियं सिरसावतं मत्थए अंजली कट्टु एवं वयासी नमोथुणं अरिहंताणं॥ भगवंताणं॥ जाव संपत्ताणं॥ इम॥ वरतमान॥ तीरथंकर॥ तथा अनंते सिद्धजीने॥ नमस्कार करीनें॥ पोताना धरमाचार्जजीनें नमस्कार करीनें॥ पूरवें जे विरत आदरथाछे॥ते आलोई पडकम्मी निंदी साधु प्रमुख चार तीरथ खमाईनें॥ निसल्लथईनें॥ सव पाणाईवायाउ पचखामी॥ सवं मुसावायाउ पचखामी॥ सवं अदिन्नादाणाउ पचखामी सवंमेहुणाउ पचखामी॥ सवं परिगाहाउ पचखामी सवं कोहं माणं माया लोभं जाव॥ मिछा॥ दंसण सल्ल॥ अकरणीज्जं जोगं पचखामी॥ जावजिवाए॥ तिविहं तिविहेणं॥ नकरेमी॥ नकारवेमी करंतं पिनाणु जाणामी मनसा वायसा कायसा इम अठारा पापस्थानकते पचखीनें सवं असनं पाणं खाइमं साइमं पचखामी॥ जावजिवाए इमचार आहार पचखीनें जंपीयं इमं सरीरं इठं॥ कंतं॥ पीयं मणुणं॥ मणामं॥ धिज्जं वेसासियं समयं॥ अणुमयं बहुमयं॥ भं-

डकरंडगं समाने ॥ रयण ॥ करंडगभुयं ॥ माणंसीयं ॥ माणंउएहं ॥ माणंखुहा ॥ माणंपिवासा ॥ माणंवाला माणंचोरा ॥ माणं डंसमंसगा ॥ माणं वाइया पीती या कप्फीया सव सन्नीवाइया विविहा रोगायंका परी सा उवसग्गा ॥ फासाफसांति इम्मं पीयेणं चरिम्मोहिं उसास निसासोहिं बोसरामी तिकट्ट इम सरीर वोस रामीने काल अणव कंख माणे विहरइ ॥ येहवी सर धना ॥ परूपणा फरसना कलंतिवारे सुध एहवा, अ पछिमा मरणांति सलेहणा झूसणा आराहणाना पंच अईयारा ॥ पियाला जानीयन्ना नसमारीयव्वा तंजहा ते आलोउं इहलोगासंसप्पउगा पारलोगा संसप्पउगा जीवीया संसप्पउगा मरणा संसप्पउगा काम भोगा संसप्पउगा ॥ मासुझहुज मरणंते ॥ जोमे देवसी अ ईयारकोतसमिछामि दुकरूं ॥ १ ॥ इम समकत ॥ पूर्व के बारा बिरत सिलेखना सहित इनाबिखे कोई अती करम वतीकरम अतीचार अणाचार ॥ जाणते ॥ अ जाणतें ॥ कोई दोषपापलागाहोय ॥ जोमे देवसी अ ईयारको ॥ तस्सामिछामि दुकडं ॥ १ ॥ अठारे पापका पाठ कहणा ॥ तस्सधम्मस्स केवलीपन्नतस्स अभुठि योमि आराहणाए ॥ विरोमिविराहणाए ॥ बंदामी जिन चोवीसं ॥ इति वंडे बारा वरत संपूर्ण ॥ १ ॥ फिर पांचां पदांको वंदना कहणा ॥

॥ अथ पांच पदोकुं वंदना लिख्यते ॥

णमो अरिहंताणं॥ णमो कहता नमस्कारहजो अरिहंताणं कहता अरिहंतजीनें ॥ अरिहंतजी केहवाछे चौतीस अतिसै पैंतीसवाणी करी विराजमान चउसठ इंद्रोंके पुजनीक एकहजार आठ लक्षणों के धरणहार अठारा दोष रहित बारे गुन करी विराजमान जघन बीस तीर्थंकर उत्कृष्टे एकसोसाठ तथा एकसो सत्तर तीर्थंकर जघन दोय कोड केवली उत्कृष्ट नवकोड केवली पाच महाविदेह क्षेत्रामांहि जैवंता वरत मान कालें विचरें छ अनंता ज्ञान अनंता दरसन अनंता चारित्र अनंता तप अनंता बलवीर्य पांच अनंता के धरणहार भव्य जीवांके त्यारण हार हाथजोडी मान मोडी मनवचनकायाकरी यहवा श्री अरिहंतजी महाराज प्रते हमारी वंदना नमस्कार त्रिकाल त्रिकाल तीखुत्तोके पाटसें १००८ वार वारंवार मथएण वंदामी हुजो॥१॥णमोसिद्धाणं॥नमो कहता नमस्कार हुजो सिद्धाणं कहता सिद्धजीनें॥ सिद्धजी केहवाछे निरंजननिराकार ज्योति सरूप॥ आठ करम खपाई सिद्ध सिद्धालय पहोंचा इकत्तिस अतिसें इकतीस गुणकरी विराजमान पंद्रे भेदी सिद्ध सीद्धा जिनासिद्धा १ अजिन सिद्धा २ तित्थासिद्धा ३ अतित्थसिद्धा ४ सयलिंगसिद्धा ५ अनलिंग सिद्धा ६ ग्रहीलिंगासिद्धा ७ स्त्रीलिंग सिद्धा ८ पुरस लिंगसिद्धा ९ नपुंसक लिंग

सिद्धा १०स्वयंबुद्धी सिद्धा ११ प्रत्येक बुद्धीसिद्धा१२ बुद्धबोहि सिद्धा १३ एक सिद्धा१४ अनेकासिद्धा १५ पांच वर्ण नही पांच रसनही पाचसंठाण नहीं८फरस नहीं२गंधनही ३वेद नही काया नहीं करमनही ओतारनही अलेसी अवेदी अजोगी अकषाई जरानही जनम नहीं मरण नही रोगनही सोगनही विजोगनही ५ज्ञानावरणी करम खय कीया अनंता केवलज्ञान पाया दरसनावरणी कर्मखय कीया अनंता केवल दर्सन पाया २वेदनी करम खय कीया व्याधपीड़ासें रहित हुये २मोहनी कर्म खय कीया क्षायक सम्यक्तकेधणी हूये च्यार आऊखा कर्म खय कीये अमूरती हूए दो गोत्र कर्म खय कीये अगुरलघुहुए पाच अंतराय कर्म खय कीये अनंत सक्तकेधणी हुये एहवा श्रीसिद्धजी महाराज प्रतें हमारी वंदना नमस्कार त्रिकाल त्रिकाल तिखुत्तोके पाटसें १००८ वार वारंबार हुजो ॥२॥ णमो गणधराणं नमस्कार करूं गणधरजी महाराज प्रते ४ ज्ञान १४ पूर्वों के पाठी सूत्रार्थकेगूथनाहार २४तीर्थं करोंके १४५२ गणधरांजी महाराज प्रतें हमारी वंदना नमस्कार त्रिकाल त्रिकाल तिखुत्तोके पाठ पढकर १००८ वारंवार हुजो ॥ णमो आयरियाणं॥ नमो कहता नमस्कार हुजो आयरीयाणं कहता आचार्यजीनें आचार्यजी केहवाजें पाच आचार आपपालें ओरोंको पलावें ज्ञानाचार दरसन आचार चारित्रा चार

तप आचार बलवीर्य आचार पाच महाव्रत पालें ५ इं द्री जीतें ४ कपाय टालें ९ वाड ब्रह्मचर्य पालें ५सुम ति ३गुप्त करी सहित ३६ गुण करी विराजमान५६ बोलोंके धरण हार आठ आचार्यजीकी संपदाके धा रनहार गछ नायक जिन संघ टोला परवरतावें यह वा श्री आचार्यजी महाराज प्रतें हमारी बंदना नम स्कार तिखुत्तोके पाटसे १००८ वार त्रिकाल त्रिका ल हुज्यो ॥ ३ ॥ णमो धम्मायरीयस्स नमस्कार करूं पोताना धर्म गुरु आचार्यकुं ते श्रीपरम पंडित जिन बाणीको प्रकास कर मिथ्यात तिमिरको टालें जिनधर्मको दिपावें सम्यकतरतनकेदातार धर्म उपदेसके उपकार सुध मारगधर्मका बतावें यह वा धर्मगुरु बरतमान श्री ऋखराजजी महाराज प्रतें हमारी बंदना नमस्कार तिखुत्तोके पाटसें १००८ वा र वारंवार हुज्यो ॥णमोउवज्झायाणं॥ नमो कहता नम स्कार हुज्यो उवज्झायाणं कहतां उवज्झायजीनें उवज्झाय जी केहवाढें २५ गुणकरी विराजमान आचारांग १ सू यगडांग २ ठाणाग ३ समवायांग ४ भगवती ५ गिनाता ६ उवासगदसा ७ अंतगढ ८ अनुत्रोव वाई ९ प्रश्नव्याकरन १० विपाक ११ उवाई, राय प्पसेणी २ जीवाजीगम ३ पन्नवणा ४ जंबुद्वीप पन्नती ५ चंद पन्नती ६ सुर पन्नती ७ कप्पिया ८ कप्पव डि सिया ९ पुफिया १० पुप्फ चुलिया ११ वन्हिदसा

१२ग्याराअंग बारे उपांग च्यार मूल सूत्र दसवीकाल क १ उत्तराध्ययन २ नंदी ३ अणुयोगद्वार ४ च्यार छेद सूत्र दशाश्रुत स्कंध १ व्यवहार २ वृहत्कल्प ३ नसीत ४ आवश्यक सूत्र १४ पूर्वके पाठी द्वादशांग वांणिके धरणहार आपपढे औरोंको पढावे एहवाश्री उपाध्यायजी प्रतें हमारी वंदना नमस्कार त्रिकाल त्रिकाल तिखुत्तो के पाटसें १००८ वार वार वार हूज्यो ॥४॥णमो लोए सव साहूणं॥नमो कहता नमस्कार हूजो लोए कहता ढाईद्वीप पंदरा क्षेत्रां मांहिं सव साहूणं कहता सर्व साधूजीनें सर्व साधुजी केहवाछे जघन दोय हजार क्रोरु साध साधवी उतकृष्ट नव हजार कोड साध साधवी छहकायाके दियाल छहकाया के रिछपाल छह कायाके पीहर ५ महाव्रत पालें ५ इंद्री जीतें ४ कषायटालें ९ वाड ब्रम्हचर्य पालें मनसच्चे भावसच्चे जोगसच्चे करणसच्चे मनसम धारणया कायसमधारणया वयसमधारणया नाण संप्पन्ने दंसण संप्पन्ने चारित्र संप्पन्ने खिमावंत वैराग वंत सीतादिक वेदना सहें मरणांति उपसर्ग सहे पाच सुमते सुमता तीनगुप्ते गुप्ता ४२ दोषांके टालनहार २२ परीसाके जीतन हार १० विधिजती धर्मके धारन हार अत अहारी पंत अहारी अरस अहारी विरस अहारी लुक्ख अहारी तुच्छ अहारी अंतजीवी पंतजीवी अरसजीवी विरसजीवी लुक्खजीवी तुछजीवी यहवा सर्व

साधसाधवीजी प्रते हमारी वंदना नमस्कार त्रिकाल त्रिकाल तिखुत्तोके पाठसें १००८वार वारंवारहुज्यो ॥ ॥ ५ ॥ दोहा ॥ अनंत चोबीसी जे नमुं, सिद्ध अनंते कोड ॥केवल ज्ञानी थेवरसवो, वंदु वेकर जोड॥१॥दो य कोडि केवलिधरा, विहरमान जिनबीस॥सहसजुगल कोटिनमुं, साधनमुंनिसदीस॥२॥जोमें जीवाविराहिया,से वेपाप अठार॥प्रभु तुह्मारी साखसें वारवार धिकार॥३॥ सातलाख पृथवी काय ७ लाख अपकाय ७ लाख तेउकाय ७ लाखबाउकाय १० लाख प्रत्येक विन्स्प ती १४ लख कंदमूलकी जाति दोयलाख बेइंद्री २ ला ख तेइंद्री २ लाख चउरिंद्री ४ लाख तिर्यंच पचेंद्री ४ लाखदेवता ४ लाखनारकी १४ लाख मनुपकी जात ४ गति एवं ८४ लाख जीवा जोनसे वारंवार खि माऊं ॥गाथा॥ खामेमीसव्वजीवा सव्वेजीवाखम्म तुम्मे॥ मित्तिमे सव्वे भूयेसु वैरमज्जं नकेणइ ॥१॥एवं मइं आ लोइयं, निंदियं गरहियं दुगंछियं॥सव्वं तिविहेण पडि क्कंतो, वंदामी जिण चोवीसं ॥ २ ॥ चार आवसग पूरा हुवा पांचमे आवसग की आज्ञा ॥ इच्छामि खिमास मणो का पाठ दोवेर कहणा, आवस्सही इच्छाकारेण ॥ सदेसह भगवान् देवसी पायछित, विसोधना अर थं करेमी काउसग्गं ॥ इच्छामि ठामीका पाठ कहणा, तसोत्तरीका पाठ कहणा ॥ लोगस्सका ध्यान करणा ॥ नवकार कह कर॥ ध्यान पारणा ॥ खुली लोगस्स

पढणा ॥ पांच आवसग पूराहूवा ॥छठा आवसगकी आज्ञा ॥ इछामि खिमासमणो दो बार कहणा ॥ पचखान करणा ॥ समायक एक ॥ चोवीसस्था दो बंदना तीन ॥पडकोंनाचार कावसग्ग पांच ॥ पचखांन छह ॥ इन विषे कोई दोष पाप लाग्या होय ॥जो में देवसी अइयारको तसमिछामि दुकडं ॥ दो नमो थुणं पढें ॥ इति श्रावग पडिकमणा संपूर्ण ॥

॥ अथ चोवीसी लिख्यते ॥

श्री ऋषभ अजित संभव अभिनंदन ॥ निरंजन निराकारो ॥ सुमत पदम सुपारस चंदाप्रभु ॥ करग ये खेवापारो ॥श्री जिन मुझनें पारउतारो, म्हारी आवागमण निवारो॥श्री जिन मुझनें पार उतारो, अजी में सेवगचरणारो, श्री जिन मुझनें पारउतारो॥एटेक॥१॥ सुवध सीतल श्री श्रंस वासपूज ॥ मुकत तणा दातारो ॥ विमल अनंत धरम शांति जिनेश्वर, सांति तणा करतारो ॥ श्री जिन० ॥ २ ॥ कुंथ अरहे मल्लि मुनसुव्रतजी ॥ जगत्यारण संसारो ॥ नमीय नेम पारस महावीरजी ॥ सासनरा सिरदारो॥श्री०॥३॥ग्याराही गणधर वीस विहरमांन ॥साधसती गुणधारो॥ अनंत चोवीसीनें नित प्रत बंदुं ॥ तो नमस्कार बारंबारो॥ श्री० ॥ ४ ॥ रागद्वेष दोनों बैरीजीते, अष्ट करम कीये छारो ॥ केवल ज्ञान अरु केवलदरसन, अष्टगुणतुम लारो॥श्री० ॥ ५ ॥ तिरन त्यारन तुम

विरुद सुनीनें, सरना लीयामें तुम्हारो ॥ ऋप लाल चंदकी एही बीनती, तो मेरा करो निस्तारो॥श्री जिन मुझनें पार उतारो ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ महावीर जिनस्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धारथकुल सिणगार ॥ तिसला नंदन जगत आधार॥स्वामी सुंदर सोवन बान ॥ सरणतुम्हारो श्री वृद्धिमान ॥ १ ॥ तुमनामें लहिये संपदा, तुमनामे मनवंछत तमुदा ॥ तुम नांमें दिन दिन कल्यान॥ सर्ण०॥ २ ॥ तुम नामें नही आवे आपदा, भूत प्रेतव्यतर नही कदा ॥ रोग सोगचिंत्या नही जान॥ सर्ण०॥ ३ ॥ दुरजन दुष्ट वैरी बिकराल ॥ तुम नांमें नासें ततकाल॥तुमनामें आदर सनमान॥ सर्ण०॥४॥ ग्रहगोचर पीडानकरे, सर्ण तुम्हारी जो चितधरे ॥ धरम सिंहमुनी भाव प्रधांन, सर्ण तुम्हारी श्रीवृद्धिमान ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दिगांबर मतकी उतपत्ती स्थेवरकल्पी साधु॥ ॥ वांसें है ते लिख्यते ॥

श्री महावीरके निर्वाण पीछे जब ६०९ वर्स गये तब आठमा महा निन्हव बहुतर विसम्वादी शिवभूति वोटिक हूवा ॥ गाथा ॥ छवासएहिंनव्वुत्तरेहिं, तइया सिद्धिगयस्सवीरस्स, तो वोडिआणदिट्ठी रहवीरपुरेस मुप्पन्ना ॥ १ ॥ ओर जिन सेनाचार्य दिगंबर आम्नाके अपने कीये ग्रंथमें लिखताहै॥गाथा॥

छत्तीस-वाससए-विक्रम, निवस्समरणपत्तस्स, सोर ठेवल्लहीये, सेयत्ररू संघ समुपन्नो॥१॥अर्थः—विक्रमरा जासें १३६ वर्ष पछें सोरठ देसकी वल्लभी नगरीमें स्वेतांबर संघउत्पन्नहूवा इत्यर्थं ओर स्वेतांबर मतमें जिनन्नद्रगणि क्षमाश्रमण विक्रम संवत ४०० में हुवा सो लिखतहें॥श्लोक॥ न वाधिकैःशतैः पांद्रः अष्टा ना वीरतोगतैः॥महात्सवे विसंवादात, सोष्टमो वोटि को नवेत् ॥१॥ अर्थः—श्री महावीरसें ६०९ वरष रथ वीर पुरमें दीपकोद्याने आर्य कृष्णाचार्य समोसरे तिन अवसरे-एक राजाका शिवनूतीनामें सहश्रम ल सुनट राजाको बहोत प्याराथा तिसनें माता त था स्त्रीसें क्रोधकर श्री कृष्णआचार्य पास दिक्षा लीधी तब तिहांसें ओर देसमें विचरनें लगे फिर कितनेकबरसा पछें रथवीर पुरमें आये तबराजा वंदनार्थ आयकर गुराकी आज्ञासें शिवनूतीको अ पने घर लाया पहिले विशेष राग करिके रत्तन कंब ळ दीधा ते लेइ गुरुपास आण दिखाया गुरुनें क ह्या की यह बहु मोलका बस्त्रहै एह तुमको लेना जो ग नहीथा परंतु अबतो तुम-इसको अपने सरीरमें धारण करो आगें असा वस्त्र नही धारण करना अै सा सुनते सिवनूति ममता नावसें धरलीया कवी कवी पडिलेहणा करता देखकर खसीहोताथा तब गुरूनें देखाकी-इसको रतन कंबलका ममतनाव होगे

या तब गुरूनें उसके विना पुछे तिस रतन कंब लके खंड खंड कर साधुवाको पग पूछने वास्ते बाट दीए जबसिष्य बहोत क्रोधमें हुया परंत कुछगु रूको कहनसक्या एकदासमें गुरूजीने साधुवाके कलपका व्याख्यान दिया तिसमें ६ प्रकारके कलप के साधु कहे व्हहत्कलप सूत्रसें जाणलेने (छविहाकप्पाठि ईपन्नता तंजहा समाइसंजयकप्पाठिय १ छेडवगाणिय संजयकप्पाठिए २ णिव्विसमाण कप्पाठिई ३ निविठ काइयकप्पाठिय ४ जिणकप्पाठिई ५ थेवरकप्पाठिई ६ तिवेमी) इन छहों कलप स्थितिकी जुदी जुदी मर्या दहै जिसमे जिनकल्पका वर्णनकराकीजिनकल्पी मुनी ८ प्रकारके होतेहै तिनमेंसें सर्व उत्कृष्ट जिनकलपी मुनिके दो उपकरणहै एक तो रजोहरण १ मुखपो तिय २जब सिष्य पूछने लगाकी तुम औसा मारगकी व्रती क्योंनही करते गुरुनें कहाके जंबु स्वामी पछे १० बोल व्यवछेद होगये यथाख्यातचारित्र १ सु क्ष्म संप्रायचारित्र २ परिहार विशुद्धिचारित्र ३ परमा वाधिज्ञान ४ मनः पर्यायज्ञान ५ केवल ज्ञान ६ जिन कल्प ७ पुलाकलब्धि ८ आहारिकलब्धि ९ मुक्तिहोवा १०सो जिनकलपमार्ग इसकालमेंनही तबशिष्यनेकहा क्योंनही जो परलोकार्थी होयतो औसा कठिन मारग धा रण करे सर्वथा परिग्रह रहित होय ते श्रेठहैं गुरूने उत्सर्ग अपवाद मार्गदर्शाया सिष्य प्रतें उक्तं जो धरम

उपकरणहै ते नही परिग्रहमे संजम निर्वाहअर्थहै ॥ श्लोक ॥ जन्तवो वहवः सन्ति, दुर्दश्यामासचक्षुपा॥ तेभ्यः स्मृतंदयार्थंतु, रजोहरणधारणम्॥१॥आसनेशयने स्थाने, निक्षेपग्रहणेतथा॥गात्रसंकुचनेचेष्टं, तेनपूर्वंश्मार्जनं॥२॥तथासम्पातिमासत्वा,सुक्ष्माश्चव्यापिनापरं तेषां रक्षानिमितंच,विज्ञेयामुखवस्त्रिका॥३॥नवन्तिजन्तवोय स्माहन्नपानेपुकुत्रचित्॥तस्मातेषांपरीक्षार्थं पात्रग्रहणमिष्यते॥४॥सम्यक्तज्ञानशीलानि,तपश्चेतोहसिद्धये॥तेपांमुपग्रहार्थाय स्मृतंचीवरधारणम्॥५॥शीतवातातपैर्दंशै,र्मशकै श्चापिखेदिताः॥मासम्यक्तादिपुध्यानम् नसम्यक् साम्बिधास्यति॥६॥तस्यत्वग्रहणेयस्मात् क्षुद्रप्राणि विनाशनम् ॥ ज्ञानध्यानोपघातोवा. महानदोपस्तदैवतु॥७॥यएतान् वर्ज्जये दोपान्, धर्म्मोपकरणाद्रृते, तस्यत्व ग्रहणं युक्तं, यस्याज्जिनइवप्रभुः॥८॥तव सिष्यनें कह्या के ये सब वस्त्रादि परिग्रहमेंहे गुरुनें कह्या की (मुछा परिग्गहो वुत्तो) ममत्व करे तो परिग्रहमें होय इत्यादि उपदेस मानानही तबसिष्यनें कह्या तुमसें यह वृती पलती नही में पालुंगा इमकह वस्त्रगेरु दीये. तिसकी बहन उत्तरानें उनको देख वस्त्रतजदीये जब नगरमें आहारके वास्ते आई तब एक गणिकानें ऊपरसें वस्त्र गेरा तो उसकानग्नपणा दूर कीया भाईसें कहाकी मुझको देवांगणानें वस्त्र दीयाहे जब भाईनें समझकर कह्याके तुं वस्त्र रखले परं

त इसकारणसें स्त्रीको मुक्त न होय ऐसा कथन करा, तब शिवभूतीके चेले२ हये॥ कोडिन्य १ कोष्टवीर २ तब तिनके सिष्य भुतिवल ओर पुष्पदंतनें श्रीमहा वीरसें ६८३ वर्ष पीछे ज्येष्ठ सुदी५केदिनें ३ शास्त्र र चे धवलनामाग्रंथ७०००० श्लोकप्रमाणजयधवलनामा ग्रंथ६०००० श्लोक महाधवलनामा ग्रंथ४०००० श्लोक ए तीनो ग्रंथ करणाटक देसकी लिपीमें लिखेगये ओर शिवभूतीके नग्नसाधु वहोतसें करणाटक देसकी तर्फ फिरतेहैं क्योंकि दणक्कदेसमें शीत कमहै जब उनके मतकी वृद्धि होगई तब महावीरसें १००० वर्स पीछें इसमतके धारक आचार्योंके ४ नाम परसिद्धकीये नं दीसेन देवसिंहनें जैसें पद्मनंदि १ जिनसेन २ योगीं द्र देव ३ विजयसिंह ४ इनके लगभग कुंदकुंद नेम चंद्र बिद्यानंदी वसुनंदी आदि आचार्यो जबहुये तब तिनो श्वेतांबरकी निंद्या तथा हीनता करनेवास्ते मु नीकेआचार विवहारके अपने बुद्धोप्रमाणक छेक जि न वैणक छेक स्वकुबुद्धिकर स्वमत कल्पित अनेक ग्रंथरचे जिनसें श्वेतांबरोको कोईभी साधु नमाने ब हुत कठिन वृती वर्णन करी ओर दिगांबरोनें अपने मनकी ठक्कसे श्वेतांबर धर्मके अवगुण वादकरे परंत सनातन धर्म श्वेतांबरका उत्सर्गापवादमार्ग जा णा नही, एकांतवादी होकर बहोत निंद्या शास्त्रोमें क री सोइ इनके शास्त्र परसिद्धहै जिसको संदेह होय

वहदेखलना श्वेतांबरके शास्त्रोंमे इनके मतकी कहीं निंद्या नहीं इस वास्ते निश्चे मालुम होताहै कि स्वे तांबर मतमेसे दिगांबरमत निकला परंत इन दिगां बरके ग्रंथ करताओने दिगांबर मतके गुरुका विछेद करदीया क्योंकि एसी कठिन वृती पालने वाला भर त क्षेत्रके इस पांचमे आरेमे होनहीं सक्ता क्योंकि एसा संघेण अर्थात् बलधारक सरीर नहीं होता औ र एकसा समे आरोका नहीं है द्रव खेत्र काल भाव की अपेक्षा नहीं जाणी तव दिगांवरोमे कुपाइ उत्प न्न नई जव इनके ४ संघहुये॥काष्टासंघ १ मूलसंघ २ माथुर संघ ३ गोप्पसंघ ४ चमरी गायके वालोंकी पीछी काष्टासंघमें रखतेहै॥मूलसंघमें मोर पीछीरखते हैं॥माथुरसंघमें पीछी रखतेनहीं॥ओर गोप्पसंघमें मो र पीछी रखे ओर स्त्रीकोभी मोक्षकहेहै॥बाकी ३ मे स्त्रीको मुक्त नहीं कहे ओर गोप्पसंघवाले वंदना क रने वालको धर्म लाभकहे॥ वाकी ३ धर्म वृद्धिकहे॥ अब इस पांचमे आरेमें इसमतके २० पंथी वा १३ पंथी वा गमान पंथी इत्यादि भेद वरतमान कालमें वरत रहे हैं तिनमे २० पंथी पुराने कहलातेहै॥बाकी दोनो नवीन कहलाते हैं॥अब इनके मतका सरधान तथा शास्त्र ओर श्वेतांबर आम्नासे कितनेक फरक है ते चर्चा विस्तार सहित ग्रंथ संग्रह करता प्रथम

का परिक्षाकी वचनका लिख्यते

श्री जिनराज वीतरागदेव मारगे मुक्तिनो प्रका स्यो पिण पंचमा कालना दोषथी आतम ग्यानको जे द अम्ह सरीखा मोही जीवाने समझावो कठिन छे॥ सुलभबोधी हलुकरमी जीवछे अवस्थित जे जीवनी पाकी थईछे ते उत्तमजीवाने आतम ग्याननो रस चा स्योछे ते संसार समुद्रथी तिरयाछे तिरेछे, अने तिर सी पिण हिवडा सुध सामगरी पिण कठिनछे सुध ध रम परूपक थोडा दीसेछे अने गाडरी प्रवाहवत दे खा देखी पक्ष ग्राही आबोध जण मत पक्षना वा ह्या घणादीसेछे ॥ पिण जिन राजना वचनामें खांच करणी उचित नहीछे परिक्षा करणी उचित छे॥ परि क्षा सुधसमकितनो कारणछे सम्यक्तछे ते मोक्षमारग नो मूलछे ते भणी सम्यक्त धरमनी परिक्षा बुद्धि अ नुसार किंचत कहे छइये, वीतरागदेव श्री जिनेंद्र देव शास्त्रपरुप्या ते मांहिं कह्योछे॥नाणदंसणस्सन्नाणं नाणे विनो न हुंति चरण गुणा, अगुणस्स नस्थितोमोखो॥ नत्थी अमोखस्स निवाणं ॥ १ ॥ इहां दंसण सम्यक्त ने कह्यो, सुध दृष्ट करीने निज स्वरूप देखवो, ते हिज सम्यक्त कहिजे ॥ ते सुध समकित विना अने क क्रिया कलाप तपश्चरण परमुख करे छे ते सरव बंध रूपछे पिण मोक्ष रूप नथी अरु सुध समकित सहित क्रिया तपश्चरण मोक्ष रूपछे॥ दंसणभठाजी वा आराहए दव्वचरणसुहजोगे न सवेहिसुभवंधो मो

खरूससाहणो नथी ॥ १ ॥ इति वचनात्, सम्यत्त
धरम तो मूलछे ते सम्यक्त दोय प्रकारनोछे ते वि
वहार सम्यक्त १ अने निश्चै सम्यक्त २ ए दोय, ने
द विचारवा जोग्यछे जे जीव संसार भ्रमणथी भय
नक जीव संसारथी मोक्ष थावाने अभिलाषीछे तेहि
ज जीव सुध सम्यक्तनी परिक्षा करिस्ये ते भणी अ
हो भव्यजीव मत पक्ष छोडी जिनराज श्री जिनेंद्र
देवनां बचननी सुधता करीने कीजे ॥ इति उपदेशः
हिवे बेकर जोमी सिष्य प्रश्न करे छे अहो दीन दया
ल संसाररूप समुद्रना तारक गुरुजी, सम्यक्तनो
निश्चय बिवहार पणो जिमछे तिम कृपा करिने सुणा
यो चाहिजे॥ हिवे गुरु उत्तर कहे छे ॥ अहो सिष्य,
निश्चय सम्यक्तो एह कहिजे जे जीवने काल
लवधिना जोगथी दंसण मोहनी जे सम्यक्तावरणी
कर्म ते सम्यक्तनो ढांकणो छे ते करमना स्थिति पा
कां क्षयोपसम भावथी ॥ ते आतमनो उज्वल पणो
थयो, ते गुणथी, पुदगलनी जे आसा अने पुदगली
क सुखथी उजग्या आतमाना निजगुण ॥ सम्य
क ज्ञान सम्यक दरसण॥सम्यक चारित्र गुणमें रमण
थाय निज स्वभावमे रमण छे आत्मा अनुभवमे रक्त,
छे, निश्चै सम्यक्त कहिज्ये छे ते॥उपसम १ क्षाइक२
क्षयोपसम ३ भेदछे तेहना गुणस्थान क्रमारो इण
थी जांणज्यो अत्र विस्तार नहीं लिख्यो ॥ एहनो बि

चार कठिनछे, ते तत्ववेता विचारस्ये अने विवहा
र समकित ते कहिज्ये ॥ जे सम्यक्तीनो विवहार सु
ध देव १ सुधगुरु २ सुध धर्म सास्त्र ३ जेहनी प्रती
त ज्यारा हिरदाविषे थईछे॥ कुदेव कुगुरु कुसास्त्रनी
रुची नही करे त्याने सेवन नही करे देव गुरु धर्म
ने नमस्कार नही करे इत्यादि कतव्यथी विवहार स
म्यक्त कहिज्ये॥ अत्र सिष्य प्रश्न करेछे निश्चै सम्यक्त
नो विचार सुक्ष्मतासुं जणाय मिण विवहार सम्यक्त
नो भेद दयाकरीने बतायो चाहिज्ये देव गुर सास्त्रनी
परिक्षा किणभांत कीजे ॥तब गुरु उत्तर कहेछे अहो
सिष्य, देव अरिहंत ३४ अतिसय ३५ वाणी १८
दोष रहित १२ गुण ८ महा प्रतिहार्य एक ह
हजार आठलक्षण करिनें संजुक्त सो देव॥१॥ओर रागी
द्वेष संजुक्त आयुध आभुषण वाहण करीनें सहितते कु
देव ॥अनें गुरु साधु सुध मारग परुपक२७गुणे संजु
क्त ते गुरु॥अनें असुध मारग परुपक जिन बचनोंसें
विपर जे, परुपे ते कुगुरु ॥२॥अनें जे सास्त्र मांहिं पू
र्वापर बिरोध नथी जे सास्त्रमें किणी मतनो नाम
धरीनें निंदा नथी षट द्रव्य नव पदार्थनो द्रव्य गुण
परजाय भंग नय निक्षेप परिणाम सहित छे ते सास्त्र
३ अनें जे सास्त्रमे पूर्वापर विरोधछे, नाम लेइनें निं
द्या वचनछे ॥ एक सास्त्रनें बीजो सास्त्र उडावेछे
ते रागी द्वेषी, मनुष्य कृत्य मत पक्ष थापकना कृत्य

ते कुशास्त्र॥ ३॥ सिष्य पूछे सास्त्र कुशास्त्रनी परि
क्षा करयांसुं गुण नीपजे॥ गुरु कहे सास्त्र कुसास्त्रसुं
देव गुरु धर्मनों भेद जणायछे तिण कारण सास्त्र
कुसास्त्रनी परिक्षा अवश्य कीजे ते किस्या भणी॥
सास्त्र सुणतां ग्यान विग्यान परगटे॥ कुसास्त्र
सुणवाथी मिथ्यात प्रदीपन थायछे॥ ते माटे, सम्य
क्ती जीवनें कुसास्त्र सुणवो वरजेछे अत्र प्रश्न अहो
गुरु ग्यान सागर सास्त्र तो नाम घणाही कहावेछे
ते सास्त्र कहिज्ये अथवा कुसास्त्र कहिज्ये हिवे उत्तर
अहो भव्य पंचम कालमें जेतला मत मतातरछे ते
सवही सास्त्र करी मानछे पिण जे एक सास्त्रने बीजो
सास्त्र उडावेछे सास्त्र सास्त्र परस्पर लडे एकनें
बीजो झुटो कहेछे अनें श्रोता पिण पक्ष झालीनें निर
णय न करे असा शास्त्र सुणवाथी भव भवमें भ्रम
णों पडस्ये तेमाटे कुशास्त्र सुणवो वरजे कुसास्त्र सुणवा
थी समकित मलीन थायछे असो सांभली श्रोता पूछे यु
क्ति युक्तिकरी समझावो किण किण भांतिसुं पूर्वापर वि
रोध जांणज्ये इम पूछ्यां गुरु कहेछे परितिक्ष परिमाण
थी परिक्षा सांभलो अनमतीनां सास्त्रानों विरोधतो क
हां तांई कहिज्ये पिण लोकांमें जैनी कहावेछे २४
तीरथंकरांना वचनानें परिमाण कहेछे॥ पंच परमेष्टी
सुमरे छे॥ अने विवहार पिण जिन धरमनो राखेछे,
भोजन कंद मुलादिकनो आहार त्यागेछे पिण शास्त्र

कुशास्त्रनी परिक्षा नकरें जिम करछी सरव रसमें फिरे पिण जड़ता स्वभावसुं स्वाद न चाख सके तिम मत माही शास्त्र सुणे पिण गहिलता स्वभावसुं परिक्षा नकरे येहवा अबोध जननें सम्यक ग्यान दरसण किहांथी थाइ अपीतु नथाइ तिन कारणसुं सुध सम्यक्त अभिलाषी शास्त्रना पूर्वापर वचन मिले ते परिमाण कीजे तब सिष्य पूछ्या तमने गुरुजी किसा शास्त्र परिणाम कीधा तव गुरु कहेछे ॥ श्री जिन भाषित गणधर रचित आगम हमने परिमाणछे, तव सिष्य कहे अहो गुरुजी सास्त्र तो सवही सर्वज्ञना वचन जाणेछे ॥ इस पछयां गुरु कहेछे जे शास्त्रमें निंद्या वचन बिरुद्ध वचनछे ते सरवज्ञना वचन नथी ते छद्मस्तना वचन जाणज्यो जेहनें प्रत्यक्ष पणो दिखावेछे अनमतीना शास्त्रमेतो विपरजय वचन घणाछे तेहना बिस्तार आगले कहिस्युं पिण हिवडां वरतमान काले पंचमकालना दोसथी जिणमतमे पिण मतना बाह्या जीवाने मत पक्ष थापण भणी विरुद्ध वचन घणा कहेछे तेहना ब्योरा दिगांबर मतना शास्त्रमें सितांबर शास्त्रानी निंद्या घणी करेछे ते मांहिं केतलाएक कूड़ घाल्याछे ते दिगांबरना शास्त्र कहेछे स्वेतांबरना शास्त्रमे एतला कूठा बचन लिख्याछे तेहना ब्योरा केवलीकुं केवली नमस्कार करे, केवली स्तुति पढे २ निंदक मारेका पाप नहीं ३ श्री

महावीर-भगवानकीबेटी मालीने व्याही ४ कपिल नारायणने केवल ज्ञान उपन्यो अने कपिल धातको खंडसुं अठे आयो ६केवल ज्ञान उपन्या पछे नाच्यो ७ और कोई साधुको मास बहरावतो मासका आहार करे ८ सुलसा श्रावकणीके देवतासे पुत्र हुवा ९ चक्रवरतके छह हजार अस्त्री १० त्रिपृष्ठवासुदेवने छिपी के कुलमे जन्म लीयो ११ चौथे आरे असंजमीयां कु वृती पूजते १२ प्रलय कालके समेमे वहोत्र जुगल का देवता उठाय लेजाय बिलामे पहुचावे १३ जुग लीया परस्पर लडे १४ बाहुबलने मुगल रुप धारयो १५ सावतफल खातां दोष नही १६ अरु पहिले स्व र्गका स्वामी दूजा इंद्र होय अने दूजा स्वर्गका स्वा मी प्रथम इंद्र होय १७ मुनीने कामी जाण श्रावग बनीता देह स्थिर करे १८ गंगादेवीसे भरतजीने ५९ हजार बरस भोग करया १९ अश्वगणधर २० इत्यादिक बोल कह्या ए स्वेतांबरनां सास्त्रमे कह्या ते दिगांबर कहे छे ते झूठ कहे छे. ए पाछला बोल स्वेतां बरनां मूल सास्त्रमे अंस भी नही पिण जो सत्र गण धर रचितहे ॥ तिण मांहितो मूल नथी अणहुंता बो ल लिख्याछे ते झूठा बोल लिख्याछे ते माटो झूठछे जिनमे ए बोल लिख्याछे अरु उनकुं सास्त्र करि मा नेहें तो सास्त्र कोणसा होइगा ॥ सास्त्रतो एक भवमे दुःख दाई हे कुसास्त्रकी सरधानसे भव भवमे जनम

वे ॥ अत्र शिष्य कहे कोई बचनाकंबर लेईने कहेगो ये बोल झूठ नही लिख्या ॥ तब गुरु उत्तर कहे छे, जो कहे झूठ नहीं उनसे कहणा ॥ जिन सास्त्रमे एह बाता लिखीहै तिन सास्त्रका नाम बतावो, वह सास्त्र हम तुम्हारे आगे रखतेहे ॥ तुम हमने लिखान ही दिखावोगे, तुम एकांत पक्ष ग्राही ॥ हठग्राही, मिथ्याती ठहरोगे ॥ जिन सास्त्रमे एसा मोटा झूठ है अरु जो सास्त्र करी मानेगे, उनका दोष अनेक न चलगे दुःख दाइछे ॥ मिथ्यात पुष्ट थाइछे, असा सास्त्रने त्यारण तिरण जाणी सुणतां सम्यक्त रूप रत न हारिजाय, इम जाणीने कुसास्त्र सुणवा बरजे ॥ इतिहेतु ॥ अरु दिगांबर मतना वाला और निंदा स्वेतांबरना सास्त्रनी करेछे, स्वेतांबरना सास्त्रमे न रत दर्पण यहे केवल ॥ १ ॥ माता मोरादेवीने गजहोदे केवल ॥ २ ॥ चेलाके कांधे चढाने केवल ज्ञान उपन्यो ॥ ३ ॥ आहार करता आहार साह्मो थयो चेलाने समता करताने केवल ॥ ४ ॥ एणे प्रकारे केवल ज्ञान उपन्यो, तो गाहिलानी परे कहे ॥ ए बचन देवढि क्षिमासमणनाछे, ते देवढिक्षिमाश्रमणने येहवा झूठ लिख्या काइ निग्रंथपद विना केवल ज्ञान किम परघट थाय इम काहेने अबोध जणने भ्रमावे छे, आपणा मनमें अभिमान राखे, अज्ञने चलो ज्ञानछे, पिण ए ४ बोलानी, निंदा करेछे ॥

ते जिन मारगनी सैलीना अजाणछे, सुधी वातने उ लटी वोलेतो ॥ आपणा जीवने दुःखदाईछे ॥ जिमद्द ष्टांत ॥ कोई पाडोसीन अपसकुन करवा नणी पोता नों नाक कटाइने, पाडोसीने सनमुख आवे ते पा डोसीने तो अपशकुनथयो ॥ १॥ कारजमें घातथया पिण नाक कटावन वालाने १ वारतो हरप मा न्यो पिण पछे सारोही जन्म लजावे उपहास करावे, तिम सुध वस्तुनी निंद्या करता मिथ्यात मोहनी कर म बंधावे, ते घणो संसारमे दुःख पामस्ये ॥ इम क ह्यां श्रोता कहे छे, एतो परितक्ष परिमाण दीसेछे ॥ निग्रंथ पद विना केवल किम ऊपजे, इम पछ्या गु रु उत्तर कहेछे ॥ एतो सत्यछे, पिण दीघ वुद्धीसे वि चारयांथी सुखे समझो॥ द्रव्य निग्रंथ ॥ १ ॥ बीजो नाव निग्रंथ ॥ २ ॥ ए विचारवो चाहिज्ये द्रव्य नि ग्रंथ ते द्रव्य पुद्गलनी गांठरहित नाव निग्रंथ ते मु नि व्रतना घातक करम काल लब्धथी क्षय थया ॥ तद नावनिग्रंथ पद पाम्यो तथा चारित्रावरणी क रम क्षय हुवां केवलग्यान प्रगट थवानो कारणछे, पिण आत्म करमना स्वरूपना अजाण मछरतादिक संयुक्त अबोध जण कुहेतु लगावेछे नोलाजीवाने वि प्रतारेछे, पिण साख्र देखतांतो॥ निसर्ग ॥ १ ॥ उपदे स ॥ २ ॥ ए दो कारण सम्यक्त तथा ॥ ज्ञानना ॥ क हेछे ॥ ते कारण विचारता तो ए ४ ने केवल

उपजावो सत्यछे, अने बाज दिष्टी मत पक्ष ग्राही अंतरात्मानो अजाण एहनें निंदछे ॥ मिथ्यात मो हनी करम बांधेछे तब सिष्यकहे, स्वामी नोवनिग्रं थं पद किण नातसु जाणजे तब गुरुकहे अंतरात्मा १ बहिर आत्मा २ सुधआत्मा ३ ए तीन आत्मानो स्व रूप जाणयाछे जहनें यहनो जमं नथी अने जे अजा णछे ते मिथ्यातनी गहिलतासु ॥ मद्य पानीनी परे, अचेत थई रह्याछे ॥ तहनें अंतरातमा कह्योगी बहि रातमा सुधात्मा, तीननो नेद स्यु जाणे ॥ अ ने दिगांबर मतनां, सास्त्रमें कह्योछे, अपूर्व करण ॥ ॥ १ ॥ जथा परब्रत करण ॥ २ ॥ निब्रत करण ॥ ॥ ३ ॥ ए ३ करण घणां सास्त्रमें छे, तिहां पिण करम नो क्षयथी ॥ आतमांनो सुध पणाथी तीन करण क ह्याछे, तिण न्यायें जोवतां ॥ केवल ज्ञान उपजवो त दावरणी तद गुण घाती करमनो क्षयथी केवल उप जेछे, तथा गुणस्थान मारगणा ॥ गोमठ सारमें, क होछे, तिहां पिण करमनो परकिरत क्षिपवानी गुण नी श्रेण चढछे, इण न्याये बिचारतां तो नरतां दि कने केवल उपजवो सत्यछे अने जे निषेद करेछे ते जि न मारगणा अजाणछे ॥ इति उत्तर ॥ अने ओर पि ण कहछ स्वेतांवरना सास्त्रमांकेवलीने रोग ॥ १ ॥ के वलीने आहार ॥ २ ॥ केवलीनें निहार ॥ ३ ॥ केव लीनें विहार ॥ ४ ॥ केवलीनें उपसर्ग ॥ ५ ॥ ए बो

ल केवलीनें कहेछे ते सांभलीनें अण विवेकी पुरष जांणें ॥ ए वात विरुद्धछे, ते माटे पंचम कालीनें अ जाणतां जिन वचनानी निंद्या करे छे, पिण पोता ना पगनें कुठार वाहेछे ते घणा दुःखनो कारणछे दि गांबर मतना ग्रंथमध्ये पिण रागादि केवलीनें सं भवेछे॥तेहनो ब्योरा ॥ सुधानुभवधारी आत्म तत्व वेता जिनधरमना अनेकांत स्वरूपना जाणजो ॥ कृ पा करिनें ते परोपकार निमते उपदेस करिनें जि न वांणी दिढावेछे ॥ हे भाई तुम कहो हम जैनाश्रि तवां ॥ पिण जैन धरम रहस्य जाणता नथी दीसो छो ॥ तेहनो ब्योरो दिगांबरके ग्रंथोमें गोमट सा र गुणस्थांन मारगणामें १३ मे गुणस्थानें ४२ प्रकतिनो उदय कह्योछे ॥ ते ४२ मांही साता असा ता दोनो प्रकृतिनो उदेछे अने ८५ प्रकृतिनी सत्ता छे ॥ तेहनो उत्तर॥कोई कहेगो ४२ प्रकृतनो उदेछे, पिण जरी जेवरी समानछे इम कहे तेहने पूछीए मनुष आऊनो उदेछे॥ ते पिण जरी जेवरी समानछे, तेतो भोगव्या विनां मोक्ष क्योंन जाय, इण न्यायें साता असाता भोगव्यां विना मोक्ष किम जाय, उ दे आवछे ते भोगव्या विना मोक्ष किम जाय इम देखतां निश्चे नयनी अपेक्षाये चारीत्रावरणी करम काल लबधना प्रयोगथी क्षय हुवां केवलग्यान पर गट थाइछे घातीया करमनी प्रकृति स्थिति सुध अ

नने अनित्यादि भावनाथी अनुक्रमे ॥ क्षय थया केवल ग्यान ऊपजे ॥ तो किसो संदेह छे पिण ऐसो बिचार ॥ सुबोध जनने झलकस्ये, क्षपन सार लबधि सारनो ॥ रहस्य विचारता, जे करम क्षय थयो ॥ ते क्षयथी, क्षायक निज गुणनी लबधि उपजी ॥ पिण जे करम उदेछे, तेहना उदेथी ॥ जीवने साता असाता क्षुधा तृषानी संभवछे ॥ इतिज्ञेयं ॥ तथा समयसार समाधी तंत्र चरचा सतकमें ११ परीसहनां उदेछे, तेरमे गुणस्थाने कहेछे जे बेदनी करमथी जे परीसह थायछे ते केवलीने कह्या छे ॥ तिहा क्षुधा १ तृषा २ सीत ३ उष्ण ४ दासमास ५ चरिया ६ सिज्या ७ बध ८ रोग ९ तृणस्पर्स १० जल ११ सर्वार्थसिधी टीका नवमा सूत्र मध्ये कह्या परीसह कह्याछे, ते साह्नना अर्थ उलटा कलकेछे ते कहे छे क्षुधा तृषा परिसह जरीजेवरी समानछे इम कहे ॥ तेतो सत्यछे पिण आउखानी जरी जेवरी समान छे ते पिण क्षय थया बिना मुक्ति न जाय, तिम बेदनी ॥ पुदगलना ॥ सुभासुभनें संजोगथी, क्षुध्या तृषा उपजे छे ॥ जद केवलीनें इछा अने राग द्वेष न उपजे ॥ किम मोहनी करम क्षय गया तेहथी, अनें बेदनी करमनो उदेछे, तथी पुदगलने विपाकादिछे ते कारणथी ॥ साता असाता क्षुधा तृषानो उदेछे, निरागी पणे पुदगलने आहारे छे ॥ इम कह्या थका स

लि पक्षी कुहेतु लगावेछे नरकादिकमें जीव दुःख पावेछे तृषा लोकमे असुभ पुदगल केवल ज्ञानमे सर्व दीसेछे ॥ ते दीखतां केवल ग्यानी आहार किम करे तेहनो उत्तर केवलीने किसो राग द्वेष छे दुगंछादी करम क्षय थयाछे ते माटे ए कुहेतु झूठो दीसेछे ॥ इम उत्तर पढ्ता हेतु कुहेतु घणाछे; पिण एक अर्थ पूर्वीरछे ॥ घातीया करमना क्षयथी, केवल ज्ञान थयो ॥ पिण क्षुधा तृषा किसा करम क्षयथी नहोय, ग्यान अरुणी ॥ पदार्थ ज्ञेय गुणछे पिण पुदगल पलटण कहांथी आयो ॥ इम पुछ्यां सूधी सरधा नउपजे, पक्षना हटथी अजोग वचन काढे ॥ जिम दृष्टांत॥धतूरो खाया स्वेत वस्त पीली दीसे, कोई कहे ए वस्तु स्वेतछे ॥ पिण पीली नहीछे, ते झूठा पक्ष झालीने ॥ पीली थापवा नणी अनेक, कुहेतु लगावे ॥ पिण धतूरो उतरयां विना, स्वेत न कहे ॥ तिम पक्ष छोड्यां विना सुध सरदहणा न होय ॥ इति विचार देखो, अहो गुणज्ञश्रोता॥ पक्ष छोडी, नीगे कर विचारो, ॥ जिण वाणीका रहस्य देखो ॥ सास्त्रका मूल अर्थ समझो केवलीने आहार निहार उपसर्गही एम उत्कस्ये, जिम दृष्टांत कोई बिलोरका खंडने हीरा मान गांठीमें बांध्यो ॥ तब उस पुरषको कोई बुद्धिवानने हीरा और बिलोर की परिक्षा सिखाई जद आपणा मनमें बिलोर खं

ड जाएगी ॥ तिम येह सास्त्रनों परिमाण दिखायो ते समझ्यां सुधी सरदहणा होइस्ये॥इति ज्ञेयं॥ औ र हमारे सतगुरु ग्यान दाता जिन मारग प्रभावक धरम बुद्धि दाता ग्यान समुद्र गुरांनें हमारे सरीखे ज्या मोही जीव पामर, जीवा ऊपर भला करया जिन धरमना मारग बताया जिन वाणीनी परिक्षा बताई तेहनें, ऐसी विध बताई ॥ जे जे सुत्र गणध र बचन निरवद्य बचने काल वचन नय करी संयुक्त ऐसा वचन रचित सूत्रहै तिणमें प्रथमानुयोग १ चरिणानुयोग २ करणानुयोग ३ द्रव्यानु योग ४ हे, एहवा सूत्रछे॥ जिनमें हमारे संदेह कुछ नहीहे, अरु छदमस्त आचार्यां कृत ग्रंथ घणाहै, तिणमें पिण ४ अणुयोगहे नव पदार्थ षट द्रव्यना निरण यहे पिण छदमस्त पणानी लहिरसुं कोई वचनका सं देह पिण होइ तिसका पक्ष न करणा जिण ग्रंथामें जिन भाषित सूत्र प्रमाण जो वचनछे अनें उपदेस रूप सब सत्य जाणेछे॥ पिण जिन ग्रंथाकी साख नही ठहरती जैसें टकसाली रूपक एक टक सालसे बाहिरका रुपक एतला अतर गणधर र चित उर छदमस्त रचित ग्रंथमेंहे॥ ऐसा सुध उपदेस हमारे सतगुरुकाहै॥ अने ऐसा मतप प्रत्यक्ष दीसेहै ग्रंथामें प्रत्यक्ष झूठ वचन सुणेहे पि ण मद्य पानीनी परें गहिलतासुं समझे नही ए ग्रंथ

में प्रत्यक्ष विरुध वातहै ॥ निरणो करयो जोइज्ये सो निरणों नांहि करे ॥ एक पुराणमें लिख्या कीचक नरक गया ॥ १ ॥ बीजे पुराणमें कीचक राजा मुक्त गया, वहुर सीता चारित्रमें सीताका पिता जनक ॥ माता विदेहा, भामंडल सीता जुगल पणें जनम्यां ॥ पद्म पुराणमें रावणकी बेटी मंदोदरी सीताजोनी माता ओर एक पुरानमें श्री भगवान नेमनाथ बाईसमां जिन राजना गर्भ जन्म कल्यानक सोरी पुरमे थयां ॥ ओर बीजा पुराणमें दोइ कल्याणक द्वारकामे थयां द्वारकामे सोरीपुर पाडा कहे॥ अरु सिखर महातम में सिरखजीकी जात्रा करे, सो नरक-तिरजंचकी गति न जाय, अरु पदम पुराणमें रावण लक्ष्मण, दोनानें सिखरजीकी जात्रा करी ॥ रावणने दिगबिजय करी जद लक्ष्मणजी कोडासिला उठाइवानें गया, जब अरु वह दोइ बिलयमें पहुंच्या इत्यादिक ठाम २ बिरुध वचनछे पिण पंचम कालना दोसथी आंधाने आंधा मारग बतावे छे ऐसा बिरुद्ध वचन संजुक्त सास्त्र सुणनें अबोध जण भरममें पड्या सुणेंछे, सुध न करे ओर कोई बतावे तो जैसे नकटाने दरप्पण दिखायां खीजे तिम क्रोध ऊपजे परिक्षा परधानी होइ सो विचारे हिवे स्वेतांवरना सास्त्रनी दिगांवर खंमण इण बोलासुं करेछे, स्वेतांबरी स्त्रीको महा व्रत कहे ॥ ओर मुक्ति कहे॥ ए बात सुणनें अ

वोध जण वोधा लोक भरममें आवे एहनों न्याय कों, ई कहे मैंतो वाऊ पुत्रगों तिम ए पिण जाणवा ॥ ते किम, गोमट सार आश्रव तृभंगी चरचा सतकमे देखो नोंमा गुणस्थांन ताई ॥ स्त्री १ पुरष २ नपुंसक ३ ए तीन वेदनो उदे कह्योछे ॥ घणा सास्त्रमें नोंमा गुणस्थांन लगे स्त्री होइ, पिण छठो न होइ ॥ बुद्धिवंत होइ सो विचारे, आंख सहित पुरपने दीपक उद्योत करे, पिण अंधे पुरपने दीपक उद्योत न करे तिण द्रष्टांते रूढ पक्षीनें ग्यान आवे ॥ नोंमा गुणस्थानतो होय, अने महा व्रत न होइ ॥ इसीं विप्रीत किम संभवे, और कोई सुबुद्धि पूछेतो कु हेतु लगायने भरमावेछे, कुहेतु इम कहेछे ॥ नोंमा गुणस्थान भाव इस्त्रीने द्रव्य इस्त्रीने नथी, इम सुणनें मंद बुद्धो हरष माने ॥ अने जाणे साचो कह्यो पिण तेहने पूछे द्रव्यइस्त्रीमे घणा मैला परिणाम होय, तथा भाव इस्त्रीमे मेला परिणाम होइ ॥ भाव असुद्धथी द्रव्य सुध होइ अक नही, तद कहे पूर्वापे क्षया अस्त्रीछे पूर्वे ॥ पुरुपने इस्त्रीना परिणाम हुंता, त अस्त्रीनें नोंमा गुणस्थान कह्या छे ते पिण विपरजय वचन दीसेछे॥ इम करतां तो अनतानुबंधी अप्रत्याख्यानी ॥ प्रत्याख्यानी परमुख प्रक्रतिनो पिण उदे कह्यो जोइज्ये ॥ इम जाणी सुबोध विचारेतो स्त्री नें महाव्रत अस्त्रीने मुक्ति सुखे संभवेछे, ति

ण किण ठामे गाथा पिणछे ॥ पट पाहुडना तीजा पा हुडा मध्ये गाथा ॥ वीसनपुंसकवेया इत्थी वेयाहुंते चालीसा, पुवेया अमियाला समयणे गेणसि ऊति॥१॥ तथा एह गाथा गोमठ सारमे कहीछे ॥ इति बचनात् ॥ अस्त्रीनें मुक्त कहीछे॥दिगांवर कहें अस्त्री असुद्धछे, तेहथी मुक्तनही॥तेहनें पूछीए अस्त्री असुद्ध छे तो पुरप पिण असुद्धछे सप्त धातु सप्त उपधातुछे ते सर्व अपवित्रछे इमजाणीने सुध विचार करो जद मुखें समझस्यो, जिम दरप्पणमें सूधो मुख करी देखे सूधो दीसे ॥ वांको मुख करीने देखता वाको मुखदीखे, तिणन्यायें निज गुण निज स्वभाव देखता तो सर्व वात सूधी परगमें ॥ विवहार दृष्टे, खेंचता उलटा परिणाम परिगमें ॥ और दिगांवरी कहे, स्वेतांबर सुद्र का आहार लेवें ॥ इम करिने स्वेतांवरनें, निंदेछे तेहनो न्याय इम एछजो ॥ चौथा आरामे ४ वर्ण का वरताराहोता, च्यारुंही वर्णका खान पान मिलता था ॥ कदाचित् परिणीजन पिण होइथा सो मिल ब्राम्हणकी बेटीसे परणेतकी इछा कृष्णजीने करी थी तेतली प्रधानने पोटला सुनारी व्याहीथी ॥ इण कारणे शुद्रका आहारकी निपेधनही, सास्त्रामे अब पंचम कलूकालमें श्रावक कहावे छे ते पिण विरुद्ध दोपी ठहरेछे, किसवास्ते प्रथमता अग्रवाल खंडलवाल परमुख क्षत्री वर्ण छोड कर, न्याति वांधीछे ॥

अने आपणा मनमे वैस्य वरणमे ठहरेहे ॥ पिण चो
था आरामे वैस्य वर्णसेथा, उंसवर्णमे ठहरोतो ॥ अ
गरराजासे उतपति क्यों कहते हो अरु अगरर
जा क्षत्रीथा मो मांसा आहारीथा तुम वैस्य किस
रीतिस्युं कहोगे इण न्यायसे बर्णसे बिवर्ण थया ॥ शु
द्र आपणी जातिसे पूराहे तुम सुद्रके आहारकु अ
जोगी कहोतो लोग किसका कहोगे कदाचित मांसा
आहारीका घरका आहारीनो हीलणा कहोगे तो
मांसा आहारीने सिष्य करणा कैसे ठहरेगा पदम
पुराणमे राजा सिवदास मनुषका मुरदार मांस खाया
तथा पबे बालक मांस खाया ते पातर सुध किम थ
या तो मुनी पद किस पाम्यो ॥ ते मांसा आहारीने
सिख कीधोतो मांसाहारीतो घरनो आहार किम
निषेध्यो ॥ पिण जे पात्रमे मांस रांधे ते पातरनो
आहार न लेवे, मांसना संघटा नणी न लेवो ॥ अ
हो भव्य सुध अनुभव विचारने कुलाभिमान छो
डिने बिचार करता उचितहै ॥ पुनः दिगांबरी कहे
स्वेतांबर घरघरकी भिक्षा करे हे॥ उपाश्रय जमने कि
वाड जमने आहार करे ॥ तेहनो उत्तर, रुठजो, यह
वा अबोध जण, आपणा घर देख्या बिना मूरख
तासुं कहेछे ॥ जिसका परिमाण, मूलाचारमे, जत्या
चार में ॥ आहारना ४६ दोष कह्याछे, सुबोधजण
बिचारस्ये, भ्रामरके आहारमें अंतरायतो संभवेछे

पिण आधाकरमीयादी दोष नामरके आहारमें किम संभवे, थापना उद्देसिक परमुख मिश्र जाति ए दोष किणरीतिसें टलें ॥ अने जाचना परीसह अलाभ परीसह किण रीतिसुं होइ पिण मूलाचारने अनुस्वार घरघरकी भिक्षा संभवे, एक घरकी भिक्षा मुनीनें संभवती नही अने अभिग्रह पिण कोई कोई घर घरनी भिष्या विना नही दीसेहे ॥ इतिज्ञेयं॥ओर दिगांबरी कहे छे स्वेतांबर सास्त्रमें मुनीजे वस्त्र धारण करे छे ते वस्त्र परीग्रहछे ते माटे वस्त्र धारीने पांच महा विरत न होइ सर्वथा परिग्रह त्याग न थयो इम कहेछे ते अजाण दीसेछे, ते किम, परिसह २२ कह्या ते माँहि, पहिलो क्षुध्या परिसह ॥ अने छठो अचेल परिसह, ए दोय परिसह कह्या ॥ ते दोइ एक सरीखा विचारज्ये, भोजन आछादन ॥ देह धारण भणी कह्याछे, पिण एकेक मूरख पक्षना ग्राही एक आंखने मींचे, एक आंखने खोले ॥ तेहने जिन धरमनो लाभ किहाथी थाइ तेहनो इम विचार ॥ क्षुधा परिसह उपजे जद, सुधा आहार निमत्त गृहस्तना द्वारा पेखण करे॥ अन्नादिक ३२ कवलको आहार लेईने, ते आहार परिग्रहमे नगिणे ॥ अने अचेल परिसह थयो वस्त्रनी गवेषणा करेतो परिग्रहमे कहे, ईसा कदाग्राही हठ ग्राही जीवाने कहा लग गुरु समझावे ॥ बालवृद्धोर्नी

समझे भोजन थोडो परिग्रह वस्त्र अधिक परिग्रह साधने थोडो तथा परिग्रह ॥ घणो नो त्यागछे, तव वादी कहेहै आहार परिग्रहमे नही ॥ एतो तेहनो आधारछे, तव सुधज्ञानी कहेछे ॥ भो भव्य जनों वस्त्र किरयो मोक्ष कारणछे ए पिण देहनो आधारछे, तद वादी कहे आहारनी मरजादा ३२ कवलनी छे तेहने कहिजे ॥ वस्त्रनी मरजादा परिमाणें कह्योछे, पछे कहे वस्त्रने जूवादिक पडेतो अजयणा थाइ ॥ तेहने कहिजे, भोजनथी पेटमें चुरणादि पडेतो अजेणा थाइ, तद वादी कहे वस्त्रनी ममता रक्षा करणी थाइ तेहने कहिज्ये भोजननी ममता बिना गवेपणा किम करे इम उत्तर पडुत्तर घणाछे पिण सुध मारगनी देह धारण भणी ॥ देहसुं धरम साधन भणी तिमज वस्त्र देह धारण निमत्तछे सोतो परिग्रह नही कह्योछे ॥ आहार तथा वस्त्रनी ममताछे सो परिग्रहछे ॥ मुछा परिग्गहो वुत्तो॥इति वचनात्, दोनोही पुद्गलछे हेय पदार्थ छे निश्चेनय आहार वस्त्र दोनोही त्यागवा जोग्यछे, पिण दोनोही देह धारवा भणी कह्या छे ॥ जिम माल क्रियाणानो भाडो, ते क्रियाणां ठिकाणे पहुंचावण भणी दीयेछे॥ तिमहीज भोजन आछादनछे, इम समझे तो ॥ भोजन वस्त्र एक बातेंछे, भो भव्य कदाग्रह छोडी आत्मानु भव विचारतां वस्त्र मरयाद करतां परि

गृहमे नथी अने भोजन पिण मरयाद वरती परिगृ
हमें नथी यह बातका अर्थ अनेकांत तथा निज प
र तथा कारण कारज निमित उपादान निश्चे विव
हार अंतरंग बाह्य तत्वां तत्व इत्यादिक घणा बोल जि
न धरममें कह्याछे ॥ तेह विचारयां सुधता थाइछे ॥क
दाग्रह रूढमतीथी न्यारो थाइ, हिवे दिगांबरी वारे कु
ल आहार १ चर्म निरमे २ तथा धोवणादि पाणी लें
वें जिसकी निंदा करे ॥ अने चीनी खांड खांचीमे अ
नंत निगोद रास पडे हे, नीच जाति मरदन करे पं
चेंद्रीयादी जीवाका पिण सरीर खांचीमे गलेहे ॥ क
लेवर पिण परतिक्ष खांडमें दीसेछे तथा सांभर लू
णकी उतपाति पिण देखता महा अपावत्रछे अनें क
दाचित दूध पिण कच्चा मांसथी उतपाति प्रत्यक्षछे
तेहनेंतो खाणो छोडे नही अने चाम नीरमे अनंता
दोस बतावे एहवा अबोध जणनें गुरु समजावेतो
हठ झालीनें वचनांडवरथी विषवाद झाले पिण क
दाग्रह न मूके ॥ हिवे दिगांवरी कहेछे स्वेतांबरना
दोस काढे ते इस श्री वीर उपसरग॥१॥श्री वीर गर्भ
प्रहार॥२॥ श्री महावीरजीरी प्रथम वाणी निफल॥३॥
चंद्र सूर्ज मूल विमाण गमण॥ ४॥ चमर इंद्र भव
णपतीना इंद्र प्रथम देव लोके गया॥५॥ मल्लीना
थ स्त्री लिंग तीर्थंकर॥६॥ कृष्ण अमर कंका गमण
द्रोपदी पंच भरतारी॥७॥ हरीवास क्षेत्रका युगली

या नरक वासी ॥ ८ ॥ उतकृष्ट अवगाहणाका धणी १०८ एक समें सीझें ॥ ९ ॥ सुवधनाथजीके सास नमें असंजतीकी पूजा हूई ॥ १० ॥ इत्यादि अछेरा स्वेतांवरी कहेछे, ऐसी अजोग वारता जिन सास्त्रामें है॥ इत्यादि कहीनें बोघा लोकाने भरमावे छे पिण तेहनो परमारथ समझे नही और आपणा आचारजीना वचनतो पूर्वा पर विरोध देखीनें कुहेतु कहि कहिने अनेक कुजुगति करिनें दिढावेछे, कीचक नरक मुक्त ॥ इत्यादिक पूर्वे कह्याछे ॥ और स्वेतांबराचार्य, अछेरा नमानता तो किरयां पद अटके था॥ इम विचारता तो, मतकलपनासे कह्या नही दीसे है तो किम जाणजे ॥ तेहनों ए विचार करणों चाहिज्ये ए बोल आश्चर्य रूपछे॥ ते इमछे, अनंतज्ञानी श्री जिनराज नें॥ अतीतकालकी अनंत अवसर्पणी उतसर्प णी केवल ग्यानसें जाणें, केवल दरसणसें देख्या ॥ अनें ते काल चक्रका द्रव्य क्षेत्र काल भाव अनेंकाल चक्रका द्रव्य गुण परजाय सर्व देख्या, तिस कालचक्रका द्रव्य गुण परजायमें षट गुणी हानि वृद्धि देखी कालका नियत पिण अनेकात स्वरूप कालका जाण्या देख्या॥ पछे वाणीका प्रकाश हूवा अमोघ धारासें वाणी प्रकासी, जद भव जीवा प्रतें ॥ कालका भेद प्रकास्या ॥ जैसे १२ महीनांमे सीत उष्ण प्रमुख कालका प्रवरतनहोय ॥ तिस काल च

क्रका जुदा जुदा परवरतनहै, ऐसा स्वरूप काल
का अनंत रूप जाणया देख्याछे ॥ जिस मध्ये १
हुंडा नाम अवसर्प्पणी आवेछे जिसमें, ए दस अ
श्चर्य नियमा होयछे ॥ ए नियत भावछे, हुंना नाम अ
वसर्प्पणी आवेछे जद आश्चर्यकारी होइवानी नि
यमाछे, इसमें संदेह नहीहै पिण कूपका मींडक समु
द्रकी लहिर कांई जाणे दिगांबर मतना आचार्य
कुंदकुदाचार्य स्वेतांबर धर्मसुं नीकल्या तिवारे जुदा
पक्ष थापण भणी, आश्चर्य रूप वात निषेध करी
पिण कुछतो लोकीक विरुद्ध जाणीने ॥ कुछ ग्यानकी
हीणतासे, बुद्धि विस्तरी नही ॥ अरु गुरुके वचन उ
थापण भणी अपणी बुद्धिना अभिमानथी निषेध
स्वेतांबरकी करी ॥ प्राचीन ग्रंथामे निषेध करी, थो
डीसीतो पछे मत ग्राही ॥ जिन धर्मना अजाण, कदा
ग्रही सोधमती सरावग नाम कहाया ॥ उताने अ
धिक अधिक स्वेतांबर निषेधताईसे घणी वात नि
षेध करीछे ॥ पिण ए स्वरुप अणंत ज्ञानी ज्ञेय पदा
र्थ अणंत स्वरूप छदमस्त मंद बुद्धी काइ जाणे ॥
ए सांभलीनें सिष्य प्रश्न करेछे ॥ नियत भाव आ
श्चर्य होइतो अछेरा क्यों कहो॥इम पूछया गुरु उत्तर
कहेंछे अहो सिष्य ! प्रश्न भला कर्या॥ इसका उत्तर
एहहै, कि जे वस्तु अनंता काल पछे होइहै इस का
रणें विवहार पक्षमें अश्चर्य कहणा पडेहे ॥ श्री जि

म राजको मारग निश्चय बिवहार २ नय करी
ने युक्तछे, बिवहार पक्षमें जिम कोई हजार बरसांप
छे ॥ कारण होइ तिसकुं लौकीकमें. आश्चर्य कहेहे ।
तिण न्यायमें अणंत काल पछे होइतो आश्चर्य क
हणा पके. पिण कालकी परजाय नियत भावहे ॥ दि
गांवरमती ऐसा न्यान समझें नाहि, जिम ६३ सल
का पुरप कोडा कोड सागर फाझेरामे नियत
हे, तिमज अनंत काल पछे हुंभा उतसर्पणी १०
अछेरा नियत भावहे सो ए दिगाबरका आचार्याने
मत कलपनासे उठायाहे जिसमे कोई वैसनव सिव
मतकी सरदहणा मिलाईहे ॥ सोधि नथा पद पश
सुखका बणाय गावणा, कुछ जातिका मद आपणा उं
च पणा जाणीने ॥ अभिमानसे कुछ जिन धरमकी
सरधा लई रात्रीभोजन त्याग, कंद मूल अनक्षका
त्याग ॥ तीर्थंकर नाम पंच परमेष्टी स्मरण, इत्यादि
क जिन धरमकी सरदहणलई कुछ मन कलपनासें
मिलाया ॥ कुछ गुरुना द्वेषभणी गुरुके बचनाकी उथा
पना कीधी ॥ इम दिगाबर मत श्री भगवानजीना
निरवाणथी छमों नों ६०९ बरसा पछे थयो छे कोई
कहेगो तुम काई जाणो स्वेतांबरथी नीकल्यो, जिस
को परिमाण प्रत्यक्ष दीसेछे दिगांबरना सास्त्रमे ठा
म ठाम ॥ स्वेताबर मतनो खंडन कीधोछे, अने स्वे
तांबरना ४५ आगममें दिगांबर मतनो नामभी

दीसे नही, तिण परमाणसुं जणायछे ॥ स्वेतांबरथी पछे बणाया प्रत्यक्षदीसे छे पहिलानी निंद्या पाछला करे छे ते सुबोध जन होस्ये सो बिचारस्ये हठ ग्राही मत पक्षी कुजुक्तघणी बोलस्ये अने जो छदमस्त कृत ग्रंथ बहोतहे तिणमे न्युनाधिक वचन होइ तेह ना पक्ष न करणा ॥ सूत्र सो मिले सो पारिमाणछे अनें आगम ४५ माहि जे परूपणाछे ते प्रमाणछे, सर्व ज्ञ भाखित वचनामें ॥ संदेह नाहि करणा सर्वज्ञ अ णंत नयात्मक ग्यानीछे तेहने किसो कार्ण जासुं बि प्रीत बचन बोलस्ये पिण जे भाख्यो ते सर्व सत्य छे जो कोई चतर नर दीर्घ दृष्टीसु बिचारे सो तत्व ग्यान पावे ॥ अरु जिन ग्रंथामे निंद्या करीहे नांम लेइने, अधिकी ओछी विप्रीत बात बहोतमीहे ॥ छ दमस्त रागद्वेषीयाका बणायाहै ॥ जिणकी आमता रूढमती, घणी राखेतो आपणने बीतरागना बचन किसीकी निंद्या नही ॥ आपणी अस्तुत नही धारा प्रवाह वचन जिसकी आसता विसेष रखणा उचित हे सुणवा जोगहे॥ सुणवाथी समकित निरमल थाइ॥ इतिज्ञेयं ॥ हिवे दिगाम्बरी कहे स्वेताम्बर स्वप्न १४ मा ने १६ न मानें एहनो उत्तर इमछे स्वप्न १४ कह्या छे पिण १६ न कह्या इणमें कुछ विसेस विरुध नही॥ ते किम ग्यारसें स्वप्न समुद्र देख्या ते माहि मच्छ पि ण गरभितछे ॥ नारकसे तीर्थंकर आवे तेहनी माता,

नवणदेखे अनें बिमाणकथी तीर्थंकर आवे तेहनी मा
ता त्रिमाण देखे ॥ ते कारणें १४ कहेछे॥मछ पाणी
विना देखवो मंगलीक नही इत्यादिक अनेक हेतु
जाणवा ॥ दिगांवरी कहे वाहूवलजीरी अवगाहना
५२५ धनुषकी कहे छे, पिण विचारतां सास्त्रथी त्रि
प्रीत वचन दीसेछे ॥ ते किम पांचसे धनुष वालो मु
क्ति पहुंचे, तेहनी अवगाहना ३५९ धनुषनी. चा
हिज्ये ॥ ते विचारतां सास्त्र विप्रीत दीसेछे, बुद्धिमांन
होइसो विचारी जो जो ॥ भगवान श्री महावीरजीका
माता पिता भगवान दीक्षा लीया पहिली देवलोक
गए इस वालमें किसा धरमकी हानि थई ॥ ए किस्यो
विप्रीत पणो थयो दिगांवर कहे स्वेतांबरी सलाका६३
पुरसाने अरजुगलीयाने निहार माने ॥ इसी स्वेतांव
रना सास्त्रमें त्रिरुधछे, इम कहे॥ तेहने पूछणो ॥ आ
हार होइतो निहार किम न होइ एतो प्रत्यक्ष प्रमा
णछे सलाका पुरषाने न कहोतो प्रत्यक्ष दीसेछे ॥ इ
तिज्ञेयं॥ दिगांवरी १६ स्वर्ग माने स्वेतांवरी १२ स्व
र्गमाने एहमेंतो मात्र विरुधछे ॥ दिगांबर ८ जु
गना १६ कहे स्वेतांवर ४ जुग विचला च्यारमें द
क्षिणोत्तर भेद नथी एक एकछे ॥ तिण न्याये १२
मानेछे ॥ इतिज्ञेयं ॥ स्वेतांबरी जादवानें मांस भक्षी
माने तेहनें दिगांवरी त्रिरुध कहे ॥ तेहनो परिमाण
सास्त्रथी जाणज्येछे नेमनाथजीरा व्याहमे पशु पंखी

ना वाडा पिंजरा नरया तेहनें रूढमती थया कहे छे, कृष्णजी कपट करयो ॥ श्री नेमनाथजीने घरथी काढण नणी येहवो अमुश्र वाक्य कहेछे ऐसा श्री कृष्ण वासुदेव जूध सूरा मरजादा पुरुसोत्तम एहवो कपट करे ऐसो अन्याय बोलोछो ॥ और कृष्णजीनें सम्यक्त वंत कहोछो, वासकी मूल कपट करयो देव्रा णप्रिया ॥ एहवो कह्या संसार नमण क्यौं वधावो छो॥स्वेतांबरीयारो जादवांमु किसो इपछ कूडो आल मांस नक्षणनो देइ ॥ तथा बीजो परमाण जादवानें कुमरे मद्य पांन पीधां द्विपायननें संतायो, एहमें पि ण कुहेतु लगायने नोला जीवाने विप्रतारेछे ॥ तेहना कुबुद्धना नूमाया कव सुगुरारो बचन मानस्ये ॥ का मदेव न मांने इस्यो कहेछ सो कामदेवकी स्वेतांबर उथापनाज्नी नहीं, विसेप थापनाज्नी नहीं प्रकरणाभें कामदेव मानेछे ॥ अनें नाभिराजा मोरादेवीनें जुग लीया न माने तेहनो प्रत्युत्तर विचारज्यो जिणाग व चनामे वध नही कहेता कहे॥ जुगला धरम श्री ऋप नदेवजी दूर करयो ॥ कद, कह ऋपनदेवजी जन म्या पहिले जुगले पणो दूर थयो ए विरुद्ध देखतां तो कूठा दीसेछे अने स्वेतांवरना ४५ आगममें मू ल पाठमे नाभिराजा मोरादेवी, जुगलीया इसा अ क्षर किहांई दीसता नहीं ॥ पिण अनुमान, परिमा णसें बिचारतां ए कहेछे ॥ जुगला धरम ऋपनदेव

जी निवाणथोछे ते प्रमाणथी जाणज्येछे ॥ तत्व केव
ली गम्यं॥ इणरो कुछ पक्ष नही ॥ तीर्थंकरको पांच
थावरकी हिंस्या नमानें सजोगी पिण कहे ए दिगांब
रनो माछ्रछे जिम कोई गाहिलो बोल बोलयानी पक्ष
नही तिम ए दीसें छे ॥ ते किम जोगछे ते व्यापारछे
सकंपमाणछे, ते सक्रियछे तेथी हिंस्या पिण छे
पिण ते हिंस्या तीरथंकरनें लागे अकरवाई
माटे सुध जोग थयो इरियावही क्रियाछे पिण
पाप नही ॥इतिज्ञेयं॥ दिगांबर अनारज देसमें भग
वान महावीरजी ते नमांने ते पिण भगवंतजीनें तु
छ गिणता हुस्ये पिण हमतो भगवानजीने अनं
त बली जाणाछे कलपावतीत छे॥ ते माटे अनारज
देसमें विहार करवो असंभव नही करम क्षय निम
त कीधोछे ॥ तप पिण मोटो थयोछे. आहारना अ
लाभथी ॥ इति ज्ञेयं॥अनें तीर्थंकरजीके सरीरकुं दाग
इंद्रादि देइ ते नमांने, ते जिन मारगरा अजाणछे॥
ते कहे तीर्थंकरके सरीरका पुदगल खिरजाइ॥ ते वा
त विप्रीतछे तीर्थंकर भगवानका सरीर उदारीकछे ॥
परमोदारीकछे वज्रऋषभ नारायच संघेणछे तेहनों खि
रण स्वभाव नथी जे पिरणा कहे ॥ तेहनें पूछणो उ
दारीक, सरीरमें स्वयमेव पिरवानो गुणकिसा करम
नो पराकिरताछे तथा जीवनो गुणछे ते बतायो चाहि
ज्ये वेक्रिय स्वभावछे पिरणनो उदारीकनों स्वभाव

पिग्वानो नही संघण सहितछे ॥ बंधन संघातन स हितछे त माटें सरीरनो पिण स्वनाव विरुद्धछे॥इति ज्ञेयं॥दिगांबरी कहै द्रव्य चारित्र विना मोक्ष नही इ म कहेछे, ते निजगुण परगुणना अजाणछे तेहने इम पूछणो द्रव्य चारित्र स्वनावछे तथा परस्वनावछे स्व स्वनाव कहोतो अनव्यनें पिण द्रव्य चारित्र हो इछे तेहनें पिण स्व स्वनावनो लान कहो परस्वना व कहोतो मुक्त परस्वनाव विना न होइ इम कहो, जिण मारगरा अजाण चारित्रना गुणनें कांइ सम झे मत पक्षना नूल्या द्वेप नाव लीया सुद्ध मार ग स्वेतांबरने, निदवा नणी कुबुद्धि लगावेछे॥चारित्र जोग ॥ रुंधण अकंप अवस्था आतमीक गुणछे, चा रित्रावरणी करमना विक्षिप्तथी परगट थाइछे॥ ते नि श्चे चारित्र कहिज्येछे ॥ ते काल लवधथी जिम निस रग समकछे, तिमहीज चारित्र छे, पिण नोलानीव ॥ मिथ्यातने काल लव्रधथी क्षय हुवा निसर्ग समकित कहेछे ॥ पिण चारित्रावरणी करमनें काल लवधथी क्षयनथी कहता ते नूल्या नमेंछे ॥इती॥अनें दिगां बरी शुद्रनें दिक्षानें मोक्ष न मानें तेह जाति करम नें मुक्ति जाणेंछे ॥ अनें जिन मारगमें जाति करम सें मुक्ति नथी उंच जातादिकसें मोक्ष कहेछे ते करम थी मोक्ष नथाय॥तेहनें समकित वमीछे ॥ केवल ज्ञा नडोछे॥ दंसणपुविनाणं॥इति द्रव्य संग्रहजो॥इति॥

अनें क्रिया कोस परमुख ग्रंथामें निंद्या करीहे ॥ ढुं
ढीया साधांकी मुहके मुहपती राखें ॥ सुद्रके घरका
आहार गारिके नाजनके अणगल नीरका ॥ अण
सोध्या आहार पानी दीनतासुं माग ल्यावें ॥ अरु प
वनादिक जीवाकी जतना करे॥ मुहपतीमें समुर्छम
होय तिणकुं गिणें नही॥ दिगांबरी स्वेतांबरके साधा
की इत्यादिक निंद्या घणी करे छे सो उत्तर ॥ जो मु
हपती मुह आगे रहेसो मुखकी गरमाईके फरससे
समुर्छम नही होय ॥ तेजस अगन अंतरसें मुख मां
हे आवे हे ॥ तिसकी सहायतासे समुछम नही हो
य॥मुखपती सूत्रांमें रखणी चलीहे, नगवती उत्राध्ये
नादिकमें पडेलहणादि विध सुद्ध करि रखतेंहे॥ सो
ई समुर्छम नही होय॥जो कोई कहे समुर्छम होय हे,
तिह अजाण पणेसे तथा मूर्खतासे तथा द्वेखसें कहे
हे ॥ तिसके कहणेकुं सत्य नही समझनां जिनराजके
बचनोमे संक्या नही करणी एहनी परिक्षा प्रत्यक्षहे॥
प्रथमतो बचननो बंध नही रह्यो ते किम जवानसे क
हता दीसेछे ॥ ए साधू ढुंढीये तो तीनसे बरसांसे हु
ये हे अने सास्त्रमे मुहपती सुद्र घरका आहार इत्या
दि निंद्या करेछे पिण मूढमती समझे नही ढुंढीया
साध तीनसे बरसांसे कहुं छुं तो अने क्रिया कोस प
रमुख सास्त्र कहुंछुं तो॥जिस सास्त्रमें ढुढीयारी निंद्या
छे ते सास्त्र ढुंढीयां हुवा पछे बणायोछे निंदक मनुषां

पिग्वानो नही संघेण साहितछे ॥ बंधन संघातन स हितछे त माटें सरीरनो पिरण स्वन्नाव विरुद्धछे॥इति ज्ञेयं॥दिगाम्वरी कहे द्रव्य चारित्र बिना मोक्ष नही इ म कहेछे, ते निजगुण परगुणना अजाणछे तेहने इम पूछणो द्रव्य चारित्र स्वन्नावछे तथा परस्वन्नावछे स्व स्वन्नाव कहोतो अन्नव्यनें पिण द्रव्य चारित्र हो इछे तेहनें पिण स्व स्वन्नावनो लान्न कहो परस्वन्ना व कहोतो मुक्त परस्वन्नाव विना न होइ इम कहो, जिण मारगरा अजाण चारित्रना गुणनें कांइ सम झे मत पक्षना न्नूल्या इप न्नाव लीया शुद्ध मार ग स्वेतांबरने, निंदवा न्नणी कुबुद्धि लगावेछे॥चारित्र जोग ॥ रुंधण अकंप अवस्था आत्मीक गुणछे, चा रित्रावरणी करमना विक्षितथी परगट थाइछे ॥ ते नि श्चे चारित्र कहिज्येछे ॥ ते काल लवधथी जिम निस रग समक्तछे, तिमहीज चारित्र छे पिण न्नोलाजीव ॥ मिथ्यातने काल लवधथी क्षय हुवा निसर्ग समकित कहेछे ॥ पिण चारित्रावरणी करमनें काल लवधथी क्षयनथी कहता ते न्नूल्या न्नमेंछे ॥इती॥अनें दिगां वरी शुद्रनें दिक्षानें मोक्ष न मानें तेह जाति करम नें मुक्ति जाणेंछे ॥ अनें जिन मारगमें जाति करम सें मुक्ति नथी ऊंच जातादिकसें मोक्ष कहेंछे ते करम थी मोक्ष नथाय॥तेहनें समकित वमीछे॥ केवल ज्ञा वडोछे॥ दंसणपुव्विनाणं॥इति द्रव्य संग्रहजो॥इति॥

अने क्रिया कोस परमुख ग्रंथामें निंद्या करीहे ॥ ढुं ढीया साधांकी मुहके मुहपती राखें ॥ सुद्रके घरका आहार गारिके भाजनके अणगल नीरका ॥ अण सोध्या आहार पानी दीनतासुं माग ल्यावे ॥ अरु प वनादिक जीवांकी जतना करे ॥ मुहपतिमें समुर्छम होय तिणकुं गिणें नहीं ॥ दिगाबरी स्वेतांबरके साधा की इत्यादिक निंद्या घणी करे छे सो उत्तर ॥ जो मु हपती मुह आगे रहेसो मुखकी गरमाईके फरससे समुर्छम नही होय ॥ तेजस अगन अंतरसें मुख मां हि आवे है ॥ तिसकी सहायतासे समुछम नही हो य॥मुखपती सूत्रांमें रखणी चलीहे, भगवती उत्राध्ये नादिकमें पडेलहणादि विध सुद्ध करि रखतेंहे ॥ सो ई समुर्छम नही होय॥जो कोई कहे समुर्छम होय है, तेह अजाण पणेंसे तथा मूर्खतासे तथा द्वेखसें कहे हे ॥ तिसके कहणेकुं सत नही समझनां जिनराजके वचनोमे संक्या नही करणी एहनी परिक्षा प्रत्यक्षहे॥ प्रथमतो बचननो बंध नही रह्यो ते किम जबानसे क हता दीसेछे ॥ ए साधू ढुंढीये तो तीनसे वरसासे हुं ये हे अने सास्त्रमें मुहपती सुद्र घरका आहार इत्या दि निंद्या करेछे पिण मूढमती समझे नही ढुंढीया साध तीनसे बरसांसे कहुं छुं तो अने क्रिया कोस प रमुख सास्त्र कहुंछुं तो॥जिस सास्त्रमें ढुंढीयारी निंद्या छे ते सास्त्र ढुंढीयां हुवा पछे वणायाछे निंदक मनुषो

ने ॥ रागी द्वेषीयानें निंद्या करीछे पिण ओगुण ग्रा ही मुहपती आदिकी निंद्यातो करे पिण तप जपका गुण देखीने मुह मचकोडेहे॥ ते जीव जोषका साथीछे जोष लोही पीवे पिण दूध नही पीवे ॥ तिम निंदक ओगुण देखे पिण गुण न देखे ऐसा व्यामोही मूढ मती अपणी आत्माने भारी करे छे अने मनमे जां णे हम ग्यानीछे पिण ए ग्याननो फल लागरहे तब घणोंही पछतावस्ये पिण अपणा अवगुण न देखे सु द्रके घरका अणगल पाणी गारिके भाजनका आहार पाणीकीं निंद्या करे पिण आप सोध राखेतो॥ गाय भै सका दुध कच्चा मास मांहिंसुं झरया अने खांडकी खा ची मांहसुं काढीनें मासका पिंडवत पचेंद्री आदि जि वांका सरीरना पुदगल संजुक्त और गुड नीचजात बनावे सांभरलुंण असुध पुदगल सहित हींग चर्ममे वंद होय इत्यादि गेहतांई सुद्रके घरका आहरकी निंद्या करता तो यहभी [illegible]॥ पिण जिणराजके मारगमे दया प्रधान कही [illegible] राखीने सोध करे तो उचितछे पिण दया खोयने सोध करे ते घणा सं सार भमस्ये ढुंढीया साधु दया जल कायके जीवांकी राखवा निमते सुद्रके घरका पाणी लेवेछे॥धरम पालने के निमत ते विचारेनही तो जिण धरम कांई विचार स्ये ॥ इती ॥ ओर तीर्थंकर भगवान १८ दोष रहितछे १८ दोषांमे फेर पाड्योछे ते मत थापण

वास्ते पिण जो बुद्धिनो विस्तार करीने हृदयमे संम
ऊतो लबधिसार क्षिपनसारमे दीर्घ उपियोग देता
इम विचारिए क्षुधा तृषा किस्या करमने उदेवइ ॥
अने किसा करम खपायाथी लबधि तीर्थंकरने थई॥
तृषा क्षुध्यानो उदय टल्यो ते विचारज्यो॥ इती ॥ त
था दिगांबरी कहेछे स्वेतांबरी अगन पक्क कंदमूल
ना आहार करेछे ते अनक्षछे ॥ ते विरुद्ध कहेछे॥ ते
दिगांबराम्नाका ग्रंथ मूलाचारनी ॥ आणगार भावना
धिकारे नोमे ममुद्दसे गाथा ५७ ॥ ५८॥फल कंदमूल
बीजं, आणग्गिपक्कंतुआमयकिंचि॥ णच्चाअणिसणियं,
णविपय पडीछंतीधीरा ॥ १ ॥ जंहवइअणिबीयं, णि
यट्टीमं फासुयंकयंचेव ॥णाऊणएसणीयं, तंभिखमुणी
पम्हिछंती ॥ २ ॥ इति पाठ ॥ प्रासुक कंद मूल मुनि
ग्राह्य तथा घर घरकी भिक्षा मुनीने दिगांबरी निषे
धे ॥ तेह विरुध कहेछे ते मूलाचार अणगार भावना
नवमे ममुद्दसे कह्याछे ॥ अणादमणुणादं भिखं णि
च्चुचमाज्झिम कुलेसु ॥ घरपंतादिहिंडंताय मोणेणमुणी
समादिंति ॥ १ ॥ सीदलगसीदलंवा सुक्क लुखंसणिद्ध
सुद्धंवा ॥ लोणिदम लोणिदवा भुंजंती मुणीअणासा
द॥ गाथा ३६ मी ३७ मी ॥ तेणेज ठामे गाथा ५०
मी ५१ मी ॥ मुहणयणदंतधोयण, मुच्चट्टणपाद धो
यणंचेव॥ संबाहण परिमद्दण सरीर संठावणंसवं॥१॥ धु
वण वमण बिरेयण, अजण अभंगलेवणचेव ॥ णंछ र

विह्नियकम्मं, सिखेऊं अप्पणोसवं ॥ २ ॥ इति ॥

नवतत्वके नाम जीव तत्व १ अजीव तत्व २ पुन तत्व ३ पाप तत्व ४ आश्रव तत्व ५ संबर तत्व ६ निरजरा तत्व ७ बंध तत्व ८ मोक्ष तत्व ९॥ अर्थ—जीव चेतन १ अजीव जढ २ पुन सुभकरम ३ पाप असुभ करम ४ आश्रव कर्म आगमण ५ संबर करम रोकन ६ निर्जरा पूर्व करम सोसन ७ बंध सुभा सुभ करम बंधन ८ मोक्ष कर्मासें जुदाहोणा ॥ ९ ॥

पांचमहा बिदेह क्षेत्रां माहिं २० भगवान जैवंता विच रेछे तिनोंके नाम ॥ श्रीसीमंदरस्वामी १ जुगमंदरस्वामी २ बाहुस्वामी ३ सुबाहुस्वामी ४ सुजातस्वामी ५ स्वयंप्रभुस्वामी ६ ऋषभानस्वामी ७ अनंतबीरस्वामी ८ सुरप्रभुस्वामी ९ बिसालस्वामी १० वज्रधरस्वामी ११ चंद्राननस्वामी १२ चंद्रबाहुस्वामी १३ श्री भुजंगस्वामी १४ ईश्वरस्वामी १५ नेमीश्वरस्वामी १६ वीरसेनस्वामी १७ महाभद्रस्वामी १८ देवजसस्वामी १९ अजितबीरस्वामी २० ॥ इति ॥

॥ अथ परदेसीराय गुणस्तवन लिख्यते ॥

सुगुरुध्यान मनमें धरीजी, वंदू श्री वृद्धिमान॥ अमलकंपामे आवीयाजी, श्री जिन पुन परिमान ॥ खिमावंत श्री जिन धर्म प्रधान॥ १॥ सुरियाभ जुं सुर लोकथीजी, भावसहित हित आंन॥ दरसनकर नाटक कीयोजी, जीतकलप परिमान ॥ खिमावंत श्री जिन

धर्म प्रधान॥२॥गोतम पूछे स्वामीनेंजी, कहे श्री भग
वान॥सेलंबकानगरी तणोजी, परदेसी राजान ॥खिमा
वंत धन परदेसीराय॥ ३ ॥ सूर्यकंता सुर कंतनेजी,
नारीपुत्र सुजांन॥चितनामे भाई तिहांजी, राजाका पर
धान ॥ खि० ॥ ४ ॥ अधरमी मिथ्यामतीजी, श्रद्धा
खोटीजान॥जीव काया एकी कहेजो, नही परभवको मा
न ॥ खि० ॥ ५ ॥ सावत्थीमे एकदाजी, जितसत्रु नृ
प पास॥ भेट दई तिहा भेटीयाजी, चितकेशी हुलास
॥ खि० ॥६ ॥ बाराव्रत तिन धारकेजी, अर्ज करी पर
धान॥ सेतंबकामें लावीयाजी, परदेसीप्रतें आन॥खि०
॥ ७॥ जोडे अश्वने अर्थमेंजी, देखोतेहनीचाल॥मंत्रीला
या बागमेंजी, बैठातबभूपाल ॥ खि०॥ ८ ॥ ह्याराबाग
इण राकीयाजी, कथा कहे विख्यात॥चितप्रतें कहआ
वीयाजी, गुरकहीमननीबात॥खि०॥९॥पापीदादा नरक
मेजी, समझावे मुझआय॥नारीलंपटबाधीयोजी, जिम न
ही आमेराय ॥ खि० ॥१०॥नरेश्वर जुदा मान जीव का
य॥एटेक ॥ दादी जो सुरलोकमेजी, आई नहीं महारा
य ॥ दुरगंध कारणजाणयेजी, नश्रा स्नेहलगाय॥ न०
॥ ११॥ कुंभीसेंजीव किमगयाजी जैसेंकुंटागार॥माहि
थकीशाजातणोजी, निकलेसोरतिवार ॥ न० ॥ १२ ॥
कुंभीमें जी आवीयाजी, छिद्रनपडीयो कोय॥लोह तपा
व्यो अगनमेंजी ॥ अगनसमाई जोय ॥ न० ॥ १३ ॥
तरुण चलावे बाणनेंजी, बालजीवसबजाण ॥ तूटी ध

नृप न चलावेजी, वुद्धीबल नही ज्ञान ॥ न० ॥१४॥ तरुण वृद्धजो भारमेंजी, जो बलधारकहोय ॥ छींका डोरी तूटतांजी. तिमवृद्ध जीर्णजोय ॥ न० ॥ १५ ॥ कंठभींच नरमारीयो, वध्यो न ऊगे होय ॥वाय भरी खाल्लीकीयाजी, चामनाथडीजोय ॥ न० ॥ १६ ॥ दो य खंडकर देखीयाजी, जीव नही मुनिराय ॥ अगनी अरणी काठमेंजी, खंडनदीसे राय ॥ न० ॥१७॥ जी व दिखावोकाढनेंजी, वायु न दीसे नृप ॥ गुरू लघू ए केमवेजी, दीवे कैसो रूप ॥ न० ॥ जु० ॥ १८ ॥ जुदाजीवकायाकहीजी, श्रद्धाशुद्धवखान ॥ पिण जि म वै तिमरहणदोजी, धर्मकठिन असमान ॥ न० ॥ ॥१९ ॥ लोहवाणीनासारखाजी, मतहोवेनृपाल ॥ सु णी विरत वारेंलीवेजी, जाणया धर्मविशाल ॥ न० ॥ ॥२०॥ राणी सुभटखजानमेंजी, चौथाभागजु दांन, बे लेवेलेंपारणाजी. जाबजीवलगजाण ॥ न० ॥ २१ ॥ स्वार्थबिनराणी विषेजी,कहेकंवरसेंवात॥ राजहुकमवर तावीयेजी, करोपितानो घात॥खि०॥ध०॥२२॥मौनक रीनें ऊठीयाजी, मानीनही तिणवात॥राणीमनचिंत्याथ ईजी करुं रायनोघात ॥ खि० ॥२३ ॥ करजोरी म स्तक नमीजी, मेहर करो महाराय॥ तेरवें वेलें पारणा जी, मुझघरकीजेआय ॥ खि० ॥ २४ ॥ तालकुट भो जन विषेंजी, करतांपांम्याभेद॥खिमा भाव मन धारकें जी, नहीआणयातिनखेद ॥ खि० ॥ २५ ॥ समताभावें

उठकेंजी, अथिरजान संसार॥ च्यार आहार त्यागेति, हाजी, धारेसरणे चार ॥ खि० ॥ २६ ॥गणिदरसनके मिसेजी, गलेअंगुठादीध॥सुधर्मासुरलोकमेंजी,जाइवा सालीध ॥ खि० ॥ २७ ॥ रायप्रमेंनीमें कह्याजी, श्री जिन बहु विस्तार॥ महा विदेहमें पामसीजी, मुक्तन णापदसार ॥ खि०॥ २८॥ विक्रम संवत जाणीयेजी, उन्नीसे पंचास ॥ शुक्ल पक्ष त्रियोदसीनी, प्रथम आपाढजुमास ॥ खि०॥२९ ॥ यह गुनपरेदशी तनाजी, बमसतमेंऋपराज ॥जावधरीनें वरणव्याजी, पुर्णबंछितकाज ॥ खिमावंत धनपरदेसीराय ॥ ३० ॥ ॥ इती परदेसीरायगुणस्तवन सपुर्णं ॥

॥ श्लोक ॥

॥ नमोक्षंगायतेगीतं ॥ नमोक्षनस्मलेपनं ॥
॥ नमोक्षवनवासीच ॥ मोक्षंइंद्रीयनिग्रहं ॥१॥
॥ नमोक्षभ्रमतेतीर्थं ॥ नमोक्षंनग्नमोनेपु ॥
॥ नमोक्षंकदन्नक्षेण ॥ मोक्षंइंद्रीयनिग्रह ॥ २

॥ वद इंद्रवज्राव्रतम् कथ्यते ॥

यद्दष्टिदोपात्मतिविभ्रमाद्वा । यदिकिंचदुनं लखितम्ममयात्र ॥ तत्सर्वमार्य्यैपरिशोधनीयं । दोपोनदेयंखलुग्रंथकारम् ॥ १ ॥

इति श्री स्वामिजी ऋपराज ग्रंथ संग्रह करता सत्यार्थ सागरका धर्म्माचरन नाम प्रथमो भाग

॥ संपूर्णम् ॥

॥ अथ सत्यार्थ सागर ग्रंथस्य द्वितीय भाग प्रारंभः॥
॥ श्रीगुरु भ्योनमः ॥ अथ मंगलाचरणं ॥
॥ श्लोक ॥ अनुष्टुब् व्रतम् ॥ प्रणम्यपरमं ज्योतिः । पंचापिपरमेष्टिनः ॥ दिक्षाज्ञानगुरूश्चापि । ममोपकृतिकारकान् ॥ १ ॥
छंद ॥ इद्रवज्रा व्रतम ॥ श्रीवर्द्धमानस्यजिनेश्वरस्य । जयतुसद्वाक्यसुधाप्रवाहः ॥ येपाश्रुतिस्पर्शनजप्रसते । भव्यानवेयुर्विमलात्मभासः ॥ २ ॥
छंद ॥वसन्ततिलका व्रतम् ॥ श्रीगौतमोगणधरः प्रकट प्रभावः । सल्लब्धिसिद्धिनिधिरंचितवाव प्रबंधः॥ ॥ विघ्नाधकारहरणेतरणेः प्रकासः । साहाय्यकृद्भवतुमे जिनवीरशिष्य ॥ ३ ॥
॥ अथ ग्रथकी जमावट दोहे ५४ लिख्यते ॥
॥ सतगुरपय प्रणमीकरी, वंदुं श्रीव्रद्धिमान ॥ सत्यार्थसागरकहुं, विविध प्रश्नकोज्ञान ॥ १ ॥ वीरपछे चौसटबरस, केवलज्ञान न होय ॥ गयापाचमेंकालकी, वरतीभ्रानसुजोय ॥ २ ॥बरसएकसोसत्तरें, पंचमध्येवरविचार॥ स्वामभद्रबाहुहुवा, चौदहपुर्वधार॥३॥ ॥ तिनकेंवारेंसुं सही, हुई धरमकीहान ॥ कालपडयो बारहबरस, जानेंसकलजहांन ॥ ४ ॥ सबदुनियाको सुख गयो, दुखव्याप्योअसमांन ॥ अन्नबिहुंनामानवी, तजेभ्रानकुलकांन ॥ ५ ॥ भयंकारसंसारमें, बरत्योहाहाकार ॥ भुखेकलिपतदेखीये, पशुपंखीनरनार

॥ ६ ॥ तजीकंतकोकामनी, तजेकामनीकंत ॥ तजी मातसंतानको, तजीजातसावंत ॥ ७ ॥ ठगफासीगर चोरटा, लूटखोसधनखाय ॥ दुरभिक्षमहादुकालमें, नेमधरमसबजाय ॥ ८॥ उपसरगबनमेअतिहुवा, नु खानरतिरजंच ॥ हिंसकहनेंसुसाधको, नरदईदयानरंच ॥ ९ ॥ तव श्रावग मिल येकठा, करी अरज अरदा स ॥ बस्तीमें वासाबसो, तजो आज बनबास ॥ १० ॥ ॥ साधा समोविचारीयो, पंचम कालकरूर ॥ तिनदि नसेंबस्तीविषें, वसे साधसबदूर ॥ ११ ॥ असना दि क काजें मुनी, भमे बहुत बेरान ॥ भिक्षाचर दूख ब हु दिये, लाठीलही निदान ॥ १२ ॥ पेटभरें बहु स्वांगधर, फिरजावे निजगेह ॥ ता कारन करवरती या, सिथल अचारीतेह ॥ १३ ॥ सेंठा जरुकर बार ना, आहार करे अणगार ॥ बाहिर उभा आरडें, क रें कमीनपूकार ॥ १४ ॥ किनकिनसें कुरनाकरें, नही मुनिवर आचार ॥ भवर कराई भावसें, भोजन भग त अपार ॥ १५ ॥ कानें शब्दसुनां नही, जबलग करा आहार ॥ तब बिचार कर यहकीयो ॥ बाजाको उणकार ॥ १६ ॥ निज निज गंदे बिचरतां, करतां भूंमि बिहार ॥ जुदी जुदी सरधानसुं, जुदो जुदो व्य वहार ॥ १७ ॥ किरियाहीन जतीहुवा, आचारज मि लिपंच ॥ तबयह कीधीथापना, प्रतिमादरसणसंच ॥ ॥ १८ ॥ फिरपीछे पुजारची, मिले उपाधी आय ॥

रचना लीधी सुरतनी, समकित भाव दिखाय ॥१९
आश्रव परिग्रहद्वारमें, प्रतिमासुर कुलकर्म ॥ भोदुंभूले
भर्ममे, जाण्या नही जिन धर्म ॥ २० ॥ तीर्थजात पर
पणा, सिवपुर सुगम उपाय ॥ विकलमती मानें नही
धर्म कर्म किम थाय ॥ २१ ॥ पूरवगया विछेदसब
के थेवर वुधवंत ॥ वरस अस्सी नवसे गया, पुस्तक
लिख्या सिद्धंत ॥ २२ ॥ आगमसब खंडित हुवा,
ह्या सुलपसा मूल, भूलचूक तामे बहुत, संसेमिटे न
मूल ॥ २३ ॥ कुछतो अपनी उक्तसुं, कुछ केवल बु
धार ॥ जोडमेल आगमकीया, कर्यो बहुत उपगा
॥ २४ ॥ पिण बिचारकीनोतिने, स्याद वाद सरध
न ॥ येह जिन वानीमें सही, भेदकीयो परमान
॥ २५ ॥ गछ चौरासी जूजूवा, हुवा परसपर द्वेष ॥
कहुं कहालग कुमतिको, जोरो भयो विशेष ॥ २६ ॥
कुगुर कुविद्याफोरवे, मंत्र जंत्र कर जेर ॥ करामात
सुं वसकीया, राजापरजा घेर ॥ २७ ॥ आचारज
कलि कालके, कुमती कुमत विचार ॥ कलपित वाता
नवनवी, गूंथे ग्रंथ अपार ॥ २८ ॥ च्यारों विकथा स
स कथा; पूजी पांच पुरांण ॥ लोकरीझावे रागसुं, चो
पई ढाल वखांण ॥ २९ ॥ कुलगुरु जेम अजीवका,
करे दरसनी जैन ॥ आगम तो वाचे नहीं, वाचे
बिकलकुबैन ॥ ३० ॥ दान दिढावें देहरा, प्रतिमा पूजे
हमेस ॥ दरसन करिकें जीमीये, यही कुगुर उपदेस

॥ ३१ ॥केईकरावे देहरा, केई बनावे बिंब॥ केई खनावें बावमी, केई लगावें अंब ॥ ३२ ॥ मदिरापानी देवता; देहरासरके द्वार ॥ देखो जैनी जायकें, सीसन मावें प्यार ॥ ३३ ॥ कंद मूल भोजन करें, नही करुना किरपाल ॥ रसित रसोई रोटीयां, यह महिमा कलिकाल ॥ ३४ ॥ करम करनकु सूरमा, रागद्वेषका जोर ॥ राग रुप रमनीरता, कलह कदाग्रह सोर ॥ ३५ ॥ गामी वहिल घोमा घरें, जोडी पगां मंझार ॥ थया दरसनी करसनी, बनज करें व्योपार ॥ ३६ ॥ बासखेप देवन लग्या, पोशाला चटशाल ॥ वहिरें पूजें भावसुं ॥ नोनेजें भरथाल ॥ ३७ ॥ सागर साखा रिखमती, कूडोकुटिलाचाल ॥ महाविरोधी बरतीया, बरते पंचमकाल ॥ ३८ ॥ दोई हजार गयावरस, इनपरकाल व्यतीत ॥ भस्म ग्रह जब ऊतरयो, तब यह मिटी अनीत ॥ ३९ ॥ आगम किम परगट हूवा, किन विधवरती नीत ॥ ते भाखुं विगतायकें, सुनों धरमके मीत ॥ ४० ॥ इन अवसर पोसालीया, गढजालोर मंझार ॥ ताम्र पत्र जीरन हूवा, कुलगुर करे विचार ॥ ४१ ॥ लोंको मुहतो तिहावसै, अक्षर खरा सुवांच ॥ आगम सोप्या लिखनकु, लिखे अर्थ सुखजाच ॥ ४२ ॥ ज्ञान अपूरव निरखीयो, जबलाग्यो चितनेह ॥ साधु श्रावग समकती, तिनका तो गुन एह ॥ ४३ ॥ ग्रंथ लिखुं ग्रनाघरे, राखुं अपने पा

स ॥ जो एह आगम विस्तरें, होय जैन प्रकास ॥ ॥ ४४ ॥ यह बिचारकर जवतिनें, कुलगुरसें परपंच बतीसे आगम सहु, गुप्तज्ञान गुणसंच ॥ ४५ ॥ वाचे मुहतो मनरली, वारूकरे वखान ॥ लोकाटोली निरमली, लोक कहें इम वांन ॥ ४६ ॥ लोके लिखा आगम नवा, घर नेज्या गुजरात ॥ फिर नेजा नागोर में, बाचें बुध विख्यात ॥ ४७ ॥ सुनें ज्ञान चरचा चतुर, धरम मरम मनलाय ॥ प्रतिमाको पूजे नहीं, लोकानामधराय ॥ ४८ ॥ प्रतिमा आश्रवद्वारमें, लोंका करी उथाप ॥ थापी निर्जर नावना, कर संवरसु जाप ॥ ४९ ॥ धरम सहित करनी करें, श्रावग संवरद्वार ॥ आश्रवतो तजिवो कह्यो, यह तुमकरो विचार ॥ ॥ ५० ॥ नग्यो नरम मिथ्यातको, जग्यो जेंनको जोर ॥ गुजराती गुजरातमे, नागोरी नागोर ॥ ५१ ॥ हीर रूप पंचायनी, चारातियां सुविसेस ॥ जागी जैन तणी दशा, महिमादेश बिदेश ॥ ५२ ॥ लोका ऊठा उमंगकें, थयो धरम उद्योत ॥ मूल धरम परगट कीओ, आगम वल जगजोत ॥ ५३ ॥ आश्रवके थानक सहु, किया निखेध तिवार ॥ संवरमारग मुकतको, ताको कह्यो आचार ॥ ५४ ॥

वखाण--हिवे श्री नगवती सूत्रमध्ये सतग २० में उदेशे ८में श्री नगवंत महावीर प्रतें गौतमस्वामीजीनें पुछ्यो तुम पछें पूर्वाको ज्ञान कितनें कालतांई रहसी ॥

हे गोतम १ हजार वर्सतांई रहसी महावीरजी मोक्ष गयापछें १२ वर्षे गोतम मुक्त गया ॥ वीर पछें २० वर्षे सूधर्मजी मुक्तहुये. वीरसें ६४ वरसें जंबुस्वामी मुक्त हुये. वीरसे ९८ वर्षे प्रभवा देवलोक गये वीरसें १७० वर्षे भद्रबाहु हुवा श्रीमहावीरसें २१४ वर्से अ व्यक्तवादी निन्हव हुवो ते सूत्र मानता नही वीरसें २१५ वर्षे थूलभद्रजी हुवा. वीरपछें २२० वर्षे सुन्य वादी चौथा निन्हव हुवा. वीरपछें २२८ वर्षे २ क्रिया वादी पाचमो निन्हव हुवा ते एकसमें २ क्रिया लगे. वीरपछे ३३५ वर्षे प्रथम कालिकाचार्य हुवो. वीरसे ४५२ वर्षे दुजा कालिकाचार्य हुवा सरस्वती वहिन वालण हुवा. श्रीवीरसें ४७० वर्षे राजा वीर विक्रमा दित्य हुवो ॥ वीरपछे ४५४ वर्षे चलाचल निन्हव हुवो. वीरपछे ५८४ वर्षे वयरस्वामी हुवा वीरपछे ५८४ वर्षे च्यार साखा हुइ तेहनों विस्तार कहेछे- १२ वरसनो तथा ७ वरसनो काल पड्यो तिवारे घणा साधू आचार्य हुंता तिण महापुरसाने संथारो करीने आपणा कार्य सार्‍यो मोटा मुनीस्वर थया ते तो दूकालमे डिग्या नही क्रिया थकी चुक्या नही आराधिक हुवा देवलोके गया आगमीये काले मुक्ती जासी केइएक कायर थया परीसा खम्या नही ते मोकला हुवा. केइएक महापुरस परदेसें उतर गया विहार करया पाछे रह्या ते भ्रष्टथया खुध्याखमाय

नहीं सुझतो अन्न पाणी मिले नही कदाचित् मिले तो भिक्कारी आगे अन्न पाणी आवे नहीं भेप लिंगधारीथया साधूना गुणरहित थया असुझता आहार लेणहार थया तिहां साधुने सुझतो आहार पाणी मिले नही तिवारे सिदाणा साधु वृती भांजी परीसा २२ खम्या जायनही तिवारे मोकला विशेप पड्या संजमथी भांगा मंत्र जंत्र उपध भेपज कर वा लाग्या इतने एक मोटा साहुकारने परवार घणो वेटा बेटी बंधव जाति न्याति घणी अने धन घणो पिण अन्न थोडोसो अन्न खावणवाला घणा द्रव्यदेवे वरावरका तोही अन्न न मिले खातां खातां बेहडे अवसरे थोडोसो अन्न रह्यो तिवारे साहुकार लाज्यो समरहती दीसे नही हीण दीनथया तिवारे घरनी स्त्रीये कह्यो थोडसा अन्नसूं काम चलावो वली स्त्रीबोली शेटजी अन्न खूटो तिवारे साहुकार कहे खुणेखचूणे होयतो एकठोकरीने ते सोधीने ते राव करा वो करावीने तेहमे विप घालीने पीलस्यां ऐसो विचार कीधों तिवारे पछे स्त्री विप वाटेछे एतलेसमे लिंग धारी साधु गुरुना मोकला आव्या तिवारे घरनो धणी सेठबोल्यो थोडीसी रावडी विप विना होवेतो द्यो थोडीसी वासणमे हुंती ते दीधी तिवारे साधु भेप धारी बोल्या बाई तुमकांई वाटोछो समझी बाईकहे स्वामी अहोना काम पुछणा जोग्य नहीं जदसेठने

साधुयें कह्यो आ वाई कांई बाटेछे तिवारे सेठकहे ह्मारे धनघणो पिण साधजी अन्न नही ते भणी विष पीसेछे. रावमे घाली पीयने सोइरहस्यां. तदसाधुने यहवचन सुणीने दया ऊपनी सेठने कह्यो हुं गुराकने जावुंछु एतले रावडीमे विषघालोमती सेठने मानी चेले गुरापासे जाई सर्व वातकही गुरु बोल्या चेला बेठ हुं जाउंछुं गुरुआया जोतसने बलेकरी गुरु बोल्या सेठजी बातसाची कहो सेठजी कह्यो मरणो आयो दीसेछे जव गुरुकहे इतना मनुष आवारो मरोछो जो मे सर्वने उवारूं तो कांई देवो सेठ बोल्या जे क हस्यो ते देस्यूं जद गुरे कह्यो तुह्मारे बेटा घणाछे तिणा मांहिथी ४ बेटा हमने द्यो सेठने कह्यो थे कहो सो ठीकछे गुरे कह्यो थे दोहरा सोहरा दिन सात का ढो आजथी दिन ७ पछे धानना जिहाज आवसी देसमे सुकाल सुभिक्षहोसी चिंत्या मतिकरो दुकाल निकाल जासी सुकाल होसी साहजी वचन सुण्यो वचन प्रमाणकीधो सातमे दिन १ जिहाज आया सेठने ४ बेटा दीधा साधाने लोकमे सुख पाम्या ते पुत्रना नाम नगजी १ नगोदरजी २ नंदमती ३ वियज्ञधर ४ इणा भेपलीधो तिवारे शास्त्र भण्या गीतार्थ हुवा पछे साधु आव्या साधा कह्यो थे सुद्ध क्रीया करो पिण मान्या नही तिहांथी मत निकल्यो चारोंनाई गछ काढ्यो ४शाखा हुई चंद्रशाखा१ नागिंद्र

शाखा २ निवतशाखा ३ विद्याधरशाखा ४ इनशाखा ओसे पाहिले १२ वरसी तथा ७ वरसी काल पड्यो तिसके वाद यहशाखा निकली इण च्यारने आपणा आपणा मत जुदा जुदा चलाया जे भगवंतनी प्रति मा करावी तिणां विचारयो जे आपणे भावे ते आ वसी ते माटे घणो लाभ होसी तव श्रावग लिंग धारीयांना उपदेस सुणीने देहरा तथा चैत्याला उपा श्रै ठाम ठाम कराया आप आपणी गछ समुदाय बं धाणी आपआपणा श्रावग कीया तिणें आपणी पू जा करावे विशेष मोकला पड्या पछे शिवभुती आ चार्यसे दिगांबर ६०९ वर्षें हूवा. श्रीवीर पछे ८८२ वर्षें चैतवासी हुवा धरमखाते देहरा मंडाणा श्री वीर प छे ९८० वर्षे पुस्तकारूढ लिखण की थई॥ गाथा॥ वल्ल ही पुरनयरे, देवहिप मुहसी साण सघेण॥ पुछे आगम लिहिया, नवसे असीयानु वीराउ॥१॥वल्लभपुर नगरने विषे तेकिम नवसे अस्सी वर्ष हुवा पछे देवहिआ चार्य एकदा प्रस्तावे सुंठनो गांठियो कान उपर मे ल्यो हुंतो ते विसर गयो काल अतिक्रम गया पछे या द आव्यो तद देवहिगाणी विचारयो कांईक बुद्धि हीण हुवा ते माटे सूत्र मुखथी विसरसी तिहांथकी तिणे पुस्तक लिख्या आचारांगनो सातमो अध्येन महाप्रज्ञा नामे तेहना उदेशा १६ ते कांई कारण जाणी दिवदी खिमासमण लिख्यो नही ते विछेद्यो॥ ए

तलालगें २७ पाटे सुद्ध मार्ग चाल्यो परंत वीच वी चमें ओरओर मत निकलते गये. तद पीछे दुकाल भारी पडयो लिंगधारी साधु रह्या सिद्धांतना पाना हुंता ते भंडारमांहि राख्या पोताने छंदे जोड कीधी प्रकर्ण तथा चोपाई, छंद चाल, श्लोक, गाथा, काव्य, संस्कृतादि ग्रंथ तथा स्तोत्र सेत्रुंजो महात्म इम पो तानी अनेक मतनी कल्पना करी हिंस्या धर्म परु प्यो तथा गुरुअंग पूजा पोथीनी पूजा गौतम पडघा खमासमण बहिरावे गुरुना सामेला करावे गाजा वाजासे नगरमे ले आवे पगपंडावे इत्यादि सूत्र विरु द्ध परुपणा करे तिवारे पछे ९०४ वर्षे विद्यामंत्र लब्धि बिछेदगया वीर पछे ९९३ वर्षे तिसरा कालिका यैने पाचमथीचोथ थापी वीर पछे ९९४ वर्षे पक्खी फेरी १४ थापी ॥ वीरसे १ हजार ८ वर्ष उप्रांत सर्व प र्व विछेद गया पोसाल मंन्डाणी वीरसे १४६४ वर्षे बडगछ हुवा ॥ ८४ ॥ श्री वीरसे १६२९ वर्षे पुनमीया गछ निकल्यो श्रीवीरसे १६५४ वर्षे आचलीया गछ निकल्यो वीर पछे १६७० वर्षे खरतर गछ निकल्यो. वीर पछे १७२० आगमीयागछ हुवा. वीर पछे १७५५ तप गछ हुवा. पोशाल थापी ॥ वीर पछे २०२३ वर्षे जिन मती लोंका हुवा ते किम हुवा ते कहेछे पुस्तक भं डार मांहिं हुतां तद लोंके मुहतो श्रावग कारकुन दफतरी हुंतो एकदा प्रस्तावे उपाश्रे जतीया पासे

आव्यो हुंतो जतीया कह्यो जे सिद्धांतना पाना उदे हीं खाधाछे तेह मने लिखी आपोतो कल्याणनो कार णछे घणो लाज थासी इम कह्याथकां लुंकेमुहते व चन परमाण कीधो तिवारे वेपधारीया एक दसमी कालकनी परत आपी ते लुंके मुहते बाची यहवो वि चार कीधो जे श्री तीर्थंकरनो मारग तो दसमी कालक सूत्रमेछे दया धरमनो मारग छांडीने हिं स्या धर्मनी परुपणा तो पोते मोकला पाम्या ते मा टे हिवडा कहिये नही तिसवास्ते दसमी कालकादि सूत्राकी दो दो परत उतारी तद पीछे लोंके मुहते पोताना घरें सूत्रनी परुपणा मांडी तिवारे घणा न व्य जीव समझवा लाग्या घणे जीवाने दया धरम रुचिवा लाग्या तिण कालें अरहट्ट वाडीना वाणीया ते संघ काढीने नीकल्याछे बाटे वरखा हुई जे गामे लोंकेमुहुतो दया धरमनी परुपणा करेछे ते गामे संघनो पडावथयो तिवारे संघ सर्व लुंका मुहताकनें सिद्धांत सुणेछे ते अपूर्व वाणीछे ते इसो जाणी घणा लोग सुणवा लाग्या तद लुंके साधश्रावगनो धर्म सुणायो ते संघरे मनमें मारग रुच्यो ते केतला एक दिन सुणतां गया तद संघमे भेपधारी हुंता गुरु ते संघने इम कहे संघजी चालो लोग खरचीनें का ने तंगथायछे तिवारे संघजी बोल्यो मारगमें अजय णा घणीछे एकेंद्रीयादी जीवानी उतपति घणीछे ते

मांटे सुसता रहो तिवारे जतीजी बोल्या साहजी धर्म के काम मांहिं हिंस्या गिणवी नही तिवारे संघमन में बिचारयो जे लोंके मुहुते पासे सुणयोछे जे भेपधारी आणाचारी छहकायानी अनुकंपा रहित एहिज दी सेछे ते सेठ बोल्या थांकी इछाहो सो करो म्हेतो अ बी चाला नही पछे ते जती पाछा गया. संघनें सि द्धांत सुणयासे वैराग उपनो ४५ जणसुं संजम ली धो संजती थया ते संवत १५३१ ते ॥ साधसर वो १ साधुनाण २ साधनुणो ३साधजगनो ४ इत्या दी ४५ साधमिलिने दया धरम परुपवा लाग्या तिवारे घणे भवजीवा धरम आदरयो संजम पालता विचरेछे भेपधारीया नाम दीधो ए लोंका मतीछे तिवारे कितराएक भेपधारी अनेक विध तप करवा लागा तिवारे लोका घणाथा ते इणारो कष्ट देखी सुसता पमा अने तपा हुता तेहना श्रावग पूजारादि दया धरमना साधाने घणा उपसर्ग दीधा तिण महापुरपे परीसा सह्या तिवारे रुपजीसाह पाटणनो वासी वाणी सु णी दिक्षा लीधी ते रुपऋप थया ॥ लोंकाना पहिला पाट॥१॥ तिवारे सुरतनो वासी जीवोसाह ते रुपऋ ख पासे ऋधि छोडी संजम लीधो ते जीवो ऋखीथयो इ तरा लगे साध जाण तिवारे पछे थानक आहार पानी वस्त्र पात्रनी मर्याद लोपी दोप सेवण लाग्या. एतले आचार गोचरमे ढीला पमा संवत १७०९ सुरतनो

वासीबहुरा वीरजी श्रीमाल लोंकामे कोमी धज तेह
नी बेटी फूला बाई तेहने पासें लवजीसाह सिद्धांत
घणा भण्या लवजीने वैराग उपनो बहुरावीरजीनेरुपे
दीक्षानी आज्ञा मागी तिवारे ते कहिवा लाग्यो
तुमे लोंकाना गछमे दीक्षा लो तो आज्ञा द्युं लवजी
साह औसर विचारयो हिवडां अवसर एहवोहीज
छे इसो जाणीने लोंका गछमे दीक्षालीधी तिवारे वैर
जंघजी पासे घणा शास्त्र भणी पंडीत हुवा तिवारे
वर्ष २ पछे पोताना गुरु पासे पूछे स्वामी साधुनो
आचार सुध किमपले दसमी कालककी तरे तिवा
रे लवजी कह्यो भगवंरो मारग २१ हजार वरसता
ई चालसी ते माटे लोंका मांहिथी निकलो तो तुम
गुरु हुं शिष्य तिवारे वैरजंघजी बोल्या लोंका मा
हिसुं निकलो जाय नही तिवारे रुखलवजी गछ वो
सरावी नीसर्या तेहने साथे रिखथोभणजी १ ऋप
संखियोजी २ ए दो दीक्षा लीधी घणा गाम नगर वि
चर्या तिवारे बीतराग धर्मनी परुपणा कीधी तिवारें
लोग घणा समजा तिवारे लोका ढुंढीयो नाम दीधो ति
वारे अमदाबादथी कालपुरनो वासी सोमजीसाहते मध्ये
घणी सूर्जनी आतापना कीधी घणी ताढखमी तपका
उसगकीना घणा साधसाधवीनो परिवार हुवो. तेहनो
नाम हरिदासजी १ ऋषपेमजी २ रुषकानोजी ३ रिष
गिरधरजी४ प्रमुख घणा जाणवा बैरजंघ जतीना ग

छथी नीकल्या अने कुवरजीना गछथी नीकल्या तहनो नाम ऋखअमीपालजी १ ऋप श्रीपालजी २ ऋखधर्मसीजी ३ ऋपहरजी ४ रिपजीउजी ५ ऋपकरमणाजी ६ रिपगेटाहरजी ७ रिपकेशोजी ८ एतला महापुरप गछ छोडी दीक्षा लीधी घणा जिन मार्ग दिपायो घणा परिवार थयो पछे टोला हुंता जायछे समर्थजी रिपधर्मदासजी गोधोजी इत्यादि ओर नागोरके देसमे सूत्र परकट कीये लुंका नागोरी पार सिद्ध थया श्रीसदारंगजीरा आदेस लेई श्रीपुज्य मनोहरदासजी क्रिया उद्धार कीधो तपश्चरणकीधो मुनी खेतसीजी साथें तपकीधो श्रीमनोहरदासजी जाति सुराणा नागोर वासी १ श्रीभागचंदजी जात ओसवाल सुराणा २ श्रीसीतारामजी जाति अग्रवाला नारनोलवासी ३ श्रीस्योरामदासजी जाति श्रीमाल दिल्लीके वासी ४ श्री हरजीमल्लजी ५ श्रीपरम पंडित रतनचंदजी ६ श्रीकुंवरसेन जात अग्रवाल अमीनगर वासी ७ तत् सिष्य ऋखराज वरतमान नामछे. अत्र कोई कहे हु उत्कृष्टोछु ते अपणे छंदे कहेछे अने भद्रबाहुस्वामी कहेछे रतन कांखा दीठा ते चारित्र सर्व दोषीछे पिण अलप समणछे घणा मुढछे.

॥ दोहा ॥ सकल करम अरी जीतके, सिद्ध हुये भगवान ॥ सो वंदु सिर नायके, केवल दरसन ग्यान

॥ १ ॥ आदि पंचनवसादि गिन, पवन आदि खट साज ॥ चंधकुमादिक च्यार मिल, चतुर बीस जिनराज ॥ २॥ बीतराग पद पायके, कीया धर्म उपदेश ॥ कुमति निवारन सुख करन, टाले सकल कलेश ॥ ३ ॥ जिन बाणी जयवंत है, कारण जग उद्धार ॥ जो नर श्रद्धे भावसुं, ते उतरे भव पार ॥ ४ ॥

वखाण--- श्री जिन राज देवने मोक्ष मारगका रस्ता दया धर्मादिकका कह्याहे परंत इस पाचमे आरेके परभावसे तत्व ज्ञानका समझना महा कठिनहे लेकिन जो हलकरमी जीवहे, तेह धरमकी परिक्षा करेहें अगर जिन पुरषोकी संसारमें करम परकित बहुत ज्यादेहे तो उनको बीतराग देवके वचन अछे मालुम नही होते सो क्या करिये संसार में भ्रमणाके कारणे करी जिन वचनको मिथ्या करतेहे याने झूठे करतेहे आत्मके उद्धार करनेका जो रस्ताहे जिसते भूल रहेहै और धरमकी परिक्षानी नही करतेहें मत कल्पनाके बधारणे वास्ते अनेक कुहेतु लगातेहे संसारके रुलनेका जिनको भय न होहे और अज्ञानी जीवोको भरमातेहे आपणे मनमे कितनेक जैन मतके धारीयो कहतेहे कि हमारा धर्म सच्चाहे परंतु यों नही समझते कि धर्म किस कुं कहतेहे और क्या महिमा धरमकी हे सो रहस सूचांकी नही समझते और हिंस्यामे धरमकी दिढावणा

करतेहे परंतु दयाका भेद नही जानते और छहकायाकुं हणकर यानें हिंस्या करिके धर्मका लाभ कहेतेहे औ र हिंस्याका दोष नही समझने तिनको जैन मती न काहिए ॥ क्योंकि जैन धरमतो जतन करे जीवोंका तिनको जैनी कहतेहे और जैनी नाम धरायेसे जी वकी कुछ गरज नही सरती इस वास्ते जो लोग जैन धरमी नाममे बहोतसे आरंभ हिंस्या छह कायाकी करकें मोक्ष मारगका खाता कहतेहे सो तिनोंके पूछनेके लीये यह प्रश्नोका संग्रह लिखतेहे और जो कितनेक सकस यों कहतेहे कि हमारे सा थ चरचा करो सो तिन लोगोंके वास्ते पूछनेके सू त्रोंके अनुस्वार धरम मारगका भेद कहतेहे और हम कुछ मत पक्षकी वार्ता नही कहते फक्त हिंस्या का मारग दूर करनेको सूत्र पाटके साक्षसे दया ध रमका भेद परगट करतेहे वास्ते जो किसी साधू श्रावकोंके दिलमे संदेह नही पडे जों की दीपककी रोसनीसे मकानके बीच चांदणा होताहे ऐसेही इस प्रश्नोत्तर संग्रहके पढनेसे और धारणेसे मिथ्यात अं धेरको दूर करता यह ग्रंथकी वचानिकाहे ॥ हिवे सिद्धांत सूत्र प्रमाण करी दया धरमपर सिद्धका लक्षण कहतेहे ॥

॥ दोहा ॥ वीतराग उपदेशमे, दया धरम परधान ॥ जो धारे मन सुद्धसुं, ते पावें सिवथान ॥ १ ॥

घखण-- हिवे कितनेक बादी यों कहतेहे की तुम सूत्र ३२ मानतेहो सो सूत्र तो ८४ कहेहें तिनो का इहां जुवाव देनेके वास्ते असली और नकली सूत्रोंका सरधांन लिखतेहे सो लंबी वुद्धिसें समझना चाहिये धर्ममे पहिचान करणी जोगहे लेकिन वाद करना जोग नहीहे सो आगम तिविहे पन्नते तंजहा सुत्तागम्मे अत्थागम्मे तदुनुयागम्मे इति वचनात सूत्र मूल पाठ १ तस्य तेह सूत्रका अर्थ २ याने खुलासा किया वास्ते भव जीवाके समझावनेके तिसको अर्थ कहतेहे उभयागम्मे याने सूत्र पाठ दोनोका प्रकाशक ३ तेह आगम तीन प्रकारका कह्या श्री जिनराज देवानें तेह मांहि अब पांचमा आरामांहि कितनेही आचार्य ३२ सूत्रकी आम्ना को मानतेहे और कितनेही आचार्य ४५ सूत्र मानतेहे कितनेही आचार्य ७२ सूत्र मानतेहे कितनेही आचार्य ८१ सूत्र मानतेहे कितनेही आचार्य ८४ सूत्र मानतेहे तेहनो निरणय करणो जोग्यहे तेह नंदी सूत्रमे जो सूत्राके नाम कहेहे ते नाम कहतेहे दसवे कालक १ कप्पिया कप्पियं २ चूलकलप सूत्र ३ महा कल्पसूत्र ४ उववाई ५ राय प्रसेनी ६ जीवाभिगम ७ पन्नवणा ८ महा पन्नवणा ९ पमाय पमायं १० नंदी ११ अणुजोगद्वार १२ देविंदथुई १३ तंदुलवयालीया १४ चंदगविजया १५ सुरप

न्नती १६ संक्ल प्रवेस १७ पोरसी १८ विज्ञाचरण विणिश्चय १९ गणिविज्ञा २० झाणविन्नत्ती २१ मरण विन्नती २२ आतमविसोही २३ वैराग सूत्र२४ संलेखणा सूत्र २५ विवहार कलप २६ चरण विधी २७ आउरपचखाण २८ महापचखाण २९ येह सूत्र उतकालिक कहातेहे और इनकी असिझाई टालिके आठ प्रहर पढणे कहेहे ॥ अव ३० सूत्र कालिक तेहना नाम लिख्यतेहे ते उत्राध्येन १ दसा श्रुतस्कंध २ वृहत्कल्प ३ विविहार ४ नसीत ५ महानसीत ६ ऋपन्नापित ७ जंबूदीप पन्नती ८ द्वीवसागर पन्नती ९ खुड्डियापमाणविन्नती १० मल्लिया विमाण एविनात्ति ११ अगचूलीया १२ बंगचूलीया१३ विवाहचूलीया १४ अरुणोववाई १५ वरुणोववाई १६ गुरुलोववाई १७ धरणोववाई १८ वेसमणोववाई १९ वेलंधरोववाई २० देविंदोववाई २१ उठाणसुय २२ समुठाणसुयं २३ नागपरियावणिया २४ निरावलीया २५ कप्पिया २६ कप्पवडिंसया २७ पुप्फिया २८ पुप्फचूलीया २९ वन्हिदसा ३० यह ३० सूत्रकालिककहातेहे दिन रात्रीका पहिला चउथा पहिर वांचना करणी ॥ एह सरव सूत्र ५९ एक आवस्यक एह ६० और आचारांगादिक १२ अंग ॥ आचारांग १ सूयगडांग २ ठाणांग ३ सामायांग ४ भगवती ५ गिनाता ६ उवासगदसा ७ अंतग

ठ ८ अनुत्रोववाइ ९ प्रश्नव्याकरण १० विपाक
११ दिष्टिवाद १२ एह ७२ सूत्र और पांच सूत्राना
नाम विवहारमध्येछे एवं ७७ सूत्र और १० सूत्रो
का नाम ठाणांगमध्येछे ते १० दसमांहिं छहतो ७७
से आयेहे बाकीचाररह्या तेह ७७ मांहिं मिलावता ८१
थया तेह ८१ सूत्रोका नाम सूत्रामें कह्याहै तेह पर
माणछे तिणमांहिथी कितनेक सूत्र विछेदगया याने
इसवक्तमें वे सूत्र हें नही ओर कितनेक लोग ४५
सूत्र मानतेहे तिणसूत्रामांहिं देविंद थूवो १ तंदुल
वयालियो २ गणि विक ३ मरण बिभती ४ आ
उरपचखाण ५ महापचखाण ६ महानसीत ७ एह
७ सात सूत्र नंदीमें कहेहें तेह सत्यछे लेकिन इन
मांहिं इतनी संक्यापडतीहे की तेह मूलसूत्र पाहिले
नही मालुम पडते अगर कोईकहे तुमको क्या प
हिचानहे जो तुम मुल सूत्र इन ७ सातोंको नही
समझते अगर इसतरे जो कोई वादी कहे तो ति
सको जुवाव देनेके वास्ते शास्त्रकी रीतिसें लिख्य
तेहैं जो महा नसीत नंदीजीमें नाम लिखाहे अगर अ
बजो बरतमान कालमें महानसीत जो सूत्रहे तिस
के चउथे अध्येनमे ऐसा लिख्याहै तेह पाठ लियते
हें ॥ पुठिअंवा पुठिअद्धंवा सिलोयंवा सिलोयअद्धंवा
अक्खरपतियावावे तीन पन्नगाणि सिडियवा ॥ ऐसा
कहिकें पीछे कह्याहे ॥ कुलीयो दोसोनादायवो ॥इम कं

ह्याहै जो, इण सूत्रमे हीण अधिक लिख्या होय तो हमको दोस नही यह वचन तीर्थंकर तथा मूल सूत्र करता गणधर तिणका कह्या हुवा नही क्योंकि गणधरजी ऐसा सदह नही कहे जरा बिचार कर देखो यह पाठ किसका कह्या हुयाहै सो ८ आचार्योंका कीया हुया महानसीतहै तिनके नाम यहै हरिभद्र १ सिद्धसेन २ दिवाकर ३ वृद्धवादी ४ यपसेन ५ देव गुप्तो ६ यशोधर ७ रविगुप्ती ८ इतनें आचार्यों के नामसें नवा वणाया दीसेहै इसपर कितनेक मत पक्षी ऐसा कहतेहे की महानसीथ सूत्र अंग उपांगोसेंभी पुराणाहै सो अंग उपांगोसें पुराणायानें पहिला कैसेंहै॥ तिससूत्रके अध्ययन तिसरेका पाठ॥ तत्थबहूएहिंसुयहरेहिं संमिलिउणसंगोवंग दुवालसंगाउ सूय समुद्दाउ अन्नमन्न अंगाउ वंगसुय स्कंध असयणेहि सगाणं सुमुच्चिउणं किंचि किंचि संवठमाणं एछिलेहिर, तिणिउण सकवकयति॥ अर्थ:--॥ वहुत आचार्योंनें मिलकर पूर्वले १२ अंग सूत्ररुप सागरमेसें थोडे थोडे अंग उपांगादि सूत्र नये लिखने लायक पुस्तकोंमें लिखेहें एतले अबके समयमें जो श्रुतज्ञान रुप सूत्र मोजूदहे॥ तो इस पाठमें मालुम होता है की अंगादि सूत्र पहिले रचे हुयेहे और महानसीथ सूत्र पीछेका रचा हुआहै जो इस पाठमें ऐसा पाठहे तो पहिले सूत्र अंगादिकहैं पीछें महान

सीथेहै इस वास्ते निश्चै नही मानते इस सूत्रको ऐ सेंही और सूत्रभी घणे नवे वणाये मालुम होतेहै और कितनेक आचार्य ४५ मानतेहै जिसमे सात तो पहिले लिखआयेहै और ६ सूत्र और लिख्यते है चउसरण १ भत्तपइन्ना २ चंदाविज्झा ३ संथारप इन्ना ४ जीतकल्प ५ पिंडनिरयुक्ति ६ इण छहो सू त्रोंका नामतो सूत्र नंदीमे नहीहै तो यह ग्रंथ कि सने बणायेहै इसका जवाव देना चाहिये तो यह सूत्र किसतरे मानें जिनका नामभी कही कह्यानही सो इनके बनाने वाले आचार्य पांचवे आरेके जाण पडतेहै क्योंकि पहिले वक्तोंके यह सूत्र होते तो नंदी आदिक सूत्रोंमे नाम दरज होता इस वास्ते नवे जोडे हुयेहै अगर जो कितनेक लोग ४५ सूत्र मा नतेहै ते मांहि कितनेक ७२ सूत्र मानते हो तो ३२ सूत्रोंसे बाहिर और ७२ के भिंतर महानसीत ना मा सूत्रमे पांचवां अध्येन नवनीत सार नामे क्यों नही मानतेहो तिसमांहिं देहरा प्रतिमा धूपदीप क रवाका उपदेतां जो साधू संसार वढावे और संज मकाभिष्टाचारी कह्याहे इस पाठको क्यों नही मान ते इसका जवाव कागजपे लिखदेना चाहिये ज्यूं हम लोगोंकी तस्सलीहोवे और जीतकल्पका नाम नंदी सूत्रमें नहीहे यह सूत्रकहांसें आया और किसने व नायाहे ॥ और वृतिचूर्ण तो अब वरतमान काल

के और पांचमे बणाएहे तेह टीकादिकके करणह र तिनोके नाम टीका वगेरे मांहि दरजहे तेह आ चारांग सूयगडांगजीकी टीका सीलांग आचार्यनें क रीहे बाकी नव जो अंग सूत्रोंकी टीका ठाणांगादिककी टीका वृति अभेदेव सूरीजीनें बणाईहे नंदीजी अ णुजोगद्वारकी टीका मलियागिरी आचार्यनें करीहे ओर दसमीकालककी टीका हरीभद्र सूरीनें करीहे औरभी घणे आचार्योनें टीकाचूर्णभास निर्युक्ती आ दिक अपणी अपणी बुद्धि प्रमाणे करीहे लेकिन उ नोंनेंभी खुलासा कह्याहे इस पाटका अरथमें इस माफिक कराहे ओर कोई आचार्योंनें ओरतरह क राहे कोई इस माफिक करतेहे इस माफिक कराहे निश्चेज्ञानी सकारे सो तहत अपणे करे हुये अर थांकु निश्चे नही करा ज्ञानी महाराजके वचनोको सत्यकर माने ओर अपणे छदमस्त पणाका अरथां कुं निश्चे नही कह्या ओर मूल पाटकु निश्चे परिमा णकरा इस माफिक जैसा टीकाकारजीने कहा तैसा ही हम लोग कहतेहे जिसवक्त अभेदेवजीनें टीका करी तब तो पूर्वांका ग्यान विछेद गयेकुं ३०० व रस आसरे हो चुकेथे सूत्र भगोतीका मूल पाठहे भगवान मुक्त पधारे पीछे १ हजार वर्ष वीत जावें जब पूर्वांका ज्ञान विछेद जावेगा खुलासा देखलेना अभेदेव सूरीजी १२९५ वर्ष आसरे पीछे हुयेहे

लेकिन उनोंने तो साफ खुलासा सूत्र भगवती ठाणागमे कहदीया निश्चे केवली सकारे सो खरा जो उगा अधिका कह्या होयतो मिछामि दुक्कडं और अबकितनेक लोग इनके करे हुये अर्थोंकु निश्चे केवली सरीखे वचन माने है वो किसके आधारसे निश्चय मानेहैं फकत अपने मनकी लहिर करतेहै लेकिन उनकूं कुछ शास्त्रका आधार नहीहै इस वास्ते टीकाकारकी और केवलिजी महाराजकी दोनोंकी आसातना करतेहै और हम लोगोंका और टीकाकारजीका एक सरीखा समाधानहै उनोने मूलसुत्रोंकुं तो निश्चय रक्खाहै और अरथकरा जिस्कुं कह्या मैं छद्मस्तहुं मेरी अलप बुद्धी माफिक अर्थ कराहै ऐसा कह्या लेकिन निश्चे सर्वज्ञ वचन प्रमाण कीये है इसतरे नवे नवे औरभी शास्त्र वहोतसे बणायेहै इनके उप्रांत अनेक चरित्र ग्रंथ नवे नवे जोड कर परसिद्ध करेहै तेह शास्त्रोमें जो उपदेश रुप वार्ता आत्मका कल्याण कारक जो कहीहै उनकुं हम लोग परिमाण करतेहै लेकिन आरंभ हिंस्यादिककी वारता परिमाण नही कर सकते जो जिन आज्ञा बाहिर वचनहै और छद्मस्त जीवोंको पक्षपात मतका अधिक होताहै तत्वज्ञानके समझने वाले थोडे जीव होतेहै तिसवास्ते जो सुत्रोंसे मिलते वचन तथा उपदेशादि वारता सर्व प्रमाणहै जो सुत्रोंकी अ

पेंह्ला आंचार्योंने रक्खीहे वह बहुश्रुतीयासे जानप डतीहैं ओर जों सूत्रोंमे श्रावग श्राविकाओंके ना म अथवा जिनभक्तिकारक राजाओंके नाम ओर उनके लक्षण धर्म ओर भक्तिके करणे का जो अधिकार याने समास सूत्रोंमे कह्याहे तिनके मुता विक लिखतेहे की देखो उनोंने कहीं मंदिर नही बणा या ओर पहाड पर्वतोकी जात्राभी नहीं करी ओर फू लादिकके चढानेकी कही रीत कही नही हैं सो कि तनेक वादी यों कहतेहे की जगे जगे पूजाका कर णा फरमायाहे सो अब हम उनोंके वास्ते पूछनेके लिये सूत्रोंमें देखकर श्रावग श्राविकाओंके नाम ओर उनका धर्म ओर गुणोका समास लिखतेहैं अ वलतो आचारांग सूत्रमें सिद्धार्थ राजा १ ओर त्रिसलाराणी २ सूयगडांगे लेपनामें ३ ठाणांगमे सुलसा ४ ओर भगवतीमे सुदरसनसेठ ५ ऋषभद्र पुत्र ६ संखजी ७ पोखली ८ उदाईराजा ९ अभ्या भीचकुंमार १० कारतिकसेठ ११ मंडुक श्रावग १२ सोमिलब्राह्मण १३ वरणनागनतुओ १४ ओर गि नाताजी सूत्रमें सेलग राजा १५ पंथकपरमुख ५०० परधान १६ सुदरसणी श्राविका १७ अरणकश्रावि क १८ कुंभराजा १९ प्रभावतीराणी २० जितसत्रुरा जा २१ सुबुद्धी परधान २२ नंदनमणीयार २३ तेत लीपुत्र २४ कनकध्वज राजा २५ पुंडरीकराजा २६

उवासगदशा सूत्रमें १० श्रावक कहेहे ते लिख्यते आणंद १ कामदेव २ चूलणी पिया ३ सुरादेव ४ चूलसतक ५ कुडकोलीया ६ सिकडालपुत्र ७ महासतक ८ नंदणी पिता ९ सालणी पिता १० औ र अंतगढ सूत्रमें सुदरण श्रावक १ विपाकमांहिं सुबाहु कुमार २ भदरनंदी कुमार ३ सुजात कुमार ४ सुवास कुमार ५ जिणदास कुमार ६ वेसमण कुमार ७ महावल कुमार ८ भदरनंदी कुमार ९ महाभदर कुमार १० वरदत्त कुमार ११ और उववाई सूत्रमें अंबड श्रावकजी १ और ७०० अंबडजीकाशिष्य कहे रायप्रसेणीमें रायप्रदेसी १ और चितस्वारथी २, जंबूदीव पन्नतीमे श्रेअंसश्राविका निरावलिका सूत्रमें सोमिल ब्राह्मण निखढकुमार १ आनिवेह कुमार २ वेहल कुमार ३ परिकिरती कुमार ४ जुतिकुमार ५ दसरथकुमार ६ द्रढरथ कुमार ७ महाधनुकुमार ८ सतधनुकुमार ९ दिढरथकुमार १० अथवा सिवा नंदा श्राविका १ भदरा २ स्यामा ३ धन्ना ४ बहुला ५ पुंसा ६ आगीमित्रा ७ असणिका ८ फल्गुनी गिनातामें पोटिला १० उत्राध्येनमें समुद्र पालक निरावलकामें सुभदरा ११ भगवतीमें उतपला १२ जयंती १३ मृगावती १४ आचारांगमें त्रिसला १५ इत्यादि वगेरे घणेही श्रावक श्राविकाओंका अधिकार यानें

बयान बहोतसा कीयाहे ओर राजग्रहीनगरी चंपान गरी द्वारकानगरी आलंभीयानगरी सावत्थी न गरी वाणीयगांम हथणापुर तुंगीयानगरी इत्यादि क नगरीयोंमे भगवंत श्री महावीरजी विचरयाहैं औ र गणधर आचार्जोंने नगरी कोट किला खाई दर वाजा बाग वाडी ओर जलपूरणभद्र इत्यादिकोंका वर्णनकीयाहे ओर तीर्थंकरोंके समोसर्णकाभी अधि कार बर्णन कीया. परंत जिन मंदिरका बयांन अथवा प रतिष्ठा अथवा पूजा ऐसा बयांन तो किसी नगरमें नही कीया ओर घणेही राजे भगवान महाराजके द रसण करणकुं गयेहें लेकिन सचित फूलादिक कही किसीनें चढाये नही ओर मंदिर बणाया नही अग र जो कही श्रावकोने मंदिर बणाया होयतो इस प्र श्नका जवाब देना जोग्यहे ओर राजा भरतजी १ बाहुबल २ श्रीअंसकुमार ३ कृष्ण वासुदेव ४ श्रेणकराजा ५ कोणकराजा ६ ब्रह्मदत्त चक्रवर्त ७ इ त्यादिक घणे राजा धरमके परभाविक हुवा धर्मके कराणे वाले हुये धरमके साहज देणे वाले हुये या नें धरमकी दलाली कराणे वाले श्रीकृष्ण महाराज हुये ओर कितनेक राजा ओर श्रावकोनें साधुवां को थानककी आज्ञादई कितनेही राजाओंनें अ न्नपाणी खादिम सादिम वगेरे १४ प्रकारका दान दीयाहे ओर पोसह सामायक आदिक बहुत धरम

ध्यान कीयाहे अगर जिहां कही संदह पमा तहांहां प्रथम धर्म चर्चाके पूछेहें ओर धरम ध्यानकरणेंकी पोषद साला राजा ओर श्रावकोकी कहीहे परंत ध न खरचकर देहरा करणा तथा संघका काढणा त था प्रतिमाका कराणा अथवा पूजणा ओर नम स्कारका करणा प्रतिमांकु ओर परवतांकी जात्रा क रणा इत्यादिकका लाभ सूत्रांमें कही नही ओर इन बातोंमे मोक्षका कारणभी नही कही कह्याहे ओर करम निर्जराभी नही कही अगर जो कही असस ल सिद्धांत सूत्रमे भगवान वा केवली महाराजानें फ रमाई होई जात्रा परवतोंकी ओर पुष्पादिकोंकी पू जा करिके किसी राजा अथवा श्रावगने करी होतो इस प्रश्नका जुवाव सूत्राके परमाण यानें साखसे दे ना चाहिये अगर कितनेक लोग इस प्रश्नपर ऐसा कहतेहे की तुम जो पूजामे अथवा जात्रा करणेंमें हिंस्या बतातेहो तो देखो सूत्रामे पहिले हिंस्याकरी पीछे धर्ममें समझाया सुबुद्धी दीवानजीने अपणे रा जाकुं द्रह बावडीको पांनी समारनेकी कितनी हिं स्या हुई ऐसे कितनेही प्रश्नहे ऐसेंही जो हम पूजा आदिक करतेंहें सो वास्ते धरमके करतेहें सो पाप क्षय होतेहे ऐसा जो कोई वचन इहा कहेतो तिस को जुवाव देनेके प्रश्न लिखतेहे अगर जो देखो सु बुद्धी दीवानजीनें द्रह बावमीका पानी समराया सो

वह श्री महाराजका उपदेशका पाठ आज्ञाका नही
है वह तो उसकी अभितर यानें अंदर बुद्धीके परभा
वसें पाणीकों सुद्धकीया परंतु श्री महाराज तीर्थंकर
ऐसे आरंभकी आज्ञा नही देवें और भलाभी नही
जानें देखो परतिक्ष सूत्र प्रश्नव्याकरणमे लिख्या
है की जो प्राणी अर्थ धर्म काम इन तीनोके वास्तें
हिंस्या करें तेह आश्रवका कारण कह्याहै सोई आ
ज्ञा बाहिर जीव जबताईरहेगा तबताई आज्ञाका
आराधिक नही होगा आज्ञा आराधे बिगर यानें
आज्ञाधारे विना मोक्ष पद सिद्ध नही हो सक्ता ऐ
सा शास्त्रोका अभिप्रायहै अगर जो जिन आज्ञाके
बाहिर कारजहै सो उनसे मुक्त पदकी सिद्धी नही
है सो भगवानका मारग तो सर्व जीवाकुं सुखकार
क हैं ॥ इति पूर्व प्रश्नउत्तर ॥ १ ॥ जो कितनेक लो
ग हिंस्या कारिकें धरम करतेहैं सो अपबदें करते
हो की भगवानकी आज्ञा करिकें करतेहो की अ
पने मन इछा करतेहो सो इस प्रश्नका जवाब दे
ना जोग्यहै अगर जो सावद्य करतव जितने सूत्र
में लिखेहैं इनमांहि भगवानकी आज्ञा मूत्रांमें नही
कहे जो सावद्य याने हिंस्याकारी काम जो कीयेहैं
जो संसारकी रितिहै और अपने मन इछाके का
महै जैसें सुबुद्धी परधानजीनें बावडीका पानी सम
गत्रा राजाको समझाया ते अपणी इछाए मिश्र ध

र्म तथा पुंन धर्महै और इह काम मन इछाएकरी कीयाहै १ और मल्लीनाथजीने गोहन घर कराया ते अपणी इछाए कीयाहै २ और आणंद श्रावग जीने जात जिमाइ पुत्रको सेठ पदवी दई ते मन इछा कारजकीया ३ और कौंणकादिक राजाओंने नगर सिणगारकीया ते अपणी सोभ्या कारणे की या ४ धर्मघोष आचार्यने नागश्री ब्राह्मणी निंदी ते अपणी इछाए निंदा करी ५ परदेशी राजाने दानसाला कराई ते अपणी दिलकी मरजादा करी ६ और चित्तस्वारथी घोडांका मिस करया ते मन इछा काम कीयाहै ७ और सुरियाभादिक देवता ओंने नाटिक कीयाहै ते अपणे मनके मुरादें की याहे ८ कौंणक राजा नित वधाई लेता ते आपणी अखत्यारीका काम कीया ९ कृष्ण महाराजने दिक्षा वास्ते ढंढोरा वजवाया ते मनके अखत्यारे वजवा या १० और दिक्षा महोछव करया ते मनकी इछा थी करयो ११ और देवता इंद्र जनम दिक्षा केव ल निर्वाण समे महोछवकीधा ते अपणी मरजीके साथ करया अथवा उनका कुल विवहारहे १२ औ र अनेक देवता और इंद्र नंदीस्वर दीपमें अठाई महो दसवकरें ते उनका पुराणा मरजादके माफिक कार ज करतेहे १३ और जंघाचारणसाधूने लब्ध फोरी ते अपणी इछाए नंदीश्वर द्वीपमे गया तिहां जग

वानकी आज्ञा नहीहे १४ ओर अंबड श्रावगजी सौरुपकरी बेक्रै सेती सोघरो पारणा करया ते अपणे मन इछाए कीया १५ ओर संखश्रावगजीने जिमनो कोल कीया ते अपणे मनसे कीया १६ ओर महासतग श्रावगने ८ अस्त्रीकुं कठोर भाषा कही ओर पोटिला देवने दगाबाजीकर तेतली परधान समझाया ते मनके इरादे करी समझाया १७ ओर तीर्थंकरजी बरसी दान देवें ते अपणी इछाए दीधाहे १८ ओर देवता प्रतिमा वा दाढा पूजे ते आपणी मन इछाथकी पूजतेहें १९ ओर जो धरमके वास्ते जो हिंस्या करते हैं तेह ते अपणे मत कल्पनाके लीये छहकायाकी हिंस्या करिके धर्मकहें तिहां भगवांनकी आज्ञा नही हे अगर जिन आज्ञाके बाहिर कार्नमें मोक्षका पद जीवांकुं नही प्राप्त होगा अथवा कही जिन आज्ञा बाहिरसे मोक्ष हुई होयतो किसी जीवकी तो लिखना चाहिये इति प्रथम प्रश्नोत्तर ॥ १ ॥ ओर कितनेक मत पक्षी ऐसा प्रश्न करतेहे की कीसी सकसने काली डोरीका सर्प्प बणायकर थापन कर रक्खीहे ओर कोई उस कालीडोरीके सापको तोडे तो पाप लागताहे अथवा घोडा हाथी मिठाई के जो बणातेहे उनके खानेका तुम दोस समझते हो तो इसीतरेसे जिन प्रतिमा पूजनेसे धरमक्यों नही कहतेहो ऐसा प्रश्नजो कितनेहीक लोग करतेहे सो

तिनके जवाव देनेके लीये प्रश्न लिखतेहे की जैसे कोसी सकसनें कागजके ऊपर गऊकी मूरत निकाल कर और फिर उसको छेदन भेदन करे तो पाप बर जरूर लगताहे इह सरधा हमारे तांई है और खांडके खिलोनेके खानेकाभी पाप लगताहै लेकिन उन खांडके खिलोनेका आकार हाथी घोडेका है सो वह असवारीके कामके नहीहे और पापाएकी गउ दुधकी दातार नहीहै जैसी चाहे पूजा पत्थरकी गऊकी करो परंत कारज साधक नहीहे जैसे ब्रह्मा विष्णुजीकी मूरतीके फोडनेका पाप लगताहे लेकिन उनके पूजनेसे धर्म नही होता अहो सुविवेकी जनो अंदर दिलके जरा अछीतरे समझोतो सही पाप राग द्वेपथी लगताहे अगर धर्म तो राग द्वेपके ऊपसमाथाथी होताहे और राग द्वेप वधारणेसें तो संसारमेंही जीव रहताहे और खय करणेसें राग द्वेप बीतरागके पदमे प्राप्त होताहे इस रीतीसे प्रतिमाकी आसातना करणेसे निजदेवनी असातना लगतीहे 'देवाणु आसायणाए देवीणु आसायणाए' इति बचनाथा लेकिन द्रव्य पूजा करनेसे आश्रवका कारणहे तिन वास्ते पूजा और बंदना प्रतिमाको करणेसे कुछ धर्मकी अधिकता नही होती और ज्ञान गुण आतिसय विगर बंदनीक नही और थापनाथी परमर्थकी सिद्धी नही सुत्रांमे किसी ठिकाणें गणधर देवांने

साधाका प्रातमाके वदणे और पूजणेका लाभ अथवा धर्म अथवा जिन आज्ञाका उसका आराधिक नही कह्या अगर इस प्रश्न उपर जुवाव इसीतरेकाहे सोई भितर बुद्धीसे समझना चाहिये॥इति पूर्व प्रशनोत्तर ॥ २ ॥ अगर कितनेक सकस सूत्र प्रश्नव्याकरणके प्रथम संवरद्वारमें साठ नाम दयाके कहेहे सो जिनोंकें मांहि ५७ सतावनमां नाम (पूया) ऐसा शब्द कह्याहे सो पूजा सूत्रमे लिखीहे सो तुम कैसे नही मानतेहो ऐसा कहतेहे जो प्रश्न तिनको जवाव देनेको. इहां सूत्र प्रमाणसे लिखतेहे सो तुम लोग द्रव पूजाका नाम इहां कहतेहो सो तुम अणजाणपणेसे वोलतेहो जो प्रश्न व्याकरणमे ६० नाम दयाका कह्याहे लेकिन पूजाके इह साठ नाम नही कहेहें इहातो दयाके अधिकारके नामहें जैसें ५७ मा नाम पूया और इन ६० नामोंमे जग्यभी नाम लिख्याहे जो इहां तुम लोग पूयाका अर्थ जो तुम नें मत पक्षसें दरव पूजाका कीयाहें और हम पूछते हें की जग्गका अर्थ क्या करोगे जग्यतो अनमती लोगोने करीहे जिसमे अश्वमेधी अजामेधी जग्यकरीहे जिसमे पचेंद्री जीवांका होम कराहे सो तुम इहां दयाके नाममेभी जग्य और पूजाके ठिकाणें हिस्याका उपदेसदेतेहो सो वडी भूलहें की जैसे जग्यका अर्थ इहां दयाका शब्दहे की जैसें कोई पुरष भूखेको

तृपतकर आणंद करे फिर वह कितनेक आदमी ऐसा कहदेतेहै कीतने बडा जग्य करा की जो नूके की आत्मा तृपतकरी सोई इण द्रष्टांते जग्गका परमार्थ इहां दयाकाहें इसकारण करिके ज्ञानी देवाने जग्य दयाका नाम कह्याहें कुछ वैसी अनमती लोगोकी जीव हिंस्याकी जग्यका इहां कथन नहीहें इसीतरें इहां पूया नामभी दयाकाही केवलीयोनें कह्याहें सोई दयाके नाम ६० है परंत पूजाके ६० नाम नही कहेहें सो सूधा अर्थ समजना चाहिये॥ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ३ ॥ अगर कितनेक लोग ऐसा कहतेहें की नंदी साधू उतरेहे ओर नंदीमे पडती साधवीको काढतेहें साधू ओर बिपम ठिकानें पडतां साधू वृक्षकी डाल पकडी निकले इत्यादिक कारज साधू करे जिसमे दरव हिंस्याहोतीहें सो सूत्रामे कहीहे ऐसें हमभी पूजा आदिककाम करनेसें धरम मानतेहें ऐसे वचन जो कहतेहें सो अग्यानताके अथवा मत पक्षके सबबसे कहतेहें क्यों की अब देखोतो सही की जो साधू नंदी उतरे १ ओर नदीमेसे साधवीको निकाले २ तथा क्रोधादिकके बससें नासती साधवीको पकडना ३ ओर बिपमस्थानथी बिरखको पकरके उतरना ४ इत्यादिक कारजतो साधू कारण याने कोई वक्तपें करणा कह्याहें लेकिन बिनामतलबतो यह कारज करे नही ओर

अनुमोदे याने भलाभी नही जाने और इन कामो की अभिलाखाभी नही करे कब वह दिन भला होय जो में नदी उतरूं ऐसी भावनाबी नही करणी अथवा यह कारज इतने लाचार होकर साधूसें होते हें की मेह वरसतेमे वाऊ भूमिका जाना १ और जिहां जाय तिहां नदी लगती होय तो नदीका उतरना २ और वह कारणसे चोमासमें बिहार करणा ३ और चउमास बीतेपै बरखा होय अथवा रस्ता में कीचड बेंइद्री वगेरे जीवांकी पैदा होय तो चौमास पीछे ठहरणा ४ इत्यादिक कारज करणेको साधूजी भला नही समझते क्योंकि यहतो बहोत लाचारी के कामहे सो ऐसे द्रिष्टांत देकर कितने लोग इहां दरब पूजा करणा सही कहतेहें परंतु मदिर प्रतिमा और जात्रा आदिक करणा जो तुम लोग करतेहो सो तो बहोत आनंद सेती हिंस्या करिके धर्म मानते हो सो तुम नदी आदिकोंका हेतू देतेहो सो तुमारा हेतू यह सही नही होता क्योंकि साधूतो दोष लागनेसें पछताताहे और अपणी आत्माको निंदताहे की मुझे दोष लग्या सो यह कारज बुरा हुया और उहतो नदी आदिक लगनेके दोषांका दंड प्रायछित लेनेका अभिलाखी होताहे और गुरू महाराजके साम्हने अलोवणाभी करताहे अगर इस बात में कितनेक लोग ऐसी तकरीर करतेहें की नदी उतरने

का दंड कहां कह्याहे सोई ऐसी तकरीरांसें परमार्थकी सि
द्धी नही परंत हम लोगतो नदीके उतरनेकाजी दो
ष सूत्रसें सही करतेहें सो कोईकहे कोंणसे ठिकाणे नदी
के दोपका प्रायछितहे सोई परथमतो इछा कारेण
की पाटीमें देखो कितने दोपोके प्रायछितोंका मिछा
मि दुकडं ॥ कह्याहै की (उसा उतिंग पणग दग्ग मा
टी मकडा) इति वचनात जो पाणीकी बूंदके ल
गनेका दोस कह्याहे तो नदीके उतरनेका दोष क्यों
नही होय इस वास्ते नदीका दंड प्रायछित इछा का
रणे की पटीसे सही पडताहै और हम लोग दोष
कों दोप समझतेहें सोई तुम लोगतो दरव पूजाका
दोष नहीं समझतेहो और साधूकीतरें तुम क्यों न
ही पछतातेहो अगर तुमतो आरंभ हिंस्यामें धरम
करतेहो सोई तुमतो कारण विसेखमेंतो पूजा आदि
कको नही समझते और इहां लाचारी कामका दि
ष्टांत देतेहो सो परमाण नही होता यानें सही न
हीं होता विचार देखो कारणपडे कारजकी सिद्धी ह
मेसेके कारजमें सिद्ध नही होतीहे इति पूर्व प्रश्नो
त्तर ॥ ४ ॥ अगर कितनेक सकस ऐसा कहतेहें की
तुम लोग जिनराजके बिंबकी आसातनाके करनेमें
यानें वे अदबीके करनेमें दोप समझतेहो तो पूजा
और नमस्कारके करनेमे धर्म क्यों नही समझतेहो
ऐसा जो प्रश्न कोई करेतो तिसको जवाव लिख

तेहे की जैसे कोई ओरत सीलवंती जिसके भरता
रका नाम मदनसेन होय ऐसा इसीतरेका नाम
किसी ओर पुरषका होय तो वह ओरत उस पुरस
का नाम नही लेय परंतु उसके साथ भोग संबंधी
क्रीडा उस दूसरे पुरषसे नही करे अगर वह जो
नाम अपने पतिके मुताविककाजो नही लेतीहै तो
वह अदव ओर कायदा उस दूसरे पुरषका नही
समझतीहै अगर उह जो नामका अदव रखतीहै
सो अपणेही पतिके नाम आश्रयको समझतीहै कु
छ उसपुरसका अदव इहां उस सीलवतीको नही
फरमाया ऐसेंही हम लोग अपणे दिलमें समझते
हें की जिनराजके थापनाकी जो प्रतिमाहै सो ति
सकी वे अदवी नही करणी क्यों की आपणा देव
श्री अरिहंताकी प्रतिमाहै परंत ते प्रतिमाकी वंद
ना पूजा ओर अस्तुती इत्यादिक कारज आरंभा
दिककी क्रिया कर द्रव्य पूजादिकरें नही जैसे अस्त्री
भरतारके नामके पुरषांका नाम नही लेयतीहै
परत तेह सती उस अन्य यानें दुसरे मनुपसे भो
ग करम नही करे इसीतरे हम लोगभी प्रतिमाकी
आसातना याने वे अदवी नही करे परंत तारण
तिर्ण प्रतिमाको नही समझतेहें यह परमार्थ सही
है ग्यानीदेवोके वचन सत्यहै सोई सूधा सरधांनसे
मोक्ष पदकी सिद्धी होतीहै इति पूर्व प्रश्नोत्तर॥ ९ ॥

अगर कितनेक वादी जिहा सिद्धायतनना नाव का अर्थ ऐसा करतेहैं की सिद्ध जे प्रतिमा तिसका आयतन ते घर जेहने सिद्धायतन कहिये ऐसा जो अर्थ करतेहे ते सिद्धांतके मुताविकसें मिलता नही है अगर कोई कहे किसतरे इहां तुम अरथ सिद्धायतनका करतेहो ते कहो सो सिद्धायतनका अर्थ तो इसतरें सिद्धांतमे कह्याहै की ते सिद्धायतन अनादिकालकेहैं की जैसे सिद्धपद अनंत कालतांई रहे ऐसेंही सिद्धायतन जो सासता कालकेहैं तिसवास्ते आयतन ते घर तेह इणकारणे सिद्धायतण कहिए अगर जो प्रतिमा सिद्धना वासा वास्ते सिद्धायतन कहीए अगर जो प्रतिमा सिद्धना वासा वास्तें सिद्धायतन कहें तो द्रोपदीके अधिकारमें (जिणघर) याने जिन मंदिर कह्याहै परंत प्रतिमाके घर वास्ते सिद्धायतन क्यों नही कह्या जरा अंतर विचार कर देखो की सूत्र रायप्रसेनीमे सुरीयाभ देवने पूजा करी जिहां सिद्धायतन कह्या अगर इहां प्रतिमाके घर वास्ते सिद्धायतन नही कह्या अगर असासता मंदिर याने कदीमी नहीहै इस वास्ते मंदिर अथवा देहरा अथवा जिनघर इत्यादि नाम कह्याहै और सिद्धायतन तो अनंत कालकेहे स्वयं सिद्ध वास्ते सिद्धायतन अणकीधा आयतन नाम ते घर स्वासता सिद्धायतनको सिद्धायतन कहिये इति पूर्व

प्रश्नोत्तर ॥ ६ ॥ श्री तीर्थंकर महाराजने सूत्रमे ५ देव कहे श्री अरिहंत महाराज सो तो देवाधि देव १ साधू मुनिराज सो धर्म देव २ चक्रवर्त वासुदेवादिक सो नरदेव ३ तथा भवदेव सो वरतमान काल देताके भवमे प्राप्तहे ४ तथा भविकदेव सो कोई मनुष्य तिर्यंचका आयुष्य देव भवका बंध पड चुका ५ ऐसे पांच देव कहेहे लेकिन छठा देव कह्याहे नही ॥ ओर धर्मके तीर्थ ४ कहेहें साध १ साध्वी २ श्रावक ३ श्राविका ४ परंतु पाचमा तीर्थ कह्या नही ओर ३ जिन कहेहे केवली मनपर्यव ज्ञानी अधिकार ज्ञानी परंतु चोथा जिन कह्यानही ओरसर्णे ४ कहेहे अरिहंत १ सिद्ध २ धर्म ३ साधु ४ लेकिन भगवानना पाचवा सरणा नही कह्या इस वास्ते जो कोई कहतेहे की चमर इंद्र प्रतिमाका सरण लेई उर्द्ध लोकमें जाय ऐसा कहना मिथ्याहे अर्थात झूठाहे क्यों की (अरिहत चेईयाणी) शब्दका अर्थ इहा छदमस्त तीर्थंकरकाहें ओर महावीर स्वामी जब छदमस्थथे तब उनका सरणा लेकर चमर इंद्र प्रथम स्वर्गमे गया ओर आयाभी उन्हीके सरणे लेकिन प्रतिमाका सर्णा लीया नही इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ७ ॥ ओर कितनेक वादी ऐसा कहतेहें की संखेसर पार्श्वनाथजीकी प्रतिमा श्रीचंद्राप्रभु आठवां जिनके वारेकीहे ते इहएकांत सूत्रसें अण मिलती बात

सही क्यों नही करते इसका जुवाब कागजपर लि
खना चाहिये इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ९ ॥ अगर कितनेक
मत पक्षी रूढके वस होकर ऐसा कहतेहे की पुस्तक वा
चता थूक उडतीहे तिसवास्तें मुहपती मुख आगे
देतेहें परंतु कुछ वाऊ कायाके जीवाकी रिक्षा याने
दया नही पलती ते येह प्रश्न सूत्रसे वरखिलापहे
याने कहतेहें की देखो सूत्र भगवती सतग १६ मे
उदेसे २ कह्याहे ते पाठ कहतेहै (गोयमा जाणह
ण सक्के देविंदे देवराया सुहुम कायं अणीजुहित्ताणं
भासंभासई ताहिण सक्के देविंदे देवराया सावज्ज भा
सं भासई जाहेणं सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं
निजुहित्ताणं भासंभासई ताहिण सक्के देविंदे देवराय
अणवज्जं भासं भासई) ॥ टीकार्थी ॥ यदासकेंद्रसु
क्ष्मकायं वस्त्रं अणिवूहित तिअ पोह्यादत्त वा हस्ता
द्या व्रत मुखस्य भापमाणस्य जीव संरक्षणतो निर
वद्या भाख्याभवति ॥ अर्थः-- जव सकइंद्र हातवस्त्र ति
सकर मुख ढांकी बोलतो सुक्ष्म कायाके जीव रक्षा क
रे तो निरवद्य भापा याने निरदोस भापा बोलतो क
हिके अगर उघाडे मुख बोलेतो सुक्ष्म कायके जीवां
विराधतो याने हिंस्या करतो बोले तिवारे सावद्य भा
पा बोलतो कहिये याने दोपकारी भापा बोलतो
कहिये सुक्ष्म कायाके जीवांकी रक्षा वास्ते मुहपती
लगातां हिंस्या नही लगें ऐसा सूत्रांका परमार्थ स

मझना चाहिये इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ १० ॥ और कितने क लोग ऐसें कहतेहैं की सेत्रुंजा गिरनार आबू अ. ष्टापद परवतकी जात्रा करनेसें धर्म लाभ समझते हे सो किसतरा हम लोग सही समझे की सुत्र भ गवती सतग १८ उदेसे १० में सोमिल ब्राह्मणको श्री महावीर देवनें तो एह जात्रा कहीहै ते सूत्र भ गवतीका पाठ (सोमिलाजमे तव नियम संजम स ज्झाय झाणावसगमादीएनु जयाणासेतं जता तप १२ नियम अनेक अभिग्रह संजम १७ सज्झाय ५ झांण धरमसुकल ध्या ( ) इतनी करणी करवा कही तेह भला. रें जात्रा कही अ. भगवती सतग २० में उदसे ८ मे कह्याहै ते पाठ (तित्थं भंते तित्थं तित्थं करेई तित्थं गो. यमा अरिहंता ना नियमं तित्थंकरे तित्थं पुण चाउ वणा इणे समण संघे पनत्ता तंजहा भ. णा समणीउ सा वय सावयाउ) ति [illegible] महाराजानें तो ४ तीर्थ कह्या ते साधु १ [illegible] २ श्रावक ३ श्रावि [illegible] ४ लेकि न पर्वत पर [illegible] फिरनेकी जात्रा नही [illegible] सो तुम लोग [illegible] परिमाणसे जात्रा करणी कहते हो इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ११ ॥ और कितनेक लो ग सेत्रुंजा ५ वक्तो सासता कहतेहे सो सात्राके मुताबिक झुठ वचन उन लोगोंका मालुम होताहे ते किसतौरसे की देखो भगवती सतग ७ मे उदेसे ६ मे जब छठा आरा लगेगा तब भरतक्षेत्रमे गंगा सि

जमाली खत्तीय कुमारे जेणे व मंजण घरे तेणे व उवागच्छइ २ त्ता एहाया कयवलिकम्मा जहाउववाइए परिसा वन्नउ तहा जाणियव जावचंदणो रिवत्तगाय सरीरे सव्वालकार विभूसीए मजण घराउ पडी नि खमई २ त्ता) पिण न्हायो वलिकरम करी व सत्राहिरी मंजण घरथी निकल्यो कह्योते सनान घ र मांहि किसकी प्रतिमाथी ते कहो ३ और वली भगवती सतग ७ मे उदेसे ९ मे वरणनागनतुये मंजण घर माहिं न्हाया बालि करम कीधो पछे मंजण घरथी निकल्यो कह्योएणें स्नान घरमे किस प्रतिमाकी पूजा करी ते कहो ४ और कोणक रा जा वीर वंदवाने गया तिहा न्हावानो विस्तार घणो है तो तिहां बलिकम्मा सब्द मूलथकी जेनही हम जाणीये जे बलिकम्मा सब्द न्हावाकोईज विसेपहै कुरला करवा जलंजली देवी इत्यादिकजाणीये बल पराक्रमका व्रद्धि करणा ऐसा प्रमाण इस पाठकाहै आगे केवली वचन परिमाणहे ५ और रायप्रसेणी मे कठियारावनमे काष्ठ भारा लेवागया तिहां न्हा तां कोणसी प्रतिमा पूजी ६ इसी तरे घणे ठिकणे सूत्रांकी साखहै बलिकम्मा शब्द प्रतिमा पूजाका जो कहतेहो किस सूत्रका परिमाणसे कहतेहो ति सका जुबाव लिखना पुनः ॥ एहाया कयव लिकम्मा ॥ शब्दनो अर्थ जिन प्रतिमा पूजनो अ

धू दो नदी रहिसी और वेताढ पर्वत रहसी बाकी सर्व पर्वत विछेद जासी ते सूत्र भगवतीका पाठ कहतेहैं ॥ (पछयगिरी झोंगर थल भठ माईय वेयंद गिरी बळे बिरावोहेति) इम कह्याहै इण लेखे सेत्रुंजा पर्वत सासतो कहते हो ते एकांत झुठा कहतेहो नहीतो सूत्रकी साखसे जवाव देना चाहिये इति पूर्व प्रश्नोतर ॥ १२ ॥ और कितनेक लोग आरंभमें धरम बतातेहैं और जिहां कयवलिकम्मा सब्द आवे तिहां प्रतिमानी पूजा कहतेहैं ते सूत्रसें विरुद्ध याने अशुद्ध कहतेहैं और एहायाकयवलिकम्माका अर्थका परिमाण लिखतेहैं की देखो पहिलेंतो गिनाता सूत्रका अध्येन १६ मे कह्याहै ते पाठ (तएणं सा दोवईरायवर कन्ना जेणेव मंजण घरे अणुपविस्सई २ त्ता एहायाकय[illegible]मा कय कोऊय मंगलं पायछिता गुद्द पवे[illegible]पमाणे[illegible] वत्थायं पवर पहियाई मंजण घराउ पडि[illegible] निखम्मई २ त्ता जेणेव जिणघरे तेणेवउवागछई २) ए पाठ मांहि पहिलां एहा पछे कयवलिकम्मां पछे शुद्ध मंगलीक वस्त्र पहिरया तिहां एंहाणेंके घर मांहि कहो किसकी प्रतिमा पूजी ते कहो १ और भगवती सतग ९ में उदेसे ३३ में देवानंदा ब्राह्मणीनें वलिकरमकीधो तेहने न्हावानें घर माहिं केहनी प्रतिमा पूजी ते कहो २ और व[illegible]ी एहिज उदेसे जमालीक्षत्रीकुमारे (तएणंसे

ज़माली खत्तीश्र कुमारे जेणे व मंजण घरे तेणे व उवागछई २ त्ता एहाया कयबलिकम्मा जहाउववाईए परिसा वन्नउ तहाभाणियत्र जावचंदणो रियनगाय सरीरे सव्त्रालकार विभूसीए मंजण घराउ पडी निखमई २ त्ता) पिण न्हायो बलिकरम करी व सत्रांहिरी मंजण घरथी निकल्यो कह्योते सनान घर माहि किसकी प्रतिमाथी ते कहो ३ और बली भ्रगवती सतग ७ मे उदेसे ९ मे वरणनागनतुये मंजण घर मांहिं न्हाया बलि करम कीधो पछे मंजण घरथी निकल्यो कह्योएणें स्नान घरमे किस प्रतिमाकी पूजा करी ते कहो ४ और कौणक राजा वीर वंदवाने गया तिहा न्हावानो विस्तार घणो है तो तिहां बलिकम्मा सब्द मूलथकी जेनही हम जाणीये जे बलिकम्मा सब्द न्हावाकोईज बिसेपहै कुरला करवा जलंजली देवी इत्यादिकजाणीये बल पराक्रमका व्रद्धि करणा ऐसा प्रमाण इस पाठकाहै आंगे केवली वचन परिमाणहे ५ और रायप्रसेणी मे काठियारावनमे कट भारा लेवागया तिहां न्हातां कोणसी प्रतिमा पूजी ६ इसी तरे घणे ठिकणे सूत्रांकी साखहै बलिकम्मा शब्द प्रतिमा पूजाका जो कहतेहो किस सूत्रका परिमाणसे कहतेहो तिसका जुबाव सिखना पुनः ॥ एहाया कयबलिकम्मा ॥ शब्दनो अर्थ जिन प्रतिमा पुजनो श्र

लिकम्मा ॥ शब्दनो अर्थ जिन प्रतिमा पूजानो अ
र्थ करतेहैं तेहनो उत्तर--टीका कल्पसूत्रम्. स्नाता
कृतं बलिकर्म कृतानी कौतुक मंगल्यान्येव निर्मलानी
वस्त्राणि परिदधाति ॥ कौतुका मिष तिलकादीनि मंग
लानि कुर्वंती सर्षपदुर्वाक्षतादीनि मस्तके धारयंति
दुःस्वप्नान निवारणार्थम् एव कीय मंगलानिकुर्वे ॥ तिस्य
र्थ अब देखो इहां निजमस्तकमे तिलकादि
करणा और दुव अक्षत मस्तकमे रखना कह्या
परंतु कोई प्रतिमाके पूजणेका अधिकार नही कह्या
और श्री भद्रबाहु कृत कलप सूत्रमे सिद्धार्थ राजा
(अट्टणशाला) अर्थात व्यायाम शाला मल्लादि के
लडणेका घर पुन मज्जन घर अर्थात् स्नान घर
मे आया तिहां न्हाणेका वस्तु बिलकुलहै तिहां कय
बलिकम्मा शब्द नही तो राजा कया जैनधर्मी न
था जिन प्रतिमा पूजी नही जो प्रतिमा होती तो पू
जता परंतु वहांतो जिन प्रतिमा कही नही फिर तु
म जिन प्रतिमाका पूजना कयबलिकम्मा शब्दमे क्यों
कहतेहो कुलदेव तथा गोत्र देवको विना थापना अं
जली रुपजल अर्पण करे तो ए अर्थ संभवेहै परं
तु जिन प्रतिमा पूजना ॥ कयबलिकम्मा ॥ शब्दमे अ
र्थ सिद्ध न होगा प्रतिज्ञा खुलासा पाठ कहीनहीहै
और मल्लीजीके न्हाणेमें कयबलिकम्मा शब्द फक
त बल पराक्रमकी वृद्धि करणा तथा गोत्र देवको ज

ल अर्पण करणा सो तो तीर्थंकर करे नही अथवा सिद्धोंको नमस्कार कीया होयतो यह अर्थमे प्रमाण सही होताहै ओर कोणक राजा भरत चक्रवर्त के अधिकारमें कयवलिकम्मा शब्द है नही तो इस प्रमाणसे मालुम होताहै जिहां न्हाणेका खुलासा विस्तार तिहां कयवलिकम्मा शब्द नहीहै ओर जिहां संकोच पाठकाहै तहा कयवलिकम्मा शब्दहै सोई न्हाणेका विशेषणहै जल अंजली देणी वा तिलकादि मस्तकमे करणा ओर रायप्रसेनीमे काठियारोने न्हाणेके पाठमे जिन प्रतिमा पूजी कैसे कहोगे वे तो मिथ्यातीहैं द्रोपदीके स्नान घरमें प्रतिमा कहां थी ओर धन्ना सार्थ वाहीनें वावडीमे स्नान किया तो तिहां जिन प्रतिमा दिखाथी ओर रायप्रसेनीके दुसरे प्रश्नमे ॥ न्हाया कयवलिकम्मा ॥ शब्द कही फिर किसी देवने पूजने जाय ते क्या परंतु इहा इमजापीये की प्रतिमाकी थापना मंजन घरमे नही जिन प्रतिमा मंजन घरमे होय नही यक्षोंके मंदिर पर सिद्ध सूत्रोंमे खुलासा पाठमे चलेहैं सो आश्रव अधर्म द्वारमे कहेहैं परंतु १२ व्रतधारी करणीके धणी श्रावकोके जिन मंदिर असली सूत्र करताने नही कहे ओर अविरती मनुष्योके करे कारण चर्तीयोपे नही मिलते पूर्व इति प्रश्नोत्तर ॥ ३६ ॥ ओर कितनेक जिन धर्मी ऐसा कहतेहैं की देहरेका

नाम घणे ठिकाणे सिद्धायतन कह्याहे ते सिद्धनो घ र जाणवा. ते यह वात सूत्रसे नही मिलती क्यों की शब्दका नाम शब्दार्थ कही मिलताहे ओर कही नही मिलता की जैसें किसी पुरुषका नाम अमर परंत कुछ अमरके नामसे अमर नही हो सक्ता १ ओर जैसे माताने अपने पुत्रका नाम धनदत्त दीया परंत वहतो कोडीकाभी दातार नही २ ओर जैसे किसी स्त्रीका नाम लक्ष्मीहे परंतु उसको तो मागी हुई छाछभी नही मिलती ३ जैसें सासूने वहुका नाम कपूरदे नाम दीया परंतु वहतो खाटी छाछभी नदेय ४ ओर जैसे किसी पुरुषका नाम मंगलहे लेकिन महाअमंगल कारकहै ५ ओर जैसे नाम धर्मचंद परंतु महा अधरमीहे ६ ओर जैसे नाम तो सीतलदास परंतु महाअगनझाल सरीखा क्रोधी हें ७ ओर जैसें किसी पुरुषका नाम धनपाल लेकिन उससें आपणा पेटभी नही पले ८ ओर नामतो किसी पुरुषका जसकरण परंत वहतो महा अपजसका करणहें ९ ओर जैसे नाम क्रोडीमल परंत घरमें कोडी की किमत नही १० जेसे सब्द नय याने सब्दका अर्थ सही नही होता सब्दके गुणकर संजुक्त होयतो सब्दार्थ सोभताहें ओर जो सब्दगुण निष्पन्न मानतें होतो भगवतीके ९ मे सतकमे ऋषभदत्त नामें ब्राम्हण कह्योहे ते क्या, ऋषभदेवजीके बचनसें हु

याहें तो इस शब्द अर्थ संभवता नही जैसें उत्राध्यें नजीके अठारमे अध्येनमे हिरणांकी सिकार खेलवा राजा गया असंजत करम करणे वास्ते तिसका नाम संजती राजा कह्या तिसका तिस ग्रहस्थ पदमे क्या संजतीपणाथा ते कहो अथवा जैसे जीवाभीगममे सातमी नरकका पंच महा पुरुष कह्या ते सातमी नारकीका जाणहार पुरषोको मोटा पूरषकह्या ते महा पुरुष पाप करम कर कह्याहै तथा बिजय १ बिजयंत २ जयंत ३ अप्राजित ४ यह ४ अणुत्तर विमाण कह्या परंत इनही नाम सहित असंख्याते द्वीप समुद्राके दरवाजोंके यही नाम सूत्रांमे कह्याहै वली (अमुद्दोसमुद्दोनो पलंआसाए तिपला संपन्नो) गुण नाम कह्या तिम सिद्धायतन १ संजती राजा २ ऋषभदत्त ३ ओर महा पुरष ४ इत्यादिक बिवहार वचनहैं शब्द अर्थके ऊपर किसी जगे ऊपमावाची शब्द सुधा होताहे ओर कही उपमावाचीक शब्द अर्थ सुध नही होताहें यानें उस नामपर ऊपमाका शब्द नही मिलता की जैसे किसी पुरषका नाम रणजीतहै परत वहतो रणयानें संग्रामका नाम सुण करही घरसे बाहिर नही निकलता तो रणजीत नाम यह कैसे कहावेगा तो इहा उस रणजीत नामको संग्राममें जीतकरणे की उपमा नही मिलती तो उ. कसे नामका लेना व्योहार बचनहै परंत परमार्थ सु-

न्यहै इसीतरें लोकोंमें हंकदेवाइका नाम मीठातेली था परंतु निजगुण स्वभाव उसका जेहरकाहें सो इण द्रिष्टांतोंसें सिद्धायतन शब्दका अर्थ सिद्ध घर नहीहै सदा कालको सिद्धायतन सासता याने कदीमीहै इस वास्ते सिद्धायतन जाणवा अथवा अनेक दीपे परवते देवलोकेचार चार जिन पडिमांकहीहैं ते चारका नाम ऋषभानना १ वरधमानना २ चंद्रानना ३ वारिखेणा ४ येह क्या तीर्थंकरांका नाम वास्ते तीर्थंकरनी नही क्यों की तीर्थंकर महाराजके नामकी तो आदंभीहै और अंतभीहै सोई एह प्रतमातो अनादिकालकीहै सोई तीर्थंकरके नामसे नामकी नही होसकती अनुमान प्रमान तो ऐसाहैं निश्चे तो जो केवली वदे सो परिमाणहैं अगर येही प्रतिमा समद्रिष्टी और मिथ्या द्रष्टी सर्व देवताओके पूजनेकीहै और ऋषभदेव वरद्धमान तीर्थंकर तो २ सही पोचीसीमे हुयेहैं अगर प्रतिमा ऋषभानना आदी अनंता कालकीहै एह जुगत तुम लोगोंकी नही मिलती विचारकर कहना जोग्यहै इति पूर्व पक्षांतर ॥ १४ ॥ और कितनेक लोग ऐसा कहतेहें की भगवंत श्री महावीरजीनें गोतम स्वामीको कह्याहै जो तुम अष्टापद परवतपर जायकर श्री भरतजीका कराया हुया बिंब यानें प्रतिमाको वंदना करो जिम केवलग्यान उपजे येह वात सूत्रके परिमाणसें

सत्य नहीहें क्योंके बखान याने वाणीमे तो किसी देवी देवको ऐसा उपदेस नही दीया ओर किसी साधू साधवी श्रावक श्राविका इन ४ तीर्थोको ऐसा उपदेश किसी सूत्रमे नही कह्या तो गौतमजी महाराजको ऐसा उपदेश किसतोरसे देवें की अब देखना चाहिये की उन प्रतिमाओंसे तो ज्यादे गुणवान श्री महाराज महावीर देव खुद आपही बिराजमानथे ओर मिथ्यात अंधेरको दुर करतेथे ऐसे भगवानको साक्षात केवली रुपकर विराजमानोको छोडकर क्या प्रतिओके दरसणमे अधिक याने ज्यादे धर्मका लाभ होताहे की प्रत्यक्ष तीर्थंकरोके दरसणोमे ज्यादे धर्म लाभ होताहे इस वातका जवाव लिखना जोगहे सो अंतर विचारकर देखो की इसतरे प्रतिमाओके दरसणसें केवल ज्ञान नही हो सकताहे की अब देखो केवल ज्ञान सूत्रमे किसतरेसें उपजनेका कारण कह्याहें सो लिखतेहें की जैसे उत्राध्येन दसमे गाथा २८ मे (वुछिदसिणेह मप्पणो कुमुयंसार यंच पाणीयं सेसवसिणेह वजए समय गोयममा पमायए) इति वचनात अब देखो श्री महावीरजीनें ऐसा कह्या की हे गौतम जो तुम्हारा मुझऊपर घणा सनेहहे तिसको जव तुम छोडोगे तव केवल ग्यान पावोगे केवल ग्यान उपजवाका कारण सूत्रमे तो इस तरे कह्याहे ओर भगवती सूत्रके सतग १४ उदेसे ७

स.में.(रायगीहे जाव परिसा पडिगया गोयमादि समणे
भगवं महावीरे भगवगोयमं एवंबयासी चिरसंसिठो
सिमे गोयमा चिरसंथुओसिमे गोयमा चिरपरिचितो
सिमे गोयमा चिरजुसितोसिमे गोयमा चिराणुवात
सिमे गोयमा अणंतरं देवलोगा अणंतर माणसे
भवे की पर मरणकायस्स भेदायतो चूता दो वितु
ल्ला एगठा अवसे समणाणग्यापभाविस्सामो) इ
सतरे कह्याहे हे गोतम तुह्मारा हमसें घणे भवको
सनेहहै अगर इहांथी आऊखा पूराकर हम तुम
दोनो मुक्त पदमे सामिलहोवेंगे तिहां हम तुम दो
नो एकसरीखेहोवेंगे लेकिन ऐसा कही सूत्रमें नही
कह्या की अष्टापद ऊपर जावो सो सूत्रमे कही
कह्या नही तुम इह बात सूत्रसे अण मिलती कह
तेहो इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ १५ ॥ ओर कितनेक रु
ढमती याने मतपक्षी ऐसा कहतेहें की गोतम स्वा
मी सूर्जकी किरण पकडके परवत ऊपर चढथे लब्ध
परसाद करीने यहवा अशुद्ध वचन बोलतेहो तें सि
द्धातसे अण मिलती बातहैं तो सूत्रमेतो लब्ध
२८ कहीहे तेहनां नाम कहतेहे आमोसही १ वप्पो
सही २ खेलोसही ३ जल्लोसही ४ सबोसही ५ सं
भिन्नसोतिया ६ अवधज्ञान ७ रिजुमती ८ विपुल
मती ९ चारण १० आसीविष ११ केवली १२ गं

१७ वासुदेव १८ खीरासवामहुपासवासपीयासवाश्र मीयासवा १९ कोठबुद्धी २० बीज बुद्धी २१ पदानु सारणी २२ तेजुलेस्या २३ सीतललेस्या २४ आ हारीक २५ बेक्रिय २६ अखीणमहाणसी २७ पु लाक २८ यह अठाईसलब्द तिसमांहिं (सकखाई असंवुडे) अणगार फोरवे याने परगट करे तिस का प्रायछित अणलीयें याने बिनालीयें कालकरे तो भगवानकी आज्ञाका बिराधक सूत्रमें कह्याहै भग वतीजीके सतग २० में उदेसे ९ में चारण उदेसे ओ र दूसरे घणेही ठिकाणे लबध फोरवे तेहनो याने तिस का प्रायछित कह्याहे अगर जिसबातमें जीव आ ज्ञाका बिराधक होय ते उपदेस भगवत किसतरे दे वे जरा अंतर बिचार कर देखो क्या सिद्धांतकी री तहे ओर अठाईस लब्द मांहिं सूर्जकी किरण पकड नेकी कोंणसी लब्दहे तिसका जुवाव लिखना चाहिये ओर गौतम स्वामितो भला तुम लोगोंने लवधही का बलकर चढया कहतेहो अगर ओर साधू गो तम स्वामिके साथ किसतरे चढे उनकु क्या लबधथी तथा दस हजार साथे ऋषभदेव भरतेश्वर अष्टा पदपे चढया ओर संथाराकीया ते साधु कीसतरे चढया अथवा प्रासादका करण हार कारीगर कीम चढया त था सागर चक्रीके बेटा ६० हजार किसतरे चढया यह गणतीसमी लब्धका कहा वर्णन कह्या है जिस

का जुवाव लिखना चाहिये इति पूर्व प्रश्नोत्तर संपूर्ण ॥ १६ ॥ और कितनेक सकस ऐसा कहतेहैं की १५०० तापस केवली हूये अगर यह बात सूत्रके साथ नही मिलती परंतु यह बात शास्त्रोक्तहै क्यों की भगवती सतग ५ में उदेसे ४ में कह्याहै की सातवा देव लोकका दोय देवताओंनें श्री महाबीरजीको पूछा की भगवान तुह्मारे साधू कितने मुक्त जायेंगे जिसव क्त श्री भगवंतजीनें कह्या [सत्तस्स अंतेवासी सं घाईयं सिज्झस्सई] याने सातसें सिष्य समीपें रहने वाले मुक्त पदमें विराजमान होवेंगे लेकिन अधिका याने ज्यादे केवली उसवक्त कहे नही और कल्पसू त्रमेंभी ७०० केवली कह्याहै अगर कदाचित को ई ऐसा कहे की यह तो १५०० केवली गौतम स्वा मीके सिष्यहै तो क्या आश्चर्यहै परंत कल्प सूत्रमें तो गौतमजी और सुधर्म्माजी इन दोनोंके पान पानसेका परिवार कह्याहै सोई छदमस्तोके वचनापें हम ज्यादे रूढ नही करते इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ १७॥ और कितने लोक ऐसा कहतेहै की जब नमोथूणं का पाठ पढकर पीछेसे एक गाथा और नवी बणाई हुई कहतेहै ते पाठ सूत्रमें नही मिलता उसमें दर व निखेपाका सरधान सही करतेहै ते सूत्रसें बर कहतेहै जैसे नमोजिणाणं जियभयाणं जे

अ२ . सिद्धा जेभविसंतीणागएकाले संपईएण बह

माणां सबंतिविहेण वंदामि ॥ १ ॥ इतना पाठ ज्यादे सू त्रसे अण मिलताहे की अबदेखो सूत्रसें सिद्धांतमें जगे जगे नमोथुणं कह्या ते सामायांग भगवतीके माहिं गणधर देवाने कह्या अथवा उवाई रायप्रसेणी माहिं देवताये कोणक प्रदेसीराजाये अथवा अंबडजीके ७०० सिष्याने नमोथुणं कह्या तिहां ठाणं संपत्ताणं तथा ठाणं संपावियोकामस्स इतना पाठहे तो तुम लेगोने इतना अधिक पाठ नवा बणाया मालुम होताहे सो सूत्रसे बिरुद्धहे और कितनेक ऐसा कहते हे नमोथुणं तो सक्रइंद्रका बणाया हुयाहे ऐसा जो बचन कहें ते सूत्रसे नही मिलताहे अगर सूत्रतो गणधर देवाका कीये हुयेहें ते साख सिद्धांतकी गाथा ॥ सुत्तरथंगणहररईयं तहेव पत्तेय बुद्धरईयंच सुयकेवलीणारईयं अभिन्नदसपुविणारईयं ॥ १ ॥ इस वास्ते इंद्रका जोडा किसतरे मानीयें तो इहां नमोथुणं ऐसेही सदाकाल गणधर देव कहते आयहे ऐसही कदीमी नमोथुणं होताहे ते जाणवा निश्चकेवली वचन प्रमाणहें इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ १८ ॥ अगर कितनेक वादी चरचा करते हुये ऐसा कहतेहें की हम सूत्रके परिमाणसे थापनाकुं वंदना करतेहें और सूत्रामें ४ निखेपेकहेहे ते नामनिखेपा १ थापनानिखेपा २ दरवनिखेपा ३ भावनिखेपा ४ तिस वास्ते थापनानिखेपा वंदनीकहे यह बात सूत्रके परिमाणमें नही मि

लती ते किसतरे श्री अणजोगद्वार सूत्रमे ४ निखे
पे कहेहैं तेहतो सहीहे लेकिन वंदना करने जोग तो
एक भाव निखेपाहे और बाकी तीननिखेपे वंदणे जोग
नहींहे अगर अब च्यार निखेपोंका अरथ करतेहैं ते
किसतरें अब जिन सबदमांहें ४ निखेपे कहतेहै तो
पहिला निखेपा नाम तीर्थंकरोंके नाम सरीखा नाम
तो ऋषभ, पारस, संभुसीमंदर, जुगमंदर, इत्यादि
घणे पुरषोंका नाम धरतेहें परंत तिण माहिं तिरथं
कर महाराजोके गुणअतिसे नही तो अतिसे गुणांकी
महिमातो महाविदेह क्षेत्रा माहिं श्रीसीमंधर भगवा
नमे बिराजमानहे लेकिन नामनिखेपा फकत कहणेहै का
है परंत जिन गुण नाम निखेपेमें एकभी नही जैसें मात
पिताओने अपणे पुत्रका नाम रामचंद्र दीया परत
रामचंद्रसरीखी तिसको उपमा नही लगे तिसमे ना
म निखेपा रामचंद्रके नामसें हुआ तो तिसका पर
मार्थ सुन्यहे तो नाम निखेपा बंदनीक नही ऐसा
विचार सुत्रासें जाणतेहें इति नामनिखेपा कह्या ॥ १ ॥
अगर थापना निखेपा किसकूं कहिये तो थापना का
ष्ट पाषाण अथवा धातुनी मूर्ती अथवा चित्रामका
हाथी घोडा नदी इत्यादिककी थापना करी पूजे अथ
वा नमस्कारकरे तो परमार्थ सुन्यहे जैसे हाथी घोडा
असवारीके काममे नही आवे और नदीकी थापनासे
पीणी नही मिले इसी तरे गुन रहित अगर जिस

मतलबके वास्ते थापनाकरी ते जिसमे मूल एक गु णभी नही ते आपही जडमुनावहै तो और पुर षोका क्या कारज सिद्धकरे जैसे किसीने चक्रवर्तकी मूरती बणाकर थापना करी परंत तिस मुरतीके सा मने बत्तीस हजार राजा सेवा करता नही और २५ हजार दानमित्रभी जिसकी सेवा नही करतेहैं तिस वास्ते थापना जिन मोह दिसाके उदेमे हे और वै रागतो सुरतग्यान मतज्ञानसे आताहे और था पनाका परमार्थ सुन्यहे इति दुसरा निखेपाकह्या ॥ २ ॥ अगर दरव निखेपा दरव जिन ते जिन थावणहार जिन तणो नाम गोत्र बाध्यो परंत अवतक जिनथ या नही ते दरव जिन अथवा मृत्यु जिननो सरीर तेह दरव निखेपा कहिये ॥ ३ ॥ भाव निखेपे जिन ते सा क्षात जिन केवलज्ञान सहित बरतमान विरामानहे ते वंदनीकहे अगर अव कितनेक लोग च्यारो निखेपे मानणे जोग कहतेहैं सोई थापना निखेपातो मानते हे लेकिन नाम निखेपा घणेही पुरषोके नाममे नाम निखेपा होताहे जैसे पारस पारसप्रभूके नामका नाम है तिसको तुम क्यों नही वंदतेहो अगर थापनामें क्या अधिकता देखकर वंदतेहो और पूजतेहो और दरव निखेपा ते जिन होणहार अगर तेह जिन थया नही अगर तेह मांहिं जिनगुण परगट हुवा नही तेह किसतरे वंदनीक होवे जैसे तीर्थंकर घर मांहिं

होवे. ओर क्षायक सम्यक्त तीन ग्यान कितनीक अ
तिसें साहितहे तो परंत अविरतीहे तिस वास्ते सा
धू श्रावक वंदे नही तो अब देखो दरव निखेपा वं
दनीक किसतरे होय अगर इस जवाव ऊपर कोई
ऐसा प्रश्न करे की भरत चक्रवरतजीने अपणे पुत्र
मरीचजीकुं किसतरे वंदना करी उनमे दरव निखे
पा जाणयातो भरतजीने बंदणा करीहे जो ऐसा प्र
श्न करे तो तिसका जुवाव यहहे की अवलतो यह
वात कथाकारकीहे ओर दुसरे भरत चक्रवरतजीने
१२ व्रत श्रावगके अंगीकार नही करे इस वास्ते
बंदणा करीहे तो कुच अश्चर्य नही ओर अविरती
जीव बहोतसे मिथ्यातमे सीस नमातेहे तो इहां व्र
ती जनोका प्रश्नहे ओर व्रतीजनोके प्रश्नमें अव्रती
जिनोके कारजका क्या जवाव देतेहो ओर कथा
कारके मांहिं अधिकी ओछी वारताका संदेह होता
हे सो जवाव तो सत्रू सिद्धांतसें हम लोग पूछतेहे
की सूत्रकी वात प्रमाणीक करतेहे जैसे अंतगढ
सूत्रके पांचमे वर्गमे नेमनाथ स्वामीने श्रीकृष्ण प्रते
ऐसा कह्या तेह सूत्र अंतगढका पाठ लिख्यतेहे
(एवखलु तुम्मं देवाणुप्पिया तच्चाउ पूढवीउ उज
लियाउ नरगाउ अणंत्तर उवटित्ता यह जंबूद्वीवे
द्वीवे भारहे वासे पुडेसु जण वएसू सतदुवारे नयरे अम
म्मे नामं अरहा भविस्सई. तस्यणं तुम्मं वहुयं वा

साइं केवली परियागं पाउणित्ता सिझस्सई तएणं से कण्हे वासुदेवे अरहउ अरिठनेमीस्स अंतिए एयमठं सोञ्चा निस्सम हठतुठे अफोडई २ त्ता तिवई थेवई २ त्ता सिंहनाहंकरेई २ त्ता) इति सूत्रपाठ हे कृष्ण तुम बारवांजिन याने तीर्थंकर पद में विराजमान होकर मोक्ष पद धारण करोगे ऐसा श्रीनेमनाथ महाराजके वचन सुणकर परम हरप याने खुसी होकर नाचे याने कूदे और सिंहनाद कीधा परंत उसवक्त कोई गणधर साधू अथवा श्रावक इत्यादिकोने वंदना और अस्तुती नही करी अगर इस जगे जो श्रीकृष्णजीको वंदना कोई करताता दरव निखेपा वंदनीक सही कर मानते अगर नहीतो सूत्र प्रमाणसें दरव निखेपा वंदनीक नहीहै और ठाणाग सूत्रजीके ९ मं ठाणें सर्व सन्नामें भगवंत श्रीमहावीरे कह्याहे की जो श्रेणक राजा आवती चोवीसीमें पहिला जिन महा पदम नामें मुझसरीखो होसी तो यह वचन सुणकर कीसी साधू श्रावगनें उहां दरव जिन जाणकर वंदना नही करी तो तुम लोग दरव तीर्थंकराकों कैसें वंदनीक कहतेहो सो जुवाव देना जरूहे अथवा और सामायांग सूत्रमें वरतमान चोवीसीके नाम कह्याहे तिहां देखोते लोगस्स मांही कह्याहे तिसमांही वंदे वंदे शब्द आतेहें तेह पाठ लिख्यतेहें (लो

गस्स उज्जोयगरे धम्मतित्थयरे जिणे अरिहंते कि त्ती एसं चउवीसंप्पे केवली ॥ १ ॥ उसन्नमजीयंच वंदे संन्नव मन्नीनंदनंच सुमियंच पउमप्पहं सुपासं जिणंच चंद पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहंच पुप्फदंतं सीयल जीयंस वासपुजंच बिमलमणं तंच जिणं धम्मं संतिंच वं दामी ॥ ३ ॥ कुंथुं अरिहंच मल्लिं वंदे मुनिसुव्वयं नमी जि णंच वंदामि रिठनेमिं पासंतहवद्धमाणंच ॥ ४ ॥ एवंमए अन्नियुया बिहु रयमिला पहीण जर मरणा चउ वि संप्पे जिनवरा तित्थयरामे पसियंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वं दिय महिया जेऐ लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग वोहिलान्नं समाहिव रमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मला यरा आईचेसु अहियं पयासगरा सागरवरगंन्नी रा सिद्धा सिद्धं मम दिसंतु ॥ ७ ॥) अगर अव इस पाठ में न्नाव निखेपेकुं वंदे शब्द कह्याहैं अगर आव ती चउवीसीके नामन्नी सामायांग सूत्रमे कहेहै ले किन वंदे वंदे शब्द सूत्रमें नही कह्या क्यों कि अ वतक उन तीर्थंकरोंके जीव अविरतीहै इस वास्तें दरव निखेपा वंदनीक किसतरें होय अगर और न्नगवती सूत्रके सतग ९ उदेसे ३२ में गागेय ना में अणगार न्नगवंत श्रीमहावीरजीकुं दरव निखेपें देख्या और गांगेय अणगार पहले वक्तकें साधूथे तो ति नोंने दरव निखेपा जाण वंदणा नही करी अगर न्नगवती सूत्रमें (अदूरसामंतेचिवा) कह्यो इ

ति बचनात अगर जव श्रीमहावीरजीको केवलग्या नी जांण प्रश्न पुछकें महावीरकुं वंदना करी जब भा व निखेपा पूरण जांण्या तब गांगेय अणगारजीने नमस्कार कीयाहे तो अब देखो द्रव्य निखेपा कि सतरे बंदनीक होय जो द्रव्य निखेपमें सम्यक्त ग्यान ३ का गुणहे अगर तेहवी वंदनीक नही तो पाषाण प्रमुखकी थापनामें तो एकभी गुण नही ते किसतरे बंदनीक कहते हो जिसका जुवाव देना चाहिये ओर जैसें पाषाणका हाथी घोम्रा चढवा के काम नही आवे जिम पत्थरके लाडूसे भूख न ही मिटे ओर पत्थरकी गऊ दुध नही देय ओर जैसे पत्थ रका सेर मारे नही तिम पाषानका देव त्यारे नही यह पर मार्थ बहोत सूक्ष्महे इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ १९ ॥ अगर इस जुवावके ऊपर कितनेक वादी ऐसा कहतेहें की प्र तिमा तेह श्री जिनराजका नमूनाहे तिसको देखकर भगवान याद आतेहें ओर ध्यानका कारण होय ति स वस्तें बंदना पुजना करतेहे अगर यह तो हम लोगभी जांणतेहें की प्रतिमा माहि जिन गुण नहीहे सो कुछ हम भगवान जांणकें नही पुजतेहे ऐसा भी चरचा करनेमें तुम लोग कहतेहो तो अब ति सको जुवाव लिखतेहें की अब देखो सूत्र उत्राध्ये नके अठारमें अध्येनमे कह्याहे ते गाथा (करकं डु कलिंगेसु पंचाले सुयदुमुही नमीराया विदेहेसु

गंधारे सुयनिग्गई) इति वचनात अगर करकंडू राजा कलिंग देसका वृद्ध वैलकुं देख प्रतिबुझ्या यानें बैराग आयो १ ओर दुमुही राजा पंचाल देसका इंद्रथंनकों देखकर वैराग आया २ ओर नमीं राजा विदेह देसके चूडीयाका कणकणाट सुणकर वैराग आया ३ ओर निग्गई राजा गंधार देश का आंबाके ठूंठ वृक्षको देखकर वैराग आया ४ अगर इन च्यारों प्रत्येक बुद्धीयोंकु जातीसमरण पाम्या ओर संजमलेकर मुक्तपदमे विराजमान हुये लेकिन वृषभ १ थंभवा चूडी ३ आंबा ४ इन च्यारोंके सववसें च्यारों रानोको जातीसमरण उपजनेके तथा संजमलेनेके हितकारण जाणकर किसीनें उन ४ वस्तु वृषभादिककी पूजा अथवा वंद्या नही तो अब ओर मनुप किसतरें उन ४ च्यारों वस्तु वृषभादिकको किसतरें वंदे अथवा पूजे अथवा गौतम स्वामी महावीर भगवंतजी ऊपर अधिक यानें बहुत ज्यादे परम भक्ति राग सहितथे सो तिनोंनें राजग्रहीमें उदकपेढालसे चरचा करी तथा सावत्थी मांहिं केसी कुमारजीके साथ चरचा करी तब तिहां श्री महावीरजीसें जुदा बिहार किया लेकिन परम यानें ज्यादे भक्तके वस होकर श्री महावीरजीका नमुना कागज मांहिं चितराम चितरीकर उनोनें अपने पास नही रख्या तो तुम लोग चि

त्राम कराकर अथवा बणे बणाये मूरती किसकी रीतसें रखते हो सो जवाब पूछेतेहैं कि महावीरजी के साधोनें चित्रामका नमुना क्यों नही रख्या क्या वे अण जानतो नहीथे तुम लोगोसें अधिक गुन वानथे सो उनोंनें तो चित्राम रख्या नही तुम की सकी सहायतासें रखते हो सो कहो अगर श्री म हावीरजीके श्रावग आणंद कामदेव संख पोखली इत्यादिक भगवानके पीछे कागजके ऊपर नमुना कर दरसण कही करे नही जो कही करे होयतो सूत्रका पाठ दिखलावो जुं हम तुमारी बात सही कर माने अगर परदेसी राजाए कृष्ण महाराज औ र भरतजी ओर कोणक राजा इत्यादिक घणे रा जे भगवानके परम भगत हुये परंत उनोने भक्ती के वस होकर किसीने नमूना भगवानका चित्राम करके दरसन ओर पूजा ओर नमस्कार इतने कार ज करेनही की परतक्ष देखो की कोणक राजा भ गवान महावीरजीकी हमेसें देस मुलकोमे जिहां जिहां विचरतेथें तिहां तिहांकी वधाई हमेसें नौ करोंके हाथ मंगाइकर सुनकर भोजनकरताथा ले किन हम तुमकुं पूछतेहैं की कोणकजी इतना परी श्रम उद्दम कर वधाई दिन २ प्रतें रोज सुनैथा परंत उनोने नमूना चित्रामका क्यों नही बनवालि या जो नमूनेमे अधिक लाभ होता तो वै लोग क्या

नही कर सकतेथे इसका क्या कारणहै सोई जुवाव लिखना अगर भगवंतजीका नमुना भगवंत आप हीहै अगर उवाई सूत्रमें साधूनों नमूनों जवतांई साधू विराजमानहै तवतांई साधूको नमूनो कह्योहै की जैसे सूत्रका पाठ अजिनाजिन संकासा जणा इव अवितह वागरे माणा विहरई कह्यो परंत पत्थर पीतलाना नमूना करणा नही कह्या अगर जैसे सोनाको नमूना यानें बानगी पीत्तलकी नहीहै अगर सोनाका नमूना सोनाहीहै और जैसे आंबका नमूना आंबहीहै लेकिन आकका नमूना उसकी जगे नही सोभताहै इसीतरे हाथीका नमूना हाथी परंत गर्धब नही इसतरे घोडाका नमूना घोडा इम इसत्रीका नमुना अस्त्री रतनका नमूना रतन परंत कंचका तुकडा नही इम साधूनो नमूनो साधू अगर घणी बसतू मांहिथी थोडी बस्तु दिखावे ते ह नमूना याने बानगी जाणीये परंत अजीवस्तके ठिकाणे गुण रहित बसतु दिखावे तेह तिसका नमूना नही कहिये और कोई ऐसा बोलतेहै प्रतिमाकुं देखके प्रतिमाकुं देखकर हमकुं भगवान याद आवे भगवानका ऐसा रुपथा ऐसी योग मुंद्रा ध्यान पद्म आसन ध्यान सरूपमे भगवान निर्वाण पहोंचे देखो प्रतिक्ष इस माफिक कहतेहै फिर इस योग मुंद्राकुं अस्नान मजन करातेहै ए तो प्रथम खुला

सा दोपदीसेहै अब उनकूं पूजना प्रतिमाकों देखकर भगवानका सरुप कैसे मालुम हुवा भगवान तो ३४ अतिसे ३५ वाणी कर विराजमानहैं जिसके नाम ओर मंस लोही कैसाहे बरण गंध रस कैसाहै तथा उनके मात पिताका नाम आउखा ओर माताके गरभमें कोणसे ठिकाणसे आये उसवक्त कितने ज्ञानथे ओर तीर्थंकर गोत कोनसी करणी करिके उपारज्या फिर इहा कैसा तपकरा गृहस्ता वासमे कितने बरस रहे छदमस्तपणा ओर केवल परवज्या कितने बरस पाली ओर प्रथम पारणेका दातार इत्यादिक भगवानका सरूप कहांसें मिला ओर २४ तीर्थंकरके नाम तथा नवकार मत्र नमोथुणं तथा पंच महाव्रत १२ व्रत तथा पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत ४ सिखाव्रत पडिकमणा ओर अतीचार त्रस थावर जीव अजीवादिक नवतत्वके भेदानुभेद षटद्रव आठ आत्मा षटकाया १८ पापके नाम ४९ भांगे एह सर्व प्राप्ति गुरु महाराजसे ओर सूत्र सिद्धांतसे हुईहै लेकिन मंदिर प्रतिमासे इस माहिती किंचित मात्र भी प्राप्ति नही हुइहे मंदिर प्रतिमा ए सर्व उदे भावमेहै ओर वैरागतो क्षय उपसम भावमें है परंत मंदिर प्रतिमाकुं तो देखके जरूर पग धोवणेकी फूल चढानेकी धुप दीप आरंभ करनेकी ढोलक मृदंग झाझ मंजीरा नगारा इत्यादि षट कायाकी ल

ट करनेकी मनमे आवेगी ए प्रत्यक्ष देखो हजारों
लाखो आदमी पट कायकी लूट कर रहेहें चवे
मालुम होवेहै और कोई बहा जतन सहित नवका
नमोथुणं पढे तो बहुत अछी बातहै हिंस्या छोडके
आश्रव अधर्म छोडके तप संजमतो खुशी आवे
हां करो भगवानकी आज्ञामेंहें लेकिन व्रत पचख
न तो जवहोगा जव सरधान सची होवेगी जिसक
देखो प्रतिक्ष तीन मनोर्थ श्रावगके कव में छोडुंग
आरंभ ओर परिग्रह वो दिन मेरा भला होवेग
ओर सूत्र सूयगडांग दूजा श्रुतखंदका पाठ मूल
सूत्र गाथा (अविरतिपडुच वालेः व्रिति पडुच पंडि
ए व्रिताव्रिती पडुच वाल पंडिए आहिज्जई) दे
खो वीतराग देवने श्रावगकुं विरती आसरी पंडित
कह्याहै जितना हिंस्या झुठ चोरी आश्रव अधर्मसे
निवर्त्या सो तो पंडित घणा कह्याहै ओर अधर्म
आश्रव हिंस्यासें नही निव्रित्या उतनाही वालपणा
अर्थात अज्ञानपणा कह्याहै इस वास्ते संसारका
काम श्रावगसें सर्वथा प्रकारें नही छूट सक्ताहै कुल दे
वी देवता लक्ष्मी पूजन वही सरस्वती पूजनादिक प्र
त्यक्ष आश्रवद्वारहै प्रत्यक्ष पाप लगेहें लेकिन संसार
का खाता जाणेहें संसार खातेका मंगलीकहै परं
त भगवानकी आज्ञा बाहिरहें इसतरह सब मंदिर
प्रतिमा पूजन पखालन स्नान मंजन पाणी विन

स्यतियादिक सर्व संसारका खाता मानो ओर आ श्रव हिंस्या करिकें बनाहे वंदना नमस्कार करणेके फल कोई असली सूत्रमें चले नही मूलहीज ज गवाननें आश्रव द्वारमें कह्याहे फिर आश्रव अधर्म को सेवेंगातो धर्म कहासे होवेंगा इस वास्ते हाथका जोडना मस्तक नमाणा दरसण करणा ए सर्व सं सार मारगकाहे इसमें किंचित मात्र संक्या कं स्या मतकरो कोई देवताजी डीगावे तोजी सतडि गो मुक्तीकातो मारग एकांत असली देव असली गु रु असली धर्म दयामइ जाणो निसंदेहपणें इस स रधामें अमोल होवेंगे जबही साधूपणा ओर श्रावग पणा फरसेंगा व्रत पचखान फरसेंगे सूत्र जगवती का पाठहे समकित बिना व्रत पचखाण नहीहे उत्रा ध्येन सूत्रका पाठहे (सरधा परम दुल्हा) सर धा साची आणणी बहोत मुशकिलहे वीतराग देव नें तो मुगती मारगमे साधूके ओर श्रावगके दोनो के वास्ते ज्ञान दर्सन चारित्र तप कह्याहे ओर कु छ कह्या नही इसके सिवाय ओर सर्व अधर्म आ श्रवजाणो फकत साधू मुनिराज पापकर्मके त्यागी पुरष उनकुं आहार पानीका देना वस्त्रादिकदेना ये श्री वीतरागने सूपात्र दान कह्याहे इस वास्ते जो ग्रह स्थ घरसें निकला सो तो असंजम माहिसें निकला ओर संजममें गया इस वास्तें मुक्तीका मारगहे ए

प्रत्यक्ष देखो पोसहमे कुछ खाणा पीणा नही महा कठिन जोर लगानो पडहै इतना जोर लगाकेनो ११ मा व्रत हुवा लेकिन साधूकूं दानदीया सो बा रमा व्रत हुवा वो दान संजममें गया इस वास्तें प्र त्यक्ष श्री वीतराग देवनें मुक्तीका मारग कह्या ओर ग्यारमा व्रत पोसहसेंभी ऊपर बढगया ये प्रत्यक्ष वीतरागके वचनहै नरा इसकुं विचारोतोसही साधू को दियासो संजममेंगया इस वास्तें सर्व श्रावगके व्रतोंके उपर होगया इसके सिवाय जो कुछ मंदिर प्र तिमा इत्यादिकके आगे चढाना देना लेना ये सर्व असंजममेंसें निकला ओर असंजममे गया इहां ना ना प्रकारका पुण्य पाप अनेक नेय सुभासुभ संसा रका खातामानो मुक्तीमारग तपजप संजमका जांणो सर्व बोल उपर लिखे प्रमाणें अडोल पणे धारो॥कवित्त ॥सबज कपडा तना, नकल सूवटाबना, तास मंझार नहीं चोटघाले॥लिखत चित्रामका देखचीत्ता सही, स्वानवी छठ ना भागचाले॥ कतर कागजके फूल वहु रंग रंगे भवर, टुःक सांसकरनाह बैठे॥ असल ओर नकलकी पशु पहिचानहै, तास अज्ञान नरनाहजाने॥कहतहै सं तजन सुनोहो भविक जन, पशुसे निपेद नरदेह मा ने ॥१ ॥ देखो प्रत्यक्ष क्याबात है जो कागज उपर अथवा भीत चितरामका किसीनें घोरे हाथी रथ गंगानदी इत्यादिक मंडवा लिया अर्थात् बनवा

लिया लेकिन् किसीनें प्यासलगीतो इस गंगासे पानी नही मिलेगा घोडा सवारी नहीं देगा रण सग्राममें नही चलेगा गउ दूध नही देवेंगी ए सर्व कहणे मात्र नामस्थापनहे लेकिन् मतलब न होगा ओर कोई कहे हिंस्याका इहां भाक्तके वास्तें कुछ दोष नही उनकुं अनार्य भाषाके बोलनेवाले अनार्य कहेहें आचारांगका चौथा समकित नामा अध्ययन दूजा उदेसेमें इति पूर्व प्रश्नोत्तर॥२०॥ओर कितनेक लोग ऐसा कहते हैंकी भगवती सूत्रमें आदिमें(नेमोवंभीएलिवए) ऐसा पाठहे तिस वास्ते थापना अक्षर वंदनीकहे ऐसा जो कहते है तिनको जबाब देने वास्तें ते शद्बका अर्थ लिखतेहे कि (नमो बभीए लिवए) इसका अर्थ तो इस तरेकाहे अठारे लिपी ब्राम्ही ऋषभदेवकी पुत्री तिसको भगवंतनें सिखाईहै ते ऋषभदेव ब्राम्ही लिपीके करताहें तिनको नमस्कार करीहै ओर तिर्थंकेवली वदे सो प्रमाणहे सूत्रकरताका मनसाकातो अर्थ सूत्र करताही जाणे परंत मूल अर्थ तो ऐसा है अगर थापना अक्षरोको वांदतेहो तो तिनको हम ऐसा पूछतेहे कि १८ लिपी थापना वांदतो भाम अक्षर इतना अक्षराको आकार सर्वही वंदनीक होसी क्योंकि सबही अक्षर भगवानके बताये हुएहे इण लेखेंतो कुरान किताब पुराण वेद काम शास्त्र जोतिष वैद्यक विकथा वारता मंत्र जंत्र

तंत्र कोक सामुद्रीक २९ पाप सूत्र इन सबोके अ
क्षर तुम्हारे कहे मूजब वंदनीक हासी पिण इहांतो
ब्राम्ही लिपीनी क्रिया तथा द्वादशांगी वाणी श्री ऋ
षभ देवजीने बतावी तिसवास्तें क्रियाके गुणसे वांद
वा योग्यहे थापना अक्षर वंदनीक होसी तो २९
पापसूत्रोंके अक्षर वंदन जोग होसी तो अब तुम
किसतरे वंदते नही तेहने पाप सूत्र किसतरे कहते
हो वंदनीक तो एक नमो बंभीए लिवए नमस्कार
ब्राम्ही लिपीके करणहारको यानें ब्राम्ही लिपीके पै
दा करणे वालेको ओर भाव श्रुत परणत द्वादसांगी
वाणीको नमस्कारहे इति पूर्व प्रश्नउत्तर ॥ २१ ॥
अगर कितनेक मतमक्षी ऐसाजो कहतेहेकि सूत्र
भगवती सतग २० मे उदेशे नोमें जंघाचारण वि
घाचारण साधुयें प्रतिमा वांदीहे ऐसा जो कहतेहे
ते इकंत ऊठे वचन कहतेहे ते किस्तरे विद्याचारण
जंघाचारण साधू लद्ध फोरवीनें मानुखोत्र पर्वत नं
दीस्वर द्वीपे रुचक द्वीपमें गयाहें यह बातातो साची
हे परंत श्री ठाणांग सूत्रके चउथे ठाणे मानुखोत्र
परवतपे तो ४ च्यार दिसे च्यार कूट कह्याहे तेह दे
वताके आवासनाहे परंत प्रतिमाके वास्ते सिद्धायत
न कूट कह्या नही तो प्रतिमा किहाथी वांदीहे ते पा
ठलिख्यतेहे (माणसुत्तरस्सणं पव्वयस्स चउदिसा
कूडा पन्नता तं रयणे १ रयणुच्चय २ सवरय

णे ३ रयणसंचये ४ ।) यह सूत्र पाठमें च्यार कूंट कह्या बली कोईक ग्रंथ द्वीव सागर पन्नतीमांहे एकें कविदिसें तीन तीन कूंट कह्या एवं १२ कूटवाराद्देव तांना आवास कह्याहे परंत तिहांबी सिद्धायतन कूंट नहीं कह्या तो तिहां प्रतिमा किहाथी वांदी अगर और सूत्रका पाठ लिख्यतेहे ॥ पूवेणं तिन्निकूडा दाहिणउ तिण तिण आवरेणं उत्तरउ तिणिनव चउ दिसिमाणस्स नगरस्स॥१॥ और रुचक प्रेरवतें पिण दिसा कुमारीका ४० कूंट कह्याहें परंत सिद्धायतन कूंट तिहांभी नहीं कह्या तो प्रतिमा उहां किहांसे वांदी अगर जेसें शास्त्रोंमें कह्याहेकि ॥ नास्तिनार्या कुतः साला धननास्ती कुतः सुखं नास्तीज्ञानंकुतो धर्मः नास्तिग्रामः कुतः स्थितः॥१॥ इति वचनात् एक नंदीस्वर द्वीपमें सासते सिद्धायतनहें तिहां प्रतिमाहें तो तिहां (चेईयायं वंदए) ऐसा पाठतो मानुं पोत्र और नंदीस्वरे और रुचक द्वीपे ए तीन ठिकाणें एकसरीखा पाठहें अगर जिहां प्रतिमाहे तिहां और जिहां प्रतिमा नहीं तिहांभी इतनाही पाठ सूत्रकाहें अगर जिसजगे प्रतिमाहें तिस जगे नमोथुणंका पाठ नहीं कह्या और जिहां प्रतिमा होवे ते तिहां (वंदई नमंसई)का पाठ होना चाहिये अगर वंदना ते गुण कीर्तनकरणा और नमस्कार ते नमणा ऐसा पाठ तो नहीं कह्या अगर एक (चेईयायं बंदए) यहसबद गुणोतकितन कराहे

ते किस वास्तेकी एह सर्व साधानी रीतीहै अगर जे जिहां साधूजी आई समोसरेहैं याने जिहां विश्राम लेवेहै तिहां गमणा गमणे पडक्कमतेहैं तिहां चोवीस स्तवन कहतेहैं ते मांहिं लोगस्स कहे ते लोगस्स मांहिं बहु बचनेहै ते तिहां ञने जंघाचारी साधुओने समुच्चय बचने (चेईयायं वंदए) ते तीनोंने नगवंत अरिहंत ज्ञानवंत प्रतें वंदना करीहै इण आश्री इणे (चेईयायं वंदए) ऐसा कह्याहै और जो प्रतिमा वास्ते (चेईयायं वंदए) कह्या होवेतो नंदीस्वर दीपमें तो प्रतिमाहैं तिहां तो यह पाठ मिलताहै परंतु मानुक्षेत्र और रुचक द्वीप इन जगे तो प्रतिमा नही तिहां (चेईयायं वंदए) यह पाठ किसतरह मिलसी इस बातका जुबाव बिचार कर देना चाहिये अगर जो इहां प्रतिमाकुं वंदना करणी कहतेहो ते सूत्रासें बिरुद्ध वातहै और बिद्याचारण जंघाचारण प्रतिमा वंदना वास्ते नही गया अगर टीका मांहिं गाथा कहीहै ॥ [अईसय चरण समत्था जंघाबिज्जाई चारणामुणउ जंघाईजाथं पढमं निसंकाउ रधिकरेवि १] अगर जो जात्रा करणे वास्ते गया होवे तो (जंघाचारण) रुचक द्वीपसें पाछा आवतां मानुषोत्र परवतपे जो तुम [सिद्धायतन] कहतेहो तिस की जात्रा क्यों नही करी तो येह साधू सासतां नाव देखणे वास्ते गया हुतो सत्तके धणी बह

मस्तपणे चारित मोहनी करमके उदेथी लब्धि फोरि के गयो ओर पुन एहीज उदेशोके पीछे यह पाठहै [जे तस्सठाणस्स अणालोइय अपडीकंते कालं क रेई नत्थी तस्स आराहणा] यह लब्ध फोरी अण आलोया प्रायछित लीधा बिना कालकरे तो धरम का विराधकहे अगर जो जात्रा करणे वास्ते गया होयतो मोटा धर्मका लाभ क्यों नही सूत्रमे कह्या प रंतु इहां तो धरमके विराधक कहे जो जात्रामे नफा होता तो ज्ञानीदेव आज्ञाके विराधक उन साधूवो को क्यों कहते अगर कोई ऐसा कहे कि इहां प्राति माको तो (चैत्य) कह्याहै परंत तीर्थकरोजीको कि स जगे (चैत्य) कह्या अगर ऐसा जो कोई कहे तिनकुं इसतरे जुवावहे सो सूत्र अनुसारे लिखतेहे प्र थम भगवती उवाई रायप्रेसेणी इत्यादिक घणे सू त्रांमे बहोते ठिकाणे बंदनाके अधिकारमे तीर्थकर ओर साधुवोको ग्यानवंत महा उत्तम पुरषो प्रते [चेईयं] कह्याहे ते पाठ (तिखुत्तो आयाहीणं प याहीणं वंदामि नमंस्सामि सकारेमि समाणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेईयं पजवा स्वामी) यह पाठ बहोते ठिकाणे कह्याहै ज्ञानवंत वास्ते चैत्य कहिये ओर पुन समवायांग सूत्रमे जिहा २४ जिनोने केवल ज्ञा न ऊपज्या जिसवृक्षनीचे तिस वृक्षको ज्ञाननेश्रा ये चैत्य वृक्ष कह्या तेह पाठ ॥ एएसिणं चउवी

सोए तित्थयराणं चउवीसं चेइय रुक्खा पन्नता तंजं हा निग्गोहसाति विन्नेय सोले पीयंगु छतोहे सरीसहे नाग रुक्खे साले खीलर करुक्खेय ॥ १ ॥ तेंदुम पाडलं जंबु आसत्थे खलु तहेव दहिवन्ने नंदीरुक्खे तिलिएय अंबगरुक्खे असोगेय ॥ २ ॥ चंपगवउलेयं तहा वडस रुख्ये तिहेवधवरुख्ये सालेय बद्धमाणस्स चेईयरुक्खा जिणवराणं ॥ ३ ॥) तिस वास्ते तीर्थंकर ओर साधु का [चैत्य] कहिये इस वास्ते जंघाचारण साधोने श्री जिनराजको जहां कही जो बंदना करतेहें तिहांका जोव श्री जिनराज देखतेहें इति पुर्व प्रश्नोत्तर ॥ २२ ॥ अगर कितनेक लोग उपास दसाग सूत्रमे आणंद श्रा वकजीकुं प्रतिमा पुजीहे अथवा नमस्कार करी कह तेहें तो एकांत सूत्रमे अण मिलती बात कहतेहें ति सका जवाब देनेके लिये सूत्रके प्रमाणसे सूत्र अर्थ लिखतेहें ते किसतरे अब देखना चाहिये उपासग दसासूत्र अध्येन पहिले श्रीमहावीरआगे आणंद श्रावगकने कह्या ते पाठ) (नोखुलमे भंते कप्पई अजप्पइर्ने अणउत्थिएवा अणउत्थिय देवयाणंवा अणउत्थिय परिगहियाणिवा चेइयाइं वादत्तएवा न मंसित्तएवा पुब्बि अणालवंते आलवित्तएवा संलवित्तए वा तेसि असणंवा पाणंवा खाइमंवा साईमंवा अजउवा अणपदाउत्रा) इति पाठ उपासगदसा सूत्रका अर्थ देखिये आणंदजीने क्या कह्या की अगर आजपछे

मुझे न कल्पे॥ अन्य तीरथीने १ अन्य तीरथीना दे
वने २ और अन्य तीरथीने ग्रह्या अरिहंतना [चै
त्य] ते साधू अनमती जोगी सन्यासी आदिका
ने अपणे मतमे जिन अरिहंतका (चैत्य) ते साधु
को मिलाय लिया होय अथवा समकत्त सरधासे
फिराय लीया होय तेहनेनी वंदूनही तेहना बोलाया
पहिले बोलूनही और तिनको गुरु समझके आहारा
दिक देवणे वास्ते वीनती करुं नही मिथ्यात कारण
जाणके यह मूल पाठ अर्थ सूत्रहै और इस पत्र
पाठका अरथ कितनेक लोग ऐसा करतेहै जो अन
तीरथी याने अनमतीने ग्रही प्रतिमा याने लयकर
अपनी कर मानीहै याने अपणे देवताओंकी प्रति
माओमे जिन प्रतिमा स्थापन करी ऐसी जो जि
न प्रतिमा प्रत वंदु नही इम कहतेहै परंत सतप
रुषी ऐसा नही समझते कि जो अरिहंतकी प्रतिमा
जोग मुद्रा संजोग रहित बैठे आसनसें होतीहै अग
र अनतीरथीके देवताकी प्रतिमातो संजोगी आयु
ध सहित और असत्री सहित बाहण याने असवारी
सहित होवे तो सिव और जिन तीर्थंकरजीकी प्रति
माकूतो आजदिन मुरख बुद्धिका धणी पुरस पिछा
णताहै तो तिणे ते जिन प्रतिमाको क्या जाणिके आ
दरी याने ग्रहण करी अगर ब्रम्हा बिष्णु महेस हनु
मान कारतिक रुद्राणी अथवा खेत्रपाल इनमेसे एक

सकी प्रतिमा जाणकर अंगीकारकरी ते कहो अगर
जो तुम प्रतिमाका इहां अरथ करोगे तो प्रतिमा
क्या बोलतीहै और प्रतिमाका अर्थमें आहारपानी
का क्या कामहै अगर प्रतिमातो कब आहार पाणी
नहीलेय तो च्यार प्रकारके आहारका क्या कामथा
सूत्रमें कहणेका तो जाणिये इहां आहार पाणी साधु
के कारणे कह्याहै तो इण ठिकाणे प्रतिमाका अर्थक
र तेह सूत्रसे विरुद्धहै परंतु मतपक्षीयानो मनमाहि
इमजो ज्युं त्युं करीके अन्य तीरथीका ग्रह्या याने लि
या॥चैत्य॥ निषेधीके सय तीरथीनालिया॥ चैत्य प्रति
मा॥ पूजना ठहरातेहै तो एह सूत्र न्यायसें ठहरता
नही और उनोको हम पूछते है कि तुम्हारा बाप च
न्डालके घर बैठा कोई कारिज कारिके तिस वखत तु
म अपणे बापको बाप करी समझतेहोकि चंन्डाल क
रि मानतेहो ते कहो अगर जो तुम अपणे बाप
को बापकर मानते होतो अगर अन्य तीरथीके देव
ल माहि रहिकर तुम्हारी प्रतिमा अवंदनीक किम
हुई ऐसा प्रतक्ष असुद्ध वचन बोलतेहो आणंदजी
के परिमाणसे प्रतिमाका अरथ करतेहो तो एकतो
मिथ्या याने झूठा बचन कहतेहो अगर आणंद श्री
वकजीको क्या कारण जोगहै तिह पाठ लिखीयेहै
सूत्र (कप्पइमे समणे निग्गंथे फासु ए सणिज्जेणं
असणं पाणं खाइमं साइमं वत्थ पडिग्गहं कंबलं पा

य पुत्रणेणं पीढ फलग सिज्जा संथारएणं उसहो जेसे जेणं पडिलाभेमाणे विहरित्तए) ए कल्प मांहि तो अरिहंत और अरिहंतका साध वांदवा और दान देवा एह कलपहे याने यह बातें करणी जोगहै अगर जो स्वमतीका याने अपने मतीकी प्रतिमा वांदवी एह पाठतो सूत्रमें नहीं कह्या जिसतरे आणंद श्रावकको समकतकी बिधी कहीहै इसीतरे संख पोखली वगेरे सर्व श्रावकोंको यही बिधकहीहै और अनंते चोवीसीके श्रावकोंकी यही बिध समकितकी रीतहै इस समझकर सूधा अरथ सूत्रका करणा चाहिये ॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ २३ ॥ और कितनेक सकस ऐसा कहतेहे कि अंबड श्रावक सन्यासीने उववाई सूत्रमें प्रतिमा पूजी कहतेहैं ते सूत्रका पाठ लिखतेहै (अंबडस्स नो कप्पइ अण्ण उत्थियावा अण्ण उत्थिय देवयाणिवा अण्ण उत्थिय परिगहीयाइ चेइयाइ वंदित्तएवा नमंसित्तएवा जाव पज्जुवासित्तएवा णण्णत्थ अरिहंते वा अरिहंत चेइयाणिवा) जेन कलपे तीन बोल ते हतो आणदवत् परज कह्या और कलपे ते मांहि अरिहंत १ और अरिहंतकी (चैत्य) ते साधु २। अरिहंत तेहतो देव अने अरिहंत (चैत्य) ते साधु तेह गुरुहत एह देव अर एह गुरु दोनोंको अंबडजीने वांदवा कलपहै अगर कदाचित् मिथ्यातीने लोधी अरिहंत [चैत्य] नामे प्रतिमा ठहरावतेहो जो तुम लोगतो ति

सपर हम पूछतेहैं कि जो अरिहंत तेहतो देव अनें अरिहंत [चैत्य] ते पुन देव तिवारें गुरु वांदवानो पाठ सूत्रकावतावो अगर तिसरा पाठतो सिद्धांत मांहिं है नहीं तिसवास्तें अंबडजीके साक्षसें प्रतिमा पूजनी कही नहीं तेह बिचारकर समझना चाहिये ॥ ॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥२४॥ अगर बहुतसे लोग ऐसा कहतेहैंकि शास्त्रमें ७ क्षेत्रमें धन खरचणा कह्या ते सूत्रके परिमाणमे नहीं मिलताहै अगर पहिलें श्रावग आणंद कामदेव वगैरे सूत्रामे कह्याहै तिनकें अनेक कोड संख्या धन हुंता तहना १२ व्रत, ११ पडिमा और संथारा ऐसी करणी सूत्राके पाठमें वर्णन करीहै परंत तिनकुं संघ काढवा देहरा प्रतिमा करावना पूजवातो सूत्रमे कह्या नहीं तिनको श्रीमहावीर देवनें कितना क्षेत्र बताया अथवा गौतमादिक गणधरानें आगधन काढवा खरचवा सात क्षेत्रामें कह्या होवेतो सूत्रका पाठ बताओ अगर प्रतिमा १ देहरा २ पुस्तक ३ साध ४ साधवी ५ श्रावग ६ श्राविका ७ एह सात क्षेत्र कहतेहो तेह अजाण लोकाको भ्रमावणे वास्ते कहतेहो सूत्र मांहिं तो कोई साध साधवीके वास्ते मोल आणकर आहार देवेतो उस साधको अकलपनीक कह्याहै याने लेणे जोग नहीं कहीं आचारांगादि केई सूत्रामें मने कीयाहै तो साध साधवीके वास्ते क्या काममें धन आताहै ते कहो

अगर पुस्तकतो श्रीवीर निर्वाण पछे नौंसें अस्सी वर्ष ९८० बाद लिखाणाहै पहिले तो मुखपाठ सूत्र यादथे तो अगर हम जाणतेहे कि यह ७ क्षेत्र नवे वणाये हुयेहैं और जो श्रावग पुनवंत होवे तो खरातनो धन खाय नही तिस वास्ते यह ७ क्षेत्र को परिमाण सूत्रसे नही मिलताहै यह बातें नवे पं रिकरणोंकीहै कुछ सूत्रमें यह ७ क्षेत्र नही कहे इति पर्व प्रश्नोत्तर ॥ २५ ॥ अगर कितनेक आचार्य ऐसा कहतेहैं की द्रोपदीनें जिन प्रतिमा पुजीहै तिस को जवाब और सरधान सूत्र परमाणसें लिखतेहैं अगर सर्व सुत्र मांहि देखता तो साध १ साधवी २ श्रावक ३ श्राविका ४ किसीनें प्रतिमा पुजी नही कही ॥ दोहा ॥ साध श्रावगाकिण सूत्रमें, प्रतिमा पूजी नांही ॥ नामलवे इक द्रोपदा, सो तो व्रती नांहि ॥१॥ और राजग्रही चंपा सावत्थी आलंभिया तुंगीया द्वारका बनीता इत्यादिक नगरी वर्णवी तिहाका कोट खाई दरवाजा बाग बागी घर हाट राजा राणी रुद्धि श्रावककी बरणवी लेकिन किसी नगरीमें देहरा प्रतिमाका बरनण कीया नही एक द्रोपदीने बिवाह के औसरमें इह लोक संबंधी खेम कुशल मंगलीक तथा वर वास्ते पूजीहै तेह संसारका बिवहार कारज में पूजीहै जैसें देव कुलमजादमें ॥ (विद्याधर अने केई देवता; इनका कुल बिवहारजी ॥ पूजता तिणमें

धर्म बतावें, दीसे मूढ गिमारजी ॥ समकितपरखो जिन बचनोसे ॥ १ ॥ लेकिन मोक्षके कारने अथवा करम निरजरा कारणे नही पूजा तेह द्रोपदी प्रथम पूर्वले नवमे धर्मरुची अणगारकुं कडवो तुंबा दीया तो प्रथमतो यह काम अजुक्त कीया १ और सुकुमालकाके भवमें निरव्यारीको दूसरा नरतार कीया यह अजुक्त दुत्ताये बारता २ और पछे संजम लेकर अवनीत गुरणीकी आज्ञा मेटी यह तताय अजुक बारता ३ और पीछे नगर बाहिर तपस्या करी ए चोथी अजुक बारता ४ अगर पछे पंच नरतारनो नियाणो कीयाए अजुक्त पंचमी बारता ५ और पछे संजम बिराधके बेस्या देवांगणा दूसरे देवलोकमे हुई यह षष्टमी अजुक्त बारता ६ अगर पछे द्रोपदीके भव इहां आकर पांच नारतार व्याह्या एह सातमी बाता अजुक्त हुई ७ अगर ऐसी अजुक्तके करणहारी मिथ्या दृष्टी साहित तिसकी पूजाकी साक्ष अथवा सुरियाभ अविरतारी दीधी परंत आणदजी संख पोखली इत्यादिक श्रावकाकी ऊपमा क्यों नही दीधी तो किस बास्ते अगर आणंद परमुख तो प्रतिमा पूजता नही तो गणधर देव खोटी ऊपमा किसतरे देवे अगर द्रोपदी जिसवक्त प्रतिमा पूजी तिसवक्त श्राविका नहीं १ जो श्राविका होयतो पंच नरतार किसतरे बरे २ अगर जो द्रोपदी विरत लिधा

तिवारे इम जाणतो न हुतो जो हुं पंच भरतारि वरस्युं अगर संसारकी रीतसे एक धणी रास्यो होवे तहतो परिमाण नहीं रह्या और जो वरवाका वक्त पांच क्या ह्या तो श्रावक व्रत लेता दस बीस किलना वर मोकला रास्याथा तो तिह सूत्र पाठ दिखावो अगर इस परिमाणसे श्राविका तो नहीं कहिये १ अगर द्रोपदी समदृष्टी नहीं तोकिसतरे दसाश्रुतस्कंध सूत्र दसमें अध्ययने कह्यो है किजो मनुष्यके भोगोका नियाणा करे ते धरमका श्रव सांभलवो नो नहीं पामे अगर जो उताकिष्टारसनो बंधहोवे तो ते द्रोपदीको मनुष के भोगोको नियाणो उतकिष्ट रसनातो नहीं तिसवास्ते पछे संजम उदे आव्याहे ते भणी यह परणी नहीं याने विवाही नहीं तव ताई नियाणो हुतो अगर तिहां लगे समदिष्टी नहीं अगर जो वस्तु वंछी ते आवीमिले तिस वक्त नियाणो पूरा होय अगर इहां नियाणाका दो भेदहैं एकतो द्रव्य प्रत्यय १ और दूसरा भव प्रत्यय २ अगर जे भव प्रत्यय तहतो वासुदेव चक्रवतको हो वे जेहने भव पर्यंत विरत उदय न आवे ते भव प्रत्यय १ अगर दूसरा सर्वको द्रव्य प्रत्यय होवे तेहमें वांछ्यो द्रव्य मिल्यो तिवारे नियाणो पूरो थयो पछे संजमने समकित सरव आवे ते भणी द्रोपदीने द्रव्य प्रत्यय नियाणो हतो ते परस्या पीछे विरत उदय आव्यो परंतु परणेसी बेला लगे तो नियाणाका

ष्टदे हुंतो (पुवकड नियाण पडिचोइजमाणी) ऐसा पाठहे तिहालगे समद्रिष्ट पण नही २ और द्रोपदी का मात पिता पिण मिथ्याती संभवेहे जेणे आहार वह परका कराया (ते विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरंच मज्जंच मुहुंच मंसंच सिधुंच पसणंच सु बहुं पुप्फ वत्थ गंध मलालंकारेच वासुदेव पामुखाणं रायसहस्साणं आवसेसु साहरहतेवि साहरंति) लाखो कोडोगमे त्रस जीव हणी जीवनी हिंस्याकरी मंस आहार निपजाव्या ते मंस आहार निपजाव्या वास्ते समद्रिष्टी नही मंस आहार समद्रिष्टीके घरे नीपजे नही ते ससे श्रीकृष्ण पिण समद्रिष्टी नही मंस आहार कीधावास्ते अगर श्री नेमीश्वरस्वामी संजम नही लीधो तिसवास्ते जब नेमीश्वर भगवते संजम लीधो तब सासन परवर्त्यो तब जादव वंशी घणा जिन मारगी थया अगर जीव हिंस्या नेमीश्वर भगवंतने परणवाके समय घणी होती हुंती ते टालीने संजम लीधो एह समद्रिष्टीका लक्षण जाणवा इण लक्षण द्रोपद राजा समद्रिष्टी नही ३ वली कितनेक वादी ऐसा कहतेहै कि जे प्रतिमातो तिर्थंकरकीहे की सूत्र गिनाताजीके पाठसे कह्याहे की (जेणेव जिण घरे तेणे उवा गछई त्ता २) की द्रोपदी जिनना घरमा आवी कह्याहे तिस वास्ते तिरथंकी प्रतिमाहे येह तो सत्यहे लेकिन नयके प्रमाणसे अ

रथ इहां जिण सद्दका ओरत्नीहे कि जैसे ठाणांग सू त्रके तीसरे ठाणेमें कह्याहै कि(तउ जिणा पन्नत्ता तं जहा उही नाण जिणे १ मणपज्जवनाण जिणे २ केवलनाण जिणे ॥ ३ ॥ ओर [तउ केवली पन्नता तं जहा उहीनाण केवली १ मणपज्जवनाण केवली २ केवलनाण केवली २] ओर (तउ अरिहा पन्नत्ता तंजहा उहीनाण अरिहा १ मणपज्जवनाण अरिहा २ केवलनाण अरिहा ३) अगर अधिक नाणीनें अरिहा ओर जिण कह्याहे केवली मनपरजव ज्ञानी वे तो साधूहोवें तेतो अणगार घर रहित कह्याहे (अणगारे जाए) जगे जगे सूत्रमें कह्याहै अगर जिनमें घरहोवे तेहवा जिन जाणवा अगर घरतो अवध ज्ञानी देवता कामदेव परमुखनें होवे तिस वास्तें जिन सब्दे अवधि ज्ञानी जिननो घर जाणवो अगर घर वागवाडी मांहि तीर्थंकर साधु आवता तथा तव अनेक लोक वंदवा जाता तिहा इसतो किहाइ कह्यो नहीं जे चालो तीर्थंकर साधुने घरे जाइये तेहने घर नहीं इस वास्ते इम नहीं कह्या परंतु जिहां साधु वैसे तिस जगेको सूत्रमांहिं [उवस्सयं] कह्योहे उवस्सय ते उपाश्रय अलप कालके रहिवाका आश्रय वास्ते उपाश्रय कहियें पिण घर न कहियें तिस वास्ते अवध ज्ञानी जिनतो कामदेवादिकनो घर कहिये जिमज्ञाता मध्ये नागघर कह्यो तिम बलीका

ई कहे तीर्थंकर विना जिन सद्द किसको कहिये ते
उत्तर तीर्थंकरने जिन कहिये १ सामान्य केवली
जिन कहिये २ अवध ज्ञानीनें जिन कहिये ३ म
परजव ज्ञानीको जिन कहिये ४ बारमागुणठाण
के धणीको जिन कहिये ५ चउदे पूर्वधरनें जिन क
हिये जावत १० पूर्वधरतकको जिन कहिये ७ ग्य
रवां गुणठाणाके धणीको जिन कहिये ८ आवती चौ
वीसीके जिन कहिये ९ जिन नामध्येयनें जिन कहिये
१० जिन समुद्रको कहिये ११ कंदर्पनें जिन कहि
ये १२ नारायण कृष्णनें जिन कहिये १३ बहु धन
वंतनें जिन कहिये १४ ते कोण ग्रंथकी साखहै तो
हेमाचारज किरत तेहनी हेमी नाममाला अनेकार
थी मांहिं कह्याहै ते॥ श्लोक ॥ (बीतरागो जिनश्चै
जिनः सामान्यकेवली ॥ कंदर्पे जिन वारात्‌ जिनो
नारायणस्तथा १) अगर अरिहंत सकल करम क
पाय २२ परीसे सहें अगर जीततेहें तिसवास्तें जि
न कहिये १ अगर सामान्य केवली पणें रागद्वेष मो
हघाती करम जीत्या तिसवास्तें जिन कहिये २ औ
र कंदर्प्पने सकल संसार जीत्या सरवमें व्याप्या ति
स वास्तें जिन कहिये ३ वासुदेव पोताना भुजबलें
तीन खंड पृथवी जीत्या तिसवास्तें जिन कहियें ४
पछें जेहवा अवसरें तेहवो जिन सद्दनो अर्थ जाणवो
और द्रोपदीनें तो परणवाना अवसर मांहिं पूजीहैं

नियाणाना-तिव्र उदेमें भला भरतारनी वांछा विषि यारथी-थकीइं पूजीहै तिसवक्त चारित मोहनीनों उ दयहै तेणें वीतरागी निरागी ऊपर भक्तिराग नहीं अगर-समकितनें अभावें तो नमोथुणं किमकहे अव धिज्ञानी माहिंतो नमोथुणंनां गुणनही ऐसा जो को ई कहे तो तेहना उतर अगर जे नमोथुणंका गुणतो अरिहंत सिद्धमांहि है एहतो सत्यहै परंतु अरिहंत ते अजाणलोगें-अरिहंत जाणीनें वांदा पूज्या ओर नमोथुणं कह्या ते सूत्र मांहि विज्ञान देखिये अगर भगवती सतक-८ में उदेसे पाचवें गोसालाजीका श्रावग श्रीवीर बखाण्या तिहां कह्या है (इच्चेते दुवा लस्स आजीविय उवासग्ग अरिहंत देवत्तागा अ म्मा पिउसुसगा) अरिहंतना भक्ति कह्या आणं दवत् तेहनेंमतें गोशालाजी अरिहंतहैं एह श्रा वक गोशालाजीको नमोथुणं कहतेहैं तेहने आचार्य अरिहंत जाणिके नमोथुणं कहेथे १ वली भगवती सतग-१५ में सावत्थी नगरीमें (हालाहला) कुं भारीनो-हाथें गोसालाजी विचरतेहें तेसावथी नगरी सें-(अजिणा जिण पलाठी अकेवली केवली पलाठी असवनु सवनु पलाठी अजिणे जिण सद्दप्पगा समा णे-विहरई) कह्यो अगर अजिनथको जिन अरिहं त-केवली सर्वज्ञ कहिरावते विचरतेथे २ अगर तेह ना श्रावग-जिन अरिहंत केवली सर्वज्ञ जाणीनें न

मोथुणं कहथे १ वली एहिज १५में सतकें गोशाला जीनों अयपुल श्रावग रात्रें चिंतवतेथे [एवंखलुमम धम्मायरीय धम्मोवयस्स ए गोशालाजी मंखलीपुत्ते उपन्न नाण दंसणधरे जाव सवदरसी इहे सावत्थीए नयरीए हालाहाला ए कुंभकारिये कुंभकारावणंसी आजीविय संघ संपरिवुडे आजीविय समएणं अप्पा णं भावेमाणे विहरई) तेहने हुं कालहे सूरज ऊग तां जाईनें वांदसु यह इम अरिहंत जाणकर नमोथु णं कहतथे कि नही ३ और उपासगदशा सूत्र ७मे अध्ययन सिकडाल कुंभारने रात्रे समदृष्टि देवता क हिगयो जो कालिह आवस्ये ते कोण (एही तेणं दे वाणुप्पिया कल्ल इह महा माहणे उप्पन्न नाण दंस ण धरे तीय पडु पन्न मणागय जाणए अरिहा जिण केवली सवनुं सवदरसी तिलोग विहिय महिय पुईयस देव मणुया सुरस्स लोगस्स अच्चणिजे पूयणिज्ज वंदणि ज्ज सक्कारणिज्ज समाणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेईयं पज्जुवासणिज्जे तवकम्म संपयाउ तत्तेणं तुम्म वंदिज्जा हि जाव पज्जुवासेजाहि पाडिहारेणं पीढ फलग सि ज्जा संथारएणं उवनिमंते जाहि] तिवारे सिकडाले इम जाण्यो जे माहिरा धरमाआचार्य गोसा लाजी मंखली पुत्र (उपन्ननाणदंसणधरे जाव तव कम्म संप्पया सप्पउते से कल्लं इहां हवमागच्छिस्स ई तएणंतं अहं वंदामी जाव उवनिमंतिजाहि) इण

लेखे सिकडालपुत्र गोशालाजीने अरिहंत जाणकर नमोथुण कहतेथे कि नही ए ४ साखो अजिनने जि न जाणीनें नमोथुणं सूत्रमें कहीहें अगर अजिन ओ र जिनने नमोथुणं कहिवातो एक सरखीहे ओर न मोथुण तो देवतां ओर इंद्रादिकके भवमें अनंती वार कहे आयेहें परंतु कुछ मोक्ष खाता नहीहे एह सं सारका मंगलीक व्योहारहे ओर इसमें समकती ओ र मिथ्यातिका कारण भेद कुछ जुदा नहीहे अभव्य ओर भव्य ओर सम्यक्ती ओर मिथ्याती सबही प ढतेहें यह परिमाण सास्त्रोंकसें मालुम होताहे परंतु सम्यक्तीजीव जिनने नमोथुणं कहतेहें तिनको सुध श्रद्धाका लाभ होताहे तिम द्रोपदीयें पिण मिथ्यात मोहनीके उदेमें अजिन अवधिज्ञानी देवतानी प्रति माको नमोथुणं कह्याहे अथवा जो जिनकीही प्रति मा होय ओर नमोथुणं कह्याहे तो क्यां अचरजहे अगर जीव इहलोक रीतसे अथवा मंगलीके कारणें पूज्याहे परंत आज्ञा माहिला कारन नहीहे वली ए हीज द्रोपदी परण्या पछे समकितनें संजम पांमी ति वारें प्रतिमा पूजी किहांइ कही नही अगर धातकी खंडमें देवता साहरीनें द्रोपदीको लेगयो पद्मोत्तर राजाने घरें रही तिहां तप कीधा कह्या पण प्रतिमा पूजी कही नही ओर फिर श्रीकृष्ण पांडवजी धात्री खंडसे द्रोपदा आणकर पांचोपांडवांको देसोटा दी

घा फिर पांडू मथुरा नगरी बसायकर उहां राज की
या तहांनी प्रतिमाकी पूजा नही करी अगर जो वि
वाहके औसरमें प्रतिमा पूजती दफे द्रोपदी समद्रि
ष्टीहोवें अगर प्रतिमा तीर्थंकरकी होवे तो द्रोपदी
स्त्री जातथकी जिन प्रतिमानें संघट्टोकिम करे अगर
सूत्र सांहिं ठाम २ तथा उत्राध्येनमें ब्रह्मचारी तेहनें
एतला बोल वरजाहें जे स्त्री सहित थानक १ अस्त्री
नी कथा २ स्त्री थकी एक आसणे बेसवो ३ अस्त्री
नो अंगनिरखवो ४ स्त्रीना भोगना विलास सब्द सं
भलवो ५ अस्त्रीनाभोगनो संभारवो ६ अस्त्रीनो फर
सवो ७ ए,सातबोल वरज्याहे वली परसन व्याकरण
चौथे संवरद्वारे वली आचाराग ५ महाव्रतनी भाव
नी मांहिं वली सुयगडांगे स्त्रीपरिज्ञा परिज्ञा अध्येने
(पासें भिसित्ताणं निसीयइ अभिरुखणं पोस बथ
पुरि हरइकायं अध्रे विदंसेई वाहसुद्ध तुकर करमणु
वेजे) इम ठाम २ अस्त्रीनो संघटो साधूनें बरज्याहे
तो वीतरागने इस्त्री संघटा किमहोवे वली अंतगड
सूत्रमें देवकी राणीनें छह पुत्र देख्या हरख पांमी स
रीरमें अधिक आनंद हुया परंतु बेटांकी बुद्धे पण
अस्त्रीनहीं यानें अती नजदीक नही बैठी अगर ब
लीमृगावती चेलणा रुखमणी सिवानंदा कौणकनी
राणी इत्यादिक सबही दूरही ओर वंदना करी परं
तु संघटा नही कीया ओर तिलक मस्तकमें नही की

थी और आणंद संख पोखली श्री कृष्ण श्रेणक को
णक उदाई राजा ऋषभदत्त इत्यादिक पुरसपणे थ
की वेगलें होयकर वंदना करी और प्रदेसी राजा
चितरवारथी इत्यादिक घणानर अनें नरेस्वरें नग
वंतनीकुं वंदन आया तिसवक्त ५ अभिगमन धारन
कीया तेह पांठ [सचित्ताणं दव्वाणं विउसरण याए
विउसरंइ) कह्या नगवंतने साधु तेहने सचितनो सं
घट्टा नही कलपे तिसवास्ने सचित वस्तु दूर मूंकी
पठे [नच्चासन्ने नातिदूरे विणएणं पंजलीउडे पज्जु
वासंती] कह्याहे लेकिन जो नक्तिके वसहोकर साधु
महाराजके चरणारविंदका फरस करेतो दोस नहीहै
परंत इस्त्रीका संघट्टा किसी विध ब्रह्मचारीको नही
फरमाया अगर श्री जिनकी प्रतिमा जिन सारखी प्र
तिमाका संघट्टा किसतरे किया यह बडे अचरजकी
वातहै कि आजदिनन्नी कोई इसत्री जिन प्रतिमाको
फरसके नही पूजती और इस्त्रीको जिन प्रतिमाका
पूजना और सनान आदितिलक कारन करणा इ
त्यादि सर्व मने कीयाहे तेह इस परमाणसे अगर
स्वयंवर मंडप और बिवाहके पहिले पूजीहैं तेह मो
क्ष कारणका रस्ता नहीहै जरा अंतिर यानीबुद्धि
लके वीच देखोतो सही की परमार्थ की सिद्धीका
मारग औरहीहे और हम अपने लिखेको निश्चै नि
ही कहते क्यो की हमतो अपणी बुद्धीकी सहीत

तासे ओर सूत्रांके पाठकी साखसे ऐसा परमार्थ का भेद कह्या ओर निश्चे तो केवलीयाके वचन सत्यहै ओर अवके आचार्य ओर मनुषोंकी बुद्धी अलपहे सोई मत पक्षको छोडकर तत्वारथ समझना चाहिये ओर द्रौपदी बिवाह हुये पीछे नारदको अ संजती कह्याहे सोई पीछेही समकित अवणेका लक्षणहें अगर नियाणेके परभावसे पंच भरतार ब्याह्या ओर बिषय सुख भोगव्या तिवारे पछे समकित उदें आईहे ओर निरयुक्ती बिरतमे गंध हस्ती आचार्यकी करी हुई तिसमे ऐसा कह्याहे की द्रोपदीजीके एक पुत्र थयो तिस पीछे समकित पामीहे अगर ऐसा प्रकण ग्रंथामेभी कह्याहे इति पूर्व प्रश्नोतर ॥ २६ ॥ अब कितनेक लोगोसे हमतो प्रश्न साधु श्रावक आश्री करतेहें कि किसजगे साधु श्रावगने सूत्रसे जिन मंदिर याने जिन प्रतिमाकी पूजा करीहे तिसका जुवाव सूत्रांके पाठसे पुछतेहैं परंत वादी लोग श्रावग साधूके नामसे तो जवाव नही दे सकते अगर देवताओंके नामसे जुवाव देतेहें की रायप्रसेणी जीवाभीगम इन दोनो सूत्रोमे देवताओंने सिद्धयितन प्रतिमा पूजीहें ते किसतरें सुरीयाभ देवतो रायप्रसेनीमे ओर बिजय पोलियो देवने जीवाभीगम मांहिं इनोने प्रतिमा पूजीहै तिसका उत्तर कहतेहै अगर सुरियाभ ओर

विजय पोलीयेका अधिकार एकसरीखाहै तिसवा स्ते इहां सुरियाभ देवका घणा विस्तार सूत्र राय प्रसेणीसें कहेतेहै कि इस वास्तें संदेह दूर होनेके इस प्रश्नका तातपर्ज सिद्ध करतेहैं अब पहिले सुरिया भ देवता॰ देव लोक मांहिं रहे हुयां श्री महावीर को नमोथुणं कह्या तो तिहां (ठाणं संपत्ताणं) लगे कहिकर बाकी आगे पद नही कह्या और बाद इस के ऐसा कह्या तेह पाठ (तं महाफलं खलु तहा रूवाणं अरिहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स विसव णयाए किमंगपुण अभिगमणं वंदण नमंसण पडिपु च्छण पज्जुवासणयाए एगमवि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणाया एकिमंगपुणविउलस्स अवस्स गहणयाए) इहा वांदवानो उपदेस सांभलवानो मो टा लाभ कह्यो पिण नाटक करणेका मोठा लाभ नही कह्यो वादवा और उपदेस सांभलवो खयोप समभावहै अगर नाटक करवो ते उदय भावहै यह पाठ उवाई भगवती तुंगीया अधिकार आ दिदेई घणी जगेहै अगर सुरियाभने भगवंतजीको वं दना करीनें इम कह्याहै तेह पाठ (एयणंपेच्चाहिया ए सुहाए खमाए निसेस्साए आणुगामियत्ताए भविस्सइ॥ अर्थः पेच्चा कहिता परलोके पेच्चा सबद परलोके घ णे सूत्रांमे कह्याहै और अत्र भवनके नोमें अध्ययनमें कह्या कि [पेच्चाहोईसिउत्तमा] तथा भगवत व्याक

रए पांचमे संवर द्वारमे (पेचानिाविय ओगमे सिनी
हं) ऐसा पाठहे तिम नगवंत पासे जावो वंदणाकि
रो ओर जो जन परिमाणे नूमिकायें पूजों पाणीये
करी छिडको पुष्पाकी वरषा करो [दिव्वसुरवराभि
गमण जोगं करेह] जे देवताने आविवायोग्य सुचि
सुगंध सीतल नूमिको करो परंत इम नहीं कह्यो
जो नगवंतने रहिवा बैसवा जोग नूमिका करो ते
किसवास्ते जे नगवंत तो फूल पाणी सचित पाणी व
स्तुना नोगीनही तिसवास्ते देवता ओने नगवंतके
वास्ते नही कह्या पुन सूत्रमे इम कह्याहे (जलय थ
लय) ते ऊपन्या फूलते कमलादिक थलजते जाई
चंपादिक फूल वरसावो अगर इस पाठके ऊपर कि
तनेक वादी ऐसा कहतेहै कि सचित्त पाणी ओर स
चित फूलांकी वरषा मानतेहै ओर सामायांग सूत्रके
विषे ३४ अतिसय माहिं ऐसा पाठहै [जलय थल
यनी सुर पन्नूएण] तिहां पिण सचित पाणी फूल
मानतेहै ऐसी सरधा धारणे वालोंको इहां जवाव लि
खतेहै देखो जिसवक्त सुरियानके सेवग देवने पाणी
की वरषा करी तिहां ऐसा पाठहे कि (अन्नवद्दलं
विउव्वई २ त्ता) ओर जिहां फूलांकी वरषा करी तहां
(पुष्फ बद्दलं विउव्वई विउव्वइत्ता) ऐसा कह्याहे अ
गर जिम जनम महोछव करतां जगे जगेसे द्वीप स
मुद्रकी माटी पाणी ओर फूल आण्या कह्याहै इम

आने इसतरें इंहा कहीसे पाणी अगर फूल आणया याने ल्याये इसतरें कही नही कह्या और ३४ अतिसयहै तेतो सुनपांना कीधा नही होताहै यहतो श्री भगवंतना पुण्य प्रभावसें प्रगट होतेहै अगर कितनी देवताओकी करी अतिसे होतीहै तेह ३४ अतिसय ॥ यत ॥ तेषांच देहोद्भुतरूपगंधो; निरामयः खिदमलो ज्झितश्चः ॥स्वासोऽब्जगंधोरुधिरामीखं तु; गोक्षीरधाराधवलं ह्यविस्त्रं॥१॥आहार निहार विधिस्त्वदृश्यः; श्चत्वारएतेतिसयाः सहोत्थाः॥क्षेत्रेस्थितियोंजनमात्रकेपि नृदेव, तिर्यग्जन कोटिकोटेः॥२॥ वाणी नृतिर्यग् सुरलोकभाषाः, संवादिनि योजन,मामनीत्र॥भामंडलं चारूचमौलिपृष्टे, विडं बिना; फह स्पीति मडलंश्रीः॥३॥साग्रेचगव्युतिशतद्विएरुजाः; वैरे तितयोमार्जः; तिदृव्य ऽदृष्टयः ॥ दुर्भिक्षमन्यरुचक्रतो भयं; स्यानैत एकादश कर्मघातजाः ॥४॥स्वधर्मचक्रचमराः सपाद; पीठं मृगेंद्रा सनमुज्वलंचः ॥छत्रत्रयं रत्नमयं ध्वजो द्रि; न्यासेत्व चामि करपंकजानि॥५॥ वप्रत्रयं चारु चतुर्मुखांगता; च्यैत्यदुमोऽधोवदनाश्च कन्टका॥द्रुमान तिर्दुंदुभिनाद उच्चकैः, वातोनुकूलः शकुना प्रीदक्षिणाः॥६॥गंधांबुवर्षं बहुवर्णपुष्प, वृष्टि कचश्मश्रुनखा प्रवृद्धिः॥चतुर्विधामर्त्यनिकायकोटि जघन्य भावादपिपार्श्वदेशे॥७॥ऋतनांमिंद्रियार्थानाः; सनकुलत्वमित्यमी॥एकोन विंशतिर्दव्या, श्चतुस्त्रिशञ्चमीलिता

॥ट॥इन अतिसयांमेसें ४ जनमसें होतीहें ११अतिसय केवलज्ञान होतेही होयहे १९अतिसय देवकृत होतीहे सोई ९ प्रकारके पुन्नमें कह्याहे कि अन्न पुन्न १ पाणपुन्न २ लैणपुन्न ३ सैणपुन्न ४ वत्थपुन्न ५ मन पुन्न ६ वचनपुन्न ७ कायपुन्न ८ नमस्कारपुन्न ९ इह नवो प्रकारकापुन्न ठाणांग सूत्रके नवमें ठाणेमे किह्या हे कि अन्न ४ प्रकारे आहार सबही जीवोको देता हुया जीव पुन परकिरती पेदाक करताहे अगर सा धू अथवा संजती असंजतीका भेद वीतराग देव ने नहीं कीया ओर कोई जीव दानका लेणे वाला भला या बुरा जो होयतो दान देणे वालेकुं उसका दोप नही वहतो अनुकंपा ओर साताके देणेका भी लिखाहे इस वास्ते ४ प्रकारके दानसें पुन्न बंधेहे १ पाण पुन्न काहिता पाणीका दान सबही जीवांकु देता जीव पुन्न बांधेहे २ लयण कहतां स्थानका ज गे देता पुन्न ३ सयण सिज्या तखत पाटीयादि ४ वत्थ याने वसत्र दान ५ मन० दानशीलादिकम रखनेसे पुन होय ६ वचन० सुद्ध साताकरीसें पुन ७ कायासें दयापाले ओर देव गुरु भक्ति विनयसें पुन ८ नमस्कार करता पुन होयहे ९ एहनव विधिसे पुन बंधे ४२ बिधिसे भोगवे जिस्मे तीर्थंकर नाम करम निरवद्य पुन्यसें बंधेहे तिस वास्ते ३४ अति संय ३५ वाणी १००८ लक्षण वज्ररिषभ नाराचि

संघेण समचौरससंठाण इत्यादि गुण लक्षण तीर्थंकर मांहि होतेहै सोई देवकृत फूल अचित पुनः शक्ति से देव वारिस करेहै और सचित यानें हरे फूल समोसर्णमें होयतो सेठ साहूकार राजा आदि पांच अभिगम सांचवता याने करता कह्याहे तिसमें सचित वस्तु बाहिर मेल्हणी कहीहै अचित लेई जायरा कह्या ते किम मिले और जो सचित फूल होय तो साध साधवीयांकुं संघट्टा होय तिसते जीव हिंस्या होय तिस वास्ते अचित फूल जाणीये और कोणक नें नगर सिंगारमें पाणी फूलाको आरंभ कीया तिसमें भगवंतकी आज्ञा नही हुई और कोंकणने नगरमें छिडकाव कराया लेकिन समोसर्णमें नही कराया और पाणीकी वारसभी अचित वैक्रीय जाणवी साख उत्राध्येन १२ मे हरकेसीमुनीके दान देनेमे पंचदिव्य वारिस देवने करी तिहां कहांसे पाणी ल्याया नही ततकाल वैक्रिय कीया और भगवानके पंच कल्यानक चवन १ जनम २ दिक्षा ३ केवल ४ निरवाण ५ चवन जनम दिक्षा इन ३ माहि भगवान अविरतीथे तेह कल्याणका माहि फूल पाणीका समारंभ कीधा कह्याहै जब केवल महोछव किया तब तिसवक्त भगवंत महाव्रती संजमीहैं तिस वास्ते सचितका सपर्स संघट्टा नही कराया तिस जगे सचित फूल पाणीनो संघट्टा देवोने भी नही करा

या ओर कोंकण परमुख बंदनें वास्ते गये तिस ब क्त नगर सिणगारा फूल पाणी बिखरया परंत, नग वंत वास्ते फूल माला लेई नहीं गया नगवंतकी म र्यादि नूमिका मांहि गया तिहाथकी, पाच अनिग्र ग धारण कीये इम साधुवाने बांदवा गये तिस ब क्त सचित बस्तु दुर छोडी ऐसा सूत्रका लेखहै ति स वास्ते पाणी फूल सचित्त नही बली इतना आरंभ कीधो कोंणक परमुख आपणी सोन्नया वास्ते, परंत तिस मांहिथी नगवंतके काममें क्या आया तेह बि चारकर कहो ओर[जल थलय] जो सद्दहें ते ऊपमा वाचिक जाणीये कि पुसप बेक्रैके कैसेहैं कि जैसे जलथ लजके ताजे फूल सोननीय होवें इसीतरेकें वे बेक्रियफू ल समजना जिम उत्राध्येयन २३ में [पासंडाको ऊगमिया] ते मृगइव मगातथा दसमी कालिकासू त्र नवमें अध्ययन ३२ में (छाणंते बिगलेंदिया) मु रख अवनीतको मृग ओर बोकरे कि ऊपमा दई ति म इहा पिण फूल (जलइव थलइव) ऐसाऊपमा वाचिक जाणिये परंत सुचित नही ३ बली सुरियान दिव आपणा नाटिक करणे आया तिहां नगवानको बंदणा करी तिसबक्त नगवंतनें ऐसा कह्या तेह पाठ श्री रायप्रसेणी सूत्रे (पोराणमेयं देवा १ जियमेयंदे वा २ कियमेयंदेवा ३ करणिज्जमेयंदेवा ४ आचिन्न मेयंदेवा ५ अन्नणुन्नायमेयं देवा ६) यह छह बोल

भगवंतनें कह्या ते वंदना करिवा आश्रीहे परंतना, टिक करवानी आज्ञा नही कही ते किसवास्तें कि सूरियाभदेव जिन आगे कह्या कि हे महाराज गोतमा दि श्रमणाने दिखावा भणी ३२ विध नाटिक करूं तव भगवंतें (एयमठ नोअढाई नोपरिजाणई तुसिणी ये संचिट्ठई,) कह्यो तिहा अण बोले रहे परंत आज्ञा न दीधी नाटक करणी सावद्यहै तिसवास्ते तुम कहतेहो जे प्रतिमा आगलें नाटिक करता रावणें तीर्थंकर गोत्र वांध्यो इम होवेतो २० स्थानक तीर्थंकर गोत्र वांधवाना ग्याता सूत्र आठमे अध्ययनमे कह्या तिस मांहि नाटिकका बोल किम न कह्यो तथा कृष्ण कोणक आणंद संख पोखली इत्यादि श्रावके साक्षात भगवंत आगें किसीने नाटिक कीया ऐसा कही किसी सूत्रमें नही कह्या तो इह गह बोल वंदणा आश्री कह्याहै ओर सुरियाभ देव महावीरसे पूछी (अहणं भंते सुरियाभे देवे किं भवसिद्धिये समदिठिए मिछादिठिये परिएसारीए अणंत संसारीए सुलभ बोहिए दूलभ बोहिए आराहए विराहए चरिम्मे अचरिम्मे] तिवारे भगवंतनें ते छह बोल सारा भवसिद्धि आदि कह्या इण लेखेतो सूरियाभ विमानमे ये त्रारे जातके सुरियाभ देव ऊपजा जाणिये, वली भगवती सतग १२ में उदेसे ७ मे छालीके वाड़ेका दृष्टांत कह्या सो बकरीयांको वाडो तिसमांहि (अयासः

हस्सं परवेवेज्ज)एक हजार वकरी नरी वह मासलगे वा
ड़ामें राखी ते वकरीयाना उचार पास वणखेल जलमो
सींग मुख हाथ पग तेणे ते बाम्हो अणफरस्यो नही रह्या
पण कोई आकास परदेस मात्र नूमिका अणफरसी रही
होय पिण (एयंसी महालयंसी लोगंसी लोगस्स सा
सयंनावं संसारस्स अणादिन्नावंजी वस्सयं णिच्चना
वं कम्म बहुलं जम्मण मरण बहुलंच पडुचनथी केई
परमाणुप्यगालमे ते वियएसे जथणं अयंजीवेणजा
ए वाणमएवांए) जीवें सर्व लोक फरस्यो ऊपज्यो
मूयो परदेस मात्र नूमिका विनफरस्या नरह्यो ८४
लाख नरका वासा सातक्रोड़ ७२ लाख नवनपतीका
नवन पाचथावर तीन विकलेंद्री तिरजंच मनुपना अ
संख्याता आवास ८४ लाख ९७ हजार २३ विमा
णीकना विमाण ते मांहि पांच अनुत्र विमाण वरजी
ने सर्व ठामे अनंती २ वार उपज आया इस लेखे
सुरियान विमाने सुरियान पणें पिण अनंती बार ऊ
पज्याहे तब सूरियाननें पूछ्यो जे हूं नव्य हूं के अन
व्य हुं इत्यादि १२ बोल पूछा ओर विजय पोलीया
सरीखा असंख्याता दीप समुद्रना असंख्याता विज
य पोलिया पणें उपज आया (असई अदुवा अणं
त खुत्तो) कह्यो तिवारें अनंतनवें अनंतवार प्रतिमा
पूज आया पिण एह जीव समद्रिष्टी नही हुवां पुन
रपी कितनेक बादी ऐसा कहतेहें जे सुरियानदेव नें

वो उपज्यो जब सामानिक देवताइं कह्यो तुम सिद्धा
यतन मांहिं १०८ जिन प्रतिमा ओर सुधरमी स
भामाहि जिन दाढा यह दोनों पूज्यो एह पहिला
करवा जोग्य कारज तुम्हारे वास्तेहै अगर पूजणे
जोग्यहें ओर तुम्हकुं पछे [हियाए सुहाए खमाए
निसेसाए अणुगामियताए भविस्सई) इम कह्या
तो तुमे प्रतिमा पूजो येहदी बात बतावो ऐसा जो
कहतेहें तिसका उत्तर ओर सुरियाभादि ३२ लाख
बिमानहैं ते सर्व बिमानाकी एक रीतहै विमान वि
मान प्रते पाच पाच सभा ओर एक एक सिद्धाय
तन एवं ६ छह छह वस्तु विमाणोमे सर्व ठिकाणे
कहींहें जिसवक्त देवता पैदा होताहे तिसवक्त एक
एक बार राज्य अभिषेक करता पूजतेहें ते समद्रिष्टी
मिथ्याद्रिष्टी भव्य अभव्य सर्व पूजतेहें उपजती वेलां
सर्व देवता सर्वना सामानिक देवता इमही कहतेहें जो
प्रतिमाने ओर दाढा ए दोनोकी पूजा करो ॥ इहां
इम नहीं कि जे सम द्रिष्टी होवे तेहिज पूजे ओ
र मिथ्याती न पूजे एतो जीत विवहार कुल रीतसे
सबही पूजतेहें जिम मनुष लोकमांहिं समद्रिष्टीहे ते
तो तीर्थंकर साधूनें पूजे याने वंदना करे ओर मि
थ्याती होवेतो घोर मसीत मीरा तथा ब्रह्मा विष्णु
महेस माता वीर हनुमान कामदेवने पूजे जो अ
नधीरती होवेते जिन मतने माने नही ए मनुष

लोकरीते जैन ओर सिवना देवल पण जुदा जुदा है अगर तिम देव लोक माहि नाना प्रकारना मत मतना देवल जुदा जुदा नही कह्या जो ते सम द्रिष्टी मिथ्याद्रिष्टीने पूजवानो सिद्धायतन एक एकही कह्याहै तेह जो धरम निर्जरा खाते जाणीने समद्रिष्टी पुजे तो मिथ्याती देवता किसको पूजे तिनका देहरा जुदा बतावो सूत्र मांहि स मद्रिष्टी मिथ्याद्रिष्टीना बिवहार तो जुदाहै ओ र लोकीकरीते एकहै जिम मनुष्य मांहिहै तिमकुल धरमनी रीते भव्य अभव्य सब पुजतेहै इहां कोई धरम निरजरा नही धरम पक्ष खाते होवें तो मि थ्याती देव न पूजे अगर मिथ्यातका देबल पूजे तो मिथ्यातना देहरा जुदा नही तिसवास्ते यह पूजा क रणी लोकीकरीतहै अगर नवग्रीवेग ताई २ द्रिष्टहैं समकितीसें मिथ्याती देवता असंख्यात गुणा अधिका है गोशालामती देवतानें कुंडकोलीया देवसे चर्चाकरी गंगदत्तदेवताने मिथ्याती देवसे चर्चा करी कामदेव अणेक श्रावकको मिथ्याती देवाने उपसरगदीधा ऐसें देव तिरथकरजीकी प्रतिमा होवेतो किसतरे पूजे अने अनमतीका देहरा तो सूत्र मांहि ओर प रिकरणामें किहाई कह्या नही तो मिथ्याती देव को णसे देवकुं पूजतेहै ते कहो इण लेखें सर्व देवता ये ही प्रतिमा पूजतेहै तिरा वास्ते समकित खाते एह

प्रतिमा नही परंत समकिती देवकुं समकितका ला
नहै जो पहिले मनुष भवसे समकितपाईहै तिसकुं
जिनभक्ती लाभ सहीहै ६ वली यह प्रतिमा तीर्थं
करकी निश्चे किसतरे जाणिये ते सूत्र साखसे प्रति
माका निरणय लिखितेहै प्रथम सूरियाभदेव विवसा
य सभामें आया तिहां ' धम्मिएसत्थेवाएति ' ऐ
सा पाठहै घरम शास्त्र रतनमईहै तिनका वहोत वे
र्णन कीयाहै तेह धरम शास्त्र बांचा ते धरम सास्त्र
पिण कुलधरमकाहै परंत आचारांगादि द्वादशांगी
बाणी नही जो धर्म सास्त्र आचारांगादि होवेतो मि
थ्याती अभव्य होय ते किसतरे वांचे ओर मिथ्या
तीना २९ पाप सूत्र जुदा नही कह्या सरव येही सा
स्त्र वांचे अब आजदिन कितनेक आचार्य ऐसा
कहतेहैं कि श्रावक आचारांगादि सूत्र पढेंतो दोप ल
गताहै इसतरे कहतेहै तो इहां द्वादशागी किहाथी
अभव्य ओर मिथ्याती किम वाचे ओर किम नानें
ओर किम पूजे तिम वास्ते यह सास्त्र कुलधरमी
रीतिका जाणीये ओर प्रतिमा सास्त्र यह दोनों ए
करीतकेहैं ७ पढे यह पुस्तक वांचकर (धम्मियं वि
वसाईयं गिणिहजा) ऐसा पाठ कह्याहै ते धरम वि
वसाय ग्रहीनें वठ्याईशान कूंणे सिद्धायतनहै १०८
जिन प्रतिमाहै तिहा आव्यो ते प्रतिमाको सरीर सू
त्र वखाण्याहै तेमांहिं जीवा भीगम माहि (रिठामई

मंसू) कह्याहै जे रिष्ट रतनमई दाढी मूंछहै यह भग
वंतके सरीरथी अवयव जुदो पडयो यह फेर आज
दिन कितने लोग प्रतिमा पूजतेहें तेहनें पिण दाढी
नही करता ते दाढी कोंणसे जिनके हुंती तेहनी प्र
तिमा एह दाढी विशेष॥१॥पवें (कणयमयाचुचुया)क
ह्या तेह सोना मयस्तनचुची युगलहें ओर उवाई माहिं
भगवंतनो सरीर वरणव्यो तिहां अस्तन नही कह्या
तीर्थंकर चक्रवर्त बलदेव वासुदेव तथा उत्तम पुरष
सामंत तथा अश्व हाथी देवरूपी कहेहै इतनोके अ
स्तन नही तो तीर्थंकरजीकी प्रातिमाके स्तन किम
होय यह स्तन सहित प्रातिमा कोणसे जिनकीहै ए
स्तन विशेष ॥२॥ वलि ए प्रातिमाके पासे दोदो चां
वर धरती प्रातिमा एकेक छत्र धरती प्रातिमा ओर
मुख आगे दोदो भूत पडिमा ओर दोदो नाग पडि
मा हाथजोडी विनयकरती खडीहे यह नागभूत जक्ष
किसके परिवारमेहे तेकहो ओर तीर्थंकर पासे तो
गणधर साधु होवे तेहतो जगे जगे सूत्रमे कह्याहें॥ ईसी
परिसाए जई परीसाए॥ तेतो गणधर साधूनी प्रातिमा
पासे होय तेतो किसीको संक्या उपजे तो गणधर
साधूनी प्रातिमा ते पासे नही वली आजदिन जो लोग
जिन प्रतमाकी थापना करतेहें तिण पासे काउस
गीया साधूकी प्रातिमा करतेहें परंत एहिज नाग
भूत जक्षनी प्रातिमा नही करता तो प्रातिमा माहिं

साची कोणसी ए प्रतिमा नाग नूतना ठाकुरकीहै अथवा जिनकीहै एह परिवार विशेष ॥ ३ ॥ वली यह प्रतिमाने [लोमहत्थेणं पमज्जइ] सूरियाभनें मोर पीछकी पूंजनीसे पूजी जिम गिनाता सूत्र २ अध्ये न धनस्वार्थवाहीकी स्त्रीये नाग प्रतिमाने मोर पीछनीसे पूंजी तिणरीते इणे पिण पूंजी ओर ठाणांग सूत्रे पाचमे ठाणे कह्यो (जे कप्पइ निगंथाणवा निगं थीणवा पंचरयहरणाइं धारित्तयेवा परिगाहित्तएवा तं जहा उन्नाए १ ऊंटिए २ साणए ३ पच्चा पिच्चए ४ मुजापिच्चए ५) मुज चीडीलगे रजोहरण अपवादे राखवा कह्या परंत सुकमाल वास्ते मोर पीछ राखवो न कह्यो अगर अन्य तीरथीथकी मिलैतो भेख थाय तिस वास्ते तो जैनका साधु मोर पीछी नही राखे तो जिन प्रतिमा तीर्थंकरकी होवेतो मोर पीछीसे कि सतरे पूजी एहमोर पीछी विशेष ॥४॥ वली सूरियाभे पूंजी तिसवक्त प्रथमतो प्रतिमा न्हवरावी पछे [अ हियाइं देव दुस सजुयलाइ नियंसेइ २ त्ता] इमकह्यो जो जिन प्रतिमा प्रतिचीगट उंचरानी चार्चे अणाहणा णो देव दुसजे वसतरनो जोड़ो जुगल एतले धोती जोडो नियंसेई कहितां पहिराव्या इमकह्या अगर तीर्थंकरतो अचेलहैं वस्त्र पाहिरे नही तो एह प्र तिमा कोणसे जिनकी चाहिये गहिणा ओर वस्त्रतो एकरीतेहैं अगर आजदिन कितने लोग वस्त्र ग

हिणा पहिरावते नही भगवंतको अचेल जाणीने वस्त्र किम पहिरावे और कोई कहे ए वस्त्रतो पहिराव्या नही मुखआगे चढाया है ऐसा बचन असुद्धहे जो मुखआं गे चढाया ते तो(वन्नारहणं चुन्नारहणं वत्थारहणं आ भरणारहणं) तेह मांहिं आव्या अगर नियंसेई तेह तो पहिरायेका नामहे ए वसत्रका विशेष॥५॥वली श्री प्रश्न व्याकरण पाचमे आश्रव द्वारमें देवताना परि ग्रह मांहिं चैत्य देव कुल कह्याहे तेह पाट लिखिते हे (एवचेव ते चउविहासपरिसा विदेवा ममायंति भवण बाहण जाण विमाण सयणा सणिय नाना विहवत्थभूसणाणिय पवर पहरणाणिय णाणामणि पंचवण दिवंच भायणविहं णाणाविहा काम रूव वेऊ विय अत्थर गण सघाए दीवस मुद्दो दिसाउ चेईय पाणीय वणसंडाणिय वणसंन एवं एगाम नगराणीय अरामुवाणं काणणाणिय कुवसर तालाग वावी दिहा य देव कुलसभा पवा वसही माईयाइं बहुयाइं कित णाणिय: परिगिरह्वतापरिग्रहं विउलं दिवसार देवा विसयं दगानतिता नतु ठिउनलंभति) एह पाठमां हि देवतानें जेजे वस्तु परिग्रह खातेमेंहें जेहनें परिग्रह जाणेंहै ते वस्तु सर्व कही तिस माहि देहरा प्रतिमा पण परिग्रह खातेमें गिणातो परिग्रह पूजें धरम नि र्जरा किमहोवे जो धरमखातें तिरथंकर १ केवली २ गणधर ३ साधूहें तो तेह परिग्रह मांहिं गिण्यानही

अगर यह जिन प्रतिमा परिग्रह मांहि कही एह प
रिग्रह बिसेप॥६॥और धूप उखेव्यो अनें साक्षातपा
से न उखेव्यो एह धूप विसेष॥७॥जिन प्रतिमा जिन
सारखी स्त्री द्रोपदीने संघटाकरा ८ दाढी १ रतन २
मोर पिछी ३ नागभूतजक्ष परिवार ४ वस्त्र ५ परि
ग्रह ६ धूप ७ एह सात बोलथया यह ७ बोल सुरि
याभना तीर्थंकरजीकी प्रतिमा साथे विप्रीत थाने इन
जुक्त नही कीया तिस वास्तें एह प्रतिमा कामदेवा
दी भोगीदेवनी संभवेंहै लक्षण देखतातो समद्रिष्टी
मिथ्यातीनें सर्वको पूजनीक वास्तें लौकीक कुलदेव
की प्रतिमाहैं और निश्चे केवली बचन परमाणहै अ
ब इन सातों प्रश्नोंके ऊपर कितनेक वादी ऐसा क
हतेहैं कि जो प्रतिमा तीर्थंकरकी नहीहै तो कामदे
वनी प्रतिमा लौकीक देवकीहै तो सुरियाभदेवनें न
मोथुणं किसतरे कही ऐसाजो प्रस्न करतेहै तिनको
जबाब देनेका सरधांन लिखतेहैं अगर सुरियाभका
नमोथुणं धरम निर्जरामें नही ते किसतरें नमोथुणं
तीन प्रकारकाहै ते लौकीकरीतें १ कुपरावाचनीक री
तें २ और लोकोतररीते ३ अगर लौकीक ते नमोथु
णंका कहणहार बालअज्ञानीनें जिस आगें कहे तिस
मेनमोथुणका गुणनही लौकीक स्वारथ वास्तें कहें जिम
द्रोपदीका नमोथुणं तथा जिम पोकरणा भोजक ओ
सवाला आगे चउबीस तीर्थंकराका नाम कहतेहैं ए

रंत् अपणे आपमें सरदहै नही तिम यह लौकीक १
ओर कोपरा बचननीक ते गोशालाजीका श्राव
गोशालाजीरो तीर्थंकर जाणीनें नमोथुणं कह्यो एको
परा वचनकीगीत २ लोकोत्तर तेह साधू श्रावक श्री
वीतराग देवको गुण सहितनें कहे ते लोकोत्तर यहध
रमलाभ खातेमेंहे ३ जिम सुरियाभने नमोथुणं कह्यो
तिम विजय पोलीयें पिण कह्यो अगर भव्य अभ
व्य सर्वकुहे तो धर्मखातें किमहोवे एतो देवतानो
जीत बिबहार यानें कुल विबहार मांहिंहे धरमखाते
होवेतो श्रावक तथा राजाइं कोईयें क्यां पूजा कीधी
नही तथा देवताइं पिण प्रतिमा आगें नमोथुणं क
ह्यो तो साक्षात भगवंतपासें आव्यो तो भगवंतकुं
नमोथुणं किम न कह्यो देवलोकमांहिं सुरियाभनें म
हावीरजीको नमोथुणं कह्या परंत समोसर्णं मांहि
नही कह्या इम इंद्रसक्रइंद्र ईसानेंद्र सुरियाभे ददरदे
व ते भगवंतने नमोथुणं किसीनें किम न कह्या अ
गर क्या प्रतिमासें श्री भगवंत उतरते तो नहींथे
जो भगवंतको छोडकर प्रतिमाको नमोथुणं कह्या तो
जीत आचार यानें कुलरीत जाणिये अथवा भगवंत
नें गरभमें देखकर सक्रइंद्र नमोथुणं कह्यो तथा मृतक
सरीर तीर्थंकरको तिस आगे नमोथुणं कह्यो जंबुदीव
पन्नतीमें रिखभ देवको निरवाणसमयमें परंत भगवं
त विद्यमानकुं देवताओंनें समोसर्णमें आवी नमो

थुणं नही कह्या तो इम जाणिये जे धरम निर्जरानों कारण लाभदेवनें नही जीत बिवहारको काम जाणिये १ वली प्रतिमानें नमोथुणं कह्यो ते सुरियाभनें इहलोक खातेंहै पिण परलोकखातें नही तिसकी साख भगवती सतग २ उदेसे १ खंधकनें अधिकारमें खंधक सन्यासी श्री महावीरनें कह्याहै ए द्रिष्टांत मोटोहै तेह पाठ सुत्रसें देखलेना जिम कोई गाथापती पोतानों घर बलतो देखीनें सारभंडद्रव्य काढे ते इम जाणजो एसमे (निवारिए समाणे पुव्विपव्वा हियाए सुहाए खमाए निसेसाए अणुगामियताए भविस्सई) ए धन काढयो थको मुझने पहिलाने पछेहितकाले जावंत अणुगामिथास्ये एणेद्रिष्टांते खंधक कहेहै लोक माहिं आलीत पलीत जरा मरणेणं जरामरणे करी लोक बलेहै ते माहिथी सारभंडनीपरे हुं म्हारो आत्मानें काढवे ए आत्मा काढ्याथी मुजनें (पेच्चा हियाए सुहाए खमाए निसेसाए अणुगामियताए भविस्सई) पेच्चा कहतां परलोकें हितनो कारणथकी थास्ये एहवा सद्दनो फेरहै तिमसुरियाभनें भगवंतने नमोथुणं कह्या तिहां (पेच्चा हियाए सुहाए जाव भविस्सई) खंधक सजम लीधानीपरे इम कह्या अने प्रतिमादि पूजवा चाल्यो तिहां (पुव्विं पव्वा हियाए सुहाए जावत भविस्सई) कह्यो धन काढवाना भलावानी परे ए अधिकार देखता प्रतिमानी पूजा

नमोथुणं अने दाढानी पूजा इस लोकखाते थयी इ स पाठमे (पेचा) सद्द नहीं [पुविंपगा) शद्द कह्याहै ते बिचारकर समाऊना १० और कितनेक वादी ऐसा कहतेहै कि जे सुरियाभने और विजयपोली ये जिननी दाढा पूजीहै और दाढाके ठिकाणे सूत्रमेंस ना मांहि भोग भोगवता नहीं इम सूत्रमे कह्याहै त इ उत्तर यह दाढाका पूजना समकित खाते नही धम्मीयसरथे १ जिन पडिमा २ जिणदाढा ३ वह तीनो एक खातेमेहै दोढाने पण प्रातिमानी परे भव्य अभव्य समद्रिष्टी मिथ्या द्रिष्टी सर्व पूजेहै स र्वेना विमाणांमांहिं दाढाहै अने तीर्थंकर मुक्तिगया तेहने दाढा तो सरवने च्यार २ हुंती तेहना लेण हार पिण च्यारहे सुधरम इंद्र १ ईसाण इंद्र २ च मरइंद्र ३ बलइंद्र ४ ए च्यार लेतेहै तेहने (दा ममा) याने डाबा मांहिं घालकर पूजतेहै जो ए दाढा धरम खाते जाणीनें लेयतो अचुत १२ मे दे व लोकका इंद्रादि दाढा क्युं नही लेता परंत जेह नें जीत्त कुल विवाहारहै तेलेतेहैं और यह च्यार दाढा उदारिक सरीरनो परिमाणहै ते तो संख्या ता काल रही बिनस जाय अगर यह दाढा तो अ संख्याता विमाने होवे नही और असंख्याता का लतांई किम रहे और सुरियाभ विजयपोलीया आदि देवताओके ठिकाणें जिण दाढा ते तो सास-

ता पुदगल परिमाणकी होतीहै अगर जो सूरि याजादिक देवाने पूजीहे ते तिर्थकरनी दाढा नही संभवती अगर सासता पुदगलानो परिणामे तेहनी दाढाहै जिम जमाली मेघकुमरनी माताई पु त्राने दिक्षा अवसरना केसलीधा तिणें कह्यो एसमें [अपछिमे दरसणे भविस्सइ] मोहनी करमने उ देलीथा कह्या तिम दाढा पिण जाणवी एहनी पु जा करम निर्जरा पणे नही जो धर्म निरजरा खाते होवेतो अभव्य मिथ्याती किम पूजे नमोथुणं किम कहे अनेकाई मनुष लोकनी रीते समद्रिष्टी मिथ्याती देव तो जुदाहै पिण जिन मारगीने मिथ्यात मार गीना देवता मांहिं पुस्तक जुदा नही जे जिन मा रगीने तो आचारांगादिकहै ओर अनमतीने करा ण पुराणहै ते तो देव लोकमे नही ॥ १ ॥ प्रतिमा पिण जिन मतनी जिन मतीने अने अनमतीने ब्रह्मा विष्णु महेसनीहै तिम पिण नही ॥ २ ॥ दाढा पण जिनमतने जिननी अनमतीने अनमतना देवनी दाढा जुदीहै ते पिण नही ॥ ३ ॥ जे ते सरव भव्य अभव्य समद्रिष्टी मिथ्याती देवताने एहिज धरमीयसत्ये ते कुलधरमना पुस्तक १ एहिजे जिन पडिमा २ एहनो एहज जिन दाढा ३ एतीन वस्तु जीत त्रिबहार पूजवांको एकहै अने जो मिथ्याती समकतीना ए ३ बोल जुदा होवे तो सुत्र मांहि दिखावो ए तीन

वस्तु अनंते जीवे अनंती वार पूजी पिणगरजसरी नही वली गिनाता सूत्र मांहिं १६ में अध्येने श्री कृष्णने पिण सुधरमी सभा कहीहै तो क्या ते सुधरमी सभा मांहिं जिन दाढा तो नही तिहांस्यूं श्री कृष्ण भोग भोगवेहै जिहां सभा हवे तिहां त्रा भोग कोई न भोगवे ते इमही सभा सुधर्मी जाणज्यो वली कितनेक वादी ऐसा कहतेहैं कदाचित जे यह जिन महिमाने जिन दाढाने मिथ्याती तथा अभव्यनही पुजै ऐसा जो कहे तो तिसकी साख तुमारे ग्रंथामें एक ओघ नियुक्तिमें लिखीहै (हवंमि जिणहरा इति वारव्या ओघनियुक्तेषु द्रव्यलिंगी परिग्रहीतानि चेत्यानि सम्यग दृष्टीने सभावितानि इतिकस्मात जस्यात द्रव्य लिंगी मिथ्याद्रिष्टी वातप्रवर्तहि दिगबइ संबधीति चेत्यानिधये तस्य त्य तहिस्यगे वह मानात प्रपुज्याते पुर्वापरं बिरुद्ध नस्यात नेतु सम्यांभावादेवा स्वर्गलोकेपु सास्वतानि चेत्यानि प्राति पुजयंते तत्कल्पे स्थितिवसानुरोधात अतएव बिरुद्धे न संभवति यद्यवंतहिद्रोय थयो सम्यग धारणायाति चेत्यानि नमस्त कृत्वाति कि द्रव्य लिंगि परिग्राहितानि न भवंति त्याह द्रोपदान सम्यगत्क धारणीस्यात कथं ओघनियुक्ता इत्या इत्युक्त [इत्थी जण संघट्टंति तिविहेण वज्जएसाहु]इति वचनात स्त्री जिन संसर्ग सिनी विधि तिविधेन साधुना वरजनीय साभोश्रे अक

लपनीय करणं चरंत सम्यक्तनावतं द्रोपदी आगमें श्रोयते (लोमहत्थं परी मुसइ) लोमहस्तं न परामि श्रंत परमार्जयतिस्थं ततप्रमार्जनेन जिन समसौ जोत जिनरयश्री जनस्यपसते आसातनास्यात् श्रा सातना सम्यक्तानाव अतः एवं द्रोपदीनें सम्यक्त धा रणी संनाव्यते पन उघानियुक्तिवृत न टीकाया गंधह स्त्याचार्येणोक्तं द्रोपदा नृप पुत्रिका निदान् कृतानि नतार पंचस्य साहिता जोत निदानिनो जितस्था जा तेक पत्रः पुनः पश्चात साधु सकासादवता सम्यक्त मार्गो धरते निमथ्यात्व महान वशात प्रतिमा पुज्या च पुष्पादिनि जिन प्रतिमा अनधान तस्य प्रगटो नि वे निकस्या जनत्त त्यू जान कुसस्ति पुस्तकवरे दस्य तं इति पाठांतरे मिथ्यात्वा घजे नाहत जनविधिं तु जाकथ प्राप्यते मुग्धात्वेति जिनद्रा पदा मिदंकु र्या जिनासातः ना एवति) माहि कह्यो एहग्रंथमें ऐ सा कह्यो है कि अजन्य संगम देवतानें यह प्रतिमा पूजेहै १२ इम सुरियान देवताके बारा प्रश्न सहित एक प्रश्न हुया इती पुर्वप्रश्नोत्तर॥२७॥ अगर इहां कित नेक वादी परमारथके भेद समझ विना कहतेहैं कि तुं म्हारे साधुवांको श्रावक साह्मनेलेणें जातेहैं और वि हार करते साधुवांने पहुंचावण जातेहैं तो उसमें हिं स्यालगतीहै तो उसका दोस क्यों नही समजतेहो जो ऐसा प्रश्न करतेहैं तिनको जवाब लिखतेहैं अगर सा

धूतो तत्व ग्यानके समझने वालेहैं सो ग्रहस्तके आवणे जाणेकी आज्ञा नही देवें परंतु ग्रहस्ती अथवा श्रावगका खला बदाहै अपणे कल्याण वास्ते व्याख्यान उपदेसके लाभ वास्ते अथवा संदेह दूरहोणे वास्तें भक्ति विनयके कारणें लावणा और पहोंचावणा साधूको करतेहैं सो समकिती जीव धरमको धर्म समझताहै जिसकारजमें भगवानकी आज्ञा होए तिस धर्ममें विराधक नही होय तेह कारज साधक भावमें कोई असाधक कामहोय तिसमें अधिक याने जादे दोस नही कह्या और मिश्रधर्मकी जहा बातहै तिहा जो निषेध याने मने नही करी एकांत पक्ष न कहे उहा मौनरखीहै जैसें कोई दानसाला संसारी जीवोंके वास्ते देणेकी आज्ञामागे साधूसे तो साधूमना न करे अर्थात मौन करे सो इसवास्ते धरम कारजको साधनाके भाव चढते हुये होय और उहा उस जगे कुब सूक्ष्म याने थोडा दोपभी लगताहै तो वह जो साधु धर्मकी साधना करी तिसके सहायतासें वह पहिले जो हिंस्याकी क्रिया थोडीसी लगीथी तेह धर्म भाव वैराग्य नेम व्रतादिकसे निर्जरा होताहै याने दूर होताहै कि जैसे श्रावक समायक करके साधवोंके पास आया तो वह उसको चलनेकी क्रिया याने दोस लग्या परंतु फिर उसने गुरूको भक्ति कर बंदना और समायक वा संवर कीया तो उसको प

हलाक्रिया जो चलनेका छोडिथी मोई दयाकरी याने दुर करी क्योंकि तीर्थंकरजीको तारीफ गुणो का ध्यान कीया तिसके परसादकर पपतो दुर की या और आगे सुन करणी याने धर्म लानेका खरची पल्ले बंधी जैसे किसी पुरषने द्रव्य कमाय पूर्वे करजतो उतार दिया आगेके खरचका काम चला औ इसीतरे धर्मका कारजकी चितवना कर पूर्व करम खय करा और आगेका करम हिटाया अगर बिना उपियोग समायक पुन्य हेतहै अगर उपियोग समकित सुध सहित करम निर्जरा हेतहै और जैसे श्री गोतम स्वामीने पूछा करी महावीर स्वामीसें कि हे महाराज जो श्रावग साधू साधवीको असूझता अथवा अप्रासुक याने अन्न पाणीमें सचितका दोष लगाय कर देनेवाले श्रावकको क्या गुण होवे या क्या फल मिले तिसका फल किरपाकर बताईये तव श्री महावीर स्वामी कहे हे गोतम अलप या ने थोडासा पाप लग्या और वहोतसा धर्म हुवा या ने वहोतसे पाप करम उस अप्रासुक याने असूझ ते देणेवाले श्रावकको खय हुये और थोडा करम लग्या और वहोतसे करमकी निर्जरा करी याने व होतसे पाप करम दूरकीये ऐसा कथन भगवतीसू त्र सतग आठमा छठा उदेसामे कह्याहै यतः(स मणोवासगस्सणं भंते तहारूवं समणंवा महाणंवा अ

फासुएणं अणेसणिज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभेमाणे किंकज्जइ गोयमा बहुतरियासे नि ज्जरा कज्जई अप्पतरएसे पाव कम्मे कज्जति) ॥ अर्थः साधूको अफासु अणेषणीक आहार वेहरावता अल्प पाप और बहोत निर्जरा होय परंतु यह पाठ श्रावक हेतुहै कि जो श्रावक काल कासमे जाणकर दानसाला दिवावे सो यह पुन हेत कारज श्रावकोके जोगहै और साधूको दान नि रजरा करमाकी और मोक्ष दायकहै सो यह सूत्रां की रचना समझणे जोगहै इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ २८ ॥ और कितनेक वादी ऐसा कहतेहै कि सु त्र दससीकालक अध्येन ८ मे (चित्तभित्तनानिज्झा ए) इतिवचनात जो चित्रामकी स्त्री आदि मूरती देखनेसे कामदेवकी भावना आतीहै तो इसी तरेसे जिन मूरतीके देखणेसे बैराग आताहै ऐसा जो प्रश्न करतेहै तिनको इहा जुवाव देनेकी रीती लिखते अब इह जो बचन तुम कहतेहो सो लोक रीती कर कह तेहो सोई सूत्रांकी रहेसता यहहै कि मोहनी करमके उदयसें राग पैदा होताहै ते रागका तो करमहै और वैरागतो मोहनी करमके खय उपसमसें होताहै और प्र श्नव्याकरणके पांचमे संवर द्वारमे कह्याहै कि चैत्य दे व कुल प्रतिमा मंदिर देखणा मने कीयाहै क्यों कि आरंभकारी वस्तु देखकर साधू सराहना न करे

इस वास्ते देखकर अनुमोदे नही ते पाठ लिख्यते (वितीयंचरे कुयं दियेणं पासिय रूवाणि मणणास दंत कम्मेय पचहि वणेहि अणिग संठाण संठीया एगम णु नहग्गाइं साचित्ता चित्तमी सगाइ कठपोठे चित कम्मे लेखकम्ने सेलेयं दंतकम्मेय पंचहि बणेहि अ णेग संठाणी संठीया एगगिम वेढिम पूरिस संघाइम णि मल्लियं बहु विहाणीय अहिय नयण मणसुहकराइं वणसंडे पवए गामागर णगराणिये पुणिडिय पुरूवर णि वाविदीहिय गुंजालिय सर सरपत्तीयं सागर वि लयंतियं खाइय नदी सर तलाग वाप्पिणी फलफूल उग्गय परिमंडिया जिणरामे अणेग संठाण गए सेहुण बिरइ एमं मव नविहाहिं नवणि तोरण चेइय देवकुल स भा पवा वसह मुकय २ सयणासणसी परह संगड जाण जुगासंदण नर नारी गाणिय सोम पम्हिक्ख द रसणिज्जा लंकिय विनूसीय पुवकड तवप्पत्ताव सोमह ग संपउते नमाड नं टंग जल्ल मुल्ल मुठिय वेलंबग कहकपवे कलासग आइखगलंख संख तुण इल्ल तुं व बीणीवत्तालाय रयगरणाणीय घहु सुकरणा अन्नेसु य एवमाइय सुयरुवे सुमणण्ण ए सूनतेसु समणेन सजीय वन्नं नरजियवं नगिक्रिय बण विधिर्णी घायसाव जीयेव नलुन्नियवं नतुसियवं नहासियवं नसंइत्तमई व (तथा कुक्ता) इह पाठ माहिं इस कह्या ते इतनें पदार थ देखणे नहीं पाहिलें देखेहोयतो याद करे नहीं इति

से मांहें चैत्य देवकुल एकठा कह्यातो प्रतिमाका
दरसण और वंदनाका अधिकार कहीं किसी सूत्रमें
कह्या होयतो बतलाईये इति पूर्वप्रश्नोत्तर ॥ २१ ॥
और केईक ऐसा कहतेहैं कि मंदिर प्रतिमाके कराने
से देवलोक पावे और तीर्थंकर गोत्र बांधे यह बात
तुमारे मतके थापने वालोंका कहिणाहै कि देखो प्र
श्न व्याकरणके पहिले आश्रव द्वारसे देवकुलसमे
चैत्य पृथवी आदि खोदने और देहरा आदि कराव
ए सरव आश्रवद्वारमे कह्याहै उहां नवरका पाठन
हीं कि मिथ्याती देवल आश्रवमेहै और जैन सिद्ध
नहीं ऐसा नहीं लिखा तो आश्रवं गेडणा जोगहै दे
व पूजा कुलमर्यादमेहै मोक्षमार्गतो ज्ञानदर्सन चारि
त्र तपमेहै उत्राध्येयनको २८ मे अध्येयनमें कह्याहै
॥ दोहा ॥ सीलतीरथ संजम जात्रा सुजलेस्या जल
न्हाय॥ दयाजग्य पूजा कही, जिनवर सूत्रांमांहि॥१॥
इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ३० ॥ केईएक वादी ऐसा क
हतेहैं कि प्रश्न व्याकरणमें (चेईयठे निजरठे) तो
प्रतिमाकी बियाबच करणी कहीहै तिसका उत्तर श्रव
देखीये ठाणांग और भगवती उववाई बिवहार इन
सूत्रामे तो दस प्रकारकी बैयाबच कहीहै तेहनाम
(आयरिय १ उवझाय २ थेरवे ३ तवस्सी ४ गिला
णे ५ सेहवे ६ साहमीए ७ कुल ८ गण ९ संघ १०)
इहां प्रतिमाकी बैयाबच नहीं कही और प्रश्न व्या

करणके तीसरे संवर द्वारमे १४ बोल करी कह्या है ते नाम [अचंतबाल १ दुबल २ गिलाण ३ वुड्ढ ४ खवगे ५ पवत्ते ६ आयरिय ७ उवज्झाय ८ सेहे ९ साहम्मिए १० तवसी ११ कुल १२ गण १३ संघ १४ चेइयट्ठे १ निज्जरट्ठी २] अब सूत्रमतो ऐसा कह्या है कि बाल दुरबलादिक चउदह बोल कह्या तिनके वास्ते आहार पानी साधू आणकर देवे तो यह दस प्रकार अथवा १४ प्रकारकी वेयावच्च क्या वास्ते करे कि चेईयट्ठे ते ज्यानके अर्थ १ तथा निर्जरा के अर्थे निज्जरट्ठे २ और जो तुम प्रतिमाके अर्थ करोगे तो प्रतिमाके क्या मतलबसे आहार पानी आवे जरा अंतर विचार कर अर्थ करो बुद्धिवतहो कर क्यों भूलतेहो अगर पूर्व १४ बोल प्रथम विभक्तीके होतिम (चेइय) ऐसा पाठ जो कह्या होता तो कदाचित संक्या करते तो संभवती थी लेकिन इहां तो (चेइयट्ठे) चउथी विभक्तीका अर्थ बोलताहे ते [चेइयट्ठे] ते ज्यानके वास्ते और दूसरा पाठ (निज्जरट्ठे) तो निरजराहेत वेयावच्च करणी ऐसा सूधा अर्थको मत पक्षके वास्ते क्यों बदलके फेर करते हो भाई सूधा अर्थ धारण करो ज्यु जीवको गरज सरे॥ दोहा॥ चेइय शब्द अनेकहै जिहां लगा विचार॥ ना लतिरत्नर मान्नें कहे औरसे और॥१॥ इति पूर्व प श्नोत्तर॥ ३१॥ और केई एक वादी हिस्याकारी

उपदेस ओर आज्ञा देनमें कोई दोस नही समझते तिनको विवहार सूत्रकी चूलिकामें भद्रबाहु स्वामी १४ पूर्वधारी चउथे सुपनेमें चंद्रगुप्त राजासें उन हिं स्याके उपदेस देने वालोको कुगुरु कहेहै तह सूत्र (चउथे सुमिणे अइदहास कोउहलेहि नचाणवांति) तस्सफलं तेण कुमयजणा परंपरागमेण वाहिया सब्ब द चारिया सयमे वसंजमिया आगासपडिया इव नि द्धंसणासिणो वंझपुत्ताइव दव्वलिंगधारणो जत्थ तत्थे वसुत अत्थमवगाहित्ता तवतेणिया वयतेणिया सुत्तते णिया अत्थतेणिया नूयाइवणचिस्सति कुगुरु कुदेव मनीस्सति ४) अर्थ चउथे सुपने अतिरुद्र हासको तुहल करता भूत नाचता देख्या तिसको फल भ द्रबाहुस्वामी चंद्रगुप्तराजासे कह्या तहकुमति जणाप रंपरागम सूत्रमाहि जे साधूका आचार कह्याहै तिण आचारसें बाहिर वेतालो अध्येन माहि पिण कह्याहै सुद्ध आचार चाले ते नगवंतना केमायत जाणवा बी जा नही ते नणी पोताना गंदाना चालणहार आपु णे हेदे संजमी नाम धरावे पिण विरुद्ध आचारीने जिनकी आज्ञा नही फेरकहेवें जिम आकासथी ■ जाणो गोलो पडे तिम दया रहित सूत्र विरुद्ध वाणी नाखसी कहसी पाहिलो हिंस्या करसो तो धरम होसी वांझडीने पुत्र होवेतो हिंस्यामें धर्म होवे ते कहसी द्र व्य लिंगी नेखना धरणहार यती जिहां तिहां सूत्र

अर्थ नूंणीने तपना चोरहोसी मांहिं खासी अने बा हिर तप कहसी वचनना चोर होसी वचन कहीने फिरजासी सूत्रना चोर होसी विरुद्ध पाठ कहसी अ र्थना चोर होसी सावद्य परूपणाना अर्थ करसी नू तनी परे नाचसी निगुणा देव आगे कुगुरु साधुना २७ गुण तिनमे नही देवते ३२ गुण अरिहंतना ति सकुं मानस्ये नही कुगुरु कुदेवने मानस्ये ४ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ३२ ॥ कई एक वादी इस पाचमें आरेमें ऐसा कहतेहैं कि चोथे आरेमें जितने जिन मंदिरथे वितने इस पाचमें आरेमे नही और चौथे आरेमे स ब श्रावक जिन मंदिरमे प्रतिमा पूजतेथे और साधूजी दरसण करतथे उत्तर तो अब दिखायो सूत्र आचारा गादिमे साधुवोंको चैत्यको वर्णनहैं परंतु प्रतिमाको दर्सण करणा नही कह्या प्रश्न व्याकरणमे आरंभादि वस्तुको देखकर सराहना करणी मनेहै सो पहिले प्र श्नोमे लिख आयेहै और श्रावक आश्री जिन मंदि रमे प्रतिमाकी पूजा धर्म निर्जरा वास्ते होती तो श्रीभ द्रबाहुस्वामी क्यों अविधि पंथ अर्थात् खोटापंथ चलेगा इस पांचमे आरेमे ऐसा कह्या तो जो पाहि ले चोथे आरेसे यह सनातन धर्म प्रतिमा पूजनेका होततो भद्रबाहुस्वामी ऐसा न कहते और कितनेक कहतेहै कि तुम सूत्र ३२ मानतेहो और क्यो नही मानते. सोई सूत्र ३२ तो मानतेहीहै परंतु औरभी

शास्त्र ग्रंथ मानतेहैं जो जैनमे ३२ सूत्रांसे मिलता कथन वा उपदेसरूप कथनहै सो सत्र मानीयेहै परं तु नंदी सूत्रमे जो सूत्रो ७२ नामहैं सो उनमेंसे विछे द बहोत सूत्र होगये भद्रबाहु स्वामीका कथनहै कि कालिक परमुख सूत्र विछेद जायेंगे तिस वास्ते नवे नवे ग्रंथादि शास्त्रोकी रीतपर चलेंगे व्रिवहार सूत्रकी चूलिका जिसमे भद्रबाहुस्वामीके बचनहै तेहः सूत्र यहै (सूत्रम् पंचमे सुविणे दुवाल फणो संजुत्तो कण्ह अहिदिठो तस्सफलं तेणं दुवालस वास परिमाणो दु कालो भविस्सई तत्थ कालिय सुय पमुहा सूय वोछि जिस्संति चि इयं ठपपावेइ दव्व आहारिणो मुणि भविस्स ई लोभेणमाला रोवण देउल उवहाण उजमण जिण बिंब पइठावण बिहीउ माइएहिं बहवे तव पभावा प थाइस्संति अविहि पंथे पडिस्सति तत्थ जेकई साह साहुणी सावय साविया उ विहि मग्ग चूइस्संति तेसिं बहिणं हीलणाणं निंदणाणं खिसणाणं गरिहणाणं ल जिस्संति ॥) अर्थ—पांचमे सुपने १२ फणो सहित काल सर्प दीठो भद्रवाहुस्वामी तिसका फल कहेहे बार वरस परिमाणहे चंद्रगुप्त दुकाल होसी तिहा कालि क सूत्र परमुख सूत्र विछेद जासी लेहनें तिहां अन्न सधिनें मिलणी दुर्लभ तेजणी नवा सूत्र चितारणी दुर्लभ होसी दरव लिंगी अर्थात भेखधारी विना घ णी प्रतिमानी थापना करावस्ये द्रव्य धनना लेणहा

र ग्रहेगे सचणहार ग्रहवा जतीहोस्ये लोभी लंपटी थेका माला पहिरवारूप तपत्रम कहस्ये देहरानी त प पंचमी पग्मुखनी उजूत्रणा करावस्ये प्रज्ञावना क रावस्ये जिन बिंबनी पगतिष्ठा बित्र आदिदेईतें घणा उंपेना प्रनाव पुत्र धनादि लाभरूप कहिस्ये दयादि एक सुद्ध धर्म विध पंथ छांडोने प्राणातिपाति हिंस्या पामीने हिंस्या धर्मरूप उलटे पथ पडमी तिहां जे क ईं साध साधवी पांच महा विरत धारी श्रावक विरत धारी तथा श्राविका विध मारग प्रतिमा पूजादि नि पेधरूप दयाधर्म कहसी तेहनी घणी हीलणा करस्ये जात्यादिकना दोप काढवाथी दुगंछा करसी मने क री निंदसी॥ आपस मांहिं निंदा करसी लोक समक्षे वार वार निंदणा पामसी॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तर॥२३॥ केई एक साधु द्रव्य पूजा आप कहकर प्रतिमाकी करातेहे तेह सावद्य कारजहे महा अजोगहे महा न सीतनो पांचमा नवणीयासार अध्ययन मांहे कह्याहे ते कहेछे नगवंतें गोतमनें इहां थकी अनंते कालें पु वे धरमसिरी नामें चोवीसमा तीर्थंकर मोख पहोता पछे हुंडानामें अवसर्पणी काल अनंते कालें आई तिहां सात अछेरा हुवा तिवारे असंजती पूजानें वि पें घणा लोक तत्पर हुवा मिथ्यात मोहे करी घणा लोक मूझ्या अनें घणा लिंगना लिंगडी पा पमती माठा लक्षणना घणी प्रतिमा देवली थापना

कराई परूपीलें जे कोई साध साधवी द्रव्य पुजना क
रणहार तथा परूपणहार तेहने स्यं कहिये जिन कहे
छे हे गौतम तेहने अजितेंद्री कहिये १ असंजती २
देव जोजग ३ देवना पूजारा ४ उनमारग पड्या ५
आचारथी परूया ६ कुसीलीया ७ पोताना वादाता
चालणहार ८ इम आठ नाम कही बोलाविये हिवे
तिणसमें नाम मात्र आचार्य उपाध्यायबसे तिहां
कमल प्रेना आचार्य दया धर्म परूपता आया तिवा
रे द्रव्य लिंगीयें कह्यो प्रतिमा परूपो अने चोमासा
इहां करो तिवारे आचार्य कहे अहो जितना जिन
ना देहरा ते सावद्य आरंभना ठाम ते हुं वचन मा
त्र पिण परूपुं नहीं इम कह्यो इतरे घणा पापमती
एकमती तालदेई गोंपवे तेह आचार्यनो नाम साव
द्य आचार्यनो नामदेई प्रसिद्ध कीधो तोहि पिण क
प मायो अने सावद्य परूपणा नकीधी इम करतां
तीर्थंकर दुलमेल्या एकावतारी पणो खाट्यो तिमहिव
णारा साधाने सिखावण पिण जाणवी पासंडी मिली
या पिण प्रतिमादि सावद्य धरमनी परूपणा टाली दे
यां धर्मनी परूपणा करसी इम ते फल खाटसी याने
पामसी अने बीजे फेरे सावद्य मिश्रवाणी बोल्या अ
पजसस्यं करता थकां इतरे सुन दल ऊपाई अनंत
संसारी हुवो तिम अबारका पिण पासंडी मिलियां थ
कां पिण सावद्य वाणी बोलस्ये ते अनंत संसारी

थासी इम जाणी द्रढ रहणो वली प्रश्न व्याकरण पहिले आश्रव द्वारमे कह्याछे प्रतिमा देहरा कारण पृथवीकाय हणे तिणनें मंद बुद्धिया कह्या ओर बीजा आश्रव मांहिं हिंस्यामें धरम परूपे तिणनें झूठ बोलणहार कह्या अने पांचमा परिग्रह खातें देवता नें देहरा प्रतिमा कही वली पांचमें संबर द्वारमें कह्योहे प्रतिमा देहरा साधूनें नजरे आवे तो रीझणो नही वली सेंत्रुजादि पर्वत शास्त्रमें कह्या पिण तीर्थ किहांई नही कह्यो तीर्थ हरकेसीजी ब्राह्मणानें सील रूप बताया सुखदेव सन्यासीनें सोमल ब्राह्मणनें संजमरूपणी जात्रा कही ओर न कही ओर फेर कहेछे चेईय शब्दना अर्थ छे ते अनेकार्थी बचन छे तिहां विरुद्ध अर्थ करी कहे छे पिण हलुकरमी जीव होवे तो ते तत्व साचा गुणारा धणी देवगुरु धर्म सेवे पिण पाप-करमीनो डिगायो डिगे नही ते जीव सुखी थासी ॥ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ३४ ॥ कितनेक वादी स्याद्वाद बाणीको समझते नही ते स्याद्वाद बाणी कैसीहे उत्तर जैन शास्त्र तो स्याद्वाद रूप लक्षणसेंही जानाजाताहे जिसमें स्याद्वादरूप कथन नही सोई मिथ्या सूत्रहे जिसका परिमाण अनुयोगद्वार नंदी उत्तराध्ययन भगवती सूगडांगादि सूत्रोमें जगे जगे स्याद्वादरूप वर्णनहे जैसें भगवती सूत्रे (लोयेसासयावि असासयावि दव्वठया सासया पज्जवठया अ

सासया) तथा अणुयोगद्वारे (सेकिंतं णए सत्तमूल नया पन्नताणेगमे संगहे ववहारे उदयु सुए सद्दे सम भिरूढे एवंभूए) अर्थ—नैगम नय १ नदीनी धारा प्रवाह सरिखो गमते नैगम एक अंसमात्र जे वस्तु नो गुण प्रगट होइ तेहते संपूर्ण पणें वस्तुनें कहे ते नैगम नय कहिजे ते नैगमनयका ३ भेद भूत नैगम १ भविष्यत नैगम २ वर्तमान नैगम ३ जो अतितकालके विपें जो पदार्थ हूवा अरु वांही वर्तमान किसी न्याइं कहणो सो भूत नैगम कहिये जैसें सिद्धांनणी नमोथुणं पढता आदिगिराणं आदि करता ऐसो कहणो तथा जैसें कोइं दिवालीके दिन कहे आज श्रीवीर वृद्धमान स्वामी मोक्ष गया ऐसा कहणा १ जो भविस्यत नैगम आगमी कालके जो पदार्थ होणहारहें ते वरतमान कहणो जैसें उत्राध्ययन १९ मे गृहवासि बसता (जुवरायादमीसरे) ऐसो कह्यो ते भविष्यत नैगम नय कहिये २ वरतमान नैगम कहिजे जे वस्तुकरणी मांडी किंचित् नीपजी तिसकुं संपूर्ण पणे कहणी जैसें लींपतो देखी पूछ्यो स्यूं करेछे तद कह्यो रसोइ करूंछूं ऐसो कहणो ३ इति नैगम नय १ संग्रह नयका दोय भेदहें सामान्य संग्रह१विशेप संग्रह२सामान्य सगृह किसकुं कहिए अजीव द्रव्य मांहोमांहिं अविरोधी अचेतन गुण अपेक्षाइं सामान्य गुण सर्व द्रव्यमेंहे अजीव द्रव्यमें ऐसो कहणो ते संग्रह

मान्य पणें कहिये १ विशेष संग्रह जो परिजातिका
व्यक्तुं छोड करि स्वजाति स्वद्रव्यको संग्रह करिये
ो विशेष संग्रह कहिये जैसे सर्व जीव परस्पर वि
ोध रहितछे सत्ताग्रहे ते संग्रहे ते संग्रह जेकारणे ए
कनाम लीधां सर्व गुण पर्याय परिवार सहित आवे
२ संग्रह नय कहिये जे वस्तुनो सामान्यपणें नाम
लेतां जीव अजीवनों भेद न पाडयो जिम ए वन व
णस्पतीनो छे ऐसा कहणा विशेष संग्रह जे विशेष
पणें दीठी तेहनो नाम लेइ कहिवो जिम ए आंबानो
वनछे ते माहिं अनेरा पिण वृक्षछे ते संग्रहनय २
हिवे व्यवहारनय कहेछे सामान्य व्यवहार १ विशेष
व्यवहार २ सामान्य व्यवहार बाह्य गुण देखीनें व
स्तुनो परकास करिवो (ते जीवमजीवद्व) जीवअ
जीवद्रव्यहै द्रव्यपणो सामान्य गुणहै सो सर्व द्रव्यमें
हें सो सामन्य व्यवहार १ अने विशेष व्यवहार ते
जीव द्रव्यहै सोचेतन गुणहै जिसमें सिद्ध संसारी स
र्वे द्रव्य एकहै ते विशेष व्यवहार २ इति व्यवहार
नय कह्या ३ हिवे ऋजुसूत्रनय कहेछे ऋजु कहिये स
रल सूत्र कहिये शब्दनो अर्थ ते ऋजुसूत्रनय कहिए
हिवे ऋजूसूत्रनयरो विचार कहेछे आतीत काल अ
नागत कालरी अपेक्षा न करे वर्तमान काले जे व
स्तु जेहवे गुण परिणामे वरते ते वस्तु तेहवे गुणप
रिणामे माने ए नय परिणाम ग्राही हिवे जे नविग्रह

स्ती छे पिण अंतरंग परिणाम साधुसमानछे तो ते जीव साधू कहिजे अनें जे जीव साधूने भेषेंछे पिण मन परिणाम असुभ छे तो ते जीव अबिरत रूपीज छे तेऋजूसूत्रना २ भेदछे एक सूक्षमऋजूसूत्र १ बी जो थूल ऋजुसूत्र २ तिहां सुक्ष्म ऋजुसूत्र जे केहवो जे सदा सर्वदावस्तुमें एक वर्तमान समय वर्तैछे एत ले जीव गए कालें अज्ञांनी हुंतो अनें आगले कालें कोईक अज्ञांनी पिण थासी अनें वरतमान कालेग्या नीछे तेहने कहणो ए सूक्ष्म ऋजूसूत्रछे १ अनें बाद र मोटका बाह्य परिणाम ग्रहे जिम वर्तमानकालें ध र्म आराधे तेहने धरमी कहिणो पछे धर्म कारज क र्या पछे अधर्म करस्यै ते आगामियेकालें ते भणी न माने एतले ऋजूसूत्र कह्यो ४ हिवे शब्दनय कहियेछे जे वस्तुगुणवंत अथवा निर्गुण तेहनो नाम कहि बो लाव्यो ते भाष्या वर्णणाथी शब्द कह्यो ते शब्द व्याक रणसें प्रकृति प्रत्यय द्वारें करी शब्द सिद्ध होय सो शब्द नय कहियें तिहां शब्दनो जे अर्थ ते मांहि होइते वस्तुनें मानें ते शब्दनय कहिये जैसे अरिहंत कहि बोलाव्यो ते शब्दनो अर्थ कह्यो अरि कहिए करम रूप शत्रु हंतः हण्या ते अरिहंत कहिए अनें ना मादि अरिहंत होइ ते मांहिं शब्दार्थ न होए तेहनें अरिहंत न मानें ते शब्दनय इम तीर्थ ४ करे सो ती र्थंकर इम शब्द सिद्ध होय ते शब्द ए ४ निक्षेपा ती

थंकरमे संनवेछे तीर्थंकरनो शब्दतो तीर्थंकरे ते पिण नाम थापना द्रव्य निक्षेपामें अर्थ सिद्धथाइ जिम तीर्थंकरनो नामलेई व्याख्यान करवो ते नाम निक्षेपो १ अनें तेहिज तीर्थंकरनो थापनारूप वखाण करिवो संठाण परमखनो जिम लोकनो स्वरूप वखाण करता लोक नामी अलेखीनें लोकनो स्वरूप दिखायवो तिम अरिहंतना आकार अपने सरीरका रूप नगवानके ध्यानकी तरहे थापना करीनें तीर्थंकरनो वखाण करवो २ तेइज तीर्थंकरना शरीर अवगाहणा आउखा अतिसय करीने वखाण करवो द्रव्य निक्षेपो ३ नाव निक्षेपाते ग्यान दर्सणादिकरी तीर्थंकरनो वखाण करवो ४ परं एह नामादि सर्व तीर्थंकरनामें संनवेछे इमहीज अरिहंत करमरूप सत्रु हणयाते अरिहत तेहनो वखाण नामादि ४ निक्षेपा दिकथी करवो पिण अरिहत शब्दार्थ होय जिणमें संनवेछे शब्दार्थ सुद्धथाइ ते शब्द नय पाचमो कहिये ५ हिवे समनिरूढ नय कहेछे समनिरूढ नयनें मतें जे शब्द एकमें घणी वस्तु होइ ते न माने जे कहिण वालानो जे शब्दनो अर्थ अने अनिप्राय होइ ते वस्तु शेप अवस्तु जिम केणेकह्यो अहो साधू अश्व दोडेछे एहने ग्रहो इहां शब्दनो अर्थतो अश्व घोडा अने मन वेहुं अर्थ होय पिण बोलणहारनो अनिप्राय एहवो मनकुं अश्व कह्यो ते नणी मन अश्व ते वस्तु

घोडो अश्वते अवस्तु १ तथा धर्म शद्ब कह्यो ते माहि धर्मास्ति १ श्रुतधर्म्म २ चारित्र धर्म बिवे क्यो अने समभिरूढ नयने मते बोलणहारना शद्ब अने अभिप्राय जे धर्मनो होइ तेहने धर्म कहे बीजा नें न मानें जिम सूत्रे कह्यो (जाजा वच्चइ रयणी) पिण कहणहारनो अभिप्राय दिनना पिण ते माटे दिनराति दोनुंही ग्रहवा इत्यादि कहणहारना मनजे वस्तुनें सन्मुखछे ते वस्तुनें वस्तु कहे अने शद्बनो अर्थ पिण भिन्न थाय शद्बनो आधार पणे ठहरे मननो अभिप्राय आधेयपणें ठहरे आधार बिना आधेय वस्तुनो नामलेता वचन विपरिणाम न होय इहा शब्द नय वालो कहेछे थाराकहण म्हारा कहण मांहिं अंतरछे रूपछे समभिरुढ नय वालो कहेछे शब्दनो अर्थ तो दूजी वस्तुमें मिलै तुरंग उतावलो चाले ते घोडो अनें मन पिण ते माटें आधार वस्तुनो अभिप्राय सन्मुखपणों होई ते समभिरुढ नय ६ हिवे एवं भूत नयनी युक्ति कहेछे अणुयोगद्वारे ॥ वजणअच्छ तदुभयं एवंभूत ॥ विसेसइ शब्द निर्युक्ति सहित अर्थ शब्द अनुसारे परिणामजे वर्तमान काले एवंभूतनयमानें वस्तुना मूल निजस्वभाव आत्मभावे तद्रूप वरते ते एवं भूतनय मानें जिम दृष्टांत धर्मास्तिकाय प्रमुखना द्रव्यगुण परियाय ते ग्यानना गोचरमे आवे अनें ग्यानछे ते जीवना गुणछे तेमाटें सर्व वस्तुनो

जाण पणो तेहनें जाण पणा नि वस्तु मानें १ ते एवं
भूतनय कहीजे ७ हिवे नयसात पूर्वोक्त प्रकारें कहि
छे ते दोय भेदें कहीये द्रव्यार्थिक १ पर्यायार्थिक २
ते नैगमनय१ संग्रह २ व्यवहार ३ एतीन द्रव्यार्थि
कनय अनें ४ ऋजूसूत्र १ शब्द २समभिरुढ ३ एव
भूत ४ एह ४ पर्यायार्थिक नय द्रव्यार्थिकनयते व्य
बहारनय ॥ परियायार्थिक नय ते निश्चे नय ते ३ व्य
वहारनय ४ निश्चेनय ते माहि व्यवहार नय नाम १
थापना २ द्रव्य ३ निक्षेपामे भावना कारण भूत मा
नें निश्चे नय ४ भावनेहीज वस्तु माने कारजने व
स्तुमाने इहा २ मतमें सात नयछे निश्चे १ व्यवहार
दोइनी खपराखवी एकमूं कार्य सिद्ध न थाय इहा वि
लोवणाका दृष्टांत जिम विलोवणाना नेतमो डोर दो
इछे सम दोनो हाथसे दोइ डोर ग्रहे ते मांहिं १ डोर
खेंचे १ ढीलीमूके तो कार्य सिद्ध थाय अनें २ दोनों
ढीली मुके तथा दोनो खेंचे तथा दोनो हाथथी छोडे
तो कार्य सिद्ध थाय नही तथा डोरने खेंचे अ
ने दुजी हाथथी छोडे तो कार्य सिद्ध थाइ नही इण
दृष्टाते करी दोय नय मांहि केणे ठामे निश्चे नयनी
मुख्यता कीजे अने व्यवहारनी गोणता कीजै केणे
ठामे व्यवहार नयनी मुख्यता कीजें अने निश्चे नयनी
गोणताकीजे तो सम्यक्त प्रकास थाइ अने एक न
य माने बीजी न मानें तथा २ खेंचे एकण साथे त

था दोनो ढीलीढोडे तो सम्यक्त रूप मोक्ष कारज सि द्ध न थाइ ते माटे शुद्ध सम्यक्तवंतने सर्व नय-परि माणकीजे और श्री पूज्य मनोहरजीके गछमे श्रीरतन चंदजी निज कृत्य ग्रंथ तत्वानुबोधमे कहते है

॥ दोहा ॥ बेहुं सम्यकितदलहे, समझे नव तत्वज्ञा न॥नय निखेप परमाणसुं, स्यादवाद परिमाण॥१॥और ॥दोहा॥जिन बाणी जिन स्वादनी, मतकरजो कोई हा स्य॥स्याद्वादनय सुद्ध करो, यह मेरी अरदास ॥ २॥ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ३५॥ दया और हिंस्याके कित ने कितने भेद उत्तर दयाकेतीन भेद और हिंस्या के ३ भेद प्रथम हेतु दया सो जैन ग्रंथानुसार सब धर्म क्रिया यतनसे करणी १ दूसरी स्वरूप दया जो प्रत्यक्ष जीवको देखकर न मारणा २ तीसरी अनु बंधदया सो देखनमे चाहे हिंस्या हो परंतु फल द याका जिस करणीसे हो येही अनुबंध दयाहे ३ हेतु हिंस्याजो अयतनसे काम करणा बिन उपियोग १ स्वरूप हिंस्या सुभासुभ हरेक कारय करता हिंस्या थाय वा प्रत्यक्ष जीवको मारदेणा ते स्वरूप हिंस्या २ अनुबंध हिंस्या निन्हव परमुखकी क्रियादेखनेमें दयारूपहै परंतु परभवमे फल संसार रुलने रूपहै तिसको अनुबंध हिंस्याकहतेहै ॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ३६ ॥ उत्सर्ग अपवाद मार्ग आज्ञाका मूलहे इन का भेद बहोत साधुसाधवी नही समझते उत्तर जैन

शास्त्रोमें उत्सर्गापवाद दोनोही साधारण विधिवाद कथन करेहें सो साधारण विधिबाद उसको कहतेहै जिस संजमकी रक्षा निमित्त उत्सर्ग मारगको अंगी कार कियाथा उसी संजमकी रक्षा निमित्त अपवाद मारग अंगीकार कीया इसको साधारण विधिवाद कहतेहै जैसें तप करनाभी संजमके लीयेहै ओर आ हार करनाभी संजमके लीयेहै ओर जैसे वस्त्रादिकका त्यागनाभी संजमके लीयेहै ओर वस्त्रादिकका रखनाभी संजमके लीयेहें ओर केइ दमत इंद्रीमुनी एक क्षेत्र मे सो वरस बेठा रहेतो दोस नही यहभी संजमके लीयेहै ओर देसानुदेस विहार करनाभी संजमके ली येहे ॥ क्रोधका त्यागनाभी संजमके लीयेहें ओर कि सीचेलेको सिक्षा देनेको क्रोध करना पडे यहभी सं जमके लीयेहें ओर प्रथम जो महाव्रतमें किसी जीव को नहणुगा मनबचनकाया करकें यह व्रतभी संज मके लीयेहे ओर जो देशानुदेस विहार करना पडि लेहणा करणी नदी उत्तरनी वहती साधीवीको पकडनी वर्षामे दिशामात्रा जाना बेल वृक्षके सहारेसे गिरा हुया साधु खाडमेसे बाहिर निकलना इत्यादि बातो में प्रत्यक्ष छकायकी हिस्या होतीहै यह अपवाद है सोभी संजमके लीयेहै झूठका न बोलनाभी संजम के लीयेहें ओर मृग पृछादि कारने झूठ बोलनाभी संजमके लीयेहे ओर चोरीका त्यागभी संजमके ली

येहैं ओर संजम पालता अनंत जीवमारे जातेहैं वो जीव अदित्तहैं सोभी संजमके लीयेहै ओर परिग्रह तन्द मात्र लोम मात्रभी नही रखूंगा यह पांचमें महा व्रतमे परतिज्ञा करीथी सोभी संजमके लीयेहैं ओर वस्त्र पात्र पोथी आदिजो परगट रखताहै यहभी संजमके लीयेहै ऐसे बहुत बातोंहै सो निर्मल बुद्धी शास्त्रानु सार होनेसे समझी जातीहै ओर इसी तरहके कथनको जैन मतमे स्याद्वाद उत्सर्गापवाद रूप विधिवाद कथन कराहै॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तर॥३७॥ ओर कलप सूत्रके मूल पाठमें खुलासा पाठ राजा सिद्धार्थके न्हाणका ओर त्रिसलाराणीके महिलादिकका ओर जनम महोच्छवका बहुत विशेस वर्णनहै परंत जिन प्रतिमाके पूजाका बरणन नही कह्या ते किस तरें ॥ इति प्रश्नोत्तर ॥ ३८ ॥ ओर इस पाचवें ओरेके साधू जैसी करणी परूपेहै तैसी करणी साधन नही होती कषायादि प्रकृति बलवानहै सर्वज्ञ बिना मनका भ्रम दूर होता नही तिस वास्तें आज्ञाके आराधिक जीव थोडेहै वहोतसे जैनमती अपनी रुचिवे, परिमाण धर्म तथा शास्त्रार्थ वा नवे नवे ग्रथ वनातेहैं ओर श्रीजिन आज्ञामें चलना वहोत कठिनहै ओर जो माया करिके जिन आज्ञाके परिमाण चलना कहतेहैं वे लोग -बहोल संसारी होगे ओर राग द्वेषके बस होकर दगाबाजीसे जो साध साधवी श्रावके

श्राविका जिन बचन अन्यथाकर स्वकलपनाके म
तको चलावेंगे वे जमालीवत् ससार भ्रमण करेंगे
ओर जो लोग अपने मत करिके मुक्तिके होणेका ला
भ बतातेहै परंत इतना नही जानते जबतक परस्व
रूप तथा ममत कषायादिहैं तबतक मुक्ति नही चे
तन निज स्वभावमें रमण करेगा सोही मुक्तिहै कात्रि
षण ममत क्रोधादिक त्यागना पाचइंद्री जीतना मन
बस करना आत्मवत् सर्व जीवकों जानना हिंस्याका
त्यागना सम प्रणामीहोना इत्यादि अनेक कार्यहै ति
नके करणेसें मुक्ति प्राप्ति होतीहै परंत हिंस्यादि अ
ठारा पापोसें मुक्ति नही सम्यक्त सुध श्रद्धाब्रतादिय
हैं धर्म लक्षण करम निर्जरा ओर मुक्ति होनेकेहैं ओ
र जबयह चेतन राग द्वेषादि दोषोंको दूरकर ज्ञान द
र्सण चारित्र तप एह ४ कार्ण मोक्ष मारगके धारण
करे ज्ञानसे ५ ज्ञानादी धर्म जाणे दर्सणसें सुदेव सु
गुर सुधर्म भले प्रकारसें श्रद्धा सुद्धकरे चारित्रसें आ
व्रते कर्म रोके ब्रत तथा महा व्रतां करी तप १२ प्र
कारका साधनकरी पूर्व करम निर्ज्जरे ॥ तब केवल
ज्ञान केवल दर्सन सहित मुक्ति पदमें प्राप्तिहोय अ
र्थात् मोक्ष पदहोय ॥ इतिज्ञेयम् ॥ इति शिक्षा प्र
श्नोत्तर ॥ ३९ ॥ अब कितनेक साधू ग्यारे अगादि
सूत्रांको चतुर्थ आरेके कहतेहैं ते प्रमाण निश्चे नही
क्योंकि नंदी सूत्रकी गाथा (जेसिइमो अनुजगो प

यरइय जोवि अद्धंनरहंमि वहुनय रनिगायजसे ते वं देस्कं दिलायरिय ३६) अर्थः—उसस्कंदिलाचार्यको वदूंहूं जे श्रीजिनराजके अनुयोग सूत्रार्थ आधे भरतक्षेत्रमें प्रवृत हो रहाहै और आगे प्रवर्तेगा ऐसाकह्याहै सो स्कंधला आचार्य कृत मालुम होतेहैं परंत पहिले ११ अंगोके मूजवतो अबके ११ अंग वहोत कमहै जिसका परिमाण समवायांग तथा नंदीसूत्रके मूल पाठमें द्वादशांगका परिमाण कीयाहे प्रथम अंग १८००० पद प्रमाण कह्या और दूसरे अंगके ३६००० पद कहे इसीतरे आगें दुगुणे पदहै और एकपद संख्याते अक्षरोकाहै जिसमें प्रथम ५४ अंक लिखेजावें बादउस्के १४० विंदीयादी जावे उसको उत्कृष्ट संख्यात गणित प्रहेलिका नामसें अनुयोगद्वार सूत्रमें लिखाहै अत्र आचारांग सूत्रके१८००० पदथे जिसमें २५०० श्लोक प्रमाणहै ॥ और सुयगडांगके २१०० श्लोक परमाणहे ठाणागके ३७७० श्लोक प्रमाणहै समवयागका ग्रथ प्रमाण १६६७ भगवतीका ग्रंथ १५७७२ प्रमाण ग्याता ग्रंथ प्रमाण ५५०० उपाशकदशा ग्रंथ प्रमाण ८१२ अंतगढ ग्रंथ प्रमाण ९०० अनुत्रोव वाई ग्रंथ १९२ प्रश्न व्याकरण ग्रंथ १२५० विपाक सूत्र ग्रंथ १२१६ सर्व जोरु शलोक ३५६७९ संख्याहैं इस वास्ते मालुमहोताहैं कि पहले प्रमाणे सूत्र नहीहे अब उन

का थोडासा अंस मात्र उनके अनुसरे आचार्य कृत हे परंत और हरेक शास्त्रोंसें पूराणे सूत्रहें और अव ल दरजेमेंहे ॥ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ४० ॥ कित्तिय वंदिय महिया शब्द विषे सचित फूल द्रव्य पूजाकी अनुमोदना साधुकरे ऐसा कहे तेहनो उत्तर कितिये कहता किर्ततठे वदिये कहता वांदवायोगठे महियाक हतां इंद्रादि देवोके पूजनीकठे जनम समयादिमें तथा दीक्षा केवल ज्ञानमेंतो सचितके संघट्टेके त्यागीहें त्रि विधि २ तीनकर्ण तीनयोगसें तथा फूल वारिस समो सर्णमें होयहे सोई अचित फूलांकी वारिस पहिले प्र श्नोमें लिख आयेहें तो इहा ध्यांनमें उनकी भाव पू जा तथा उत्कृष्टा पुन प्रकृतिकी अनुमोदना यानें स राहना करनी कहीहे इतिज्ञेयम् ॥ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ४१ ॥ कितनेक साधसाधवी ऐसा कहतेहें कि सा ध साधवी रात्रीको वाहिर न निकले परंतु वृहत्कल्प सूत्र आज्ञा सिझायवा थंडिल अर्थात् दिशा फिरने को देताहे ते पाठ (नोकप्पई निग्गंथस्स ए गाणी यस्स राउवा वियालेवा वहिया विहार भूमिवा निख मित्तए पविसित्तएवा ४९) अर्थ एकला साधूनें न कलपे सिझायवा वाडभूमी जाना ॥ पुनः पाठ (कप्प ईसे अप्पावियस्स अप्पतातियस्सवा राउवा वियाले वा वहिया वियार भूमिवा निख मित्तएवा पविसित्तए वा ५०) अर्थः—दो तीन साधू रात्रको उपाश्रयथी वा

हिर सिझायवा दिशाफिरनेको जाना आना कल्पे इ त्यर्थ ॥ आगे सूत्र ५१ वा ५२ केमें साध्वीका साधू की तरह पाठहै सोई समझने जोगहैं इतीज्ञेयम् ॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ४२ ॥ ३२ सूत्रामें कालीक सूत्र कितने और कालीक किमतरैंहै उत्र कालीक सूत्र १९ पहिले और पिछले पहिर वाचे पढे जिसमें ११ अंग सूत्र ३ उपांग जंबद्दीवपन्नति १२ चंदपन्नती १३ सूर्य पन्नती १४ मूलसूत्र उत्राध्ययन १५ च्यार छेद सूत्र सर्व १९ उतकालीक सूत्र १२ जे मध्यान १ महूर्त आधीरात १ महूर्त प्रभात १ महूर्त अर्द्धघडी दिन चढांताई संझाका १ मुहूर्त अर्द्धघडी दिनसें ए ४ वक्त टालीनें उतकालिक सूत्र पढे उपांग ९ मूलसूत्र ३ अकालीक सूत्र १ आवस्सग संझ्यासमे करे वा प्रभात समे करे तीन वर्षके साधुको आचारांग पढणा ४ वर्ष वाले साधूको सूयगडांग ५ वर्ष वाले साधूको दशा श्रुतस्कंध व्यवहार ८ वर्षकेको ठाणांग समवायाग १० वर्षकेको भगवती १९ वर्षकेको दृष्टीवाद २० वर्सके दिक्षात साधूको सर्व सूत्र पढणे ॥ इतिज्ञेय इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ४३ ॥

॥ अथ सम्यक्त सुद्ध कारण प्रमाण मानीये ते प्रमाणके २ भेद एक प्रत्यक्ष १ बीजो परोक्ष २ तिहां प्रत्यक्ष प्रमाण कहेछे जे जीवनें आपणे उपियोगसें जे द्रबनें जाणे ते प्रत्यक्ष प्रमाण कहीजे जिम

एह सूर्य ऊग्या ए प्रत्यक्ष प्रमाण १ तिहां केवली छही द्रव्य प्रत्यक्ष जाणे हास्तोपर आमलवत् ते वार ए केवल प्रतक्ष ज्ञान छे सर्व छहद्रवना दरव खेत्र का लभाव प्रगट जानें देखे ते परतख प्रमाण १ हिवे परोक्ष प्रमाण कहेछे परोक्ष प्रमाणना ३ भेद अनु मान १ आगम २ उपमा ३ हिवे ३ ना अर्थ कहेछे अनुमान प्रमाणथी वस्तु उलखे जिम बादलमा सूर्य उग्या अनुमानसें जाणे तथा अंकूरा देखीजाणे इण ठामे मेह वर्स्याहै तथा धूवादेखी आगजाणे इत्यादि अनुमान प्रमाण १ आगम प्रमाण कहता शास्त्रना बचनथी जे जाणें जिम स्वर्गनरकादिक थया निगोदा दिना जीव अनंता सूक्षम स्थावरना भेद जाणे ते आ गम प्रमाण २ उपमा प्रमाण कहता द्दिष्टांत देखावी ने वस्तु उलखावे ते उपमा प्रमाण जिन पल्योपम सागरोपम इत्यादि उपम प्रमाण ३ तथा परतक्ष प्रमाणना २ भेद एकतो इंद्री प्रतक्ष प्रमाण १ नो इंद्री प्रमाण २ इंद्री परमाणके ५ भेद श्रुत इंद्री १ चखुइंद्री २ घ्राण इंद्री ३ रस इंद्री ४ फरस इंद्री ५ नो इंद्री परमाणका २ भेद एकदेसथकी बीजो सर वथकी देसपरमाणना २ भेद एकतो देसथकी अवधि ज्ञान २ देसथकी मन परजव ज्ञान॥सर्वथकी परमाण ना २ भेद एकतो केवल ज्ञान १ दूजोकेवल दरसन २ ॥ १ ॥ दूजो अनमान प्रमाणका ५ भेद माताको

पुत्र स्त्री को भरतार बालपणो परदेसे गयो घणा का-
लमें भनी २ पाछो आयो जिसकुं पांच बोलकरी उल
खीये तिल १ मसे २ बातें ३ वरण ४ संठाण ५ इ
णां करी उलखीये ॥ २ ॥ तीजो आगम प्रमाण तेह
ना ३ भेद पूरव भाषा १ सहश्र भापा २ दिठी सा
धरमी भाषा ३ पूरव भापाका ५ भेद कार्ण १ कार्य
२ गुणा ३ अवींव ४ आसरतन ५ कारणका २ भे
द खिजुरको कारण बीजणो बीजणांका कारण खिजूर
नही १ ताणाको कारण कपडो अनें कपडाको कार
ण ताणो नहीं २ माटीको कारण घडो अनें घडोका
कार्ण माटी नही ॥ १ ॥ कार्जका ४ भेद हाथीनें तो
गुलगुलाट करिजाणिये १ घोडानेंतो हें कारसुं जाणिये
२ रथने तो घणघणाटसूं जाणिये ३ मोरनें तो कूका
ट शब्दसुं जाणिये ४ ॥ २ ॥ गुणका ५ भेद सोनामें
तो कसोटीनो गुण १ फलमें तो सुगंधको गुण २ मधु
में स्वादको गुण ३ लूणमें रसको गुण ४ कपरामें फ
रसको गुण ५ ॥ ३ ॥ अवीवका कीया १७ भेद म
हीपनेतो सींग करकें जाणिये १ घोडानें खुर करकें
जाणिये २ हाथीने तो दांत करिकें जाणीये ३ मोरनेंतो
पांख करिके जाणीये ४ कुरकटनें तो सिखा करिकें
जांणीये ५ गजाइने तो वहुपगां करिके जाणीये ६
सूवरने तो दाढा करिके जाणीये ७ मनुपने तो दोय
पगां करिके जाणीये ८ तिर्यंचने तो चउपगां करिके

णीये ९ वाघने तो नख करिके जाणीये १० सुन
े तो शस्त्र करिके जाणीये ११ महिलाने तो वीदी
करिके जाणीये १२ पन्डितने तो काव्य करिके जा
ये १३ वृषभने तो स्कंध करिके जाणीये १४ के
री सिंहने तो केस करिके जाणीये १५ चमरी गा
ने तो चवर करिके जाणीये १६ सीकीया धानने
सीत करिके जाणीये १७ ॥ ४ ॥ आसरतनका५
द धूवांको आश्रतन अगनी १ बुगलाको आश्र
न पांणी २ आकासको आसरतनमेह ३ कुलको
ासरतन पुत्र ४ आचारको आश्रतन सीलवंती वा
नायां इति पूरव नापा संपूर्ण॥ अथ सहश्र नाषा
हिछे—एक मारवाडीके धोरीकुं देखोके सर्वधोरीकुं दे
ो एक समदृष्टीकुंदेखो सर्व समदृष्टीकुं देखो स्या
की जाणीये पोतानी मतबुद्धि कल्पना करिके जा
ीये जिसका कीया नेद २ एक तो लौकीक आग
प्रमाण बीजो लोकोत्तर आगम प्रमाण ॥ लौकीक
प्रागम किणने कहिजे गीता नागवत कुरान पुरान
योतिष शास्त्र वेदिक मिमांसा उपेय अनें १८ पुरा
को जाणपणो जिननें लौकीक आगम प्रमाण कहि
ने १ लोकोत्तर आगम प्रमाण किणने कहिजे श्रीअ
रेहंतें सिद्ध नगवंत विमल निरमला केवल ज्ञान के
वलदरसन करी लोक अलोकका नाव जाणे देखे११
अंग १२ उपंग १४ पूर्वनों जाणकार होवे निरवद्य

वचन प्रकासे इतरांको जाणकार होवे जिसकुं लोको
त्तर आगम प्रमाण कहिये ॥ इति सहश्र न्नापा संपू
र्ण ॥ दीठी साधरमी न्नापाका २ न्नेद एक शुन्नजाणें
बीजो असुन्नजाणें शुन्नजाणेतो तीन कालकी बात
जाणें गयेकालकी किमजाणें जिम कोई पुरुष परदेस
में जावतो थको कादा सहित धरती देखी बागवाडी
हरीया देख्या कूवा निवाण न्नरया देख्या जदजाणयो
गयेकालें इहां वर्षा घणीहुइ दीसेछे बरतमान काल
की बात जाणे तो कोई जाणे जिम कोई साधमहा पु
रुष परदेसथी विहार करता २ आया खुध्या बेदना
लागी गोचरी वास्तें ऊठ्या पिण गाम छोटा श्रावको
का घरथोडा परंत जिहां देखे तिहां उलटन्नाव देख्या
अर्थात् चढते न्नावदेख्या बम्हादातारना न्नावदेख्या
जदि जाण्या वर्तमान काले इणगामको सुन्न होतो
दीसेछे आवते कालकी जाणे तो कांइ जाणे पर्वत प
हडा सुहामणालागे घणा अगर वगड वायरा वाजे
नही घणातारात्त नही घणामोर कुकाट करे नही घ
णी वीजली चमके नही घणी धरती धूजे नही गाम
वाहिर जाके देखेतो मननें गमतो २ लागे जदि जा
णियोके आवते काले काले काई सुन्नचैन होता दीसेछे
असुन्न जाणे तो काई २ जाणे तीन कालकी बातजा
णें इण दृष्टाते जिम तीन कालकी बात सुन्नजाणी
जिमं तीन कालकी बाता उलटी ऐसे समझणी ४ ओ

पम प्रमाण कहेछे अछती रकमनें छती उपमा १ छ ती रकमने छती उपमा २ छती रकमने अछती उप मा ४ ॥ १ ॥ अछती रकमने छती उपमा किणनें क हीजे द्वारका केसी जाणे देवलोक सरीखी १ गऊखी र केसोजाणे समुद्र २ आगीयो केसोजाणे सूर्ज जि सो ३ कमोद कैसी जाणे चंद्रमा सरीखी ४॥१ ॥हिवे छती रकमनें छती उपमा कहेछे एक सिद्ध भगवानमें पावे जिसोइगुण जिसोई अरथ जिसोई परमार्थ एक सिद्ध भगवानमे पावे २ हिवे छती रकमनें छती उपमा किणनें कहिजे॥दुहा॥पातझरंता इम कहे, सुण तरवर व नराय॥अवके बिछड्या कवमिले, दूर पडेंगेजाय ॥१॥तर वर इम उत्तर दीयो, सुणो पत्र इक वात॥इणघर आ हीं रीतहे, इक आवत इक जात॥२॥पत्र झरंतादेखके, हसजि कुंपालियां॥हमबीती तुमबीतसे, धीगे रहे बापडी यां॥३॥कब तरवर उछ्बोलीया, कबकूपल दीयोजबाब ॥ वीर बखाणी उपमा, समझे लोग सिताब॥४॥अछती रक मने अछती उपमा किमलागी घोडाके सींग कैसाके गधाकेसा गधाके सींग जेसा जैसा दोनोकु सींग न हीं या अछतीरकमने अछती उपमा कही ४ इतीओय सू ॥ अब प्रश्नोत्तर संग्रह ग्रंथ करता लिखेहे कि जो पूर्व प्रश्न अनुसारसे जो मेंनें ज्ञानावरणी करमके उ दय सूत्रसे विरुद्ध वारता लिखदी होय सूत्र मूल त था अर्थ तथा जिनाज्ञा बाहिर अयुक्त सूत्र कह्या हो

य ते च्यार तीर्थोंकी साखसें मुझकुं वारंवार तस्स मिछामि दुक्कडं ॥

॥ दोहा ॥ अधिका ओछाजो लिख्या, तुछबुद्धी अनुसार ॥ ते सब माफ करो तुमें, लीजो चतुर सुधार ॥ १ ॥ भाषा देहली देसकी, सज्जन जिन हितकाज ॥ च्यारो तीरथ साखसें, एम कहे ऋखराज॥ २॥ ॥ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ४४ ॥ इहांजो पहलें प्रश्न पीछे उत्तर कह्या तिस वास्तें इति पूर्व प्रश्नोत्तर पूरण होनेमे लिख्येंहै ॥ ३ ॥

॥ श्रीगौतमायनमः ॥ अथ भीषममती तथा तिनकुं तेरापंथीभी कहतेहें ते संवत १८१८ में रघुनाथजी २२ टोले मांहिके साधूजी महाराजहुये तिनका चेला भीषमनामकर तिसनें तेरापंथ अर्थात् १३ साधुवांको लेकर जुदा हुवा और एकांत दांन दयाका उथापक हुवा तिनके प्रश्नोका जुबाब अर्थात् उत्तर पूर्व सूत्रांके प्रमाणसें साधुवांने उत्तर लिखेहै तथा दीयेहै तिनके अनुसार तेरा पंथीयोसें चर्चा वास्तें श्रद्धा सुद्ध होनेके ते इहां प्रश्न उत्तर लिख्यते ॥

॥ श्रीॐनमः सिद्धं ॥ केइ एक क्रिया वादीकहेछे जे सम्यक्त विना पिण निरवद्य क्रियाकरे ते धर्म छे तेहनो उत्तर आचारांग प्रथम श्रुतखंधे अध्येन ४ उद्देसे ४ (गढिएबाले अवोछिन्न वंधणे अणभिकंत संजोए नमंसि अविजाणउ आणाए लंभो नत्थी)

ए पाठमे कह्योछे जे बोलमिथ्याती आत्महित मोक्ष नो उपाय अजाण तेहने तीर्थंकरनी आज्ञानो लाभ नही वली उतराध्येन अधने २८गाथा २८मी (णत्थी चरित्तं समत्त विहुणं दंसणे उनइएवं समत्तचारित्ताइं जुगवंपुव्वंच सम्मत्त १ नादं सणिस्सनाणं नाणे णवि णा न होंति चरणगुणा अगुणस्स नत्थी मोखो न त्थी अमोखस्स निव्वाणं २) इहां गाथामा कह्यो जे समकित विनाज्ञान नथी ग्यानविना चारित्रना गुण नही चारित्रना गुण विनामोक्ष नही मोक्षविना सि द्धना सुख नही वली उतराध्येयन अधने २८गाथा२ (नाणंच दंसणं चेव चरितंच तवोतहा ए समग्गोती पन्नत्तो जिणेहिंवरदं सिहिं १) इहां ज्ञान दरसन चा रित्र तप ए ४ अनुक्रमें कह्याछे पिण आघापाछा हो यनही जिहां मिथ्यात तिहां श्रुत धर्म चारित्रादिक लवलेस मात्र नही प्रथम तो वीरजिनेंद्रनी आज्ञा मांहि एकांति मुक्ति हेतुछे एकांत चिरलछे मुक्तिनो कारणछे तेमा बीजो पक्ष कांई नथी अनें प्रभूनी आ ज्ञा बाहिर सुनकरणी कांई एकछे तिसमें पुण्य फल उपारजे ऐसा सूत्रमां घणे ठामें कह्योहै ४५ तिसमां ए अज्ञानी कितनेक कहेछे आज्ञा बाहिर पापछे तेह उत्तर हिवे जोवो सूत्रमां गोसालाजी जमाली अन्य तीरथी उववाई सूत्रमां अनेक भेदना कह्या माता पि ताना वचनना पालक मात पिताका सुबनीत इत्यादि

क वली हस्ती तापस दिसाचर्य गोचर्जे वाला मृग लुब्धक, ए सर्व अज्ञानी अज्ञान कष्टना करण वाला वृत्ति भगवतीमें सिवराजरिखी तावली पूर्ण अकाम खुध्या तृषा सी ठाडना खमणवाला इत्यादिक देवलो कें जायछे ते जीव जिन आज्ञामें नही जिन आज्ञानु लान आराधिक पणुं नही परलोगस्स अणाराहगा कह्या उववाईमें तथा सूयगडांग १ अध्येन ८ में गाथा (जेयाबुद्धा महाभागा बीरासमत्त दंसीणो असुद्ध तेसिपरिकंतं सफलं हवई सवसो १) इहा कह्यो जे मिथ्यात्वी क्रियाकरे, ते सर्व करम करने सफल होवे जो धर्म होयतो असुद्धपाक्रमका कहे वली मिथ्यात्वीनी क्रियाने समदृष्टी बखाणें नही उत्राध्येन २८ में (परमत्थ संथवोवा सुदिठ परमत्थसेवणावावि वावन्नकुदंसणवज्जणाए एसमत्त सद्दहणा १) तो देखो अनें इहां धर्मनी सेवा वरजिक अधरमनी सेवा वरजी तथा मिथ्यातीइं नव कोटि सहित पचखाणलीधो ते क्रियावादीनें पूछीयें स्यूं ज्ञान गुणनीपनो दरसन गुणनीपनो ते तो नथी अनें ज्ञानबिना दरसन बिना चारित्रनों गुण नथी तो धर्म किसो थयो वलि भगवती शतक ७ जीव अजीवना जाणपणा बिना पचखाण दुपचखाण कह्या पिण सुपचखाणतो कह्या नहीं वलि सुयगडांग अध्ययन दूसरे गाथा (जइंबिणगिणे किसेचरे जयं थियंतं जियमास वंतसो ॥ जइं हिमा

बाहिरीछे आगंताग (अणंतसो) समकित रूप लाभ न कह्यो बालमरणना करणवाला पंचाग्निना साधनवाला जल स्नानना करणवाला एह सर्व मिथ्यात दृष्टी कह्या अने देवलोक जाता कह्या परलोगस्स अणाराहगा कह्या आज्ञा रूपलाभ न कह्यो४६ तव निन्हवमती अर्थात् तेरा पंथी कहे छे जेए अन्य तीरथी पुण्य फल पामेछे ते करणीतो आज्ञा मांहि लीछे तेहनु उत्तर हस्थी तापस हाथीना मासनो आहार करेछे मृगतापस मृगनुं आहार करेछे बालमरण वाला बालमरण करेछे मात पितानी सेवाना करण वाला सेवा करेछे ए करणी जिन आज्ञा माहिं नही वली अविवेकी कहेछे करणीनु करणवाला आज्ञा बाहिरछे अनें करणी आज्ञामाहिलीछे तेहनें इम कहिये अहो तत्वना अजेताउ गुणनें गुणी जुदा नही अनुयोगद्वारमें कह्या दंडेणं दंडी छत्तेणं छत्ती पंडेण पंडी गुणानें गुणी जुदा नही चंद्रमानें किरण सूर्जनें आताप दानीनेंदान ज्ञानीनें ज्ञान समकितनें समकिती चारित्रनें चारित्रियो ध्यानीने ध्यानी चोरनें चोरी पापीनें पापी पुण्यनें पुण्यवंत तिम मिथ्यात्वनें मिथ्यात्वी जुदानही करता अनें करममां भेद गवेष्यो पिण तुमें सिद्धांत मूल नयना प्रवाहने विषे समझता नहीं जे वस्तु आश्रया माटे जे नाम कह्यो ते नाम थकी ते पुरुष जुदो न कहिये जिम मिथ्यात्विनें मि

थ्यात्विनी करणी जुदी नहीं तुम अविवेक पणें जुदी क्यों कहोगे समकितनी करणी समकित खातेंछे मिथ्यातनी करणी मिथ्यात खातमेंहै ए करणी मिथ्यात संबंधीछे तिसमें जितना मन बचन काकानों जोग शुभ परवरते तेतलो पुण्यनो कारणछे जेतलो जोग दया दांन सत्य सील कुलाचार संतोष प्रमुख मा बरते ते करणी थकी पुण्य उपजे उववाई सूत्रमध्ये जेतला अन्य दरसनी तापसनिन्हव प्रमुख कह्या ते सर्व देवलोक गामी कह्या ते जोगनी करणी थकी परंत इम न कह्या जे यह पुरसतो अज्ञा बाहिरछे अने एहनी करणी आज्ञा माहिलीछे १ वली मिथ्यात्वि प्रते इम कहिवो जे जो एहनी मिथ्यातनी करणी आज्ञा माहिलो अंस मानोहो तो एहनो ग्यान ७२ कला जावत ४ वेद पर्यंत अनेरा पिण घणा लौकीक सास्त्र ए ग्यान सूत्रना अंस गण्या जोईये वली एहनी मिथ्यात दृष्टीछे ते पिण समदृष्टीनो अंस गिण्यो जोई ए एहनु बालवीर्यछे ते पिण अनंतो आत्मीक पंडित बीर्यनुं अंसगिण्यो जोईये ए लेखेतो मिथ्यात मारग ते पिण मुक्त मारग पोहचवानो देसथकी मारग गिण्यो जोईये अहो दिढ कदा ग्रहियो एह बात किम मिले जे मिथ्यातमां शुद्धपणोछे ते अज्ञा माहिलोछे ४३ वली कहे जे मिथ्यातसे जीव समकितमे आवे तिवारे मिथ्यातीनो मिथ्यात मिटेछे पण कांइ

साची घात होवे तथा तपसंजमतो तेहिजठे ते उत्तर
हे निरविबेकीयो अजे जीव मिथ्यात मूकी समकित
मा आव्यो तिवारे समकितनो आरोप थयो समकि
तना गुण तथा ग्यान(सादिय सपजवसिय) कह्यो
ने (सादिय अपज्जवसिव) कह्यो तिणे मुलगा आ
त्मना गुणहता ते गिणया पन्नवणा पद १८ मे तथा
वले भगवती आदिघणे सूत्रें मिथ्यात्वीनें (एगंत
बाले एगंत पंडिए परिहय पावकम्मे) कह्या ते कि
म जे शुद्धतानो अंस होवेतो (एगंत अपंडिए) न
कहें चोथे ठाणें जघन थकी ज्ञान दरसन गुण परग
ट्या॥ ते माटे वीतरागें आज्ञाना आराधिक कह्या उ
तराध्येन २८ में [रागदोसो मोहो अणाणं जस्स
अवगयं होइ आणाएरोयंतो सखलु आणारुई नाम
१] इहांतो इम कह्यो जेहनें आज्ञानी रुचि होइ ते
हनें अज्ञान दूरो हुवो एणें लेखे समकतीनें आज्ञानी
रुचि होइ मिथ्यातीनें न होइ वली आचारांगें १ प
हिले आध्ययन ५ उदेसें ६ [आणाणाएगे सो वठाणा
आणाए एगे निरुवठाणा एव ते माहोउ] इहा क
ह्यो जे आज्ञा ते समकित ते बिना उद्यम ते क्रिया
अनें आज्ञामें आलसमत तथा ज्यो इसे कहिवे मि
थ्यात्वीना शुभ जोगनी क्रीयानी अनुमोदना पिण
करवी नही तो बखाणवी किहांथकी ४८ केई एक वि
कल चेतनावत तलावनो दृष्टांत देवेछे जिम एक त

लावनों पाणी वाणीयानें घरे आण्यो ततो शुद्ध अनें चंडालनें घरे आण्यो ते अशुद्धछे पिण पाणी तो उत्तम छे पीधा तृपा जायके नही जिम अज्ञानीनी करणी जिन मतरूप तलाव माहलीछे पुण्य सुख सीतल न्हाव्या येनें दुःख रूप तृपा भांगे तेहनो उत्तर हे अज्ञानो इहांतो तीन ठाम बतायाछे नीचठाम तलाव १ मध्यम तलाव २ उत्तम तलाव ३ जिम पहिला तलावमें भीष्टारूप अशुद्ध पाणी पीवा जोग्य नहीं पीवेतो निंद्या पामे तथा मर्ण पामे तिम अनार्ज पुरुषानी करणी धर्म अर्थे जीवघातकरें ते करणांसुं नरक पहुंचे १ मध्यम तलाव समान ३६३ पाखंडयांरा धरम तथा पूर्वे कह्या ते तापस वली अकाम निरजरा करणवाला देवगामी ते सर्व दूजा तलाव समान २ उत्तम तलाव समान सम दृष्टीनी करणी निरवद्य ए करणी आज्ञा माहिलीछे ३ ॥४१॥ तथा वली तुम कहोछो जे मिथ्या दृष्टीनें अकाम निरजरा सकामनिर्ज्जरा दोनो होयछे अने २ निरजरा आज्ञा मांहिं छे वली अकाम निर्जरासूं संसार परत करे तेहनो उत्तर मिथ्या दृष्टीनें सकाम निर्ज्जरा तो होय नही अकाम निर्जरा होयछे अनें समदिष्टीनें सकाम अकाम बेउं होयछे ते किम भगोती सतग १ उदेसे, (अकामत एहा अकाम खुहा) अकाम कहतां निर्जरानो अण अभिलाखीछनो करे तो मिथ्यात्वीनो निर्जरा

ऊनवे नही अकामहीजछे अनें समदृष्टी मन सहि
त निर्जरा करे तो सकाम विनामन करेतो अकाम
तो अकाम तो अकाम निर्जरातो आज्ञा वाहिरछे अ
नें संसारनो प्रत करे निरवद्य करणी करे तेहना प्र
भावथी पिण अज्ञानो लाभ तो नथी वले भगवती
शतग ८ ऊदेसे ८ चार पुरप कह्या पहिलो पुरप
सीलवंत पिण ग्यानवंत नही तेहने देसथकी आरा
धिक कह्यो ते करणीको आराधिक कह्योछे पिण इम
तो न कह्यो (मग्गं आणाए देसाराहए) ते भणी
ऊववाई सूत्रमा (परलोगस्स आराहगा) कह्याछे ते
भणी आराधिक तो घणी जातिना कह्याछे कुलाचा
रना आराधिक इहलोक ते स्वजनादिकना आराधि
क आराधेते आराधिक जाणवा पिण आज्ञाना आ
राधिकतो समदृष्टीहीज कह्याछे ॥ तथा मिथ्यात्वी जु
दा अनें मिथ्यात्वीनी करणी जुदीछे तो स्यु करता अ
नें करणीमा भेदछे जे द्रव्यछे ते आप आपणा गुणनें
पर्यवमा अभिव्यापकछे पोताना गुणमा अंतर भव
छे ते माटे मिथ्यातीने मिथ्यातीनी करणी ए दोनो
आज्ञा वाहिरछे ए अज्ञा वाहिरली करणीमें एकंत पा
प कहेछे पुण्यनो लेस नही माने तेहने कांइ धर्म वो
ध दीसतो नही ५० तथा तेरापंथी निन्हव कहेछे जे
उत्तराध्येन ७ में गाथा २० मी (पवेमाया हिसिखा
हिं जेनरा गिहिसुवयाः उविंतिमाणुं संजोणिकम्मस

चाहु प्राणीणो १) इहां सुव्रत शब्दे कह्यांथी आज्ञा में जाणवो ते उत्तर इहांतो मिथ्यात्वीछे पिण सुव्रत नें अनुकंपानो धरणहारछे तेहणी मरीने मनुषमा ऊपजे जो सुशब्द कह्याथी आज्ञामें थापस्यो तो सूरु वा भलो रूपछे बले जयंतीनें अधिकारे [सुततंसा हू] इत्यादि बले अधर्मीनीनिंद सर्व अज्ञामे कहणो पडसे १ तथा इम केई एक मूढमती कहेछे ८१ साधू अने श्रावग ए दो रतनारी मालाछे साधु तो मोटी माला अनें श्रावग छोटीमाला तेहनु उत्तर भगवती सतग २० (जन्न समणं भगवं माहावीरे एगंमहं दामदुग्गं सवरयणामय जावपडिबुद्धा तेण स समणे ३ दुविहं धम्मं पणवेइतं आगार धम्मे१ अणगार धम्मे) इहां तो छोटी मोटी कही नहीं अने भगवंत तो एक माला दीठी पिण दुलरी दीठी पिण दोयमाला देखी होय तो दामा यहवो बहु वचन शब्द जोईये परंत दाम ए एक वचनछे तिस वास्ते अने छोटी मोटी कहे तेहने रतनस्यू समकित कि व्रत सूत्रमे किमछे ते देखाड्रो श्रीज्ञाता सूत्र १ मेघ कुमारने श्रीवीर कह्यो [अपडीलद्ध सम्मत्त रयण लम्भेणं] इहांतो समकित रत्न कह्यो परंव्रत तो रत्न कह्यो नही हिवे वरतमान कालमे ४ तीर्थ इम कहता दीसेछे जे एहवा समकित रूप रतनके विषे जे अतीचार लाग्या होवे ते आलोडं परंत व्र

त रतन तो कहता नही बले(सम्मत्त भावे पढमे नो अपढमे) अने क्रियातो अपढ माहीजछे ते जीव अनंतीवार कीधी ते माटें रत्न नही अनें समकित रतन छे ते बेहूनें एक सरीखीजछे ते माटें साधु सरावग रतनारी माला कही परंत नान्ही मोटी कही नही तथा क्रियातो आंधलीछे अनें ग्यांन पागुलोछे ते गाथा अनुयोग द्वारमें कहीछे (सजोगासिद्ध एफलं बयंती नहुएगचक्केण रहो पयाइं अंधोय पंगूय बयणं समञ्चा तंसं पउत्तं नगरं पविठा १) तथा दसमी कालक अध्येंन ४ गाथा (पढमं नाणंत दया एवंचिठई सव संजए अन्नाणीकिं काही किंवा नाहिसे पावगं १ सोच्चा जाणई कल्लाणं सोच्चाजाणई पावगं उभयपिजाणई सोच्चा जंसे यंतं समायरे २ जो जीवे बिनयाणई अजीवे बिनयाणई जीवा जविअयाणं तो किंबानांदिसे पावगं ३ जो जीवे बिनयाणई अजीवे विवियाणई जीवाजीव अयाणतो सो हुना हिय संजमं ४) तो देखो इहां समकित सहित क्रियावंत तेहनें संजम कह्यो पिण मिथ्याती अभव्य समकित रहित क्रियावंतनें पिण तथा रूप असंजती कह्यो ते जाणज्यो साध श्रावग रतन सरीखाजछे नान्ही मोटीमाला सूत्रमें कही होयतो काढी देखावो ५२ कितने निन्हव तेरापंथी जिन मतना अजाणपणाथी कहेछे पुण्य पाप दोनो भूंडाछे छोडवा जोग्य

छे मोक्षना घातिकछे धन्ना अणगारनें पुण्य वंध्या तिवारें अणुत्तर बिमाणमें गया पिण मुक्ति नगया तेहना उत्तर ग्याता सूत्र मध्यें अध्येन ८ में अर्णक श्रावकनें समद्रमें जातानें मिथ्याती देवताने कह्यो जे तुं केहवाछे [धम्मकामीया पुण्यकामीया सग्गकामीया मोखकामीया ए ४ कंखीया ए ४ पिवासीया] ए १२ बोल कह्याछे तव वादी कहेछे एतो मिथ्याती देवताना वचनछे तिणनें कहिये एहवा हता तारे कह्योके झूठा कह्या बले (पुन्नकंखीया पुन्नपिवासीया पुण्य कामीया) ए बोल मिथ्यातीयें कह्या तिम (धम्मकामीया धम्म पिवासीया धम्मकंखीया) ए पिण मिथ्यातीहज कह्याछे जो ए साचा कह्यातो सर्व साचा कह्याछे इम कामदेवने पिण देवता १२ बोल कह्याछे महासतग रेवती पिण १२ बोल कह्याछे गर्नाधिकारे नगवतीमें गर्नेता जीवने प्रज्ञूपोते १२ बोल वखाणाछे उत्तराध्येन १२ मे चित मुनीने संनूतनें कह्या [यहजीवीयेराय असा सयंमी धणियंतु पुन्नाइं अकुवमाणो से सोयमच्चु मोहो वणीउ धम्मं अकाउण परंमिलो ए १] इहां धर्मनें पुण्य एक जेहवा सरणांगत वखाण्यो पुन धर्मनो कारण वले उतराध्येन १८ में (एयं पुणंपयं सोञ्चा अत्थ धम्मोवसोहियं नरहो विनारहं वासं चिच्चाका माइं पवइय १) इहां चारित्रने पुण्य एक कही बोलाव्या वले अंतग

ढमां कृष्ण कह्यो धन्न पुन्न कृतार्थ जाली कुमर प्रमु
ख जेणें चारित्रलीधो अने हु [अधन्न अपुन्न] जे
चारित्र मुजने नही आव्यो एतले अहो अज्ञानीयो
चारित्र पिण पुण्यवंत पुरुपने आवतो कह्यो वली
प्रश्न व्याकरणमें प्रथम सवर द्वारमे कह्यो (सवग
ती पखंदेकाहिंति अणंत ए ऋक्क ए पुत्ना जे एणमु
णंति धम्मं सोऊणयापमायंति) इहा तो इम कह्यो ४
गतिमा कुणफिरे (अकृत पुनीया) जीव होय पु
ण्य रहित होवे ते रुले अभागीया ते पापीया जीव
अने सभागीयाजीव महा भाग्यवंतने पुण्यवंत जी
व वले सूयगडाग २ अध्येन २ समण माहणं हिस्या
इ धर्म कहे ते ४ गतिमां (कलकलि भागीणो) ते
अभागीया थास्ये अने श्रमण माहण धर्म सुद्ध क
हे ते [कलकली भागीणो त्म भविस्सई] अभागी
या नही थाय वली उत्राध्येन ३६ मे (तत्थ सिद्धा
महाभागा) एतले सव करम सिद्ध खपाव्याछे तो
पिण महा भागवंत कह्या वली उत्राध्येय २३ मे के
शीस्वामी गौतमने कहेछे (पुच्छामिते महाभागा) हूं
पूछूं हे महाभाग्यवंत तथा केसी कहे गौतम प्रते
तु संसार समुद्र किम तिरेछे जिवारे गोतम कहे (स
रीरमा हूनावीति जीवो वुच्चई नाविउ ससारो अन्न
वोवुत्तो जेतरंतिमहेसिणो १) सरीररूप नावाथी
संसाररूप समुद्र तिरुहूं ए सरीर रूप नावा मुक्त

साधक जीवने आदरवा जोग्यछे छांडवा जोग ए सरीर पचेंद्री जाति त्रस १० को मनुषनीगति मनुषनी आण पूर्वी मनुषनो आउखो साता वेदनी ऊंचगोत्र इत्यादिक प्रकृति बिना मुक्ति न मिले अटकाई रही ते मिली एतलें मुक्त गामीनें एह प्रकृति साधकछे कि बाधक छे तथा उतराध्येन २१ में (दुविहं खवे ऊण पुन्न पावं निरंगणे सवउ विप्पमुक्के तरितु समुद्दंच महाभ वोहं समुद्द पाली अपुणागइं गये तिवेमि १) इण गाथा ऊपरें पुण्य पाप छोडवा कहेछे ते उत्तर हे अ ज्ञानीउ छांडवा जोग्य नही कह्या छांडवा जोग्य क ह्या होवे तो तिवारें हेलनीक नींदनीक होवे तेतो नही इहां तो सिद्ध दशापांमी तिवारें पुण्य पाप छां डी मुक्त गया तिम तप चारित्र पिण छूटा तो कांइ साधिक आवस्थामें तप संजम छाडवा जोग्य नहीं तिम पुण्य पिण छांडवा जोग्य नही साधु दिख्यालेवे तिवारें कारण थकी अने बंध थकी पाप मूंकेछे पिण पुन्न छोडतो नही पाप प्रकृतितो कारण सेवीनें प्राय चित लेवेछे तिम पुण्य प्रकृतिनो कारण सेवीने प्राय चित नही पुदगल तो बेउंछे पिण साधिक बाधिकमें फेरछे तथा सूत्रमें ठांम ठाम अशुभ पुदगल उच्चार पासवण प्रमुखनी असिज्झाई कहीछे पिण छाणा पा णी फूल फलनी असिज्झाई कहीनही एतला फेर पुद गल दसा मांहिं पिणछे वले ग्यानदरसन चारित्रना

गुणनो सरीखाछे मुक्तगामी पिण वेहूं छे तो पिण पु ण्याईनें घटित बधितपणे गौतमस्वामीनें गणधर प द आव्यो पिण हरकेसीनें न आवे इहां क्षयोपसम भावतो सरीखोछे पिण उदय भावमां पुण्यनो फेरछे तिसव स्तें न आवे वले आचार्यनी ८ संपदामें [रू प संपदा] पुण्य थकी मिले तो आर्यपणो पुण्ये पां मीये एतले ए पुण्य प्रकृति मुक्ति नजीक करे कि वेगली करे वली गणधरनी तीर्थंकर चक्रवर्त बलदेव वासुदेव जंघाचारण पुलाकलब्धि एह अस्त्रीमें न पामें यह संवर सजममें फेरके पुण्यमें फेर एतलें पुण्यते जीवनें साधकछे कि बाधकछे वले पृथवी अप्प वन सपती ए ३ उतम जाति थावरछे तो, एह नीकल्या मुक्ति जाता कह्या यहमां पुण्यवंत देवता पिण उप जता कह्या अनें तेऊ बाऊमें देवता न ऊपजे अपु न्नीया माटे इम तेउ वाऊ ३ विकलेंद्रीना आव्या मु क्ति न जाय वले कामदेव कुडकोलीयानें वीरस्वामी (धन्नेसिण)कही बोलाव्यो एतले जेतलो पुण्य उग तेतला मुक्त मारगसू बेगलोइ जाणवो इम कह्यो जे उदय भावमें क्षयोपसम भावमे मुक्त मारगने साधिक बाधिक दोनोछे ते किम उदय भावमां विषय कषा यादिक बाधिकछे अनें प्रभूना दरसन तथा प्रभूना आहार विहार ए करणी साधिक पणेछे क्षयोपसम भावमां३ अज्ञान २९ पाप सूत्र तथा अदरसनी गो

सालाजी जमाली प्रमुख कृत्य शास्त्र एहनो जणवो
ए मुक्ति मार्गनें बाधिकछे अनें द्वादशागीनो ज
णवो चारित्रनों पालवो ए साधिक दशाछे ते माटें जे
णें कारणें मुक्ति नजीक थावे ते ते आदरवा जोग्यछे
तथा उत्राध्येन ७ मे लोकोत्तर पक्षे उपमा ३ दीधी
वणीयानी तिहां कह्यो (माणसंत नवे मूलं लाजोदे
व गइनवे मूलछएण जीवाण नरगति रिखतणु धुवं
१) इहां देवगति उदय जावमे गिएयो पिण वीत
रागे लाजना पक्षमा गिएयो ए उदय जाव पिण खे
त्र शुद्ध कहियो उर्ध्वगति आश्रीने तथा हरकेशी मु
नीने ब्राह्मणें कह्यो (अच्चे मुत्ते महाजागा नते किंचि
अविमो जुंजाहि सालिमं कूरं नाणं बंजण संजूयं १)
हे मुनी ताहिरो सरीर सर्व अर्चनीकछे पिण लगार
अणअर्चनीकछे नही इहां उदय जाव आश्रीत सरी
र बंदनीक कह्यो ए साधिकके बाधिक नंदी अणुजो
गद्धारमध्ये जावथकी लोकोत्तर श्रुत अधिकारे कह्यो
प्रजू केहवाछे (तिलोग बहिय निरखिखीय) एतले
प्रजू साहमो सर नर जावेछे तेहने आनंदरस प्रवा
ह हिवडासुं चालेछे ए सरीर निरखणा उदय जाव
वर्तनाछे वले जगवंत २ साधूने बरजा कोई बोलजो
मती पिण गोशालाजी आया जद २ साधु धर्मा चा
र्यना जक्त जावना प्रेरयाछता बोल्या हिवे इण साधु
यें अज्ञा विराधी तेहनो दोष लाग्योके जक्त रागे बो

ल्या तेहथी गुप्त थयो ए वोल्या ते करणी उदय ना
वनी बयण साधकके बाधिक वले दयानो नाम पूठीं
कह्यो ते पुण्योपचयनो हेतु कही इत्यादिक सूत्रानु
सारे बिवेक लोचन जोज्यो ते पुण्यछे ते सुभ पुद्ग
लनो संचयछे बिवहारमे ए साधक छे ५३ वले अ
ज्ञानी कहेछे जे उत्राध्येन १० मे(एवंभव संसारे सं
सरई सुहासुभेहिंकम्मेहिं)शुभा शुभ करमथी जीव
रुल्यो ते माटे पुण्य पापथी बेउंथी रुलता कह्या पु
नः मुक्तनो साधक नथी तेहनो उत्तर हे मृषा वादी
मृषा कयो कह्योछो इहा तो प्रभू खरो कह्यो जे जीव
ससारमें रुलेछे ते शुभ कर्म अशुभ करमथो रुलेछे
शुभ अशुभ जोडेछे ते माटें असुभने संजोगे सुभथी
पिण रुलेछे ते माटे सुभासूभभेला कह्या पिण सुभ
थकी धर्म नजीकछे अने अशुभथकी बेगलोछे वले
अशुभ करमनी उनकृष्टी थित बाधे तो जीव धर्मम
लथी न पामें अने उतकृष्टी थित सुभनी बाधे तो
धर्म सुखे पामे ५४ वलीकेतला अज्ञानी अज्ञान
ने वले सूत्रना खोटा अर्थ परूपेछे ते कहे सम्यक्त मो
मोहनी १ मिश्रमोहिनी २ मीथ्यात मोहनी ३ एहना
अर्थ इम करेछे जे समकित ऊपर हेत प्यार एक ला
स राखें ते समकित मोहनी संबंधीया होवे तो ऊप
रले गुणठाणें किम होवे तथा अभव्य जीवने ए ३
मोहनी प्रकतिनी सत्ताछे अने समकित ऊपरे बांछ

ल्य भाव राखवाने समकिती ऊपरे हेतराग भक्ती म
लगा होवे नही येहनो सुध अर्थ तो इम कह्यो छे जे
मिथ्या मोहनीने उदय खयोपसम समकित रोकाणी
१ मिश्र मोहनीने उदय उपसम समकित अटकी ते
किम उपसम समकितमां मिश्र पणुं छे जे उदय आ
वी प्रकृति भोगवीने उपसांत भावे रही ते अणुउद
यमां रहि ते माटे मिश्रकाहिये २ समकित मोहनीले
उदये संपूर्ण सम्यक्ति खायक स्वरूप रोकाणुं ३ मूल
एहनो अर्थ ए छे पिण ए दुष्ट परणामी जीव दयाहीन
करवा खोटा अर्थ कहेछे ५५ हिवे केई एक वादी ते
रापंथी इम कहेछे भगवंतनें गोशालाजी बचायो ते
पाप हुयो भगवंत चूकी गया कृष्ण लेस्याना परिणा
म आया सरागदसा मोहनीनें उदय गोशालाजी बं
चायो इम कहेछे तेहनो उत्तर हे अज्ञानीयो प्रभूने दो
ष किम लाग्यो तिवारें दुष्टमती कहे यह काम छदम
स्त पणामां कीधो पिण केवल उपजा पछे न कीधो
छदमस्त पणामें भगवंतनें ६ लेस्या अनें ८ करम ह
ता जव गोशालाजी उगारयो तिवारें कहीये हे दुष्टो
प्रभू छेमासी आदि वे तप कीधा अनार्ज देसें विहा
र कीधा तिवारें पिण ६ लेस्या ८ कर्म हुंता हे मूढो
इहां लेस्या करमनो स्युं कारणछे जे करणी कीधी ते
हनो पद्कल्यो ५६ तिवारे कहें दोय साधूनें बलता
क्यां न उगारया जो उगारयानो लाभ हुंतातो तेह

नो उत्तर ते साधू ऊपरे पिण प्रभूनी अनंत अनुकं
पाछे पिण तेहनो निमत्तकारण आवी मिल्योछे जो
तुमें कहोगे लेस्या लबध फोडव्यां दोप लागे ते माटे
न उगारया ते सम्यक्त मोहनी १इम मिथ्याती ऊपर
मोहनी हेतप्यार विनय प्रमुख करे ते मिथ्यात मोहनी
२ मिश्र दृष्टी ऊपर मोह आणे ते मिश्र मोहनी ३
एहवा कूठा अर्थ करीने दया अनुकंपा रहित हत्या
करें ५७ जे आपण मरता जीव मिथ्यात्वीनें मुकावि
ये तो मिथ्यात मोहनी लागे तेहना उत्तर ह मिथ्या
त वादीयो ए दरसन-मोहनी तो समकितनो आवर
णछे चारित्रनों आवरण नही अने एहनो वेदवो नि
रजरवो जीवना प्रदेस वरतीछे पिण काइ साद्दस्य ना
वनही वरतती वली दूजो अर्थ कोईक कूठो करेछे स
मकित मोहनी तो समकित आवनद्ये १ मिथ्या मोह
नी मिथ्यात आवानद्ये २ मिश्र मोहनी मिश्रदृष्ट आ
वानद्ये ३ एहवो अर्थ ठीक नही ए लेखेतो मिथ्यात
मोहनी आ आछीसो मिथ्यात आवानहीद्ये ते माटे
ठीक नही वले कहे समकित उपरेंहेत आवे तिवारे
समकित मोहनीनो उदय येहवो कहे तेहनें पूछीये जे
ए ७ प्रकृतिनोक्षय क्षयोपसम चौथे गुणठाणे होवेछे
ते चारित्रीया उपर हेत प्यार वछल भावणतो सा
धुने छठे सातवें गुणठाणें पिण होवेछे ते कहेछे महा
वीर उपर गौतमनो भक्तिराग ते मोहनी करमनों उद

यके उपसम १ महाबीर प्रभू ऊपरें सींहा मुनीनो ती ब्रसनेह ते मोहनीनो उदयके उपसम २ सुनक्षत्र स र्वानु भूती धर्मा चार्यना भक्ति भावना प्रेरचा थका बोल्याते मोहनीनो उदयके उपसस ३ सिष्यने गुरु उ पर भक्तिराग तपस्या करता बरजे ते मोहनीनो उद यके उपसम ४ साधुने तथा प्रभूनें बिरहकरी भवि क जननें चिंत्या उपजे ते मोहनीनो उदयके उपसम ५ साधू जननें ठते जोगें असनादिक नापीसक्यो तथा धर्म कथा सांभली नसक्यो तो पश्चाताप करे ते मोहनी उदयके उपसम ६ प्रभूना निरवाणसमें घ णा जीवानें चिंत्या उपनी अने प्रभू पधार्यां घणा भविक जन अतिसें उछाह भाव ऊपन्यो ए मोहनी नो उदयके उपसम ७ घणे ठांमे प्रभूजीना तथा सा धूजीना नाम सांभलीने तथा दरसन देखीने तथा असनादिक आपीने आणंद पांम्या अने बिरह वि जोगे दुखे चिंत्यातुर थया ते केहा मोहनीनो उदय एतो लक्षण समदृष्टीनाठे जिवारे समकित उतकृष्टा रसना आवे तिवारे यहवा उल्हास भाव ऊपजे जेए लक्षण समद्रिष्टीनां घातिक होवे तो समकितना अ तीचारमां क्यान घाल्या चोथे गुणठाणे कोई उत्तम जीवने क्षायक समकित आव्यो तेहने एह पूर्वे कह्या ते गुण होवेके नही अनुकंपा भाव उछाहभाव शोक

 ए तो ऊपरले गुणठाणे पिण होयछे शोकहास्य

परमुख ए प्रकाते तो आठवा गुणस्थान लगेंछे अने समकित मोहनी तो हेठले गुणठाणें खपावीछे जो ए गुण (परियावीए वहु सुइकय) ए पाठछे ४ गोशालानें उगारयो ५ ए ५ बोल साधूनें बरज्याछे अने पोतें कीधाछे केवल उपन्यापछे १० कालीकुमार प्रमुखना मरण बताव्यो ६ नेमनाथस्वामीयें द्वारका नो दाह १२ वरसमा बतायो ७ गोशालानो ७ दिनातरे मरण बतायो ८ महासतक रेवतीनो मरण बतायो तिवारे गोतमने मूकी प्रायछित देवाडयो अनें पोते सुखें बतायो ८ गोशालाने हेलवा निंदवानी आज्ञादीधी जे एहवे गोशालाने बोलवानी सक्ति नथी तुम हेलो निंदो निष्टट वागर्णा करेह ए आज्ञा दीधी ९ तथा पूर्वधर साधू धर्मघोष नागश्रीने हेली नींदी १० वले तीर्थंकरनें उच्चारादिक लेप लागतो नही अनें सूंचपिण लेतांनही अने सामान्य साधु सुंचविना रहे तो असुचिलागे ते भणी बरज्यो ११ ए ग्यारे बोल भगवंते आगम विहारी पोतें सेव्याछे सामन्य साधूने सेवानी ना कही तो अहो अज्ञानीयों तुम सर्व बोलमा तो भूला नही कहता १ अने एक गोशाला उगारयो ते माटेज दोष लागतो गिणयो तेहनो स्युं कारण पिण इम जाणो जे तुम प्रत्यक्ष गोशालानें केडायत दीसोछो सो प्रभूनी लघूता करोछो वले अज्ञानी कहे भगवंतने गोशाला उगा

यके उपसम १ महाबीर प्रनू ऊपरें सींहा मुनीनो ती ब्रसनेह ते मोहनीनो उदयके उपसम २ सुनक्षत्र स र्वानु नूती धर्मा वार्यना नक्ति नावना प्रेरया थका बोल्याते मोहनीनो उदयके उपसम ३ सिष्यने गुरु उ पर नक्तिराग तपस्या करता बरजे ते मोहनीनो उद यके उपसम ४ साधुने तथा प्रनूनें विरहकरी नवि क जननें चिंत्या उपजे ते मोहनीनो उदयके उपसम ५ साधू जननें ठते जोगें, असनादिक नापीसक्यो तथा धर्म कथा सानली नसक्यो तो पश्चाताप करे ते मोहनी उदयके उपसम ६ प्रनूना निरवाणसमें घ णा जीवानें चिंत्या उपनी अने प्रनू पधारयां घणा नविक जन अतिसें उछाह नाव ऊपन्यो ए मोहनी नो उदयके उपसम ७ घणे ठांमे प्रनूजीना तथा सा धूजीना नाम सांनलीने तथा दरसन देखीने तथा असनादिक आपीने आणंद पांम्या अने बिरह वि जोगे दुखे चिंत्यातुर थया ते केहा मोहनीनो उदय एतो लक्षण समदृष्टीनाठे जिवारे समकित उतकृष्टा रसना आवे तिवारे यहवा उल्हास नाव ऊपजे जेए लक्षण समद्रिष्टीनां घातिक होवे तो समकितना अ तीचारमां क्यान घाल्या चोथे गुणठाणे कोई उत्तम जीवने क्षायक समकित आव्यो तेहने एह पूर्वे कह्या ते गुण होवेके नहीं अनुकंपा नाव उछाहनाव शोक ए तो ऊपरले गुणठाणे पिण होयठे शोकहास्य

परसुद्ध ए प्रकृति तो आठवा गुणस्थान लगेछे अने समकित मोहनी तो हेठले गुणठाणें खपावीछे जो ए गुण (परियावीए वहु सुझकय) ए पाठछे ४ गो शालानें उगारयो ५ ए ५ बोल साधूनें वरज्याछे अ ने पोतें कीधाछे केवल उपन्यापछे १० कालीकुमार प्रमुखना मरण वताव्यो ६ नेमनाथस्वामीयें द्वारका नो दाह १२ वरसमां वतायो ७ गोशालानो ७ दि नातरे मरण वतायो ८ महासतक रेवतीनो मरण वतायो तिवारे गोतमने मूकी प्रायछित देवाडयो अ नें पोते मुखें बतायो ८ गोशालाने हेलवा निंदवा नी आज्ञादीधी जे एहवे गोशालाने बोलवानी सक्ति नथी तुम हेलो निंदो निष्टष्ट वागणं करेह ए आज्ञा दीधी ९ तथा पूर्वधर साधू धर्मघोष नागश्रीने हे ली नींदी १० वले तीर्थंकरने उच्चारादिक लेप लाग तो नही अनें सूंचपिण लेतांनही अने सामान्य सा धु सुंचविना रहे तो असुचिलागे ते मणी वरज्यो११ ए ग्यारे बोल भगवंते आगम बिहारी पोतें सेव्या छे सामन्य साधूने सेवानी ना कही तो अहो अज्ञानी यों तुम सर्व बोलमा तो भूला नही कहता १ अने एक गोशाला उगारयो ते माटेज दोष लागतो गि णयो तेहनो स्युं कारण पिण इम जाणो जे तुम प्रत्य क्ष गोशालाने केडायत दीसोछो सो प्रभूनी लघूता करोछो वले अज्ञानी कहे भगवंतने गोशाला उगा

स्थानो लाभ जाणोछो तो तुम ए काम क्यो नही क
करो तेहनो उत्तर साधूतो एक गोशालो उगारयो ते
एहीज काम न करे कही १२ बोल न करे तिलनो
छोड १ तिलनी सींगली २ सुंवानी खबर ३ द्वारका
नो दाह ४ इत्यादिक पिण साधू नही करता तो ते
कीधा तो प्रभूने भूला कहस्यो ५८ तथा केतला ए
क मूढ कहेछे जे भगवंत लब्ध फोडी अने सीतल ले
स्याना पुदगल बाहिरथी लीधा ते बिना आज्ञालीधा
छे ते भगवंतने चोरी लागी तेहनो उत्तर अहो शु
ध्धोपयोगी इम चोरी गणस्यो तो तुमारे लेखे सा
ध पणोहीज न पले ते किम जे पन्नवणा पद ११ में
जे भाष्या बोले ते अनंता पुदगल लेईने भाष्या
बोले (पुठाउगाढा) इत्यादि १७ बोलछे बले सास
उसास ३ जोगीनी प्रवर्तन ए सर्व बाहिरला पुदग
लीया सुं होयछे ते किणरी आज्ञा स्युं पुदगल लेवेछे
बले बादी कहे अमेतो जाणीनें पुदगल नथी लेता
ते उत्तर तुमें भाषादि जाणीने बोलोछो के अजाणी-
के बोलोबो इत्यादि ५८ तथा केतालाएक दुष्ट कहे
सीतल लेस्या अने ते जूलेस्याना जीव मूवा एह पा
प थयो ते उत्तर हे अज्ञानीयो एह कुमति तुम कि
हांथी लायाछो सूत्रमांतो लेस्या लवधना अचित पु
दगल कह्याछे भगवती सतग ७,उदेसे १० में (अ
अचित विपोग्गलाउ भासंति उज्जोवंति

तिथाति प्रभासंति हंताअत्थि) पिण एहने जीवत्व होवे तो विहार क्या न करायो काई विहार करवामां तो दोष न लागतोछो तोपिण एहनें आऊखामे अ वसर बलिष्ट तिवारें भगवंत स्युं करे तो पिण भगवं ततो विहार राखवा माटे बरज्या तो हतो पिण इहा आऊखो पूरो थावानें समयथो ते कुणसाधे अनें पो तें ३४ अतिसय सहितछे २५ जोजन परमाणें ७ अतिसय ईत भयचक्र परचक्र अतिवृष्ट अनावृष्ट दुर्भक्ष मारि न होवे तो अतिसय किहां गया इहा तो भावी पदार्थ बलिष्ठ ठहरयो ६० वले केताइक अज्ञानी इम कहे गौतमस्वामी आणदने घरे भासा में चूक्या तिम भगवंत पिण छदमस्त पणामां चूक्या तेहनों उत्तर हे अज्ञानीओ गौतमस्वामीनें तो प्रभूइं कह्यो जे तुमे भूलाछो आणदसाथेछे तुम जईनें ख मावो पिण भगवतनो केवल उपना पछे कह्यो गोत म स्वामीनें मे अनूकंपानिमतें गोशालाजी बंचायो पिण इमतो न कह्यो जे हूं चूक्यो जे चूकया हंतातो भगवत स्युं आपणो दोष ढांक्यो पिण तुमे बीरप्रभू भूला स्याने बलेजाएया तिवारे अज्ञानी कहस्ये छद मस्त पणानो कामछे तेहनो उत्तर भगवंतनी करणी, छदमस्त पणानो अने केवल पणानी एक सरीखीछे एक सरीखा काम करेछे ते जोवो गोशालाजीने तिल नो छोड बताडयो अने बीजा साध बतावेतो तेह

नें प्रायछित देवे जे निमत प्रकासवो नही आरंभ कारणी भासा न बोलवी ते भणी १ चलती वेला तिलनी सिंगलीमां ७ तिल बताव्या ले २ तेजू ले स्या उपजवानी गोशालानें वले करणी बतावी ३ कु पात्रनें विद्या न देवी अने गोशालाने (सेहावीएकयरे णंभंते अचित्ताविपोगलाउ भासंती ४ कालोदाई कु धस्स अणगारस्स तेउलेसानिसठा समाणी दूरग ता दुरंणिपत्ते) इत्यादिक आगलपाठ घणाछे ६१ व लेमूर्ख कहेछे भगवंते गोशालो वंचायो तिहां अशु भ जोगनो व्यापार प्रव्रत्यो ते माटें दोष लाग्यो तेह नो उत्तर पूर्वेला १० बोल कह्या तेमा शुभ जोगकि अशुभ जागछे जोयकम्मा शुभ जोगछे तो दसोबोलमा शुभ जोग जाणवा ६२ वलि कहसी भगवंत गोशा लानो लाभ जाणताती बीजाने एरीतें जीव उगार वानो उपदेस क्यां न दीधो ते उत्तर हे मूढो प्रभू पोतें तो अनार्ज देसमां विहार किधो छदमस्त पणामांथी अ नें केवल उपन्या पछे अनार्ज देसमें विहार न कीधो अने बीजा साधूने अनार्ज देसमां जावणो वरज्यो ब्रहतकल्प उदेसे १ ने अंतैतो रयु प्रभू पूर्वे खोटो करयो ६३ वले केतला एक कहे लवध फोरूव्या प्रा यछित लीधा बीनां कालकरे तो विराधिक थावे ते मा टे भगवंते लवध फोडी तेमां दोष जाणयो ते उत्तर सर्व लवधना फोडनहारने प्रायछित नही कह्यो सि

तललेस्या जीवदया माटे फोडव्यानो प्रायछित सूत्रमां काढी देखाडो तो अमे पिण जोइये जो सर्व लवधनो प्रायछित होवे तो २८ लवधमा तीर्थंकरनी केवलीनी गणधरनी पुलाकनी लब्ध तथा उववाईमां (तेणंकालेणं २ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवेथेरा भगवंतो जाइ संपन्ना जाव विजापहाणा मंतपहाणा वली आगे वखाणया कूतिया वणभूया प्रवादीप्पमद्दणा दुवालस्स अगिणो समत्तगणि पडिगस्स सवखर सन्निवाईणो सव भासाणुगामिणो अजिणा जिण संकासाए पाठमा प्रवादीप्पमद्दणा) ते बादी लवधिना धणी विद्यामंत्र भणयामाए थेरा भगवंत प्रधान कह्या ए आच्यार कोई अज्ञानी कहि स्ये. जे घरमा एहवा हता विद्या मंत्र लवधिनाजाण ते वातकूठो इहा तो थिवराना गुण विद्यमान अवस्थामाठे ते वखाणयाछे संसारमा तो भोगनाशास्त्र कोक शास्त्र सामुद्रिक प्रमुख धनुर वेदादि अनेक भणया होस्ये पिण इहा बखाणया नही इहां तो जे करणी वखाणवा जोगहती ते बखांणी (जातिः कुल बलरूव त्रिणय नाण दंसण चरित लज्या लाघव ओयंसी तेवसी वच्चंसी जसंसी जाव वयप्पहाणा गुणः चरणः करणः णिग्रहः जिजयः अजवः मद्दवः लाघवेः खंतीः मुत्तीः विद्याः मंतेः बेयः बभः नयःणियमः सच्च सोय चारुवण लज्या) इत्यादि घणा गुणछे ए

परवरतमानमांहे एहमां संसारनो गुण एको नही ते माटे सर्व लब्धनो प्रायछित नही इंद्री विषय सुख परमाद कषाय द्वेस इत्यादिक कारणे करे तो दोष लागे अने निर्विकार भावे दोष किहांई सूत्रमा कह्यो होवे तो देखाडो ६४ तथा केतलाइक कहे जो गोशालाने उगार्यो तो दोष तो साधूने बाल्या वीरस्वामी उपरे तेजुलेस्या मेली मिथ्यातवधार्यो ते स्यु गुण थयो ते उत्तर अरे मूर्खो ते वातनो प्रभुने स्यानो दोषण वले अनन्त्य जीव साधपणो लेइ कोईने मारी नायतो तेहनुं पाप गुरादिकनें नही जो महावीर स्वामीनें दोष लागो जाणतो इण लेखे तो ऋषभदेव स्वामीने तो घणो पाप लाग्यो होसी जे माटे ४ हजार जणा साथे दिक्षा लीधी पछेसगलाई भागा अने मिथ्यात बधार्यो ते माटे पिण प्रभूने पाप नथी तथा गोशालाजीने तो छद्मसत पणामा दिक्षालीधी पिण केवल ऊपना पछे जमालीनें क्यूं मुंड्यो वले नंदनमणियारने श्रावक क्यां कीधो पार्श्वनाथस्वामीयें सोमिल ब्राह्मणने श्रावक क्यां कीधो सुकुमालका आरज्याने क्यां दिक्षा दीधी २०६ जणीनें क्यां दिख्या दीधी मेघकुमारने क्या दिक्षादीधी इमतो घणो अटकास्ये ६५ तथा वली कहे गोशालो असंजमी अव्रती मिथ्यातियने भगवंत उगार्यो ए अनुमाने करी आलोयणनुं ठाम जाणीये

छे जिम रहनेमी राजमतीने विषयभोगनी आमं
त्रणा करी पिण प्रायछित कह्यो नथी पिण जोवो
ए प्रायच्छित ठामछे जिम भगवंते जाणवो ते उ
त्तर एतो रहनेमीनो एकांत असंजमनो ठाम दी
सेछे प्रायछितना १० भेदछे तेमां इंद्रियावसेकाउ
अप्पाणं उवसंहरे ए पाठ कह्यो अने भगवंतने तो
पाप नथी लागो ते साख आचारांग १ अध्येनमे
(णच्चाणसे महावीरे णोविय पावगं सयंभ कासि
अन्नेहिंवाण कारिज्या करतंपिनाणु जाणी त्था ८ अ
कसाते विगयगेहीया सद्दरूवे सुअमुच्छियझासि छउम
त्थेविपरकममाणे नोप्पमायसयंपिकुव्वित्था ९ व
ले आहाकम्मं न सेवे सवसो कम्मुणा अदक्खु जंकि
चि पावगंभगवंतंअकुविय वियडं भुंजेथा १८) इ
ण गाथामे भगवंत छद्मसत पणामां रह्याथकां कि
चित पाप करम जाणीने न सेव्यो कह्यो तो तुमे इया
नें कहोछो वले गोशालानो जीव दृढपईनो थासी के
वल पामस्ये जद सर्व साधुने कहस्ये मैं गयो काल
मां समण घाती थयो प्रभूने अविणय कीधो तो घ
णा दुःख पाम्या तिम तुमें करस्यो मां इम कहसी पि
ण भगवंत केवली हुयाछे ए कार्य निखेद्यो नही तथा
नसीत सूत्रमां व्यवहार सूत्रमां ब्रहत्कलप प्रमुखमां
घणा कामना प्रायछित कह्याछे पिण अनुकंपानो प्रा
यछित कह्यो नही वले भगवंतने १० सुपना आया

सोतो निद्रामां अजाणें आव्या पिण लबधतो छदी रीने गोशालाने बचायोछे तुमे १० सुपना अने लब ध जोडे लगावो ते खोटुंछे बले तुमे भगवंतमां ६ ले स्या कहोछो ते स्यांभणी ६६ तिवारे वादीकहे भग वंतमां कषाय कुसील नियंठोछे अने कषाय कुसीलमां ६ लेस्याकहीछे ते भणी कहांछा ते उत्तर अरेमूढा ६ लेस्यातो समुचय कषाय कुसीलमे कहीछे पिण एक जीव आश्रीलो नियमा नथी अने जो कहसो तो कषाय कुसीलमां तो वेद ३ कलप ५ चारित्र ४ लिंग ३ सरीर ५ बंध ७ नो तथा ८ नो समदघात ६ प मुख कह्याछे तो भगवंतमे सघला बोल कहणा पड स्ये ते तो नथी भगवंतमें छदमस्त पणामे १ सुक्ल लेस्या संभवीयेछे तुमे ६ लेस्या कहोछो ते खोटीछे बले तुम कहोछो भगवतने गोशालो बचावता पाप लाग्यो तो कहो पाप मूलगुणमें लागोके उत्र गुणमे लाग्यो अने कहसोतो किम मिलस्ये कसाय कुसील नियंठो तो अप्रात सेवीछे ते मूल गुण उत्रगुणमें दो ष लगावतो नथी तो तुमे कूडो बोलीने पाप भगवंत नें कहोछो ६७ बले वादीकहेछे जो भगवंत गोशा लो बचावता नही तो एक अछेरो घटतो इम कहेछे तेहनुं उत्तर हे अबिबेकीयो द्रोपदीनें पदमोत्तर मंगा वी ते अछेरोके कृष्ण अमरकंका गया ते अछे रो मल्लीनाथ पूर्वे माया केलवी ते अछेरो के मली

नाथ स्त्री हुवा ते अछेरो इम भगवंत गोशालो वं
चायो ते अछेरोके भगवंतना मुख आगे २ साधूनें
बाल्या अने भगवंत ऊपरे तेजूलस्या मेली ते अछे
रो इम भगवंत तो अनुकंपा निमत्त दया परिणामें
वतिने गोशालो बचायोछे वले वले तुम तो इम क
होछो (श्रीनेम जिणेसर जाणता, होसी गजमुकमाल
री घातरे ॥ तोही अणुकंपा आणी नही, छर साधन
मेल्यासाथरे ॥ जीवामोह अनुकपा न आणीये १) इ
ण गाथा देखतां तो तुमारी सरधा अनार्य दीसेछे ते
भणी तुमारी सरधारे लेखे तो साध साधवीरो माहो
मांहि यतन करवो नही पिण जोवो ठाणाग ५ में ठा
णे ५ कारणे करी साधू साधवीनें ग्रहतो थको भग
वंतनी आज्ञा उलंघे नही पशूपखी साधवीने हणतो
होवे तो ते पासेथी पकडिनें छोडावे १ विषम ठाम
पडती होयतो पकडी राखे २ कादवमा खुचतां तथा
लपसता थका राखे ३ नावामें चढतां उतरता संबा
हीराखें ४ सनीपात तथा ओलो तथा देव धिष्टत सरी
र तेणे उन्मादपामी मूरछापामी तथा आहारादि
पचख्या संथारो करयो पछे सरीरकी लामणापामे प
डती होयतो ग्रही राखे ५ तो देखो इहा साधवीनें
पकडीने छुडावतो साधूनें छुडावानो स्युं दोष वले५
में ठाणें साधू साधवीए कारण पड्या एक थानकमे
रहेतो आज्ञा उलंघे नही दीर्घ अटवीमां चाल्या ति

हां कार्य विसेसे भेला रहे १ साधु साधवी वसतीमां आव्या तिणमां एक थानक पांम्यां अने एके न पाम्यो ते भेला रहे २ नाग कुमारादिकनें स्थानकेरही साधवी तेहनी रक्षा निमित्ते भेलारहे ३ चोर वसत्रादिक चोरवा वांछे आरजाना तेहना जतन काजे भेलारहे ४ जुवान पुरुष साधवीनी वांछा करतो जाणी साधवीना सिलादिक व्रत राखवा निमिते भेला रहे ५ तो जोवो साधु साधवी आपसमें इसा इसा जावता करता कह्याछे तो भगवंत गजसुकमाल ऊपरें जावतो किसो नही करे पिण गजसुकमालनें तो मोक्षनो उपाय बतायोछे ६८तथा केईएक इम कहेछे जे साध साधवीनें काढे ते संभोग एकछे तिणासु काढेछे ते उत्तर नेमनाथजीरे गजसुकमाल संभोगीछे के असंभोगीछे ते कहो वले तुम कहोछो (श्री वीरजिणंद बाईसमा, जिन कलपी मोटा अणगाररे ॥ ज्याने देवता मनुष तिर्जंच, ए उपसर्ग उपन्या अपाररे॥१॥मो० अनार्ज लोक पिण वीरनें, दुःख दीधा अनेक परकाररे॥ अनार्य भोमीके मनुष्यनें, श्वानादिक दीधालाररे मो० ॥२॥देवता मनमें जाणीयो, थारे उदे आयादीसे करमरे॥अणुकंपा आणीवीचे पड्या, श्री जिन जाण्या नही धर्मरे मो०॥ ३ ॥)चोसठ इंद्र मिलि आवीया, दिख्यारे दिन भेला होयरे॥जद कष्ट पड्यो भगवंतने, जद आयो न आयो कोयरे ॥४॥मो०) ए ४गाथा तु

मारी देखतां तुमे दयाहीणदीसोछो अने ऐसी २खोटी खोटी जोफाकरकर लोकांना हिया दयारहित करोछो पिण इण लेखेतो तुम बिहार करता मोटी अटवीमें पड्या मारग भूला छता घणा दुःख संकट पावोछो तिहां कोईक पुरुष तुमनें मारगमें घाले तो तुमारे लेखे भणनें पाप लागे १ वले तुम विहार करतां कोईक ग्रहस्थे कह्यो अमुकडे गेले सिंहनो डरछे तथा चोरांनो डरछे तथा मारग विषमछे तथा कांटा घणाछे सो तुमे उण मारग जावोमती इम बरज्योतो तुमारे लेखे भण तुमारे ऊपरे मोह अनुकपा कीधी तिणसूं पाप लाग्यो तो थें भगवंतनें छुडावेतो पाप लागे इम सरधोछो ते भणी तुमें अनार्यछो भगवंत तो पोतें काया वोसरावीछे अने करम बंध्याछे ते निरजरे छे (नथी अवे देइंता मोखो) इति बचनात् तुमे गोशालानें बचायानों भगवंतने पाप कहोछो ते घणुं अजुक्त बोलोछो ६९ तथा केईक अज्ञानी इम कहेछे जिन बचनोकी अपेक्षाके अजाणहे ते कहेछे जो ए कही छोटा दोष लगावेतो साधु न कहीजे असाधु कहिजे भेपधारी कहिजे ऐसा कहिनें घणा जणानी साधुसुं आसता उतारेछे तेहना उत्तर भगवती सतग २५ उदेसे ६।७ में छउं नियंठाने अधिकारे पुलाक १ पडिसेवणा कुसील २ ए २ मूल गुणको प्रतिसेवीहोय अनें उत्तर गुणको प्रतिसेवी होय मूल

गुणते ५ महा व्रतमें दोष लागे ते, उत्तर गुण जे १० विध पचखाणमां दोष लागे (अणागयं मइकंतं) इत्यादि वुकस मूलगुणको प्रतिसेवी नथी उत्तर गुणको प्रतिसेवी होय अने ऊपरला ३ नीयंठातो अप्रतिसेवी होय प्रथम ३ नियंठानें आराधिक बिराधिक दोनोंही कह्या वले पुलाकने तो सेना वउत्ता कह्यो अनें प्रतिसेवी कह्यो ते तुमे जाणता नथी तथा तुमें कहोछो जे पासत्था नेलु आहार करे तो ४ मासी प्रायछित आवे एहना परमारथ नय अभिप्राय जाणता नथी अनें निरावलका ५ मध्ये सुभद्रा आर्य्या अनेक बालक रमांडया अन्नादि खवाया पिण गुरणीनें उदीरीनें काढी नथी पोतें सयमेव नीकलीछे वले ज्ञाता १६ सुकुमालिका अनेक बार२ सरीर धोयो पिण गुरणी काढो नही प्रायछित बेइ कह्योछे पोतेंहीज न्यारी हुईछे वली दसमीकालक अध्येन ६ (दस अठय ठाणाइं जायं बालो वरज्झइ तत्थ अनयरे ठाणे निग्गंथाताउनस्सई १) इहां इम कह्यो जे थानक सेव्यो तेथी भ्रष्ट हुवो पिण इम न कह्यो जे साधपणाथी भ्रष्ट हुओ जिम एक मनुष्य नो एक देस छेदाणो ते देसथी भ्रष्ट कहिये पिण सर्वथी भ्रष्ट न कहिये इहां देसथी भ्रष्ट होय तेहने पहिला ७ प्रायछित कह्यो अनें सर्वथी भ्रष्ट होय तेहनें ३ प्रायछित ऊपरला कह्याछे (ताउ) सबदनो निर

णय करजो दसवी कालक अध्येन दूसरे गाथा ६ (इच्चेविताउ विणय जरागं) बले घणा ठामें (ताउ) देवलोगाउ [आउखयण] इत्यादि [ताउ] शब्द तेहथकी भ्रष्ट जाणवो तथा श्री जिन मारगमा व्यवहार प्रधान कह्यो ते सूत्र साखें कहेछे भरथें दिक्षा लीधां पछे भेप पालट्यो तो कांइ केवलज्ञान उपजा पछे मोक्ष तो न अटकती पिण विवहार राखवा मांटे ग्रहस्तनो भेप उतारयो १ युगलीया भाई बहन भोगकरे ते मरीनें देवलोक जायछे ते काम आज कोई करेतो महा अनार्थ कहवाय व्यवहार मारग लोप्या माटें जीवहिंस्यातो सरीखीछे पिण लोक विरुद्ध माटे ए कामतो महा दूषण कह्यो २ भनूजाणताहजे २ साधूनें मारस्यो तो पिण व्यवहार राखवा मांटे बरज्योछे ३ श्रावग आरंभ परिग्रहमा वेठोछे पिण चोराई वस्तु न लेवी कही विरुद्ध माटें लोक लजनीक मांटें ४ वीर जाणता तो हता साहिरा रोगनी स्थिति पाकीछे पिण विवहार राखवा तथा उपधना उपगार सारु जे २ उपध कीधो ५ साधू वरसातमें थानक गवेखे पिण एकली स्त्रीना घरमां ऊभो न रहे ६ मारगमें चालता हरीकाय ऊपर पगलागे पिण लोक व्यवहारें स्त्रीनो संघटो न करे ७ राजा परमुख मरणनी असिझाई कही ते पिण लोक विरुद्ध माटे८ केवली तो रात्रेदिन सरीखो देखेंछे पिण लोक व्यव

हार माटे रात्रे न चाले ९ मास अनें चोमास उप्रंत साधु एक ग्रामें रहे नही स्नेह बंधनना भयथी पिण रहनेमी राजमतीनें देखी क्षणमात्रमें डिग्या पिण साधू जघनतो ७० दिनको चोमासो करेहीज १० सतुकारमा सो जणानो आहार नीपनो ते माथी १ सेर आहार न ल्येवें अनें घरमां १० जणा निमितें आहार थयो तेमांथी सेर आहार लेवें सतुकारनो आहार लेनां लोकहेलें अने जिन मारगनी लघुतालागे ते माटें न लेवे ११ केवलीनें आहार सूझतानी बुद्धे असूझतो आणीदेतो नही करे अणें छदमसत सूझतानी बुद्धे असूझतो खावे पीवे १२ हिवे पहिलो आरो जस्ये बीजो आरो बेसस्ये तद सरव हुंडक मिली रीत बंधसे सूत्र पाठे जे आज पछे मंसनु आहार करे तेहनी छाया पिण वरजवी एहवी आयरीत व्यवहार बंधास्ये पछे प्रभूनों जन्मथास्ये १३ बले व्यवहारे अशुभछे तिहां सुधी उत्तम पुरुषनो जन्म पिण न थाय १४ बरसातमें गुरुने बाधा ऊपनी एक सिष्य हूं तो न प्रठू हिंस्यालागे अने बीजो सिष्य परठवे एएमां व्यवहार सुधकुण अने अराधिक कुंण १५ मल्लीनाथ स्वामी अबेदी हुंता पिण रात्रे आरज्यामें रहिता १६ साधु चारित्रथी जोग भागो छे काहले विहाणो गृहस्त थास्ये एहवोछे पिण ते भेलो आहार करेछे अनें ग्रहस्तछे पिण भाव चारित्र आयोछे तो पिण

नेलो आहार करे नही नेपन पहिर्यो ते माटें १७ सुकमालका साधवी सरीर पाउसियाथई पिण गुर णी उदीरीने न्यारी न करी व्यबहारमां हती ते माटे पोतानें मेलें जुदी थईछे १८ इत्यादिक व्यबहारमां बोल घणांछे ते सूत्रथी जाणवा प्रश्न ७० हिवे कोई एक मूढमती इम कहेछे जे परने हणवा नही हणावे नही हणता अणुमोदे नही ते दयाछे पिण मारता पासेथी छुडावे तो पापलागे उणरो जीतव वांछ्यो उ णरी सरागता आई अनें छउं कायरो शस्त्र तीखो कर्यो अनें नगवंततो रागद्वेप करमारा बीज कह्या छे ते नणी मारताने बंचावे अने बंचावीनें धरम जा णें तां तेहने १८ पापलागे एहवी परूपणा करीने लो कानाहीया दया रहित करेछे तेहनी साख प्रथमतो साधू ऊपरे नसीतनी देवेछे ॥ उदेसे १२ मे (जेनि क्खु कोलुण वमियाए अनयरे तस्स प्पाणजाय) इ त्यादि (जाव बंधइ बंधंतंवा साइजइ ॥ जे निक्खु२ मुयइमुवंतंवा साइज्जइ) जोवो (कोलुण) कहतां अनुकपा निमिते त्रस जीवने बांधे तथा खोलता प्रा यछित आवे इम कहेछे ॥ ते उत्तर ॥ इहां कोलुण स ब्दते आजीविका निमिते जाणवो पिण इहां अणुकं पानो अर्थ नही जाणवा ते साख दुःख विपाकसूत्र मध्ये पहिला अध्येने गोतम स्वामी गोचरी गया अ ने भिख्यारीने दीठो ते भिख्यारी (कुलण विडिग्राए)

भिक्षा मागेछे ते आजीविकाने अर्थे मागेछे पिण अणुकंपा निमते स्युं भिक्षा मागसी ७१ वले तुमक होगो जे जिणरिखीये अणुकंपा करी रेणा देवीके सा हमो जोयो तो अनुंकंपाया खोटीछे तेहनो उत्तर पा ठमेतो अनुकंपानो नामनथी ज्ञाता अध्येन ९ जि णरिखीयाने रेणा देवी (कलुण) वचन कह्याछे ते बिसयना दयामणा बचन सुणीने रेणा देवीना अनु कुल उपसर्ग थकी जिणरखीयानो (समुप्पन्न कलु णभावे) इहां [कलुण] सब्दे विषय विकार मोह भाव ऊपनो ॥ वली तेहनुं रहस्य इणपाठ आगे से लग जक्ष पूठथी नाख्या पछे तिवारे रेणादेवी आय ने निसंसाकहता निस्पृस ते दया रहित इण पदमें तो दयारूप अनुकंपा जाणवी अनेंन (कलुणा) ते करुणा मोहरहित जाणवी एवे पद जुदा कह्या पिण इहां (कलुण) शब्दे तो घणी ठामेछे उत्राध्येन ३२ गाथा १०३ में [कारुणदीने हीरमे चइस] इहा [कारुण] शब्द ते विषई जीव दयामणा दीसे इ हा [कारुण] नों अर्थ दयामणानोछे तथा सुयग डांग १ अध्येन उदेसे २ गाथा १७ मी [जइकालु णियाकासिया जइरोयं तिय पुत कारणा दवियं भि क्खुसमुठियं नोल भंतिणसंतावित्तय १] इहा पिण (कलुण) शब्द मोहनो कह्योछे वले एहज सूत्रें अ ध्येन ४ उदेसे १ गाथा ७ मी पद २ (कलुणा वि

णिय सुवग सित्ताणं) इहां पिण स्त्री मुः साधु समी पे आवीने कः करुणा विलाप विनय वचने करी ती जा पदमें कह्यो ते स्नेह बचन बोले इहा पिण (कलुण) शब्दे मोहज जाणवो तथा एहिज सूत्रे अध्येन ५ में उदेसे १ गाथा ७ मी [तेडज्झमाणाकलुणंथणंती] इहां (कलुण) शब्द रुदन आक्रंदनोछे तथा इणीज उदेसे गाथा १२ मी (सयायकम्मं पुण घम्मठाणं) इहा (कलुण) शब्द दयामणा ताप स्थानकनोछे वले इहां हीज गाथा २५ मी पद २ [अहस्सरेते कलुणं रसंते) इहा (कलुण] सब्द करुणा प्रलाप करवानोछे तथा इणें अध्यने उदेसे २ गाथा ४ पद ३ (तेडज्झमाणा कलुणंथणंति) इहां कलुण शब्द करुणा स्वररुदननोछे तथा इणेज उदेसें गाथा ८ पद २ (जंसोथतताकलुणं थणंति) इहां कलुण शब्द दीन स्वरनोछे वले गाथा १० पद ३ (ते सुलविद्धा कलुणंथणंति) इहां पिण कलुण शब्द रोजनोछे वले गाथा १२ मी पद २ [बुझतिते कलुणं रसंतं] इहां कलुण शब्द पुकारनोछे इत्यादि (कलुण) शब्द मोहरुदनने दीसेछे वले प्रश्न व्याकरणमें प्रथम संवर द्वारमध्ये पहिला महा व्रतनी ४ थी भावना मध्ये साधू गोचरी करतो थको [अदिणे अकलुणो] अः कहता दीन पणा रहित अः दयामणारहित गवेखणाकरे इत्यादि (कलुण) दया

दयामणानो दीसेछे ते माटें नसीत सूत्रमा कोलूण शब्द कह्यो छे ते आजीविकानिमिते तथा मोहनें निमत्तेज जाणवो अने त्रस शब्दमा ग्वादिक चोपदादिक जाणवा तेहनें मोहानिमतें ग्रहस्तादिक ऊपर मोह ते राखे ए खलाथका घासादि नाडकरस्ये तथा चोपदादिक ऊपरे मोह ए बांध्या भूख्यामरेछे छोडां घासादिकचरस्ये इम जाणी छुटा बांधे बांध्यो छोरू तो साधूने प्रायछित आवे पिण इहांतो निर्युक्तीमा बले टब्बामालिख्योजछे जे अगनादि पलेवडो लागा मूंकेतो दोप नथी पिण पाठमेंतो अगननो नाम ज नथी तो तुमे लायमासु काढता दोप कहोछो ते सूत्र देखाओ बले जिणरखीयानी अनुकंपा कहोछो ते घणुं खोटोछे बले अणुजोगद्वारमां कलुणरस कह्योछे ते जिणरखीयाने उपनोछे ७२ बले दया उथापक कहेछे उपासकदसामां चूलणीपियानद्वा मातानें बंचाई अनें सकमालते अगिमित्ता ज्ञारजाने बचाई तेहने पापलाग्यो तेहनुंछत भागो यासाख देखाईने लोगांनें भर्म पाडेछे तेहनुं उत्तर उपासग दसा सूत्रे अध्येन ३ चूलणी पियानें आधी रात्रसमे देवता कह्यो कतो तुं धरम छोडदे नहीतर थारी मातानें थारां मूंढा आगे ल्याई मारस्युं जद चुलणी पिया जाण्यो ए कोई अनार्य दीसेछे तो हूं पकडलुं जद ऊठीने चुलणी पिया देवताने पकडवा लाग्यो

जद देवता तो परोगयो अनें थांनो आपरे हाथे आ यो जद थांनानें पकडीनें मोटे २ शब्दे करीने को लाहल शब्दकी जद भद्रामाताने आवीनें कह्यो अ नें सिकमालने आगीमित्ता आय कह्यो (भगवए भ गंपोसह भगनियमे) कह्यो ते स्या भणी, कह्यो इ हांतो पोसहसालामां पढमा आदरीनें पोसामे बैठाछे सावजंना पचखाण कीधाछे अनें रात्रे मोटे शब्दकरी बोलवो नही अने बोल्याछे बले पोसामे (मम्ममाया इ मम्मं भारियो) इम जाणवो नही ते साख भगव ती सतक ८ मे उदेसे ५ में श्रावक सामाइक कीधा तिहा (तस्सणं एव भवईनोमेवमाया नोमेपिया नो मेभाया णोमे भगनी णोमेभज्जा णोमेपुत्ता णोमेंधुया णोमे सुणहा पेज्ज बंधणे पुणसे अवोछिणे भवई) इ म कह्या माटें सामाइकमे इमें न जाणवो तो पोसा मा पढमामां किम जाणवो अने थांतो जाण्यो (मम्मं माया) सिकडाल जाण्यो [ममंभारिया] ते माटे प्राय छित आव्यो लीधो पिण दयाना परिणाम आणीछडा वेतो पोसह न भांगे७३बले बादीकहे अर्णक श्रावकने समुद्रमा जातां देवता डिगावा आव्यो तिण कह्यो हे- अर्णककेतो तुं धरम मूकदे नहीतर थारी जिहाज समुद्रमें डबोयसूं जद अर्णक श्रावक धरम मूक्यो नही जो जीव बचाया धरम होयतो अर्णक धर्म क्यूं छेड्यो नही ते उत्तर अरे मूढ तुमारी घटमां ऐसी २

दयामणानो दीसेछे ते माटें नसीत सूत्रमा कोलूण शब्द कह्यो छे ते आजीविकानिमिते तथा मोहनें निमत्तेज जाणवो अने त्रस शब्दमा ग्वादिक चोपदादिक जाणवा तेहनें मोहानिमतें ग्रहस्तादिक ऊपर मोह ते राखे ए खुलाथका घासादि जाडकरस्ये तथा चोपदादिक ऊपरे मोह ए बांध्या नूख्यामरेछे छेडां घासादिकचरस्ये इम जाणी छुटा बाधे बांध्यो छोरू तो साधूने प्रायछित आवे पिण इहातो निर्युक्तीमा बले टब्बामालिख्योजछे जे अगनादि पलेवडो लागा मूंकेतो दोप नथी पिण पाठमेंतो अगननो नामज नथी तो तुमे लायमामु काढता दोप कहोछो ते सूत्र देखाम्रो बले जिणरखीयानी अनुकंपा कहोछो ते घणुं खोटोछे बले अणुजोगद्वारमां कलुणरस कह्योछे ते जिणरखीयाने उपनोछे ७२ बल दया उथापक कहेछे उपासकदसामां चूलणीपियानइ मातानें बंचाई अनें सकमालते अगिमित्ता नारजाने बचाई तेहने पापलाग्यो तेहनुंवत नागो यासाख देखाइने लोगांनें भर्म पाम्रेछे तेहनु उत्तर उपासग दसा सूत्रें अध्येन ३ चूलणी पियानें आधी रात्रसमे देवता कह्यो कतो तुं धरम छोडदे नहीतर थारी मातानें थारां मूंढा आगे ल्याई मारस्युं जद चुलणी पिया जाण्यो ए कोई अनार्य दीसेछे तो हूं पकडलुं जद ऊठीने चुलणी पिया देवताने पकम्रवा लाग्यो

जद देवता तो परोगयो अनें थांभो आपरे हाथे आ यो जद थांभानें पकडीनें मोटे २ शब्दे करीने को लाहल शब्दकी जद भद्रामाताने आवीनें कह्यो अ नें सिकभालने आगीमित्ता आय कह्यो (भगवए भ सपोसह भगनियमे) कह्यो ते स्या भणी कह्यो इ हांतो पोसहसालामां पढमा आदरीनें पोसामे बैठाछे सावजना पचखाण कीधाछे अनें रात्रे मोटे शब्दकरी बोलवो नही अने बोल्याछे वले पोसामे (मम्मंमाया इ मम्मं भारिया) इम जाणवो नही ते साख भगव ती सतक ८ मे उदेसे ५ में श्रावक सामाइक कीधा तिहा (तस्सणं एव भवईनोमेवमाया नोमेपिया नो मेभाया णोमे भगनी णोमेभज्जा णोमेपुत्ता णोमेंधुया णोमे सुणहा पेज्ज बंधणे पुणसे अवोछिणे भवई) इ म कह्या माटें सामाइकमे इमे न जाणवो तो पोसा मा पढमामां किम जाणवो अने यांतो जाण्यो (मम्मं माया) सिकडाल जाण्यो [ममंभारिया] ते माटे प्राय छित आव्यो लीधो पिण दयाना परिणाम आणीछुडा वेतो पोसह न भांगे७३वले बादीकहे अर्णक श्रावकने समुद्रमा जातां देवता डिगावा आव्यो तिण कह्यो हे अर्णककैतो तुं धरम मूकदे नहीतर थारी जिहाज समुद्रमें डबोयसूं जद अर्णक श्रावक धरम मूक्यो नही जो जीव बचाया धरम होयतो अर्णक धर्म क्यूं छेड्यो नही ते उत्तर अरे मूढ तुमारी घटमां ऐसी २

कुबुद्धी किहांथी उपजेछे ॥ आपणो धरम छोडीने प रकाने किम वचावसी अने इण लेखेतो थां उजाडमें कोई अनार्य पुरुस मिल्या तिणा तुमनें कह्योके तो तुम थारो भेष मूंकिद्यो नहीतर थाने सगलानें मार स्यूं तो कहो थें धरम मूंकिसो के नही १ तथा कोई क ग्रहस्त घृतनो नेमलीधो पिण नीलोत्तरीनो नेम नही लीधो जद साधूजन उपदेस दीधो तिवारे ग्रह स्थ बोल्यो माहिरे तो घी छूटोछे पिण हरीसुं काम चलेछे अने अबे घृतनो नेम भांजसुं अने हरीनोने म लेस्यूं तो कहो ए काम होयके नही २ तथा अवि ग्रहो मूकीने बियावच पिण करे नही ३ तथा बे सा धू हता तिणां काउसग कीधा प्रमाण सहित एतलें गुरु आया जद ध्यान मूकी अधूरोने सेवा सांचवे नही ४ तथा कोई स्त्री साधुनें कहिसी हे साधू तुं मु झनें भोगवो नही तो हूं मारिस्यूं तो कहो आपणो ध र्म किम मूकसे ५ तथा कोई मांसा आहारी धरमी पुरसने कहिसे जो तुं मांस खावे तो मूंकुं नहीतर मा रस्यूं तो कहो आपणो धरम किम मूकस्ये ६ तथा कोई बाणीयाने राजा कहिस्ये जे तुं अनक्ष खावे तो राजदेउं तो कहो अनक्ष किम खावस्ये ७ तथा सा धूने कोई ग्रहस्थ आधी रात्रने कहिस्ये थें बखांण मोठे २ शब्द करीने सुणाओतो थारो श्रावक होस्युं ॥ तो कहो साधूनें आधीरात्रिये बखाण किम सुणावे

स्ये ८ तथा साधूनें कोई गृहस्त कहिस्ये थें मुजनें
आहार देओतो हू थारे समीपे साधुपणो लेस्युं तो क
हो साधू गृहस्थनें आहार किम देस्ये ९ इत्यादिक
युक्ति घणीछे तिम अर्णक श्रावक आपरो धरम मेलीनें
पैलाने किम बचावसी १० तथा देवता पिण इम न
कह्यो जे तुं धरम नही छोडसी तो पिण जहाजरा स
र्व मनुष्यांने डबोयसुं ज्यारो पाप तोनें लागसी अने
देवतातो इम कह्योछे तुं मरिस्ये तो धर्म छोडदे इति
रहस्य तुमे अर्णक श्रावकनी युक्त कहो ते घणी अ
युक्ति कहोछो प्रश्न ७४ तथा केतलायेक दुष्टी कहेछे
जो अनुकंपा करयां धर्म होयतो नमीराज रिखीनें
इंद्र कह्यो थारी नगरी धन इस्त्री पुत्र घोडा हाथी
लोक बलेछे ते साहमो जोवो तिवारे नमीराजा साहमा
जोयो नही जो अनुकंपामा लाभ जाणता तो साह
मुं क्यों नही जोयो ते उत्तर इहां इंद्रेतो परिक्षा की
धीछे मोहनी करम उपसम्या नही उपसम्या माटे इ
हां अनुकंपानो नामज नहीछे हे स्वामी तुमारो अंते
वर बलेछे साहमोजोवो इम मोहनी उपजावीछे तिवा
रे स्वामी बोल्या मेंतो मुंक्याछे पिण इंद्र इम नथी
कह्यो जो थारी आख्यामे इमृतछे साहमो जोवो तो ब
लतोरहे अने जो इम कह्या हुंतातो नमीराज कहता
अहो ब्राह्मण मुजने या अनुकंपा करवी कलपे नही
तथा कलपे युंही नही कह्यो जो थेंए प्रश्न अनुकंपा

मां ठरावसो तो आगले प्रश्नमे महलनो कोटनो चो रनो वैरीनो भंडारनो एमां केही अनुकंपा घालस्यो ए तो सर्व प्रश्न परिख्यानाछे नहीतर इंद्रतो समदृष्टीछे इम किम कहिस्ये तुं साधपणो मूकीने प छे लीजे गढकोट महिल करावीनें चोराने बस करी नें वैरयाने बस करीनें यज्ञ करीने कोठार भंडार व धारीने तुं जाजे हे क्षत्री राज वले थें यो भेप मूकी नें तापस पणो आदरो इसा वचन साधूने सम द्रिष्टी किम कहिस्ये जो जाणज्यो एतो परिक्षाहीज कीधीछे जोईये नमीरायरिखीने समकित मोहनी चा रित्र मोहनीनें विपय कपाय उपसम्याछे के नथी उ पसम्या तुमे नमीरायनो नाम लेईने पोतानी आत्मा रूबोवोछो अने बीजाने पिण रूबोवोछो तो तुमे दया उथापक दीसोछो प्रश्न ७५ केई एक दया उथापक इम कहेछे जे साधूनें इम न कहिवो जीवांने मती मा रो तेहनी साख देवेछे सुयगडांग अध्येन२१ में (अ सेसंअखयंचावि सवे दुक्के तिवापुणो बज्झपाणा न ब ज्झति इति वायं न निसरे १) तेहनुं उत्तर अरे दिवस ना भूलाछे इहांतो एकांत पक्षनो कहीछे एकांत लो क शाश्वतछे एकांत अशाश्वतोछे इम न कहिवो ए लोक सर्व सुखीछे ए लोक सर्व दुःखीछे इम न कहि वो ए चोरछे परदारकछे ए नाहरछे एहनें मारो तथा मतिमारो इम पिण न कहिवो जो मारो कहेतो तेहना

प्रांण लायछे अनें मतमारो इम पिण कहेतो प्रत्यक्ष लोक विरुद्धछे ए चोर मुंक्युं थयो वले चोर परमुख अंकारजकरे तिवारे लोक इम कहे जेहवे ए चोर चोरी करेछे ते साधूनों उपगारछे इम चोरजारनुं पक्षी ठहिरयांवे ते माटें साधूजी मारो मतिमारो कांई न कहिवो पिण स्वभावे सहि जे कोई आवीने पूछे स्वामी चोर मारयानो स्यूं फलछे तिवारे साधू हिंस्यां ना फल कहिदेखाडे चोर छोरुयानो फल पूछेतो तेहवा फल कहि देखाडे वले तुमारे मत्ते चोर मारे अने उगारे एवे काम बरोबर छतो साधूनें कोई आवीनें कहे स्वामी मुझनें चोर मारवानो पचखाण करावो तो साधू सुखे करावे हिवे कोई आवीनें कहे सामी मुझनें चोर मारतां उगारवानो पचखाण करावो तो साधू न करावे जो वेहुंवाते बरोबर सेण अवगुणछतो वेहुंना पचखाण क्या नही करावे अने तुमें एक पक्ष खांचसो अनें निरत नही करस्यो तो सुयगडांग २१ में अध्येन [आहाकडानि भुंजंति अण मणस्स कम्मुणा उवलितंति जाणेज्जा अणुवलित्ते तिवापुणो १ एतेहि दोहि ठाणेहिं ववहारो न वज्जति ततेहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारंतु जाण ए २) तो जोवो इण माथामे कह्यो जे साधु आधा करमी आहार खावेतें करमासुं लिपावे अथवा आधा करमी आहार खायांसु करमाथी न लिपावे इम वे भाषा बोलवी वरजीछे के

नही पिण यां गाथामें तो २ नापा दोनोइ नही बोल
वी कह्वी ते रहेस्यछे साधू सुझतानी बुद्धें असूझतो
खायो सूझतानी बुद्धें करी असूझतो खायो तो कर्मा
सु नही लिपावे तथा कारणविसेषे आधा करमी आ
हार खायां निज आत्मा निंदतां करमांसूं न लिपावे
इस अरथ करवो तिम (वज्झपाणा न वज्झंति) एह
नो अर्थ पिण इम करवो जे चोरादिकने पकड्यां ले
जायछे तेहने वीचमे पडी इम न कहवो जे तूं चोर
ने छेरु इम कहेतो साधूनी संक्या ऊपजे ते भणी न
कहिवो तथा ठाकुर चाकरने मारेछे बाप पुत्रने मारे
छे भरतार स्त्रीने मारेछे राजा प्रमुख नाहरकी सिकार
खेलता जायछे इत्यादिकने वीचमे पडी इम न कह
वो जे एहने मतिमारो इति रहस्य [वधे पाणा]
ते प्राणीनो वध करो इमतो कोईने न कहिवो अने
(न वध्यति) अने [माहणो] ए २ स्युं फेरनथी
सूयगडांग अध्येन १७ साधूनें १३ नाम कह्या ते
मां [महाण तिवा] इसो नाम कह्योछे ते स्या भ
णी (महाणो) मतहणो किणही जीवने (नवधति)
वधमा हणवामा स्यू फेरछे वले ए गाथानो अर्थ एम
भासेछे ए लोक सर्व शाश्वतोछे ए लोक सर्व अशाश्व
तोछे ए लोक सर्व सुखीछे ए लोक सर्व दुःखीछे ए
लोक सर्व प्राणीनो वध करेछे ए लोक सर्व प्राणीनो
वध नही करेछे इसावचन साधूने बोलवा नही ए

कांत वचन कहेतो प्रत्यपक्षी टलजाय जो सर्व लो क प्राणीनो वध करेछे इम कहेतो संयतीको विछेद होय अने सर्व लोक प्रांणीको वध नही करेछे इम कहेतो असंजतीको बिछेद हो जाय ते भणी एकांत वचन बोलवा नही प्रश्न ७६ तथा केई एक दयाही ण कहेछे समुद्रपालजी महिलामें बेठाथकां चोरने मारवा लेजाता देखी वैराग भाव ऊपन्यो तिणे कह्यो (अहो असुहाणं कम्माणं) इत्यादि कही मातापे अज्ञा मांगवागया पिण चोरनेंतो नही छुडायो जो ध रम होवेतो किम नही छुडायो तेहनो उत्तर उत्तराध्ये. न १९ में मृगा पुत्र महिला वैठोथको साधूने देखी जाती समरण ज्ञान पाम्यो जद वैराग भाव ऊपन्यो मातापे गयो पिण साधूनें बंदना करवा नही गयो तो थारे लेखें साधूने बंदणा करता पाप लागतो दी सेछे पिण इम जाणजो मृगा पुत्र अने समुद्रपाल ए बेऊं वैराग पाम्या संजमरी आज्ञालेता विलंब नही करे ते भणी समुद्रपाल चोरने नही मुकाव्यो पिण चोरने नही मारेतो धर्मो लाभ जाणेछे तथा बाल १ श्रावक बोल्यो हो साधूजी आप कहोतो पोसो करुं आप कहो तो दिख्यालेऊं जद साधूजी दिख्या देवे पिण जेज निमितें पोसो नही कराबे तो जोउ पो सामें पापतो नहीछे सजमरी जेज नही करावे तिम दृष्टांत समुंद्रपाल ऊपरे जाणज्यो ७७ तथा केतला

इक इम कहेछे तुमें अणुकंपा कीधा धर्म होयतो नेम नाथ स्वामीनी अतिसयथी सो सो कोसमें देवतारो उपद्रव्य न होतो जद देवता द्वारामतीनें प्रजाली जद नेमनाथजी द्वारका बचावाने आया क्यूं नही तो जाणजो अनुंकंपा कीधां धरम नही इम कहेछे तेहनो उत्तर अहो माठी मतिना धरणहार एहवीर अयुक्ति करीने लोकाने दयाहीण किम करोछो भगवंततो केवल ज्ञानमे जठनें गुण देख्यो होसी तिण देसमे विहार करयो होसी तिहांनी क्षेत्र फरसणाछे ते टाली किम टले वली निश्चै नयमे होणहार किम टले केवल ग्यानी ज्ञानमे दीठाछे ते भाव होयछे भगवति सतक ७ उदेसे १ (जंजहा भगवया दिठं तंतहा परिणमिस्सति) इति वचनात् जो थे अणहोति युक्त मेलोछो तो ए लेखे रहनेमी राजमतीनो संयोग गुफामे मिलवो अने रहनेमिनो डिगवो नेमनाथ केवली जाणता थां राजमती आया पहिली साधांमें सामामेली जिताया नही तो तुमारे लेखें वानें भिगता राखवामें धर्म नथी पिण तुमनें मोहीनीनें उदे समझ काई नथी तो जाणजो द्वारका नगरिनो दाहदेतां वरजेतो घणो धर्मछे पिण भगवंत तो जिण देसमां जाता गुणदीठो तिण देसमें बिहार कीधोछे प्रश्न७८ तथा केतालाइक दुष्ट कहेछे जीवनें उगारयानो लाभ होय तों चेमाकोंणकनी लडाई थई तिणमें १ को

इ ८० लाख मनुष्य मूवाछे वले अनेक जीवमूवाछे जो भगवंत चेडावोणकने वरजता हुंता तो इतरा जीव वचता पिण वरजां धरम नथी ते उत्तर अरे अनुकंपाना द्वेपीयो भगवती सतग ९ उदेसे ३२ ज माली आवीने भगवतने कह्यो जे हुं केवली थयो तु म पासेंथी विहार कीओहतो अने केवली थको इहां हुं आव्योछु इहां भगवंतने जमालीनें पिछ क्यां न कीधो अने गोशालो आव्यो तिवारे भला भला उ त्तर प्रश्न कहीने पिछ कीधो तो स्युं इहां लाभ न होयतो तथा दसाश्रुत खंधमां पोताना साधू साध वीए नियाणा करया हता तेहनें प्रायछित देई शुद्ध करया वले महासतकनें प्रायछित गोतमने मेली दि वराव्यो इम शुद्ध कर्या अने अतगढमां नेमनाथ स्वामीयें ऐमंता अणगारने निमत परूपता शुद्ध क्या न करयो तथा निरावलिका ५ मा सोमल ब्रा म्हणने श्रावगने भिष्ट हुतो देख आप आया क्यों नहीं वले ग्याता १३ मे नंदण मणीयार श्रावक प णाथी भ्रष्ट हुता भगवंत समझावणे आया क्यूं नहीं वले कुंडरीकने शुद्ध करवामां सामान्य केवली आया क्यु नहीं भला एमा तो तुमारे लेखे कोईनें असंजम जीतव्य नहीं वधतो हतो कोईने अवगुण पिण न ही हुंतो साहमो गुण हतो आराधिकहो तो ए काम क्यां न कीधो पिण मूढ मती इम नहीं बिचारे भावी

पदार्थनें कोण मेट सके तथा भगवंततो चंपा नगरी
आवता गुणशीठो १ राणी काली सुकाली आदिदे
दिक्षा लीधी ते भणी भगवंत चपा नगरी पधार्या
छे तथा उववाई सूत्रमां कौणक आदि देईनें सर्व पर्व
दामां भगवंत उपदेस दीधोतो छहीज छ कायनें हिं
स्या करतां घणादुख पावेछे इत्यादिक घणो उपदेस
देई राख्योछे पिण कोणक क्रोधनें वसे संग्राम कीधो
छे तो भगवंत स्यूं करे पिण उण संग्रामनें छोड्यतो भ
गवंत लाभ घणो जाणेछे प्रश्न ७९ तथा केई एक
अज्ञानी इम कहेछे जे श्रेणक राजा राजगृही
मा अमार पडहो बजायो जीवाहिंस्या टलाई तेमां ए
कंत पापछे एतो राजानी नीतिछे पिण धर्म नथी ते
उत्तर अरे बाल अज्ञानी राजनीत होयतो राजनीत
ना पालणहारा जेतला राजाछे तेतला सर्वनें राजनी
त एहवी जोईये राजनीत तो सूयगडांग १८ में अ
ध्येंन अधर्म पक्ष वखाणो तिहा वर्णव्याछे तथा उववा
ई सूत्रे कोंणकराजानी राजनीत वखाणी जंबुद्वीपप
न्नतीये भरतेश्वरनी राजनीति बखाणी (तथणं चं
पाए नयरीए कुणिय नामं राया परिवसई महया हि
मवंत महंत मलय मंदर महिंदसारे अच्चंत बिसुद्ध
दीहराय कुलबंसे सुप्प सुते निरंतर राय लक्खण वि
राययं गमंगे बहुजण बहुमाण पुजिय सबगुण समि
द्ध खत्तते मुईए मुद्धाहि सिते माउ पियुसुजाय द

। पत्ते सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे मणुसिंदे
णवयपिया जणवयपाले जणवय पूरोहिहसेउक
केउकेरेणपवरे पुरिसबरे पुरिससिंहे पुरिस वग्घो
रिसासीविस पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थीए
अड्ढे दित्ते वित्ते विछिन्ने विपुल भवण सयणासण
जाण वाहणाइएणं बहुधन बहुजाय रूवरय आउ
। पउग संप्पउत्ते विछिडिय पउरभते पाणे बा
दासीदास गोमहिसगवेलगप्प भूय पडिपुण भंत
कोठागारा वागारे वलव दुवल पत्तामिते उहय कंटयं
महय कंटयं मलियकंटयं उधिय कंटयं अकंटयं उय
सतु मिलियसतु उठियसतु निजियसतु पराइय
सतु ववगए दुभिक्ख मारीय भय विप्पमुक्कं खेमं
सुभिक्ख पसंताडि बर रजप साहेमाणे विहराति) ए
राजनीतना लक्षण कह्या तथा सूयगडांग १८ में
घणो बिस्तारछे पिण अमार पम्हो वजाव्यो ए कही
राजनीति कही नथी राजनीत राज जमावे वैरिमारे
संग्रामजयपावे एछे तथा ठाणांगे ३ ठाणे (तिविहा
अता जोणी पंनता तंजहा सामदाम दंड भेद) बलें
रायप्रसेनीमां चित्त सारथीना गुण बखाण्या राज
ना कामचलावे तेहवा हता तेमांपिण अमार पडह व
जाव्या नही कह्यो वले ज्ञातामा अभय कुमारना गु
ण वरणव्या तिहां पिण अमार पडहो केरयो कह्यो
नथी ८० बले वादी कहसी जो जिन मार्गमा पम्हो

फेरवानों जीव उगारवानो आचार होवेतो बीजा रा
जा क्युं नही फेरयो ते उतर दसाश्रुतखंधमां ९ नि
हाणाना जाव कह्या १० में उदेसामां तिहां कह्यो रा
जाश्रेणक गावमा नगरमां ढंढेरो फेरयो जे जे स्थान
क घरहाट बखार पर्वस्थानक धातुना ठाम सोनी
नी लुहारनी साला इत्यादिक सूत्रमां ठामना नाम
घणाछे ते थानकनी आज्ञा देरावी जे जाई जेहनें जा
यगा होवेते वीर प्रभूने साधूनें रहिवा आपजो हिवे
अन्य तीर्थी गृहस्तनो गवेष्यो स्थानक साधुनल्यै तो
इहां श्रेणक राजाई थानक आश्री ढंढेरो फेरयो ए का
म कोई बीजे राजाइ कीधो नथी पिण ए काम जिन
मार्गीनाके साधूना द्वेषी मिथ्यातीना बले अंबड श्रा
वक अनेक दोष टालेछे बीजा श्रावक नथी टालतो
तो स्युं अंबड श्रावक ए काम रूडो करयो वले कृ
ष्ण दिख्यानी दलालीकरी बिजाराजा कोई नथी की
धी ते माटे कृष्ण दलाली करी ते रूडीके भुंडी इ
त्यादि जोवो तमे स्यानें कहोछो जे धर्म हायतो बी
जाराजा अमार पडहोवजायो क्युं नही हिवे श्रेणकनें
स्युं फलथयो ते कहो ढंढेरोफेरयो अनें साधूने थान
कनी आज्ञा देवरावी एहना फल भलाके भुंडा ए क
रणीशुभके अशुभ ए करणी बोधमती हुंता ते दिव
सनीके जिन मारग पांम्या ते पछली ते कहो ॥उपास
कदसामां ८ में अध्येंने (ततेणं रायगीहे नयरे अम

या कयाइं अमार घुंठेया विहोत्था) इति वचनात् इहां राजा समदृष्टी माटें अमारि पडहो बजायोछे अ मारिसब्द (मह्राणो २) सब्दमें मिलेछे अनें पड हो वजायोछे ते राजानो छादोछे जिम सुरियाभ देव ता भगवंतनो दरसण करवा भणी चिंतव्यो जद घंटा वजाडी तिणसुं सर्व देवताने ठीकपडे तिम श्रेण कपडहवजायो जद राजग्रहीमा ठीकपडी अमारि श ब्द ते दयानोछे ६० नाम मध्ये प्रश्न व्याकरणें प्रथ म संवर द्वारमध्ये ॥ अनें तुम इम कहोछो जे राजा श्रेणकनें कोई कारण पड्योछे उछव महोछव आदेदे ई तिणसुं पडहो बजायोछे ते उत्तर अरे अज्ञानीयो मुखहीसुं उछव कारण कहोछो पिण सूत्रमे होयतो दे खाडो तथा तुमे जोमीछे॥गाथा॥श्रेणक पडहो वजावी यो,इतरीछेहो सूत्रमें वात॥ कोई श्रेणकनें धरम कहे तिणनें लागे हो चोडें कूठ मिथ्यात ॥१॥इणमां तुम कह्यो श्रेणकनें धर्म कहे तिणनें कूठलागे अनें मि थ्यात पिण लागे तो जोवो ज्युंतो तुमारी वात तुम नेहीज आवेछे माहरी मा अनें वांझ तिम तुमें पिण अमारि इसा नामनें पाप कहोछो तिण लेखे कूठ मि थ्यात दोनोहीज लागेछे प्रश्न व्याकरणमा प्रथम आ श्रव द्वारना ३० नाम कह्याछे तेमां (अमारि) ना मतो नहीछे अनें दयाना ६० नाम मध्यें (अमाघा) तो इसो नाम दयानोछे तो श्रेणक योहीज शब्द

करायोछे तथा तुमे श्रेणकनें तो कारण बतायो तो इ
ण लेखे आगे राजा श्रावक हुंता ज्यारां राजमें कसा
ई वाडा निसंक हुंतो थारे लेखें बले मारवाडना अधिप
ति बिजयसिंघजी राजा तिणें मारवाडमां घणी हिं
स्याटलाई तो बिजय सिंघजीरे स्युं कारणछे ते वि
चारी जोवो तथाबले उत्तराध्येन १३ में चित्तमुनी ब्र
ह्मदत्त चक्रीने कह्यो (जई तंसिभोगे चईउअसत्तो
अजाय कम्मायं करे हिएयं धम्मेहिं ठिसव्वप्पयाणु
कंपी तोहोहिसिदे वोइयो वियोवी ३२] हे राजा तुं
भोग छोडवा असमर्थछे तो आर्य करम करो हे रा
जन्‌—ग्रहस्तना धरमनें विषे रह्यो थको सर्व जी
वनी अनुकंपा कर दया पाल इम कह्यो तो जोवोनें
चक्रवर्तने श्रावक पणोतो आवे नहीं तो यानें आर्य
कर्म करवो कह्यो ते मासादि परहरवो कह्यो तथा इ
सा बचन सुनीना सुणने कसाई खानो उठावनो ला
भ थावेके नही ते कहो पिण तुमेतो केहवाछो [ध
म्मपन्नवणाजासातं तुसंकंतिमुढगा] दया धम्मनी
परूपणा करता सकोछो अने दया उथापकतानहीं
संकोछो पिण जे कोई सम्यग दृष्टीहिंसा करता वरजे
तेहनें घणो लाभछे ते साख सूयगडांग १ अध्येन ९
(जंछिन्नं नयतवं एसा अणानियंठिया) इति बचना
त्‌ ८२ केतलाएक दुष्ट कहेछे जे श्रावक जीवहणवाथी
निवर्त्योछे, पिण श्रावकनें जीव उगारवो किहां कह्यो

छे ते उत्तर चित्तसारथी केसी कुमार प्रते कह्यो [ए वं भंते खलु अम्ह प्पयासेराया अधम्मिए जावसय म १ वियणं जणं वयस्सनो सम्मंकरं भरं पवत्तेई तं जइणं देवाणुपिया पदेसिस्सरन्नो धम्म माई खे ज्जा बहु गुणत्तरं खलुहोज्जा पदेसिस्सरन्नो तेसिणं बहूणा दुप्पय चउप्पय मिग्ग पसुपंखी सिरिसिवाणं घायताए बहत्ताए तजईणं देवाणुप्पिया प्पदेसिस्स रनो धम्मं माइंखेज्जा बहु गुणतरं खलुहोज्जा तेसिंव हुणं समण माहणाणं भिक्खुआणं तंजईणं देवाणुप्प या पदेसिस्सरन्नो धम्म माईखेज्जा वहुगुणत्तरं हो ज्जा सयस्स विजणवयस्स) पछे केसी स्वामी धरम पांमवाना न पामवाना ४।४ ठाम कह्या इहां चितस्वा रथीए कह्यो हे स्वामी प्रदेसीनें धर्मना समझावीतो घणो गुणनीपजे दोपद चोपद जीवानें मारतो रहस्ये इहां समणनें माहणने दुःख देतो रहस्ये पोतानादे सनें दंडकर जादा नही लेइ एहवो करो ए परजीव नें उगारवानों उपाय करयो ते किम करयो ते दोप द चोपद जीवानें वली हिंस्याकरे इमतो न जाणो पि ण इम जाणजो ए दुष्ट सद्द हणा चितसारथीनी नथी तिवारे ८३ वली कोई अग्यानी कहे जे एतो परजीवना गुण माटें नथी कह्यो चितसारथी इतो परदेसीना गुण खातिर कह्योछे ते उत्तर हे अज्ञानी यों जो प्रदेसीना गुणनी खातर कह्यो होवेतो (अ

धम्मिए अधम्माणुए अधम्मथित्ते अधम्मखाति अ
धम्मजीवे अधम्मपलोइणे अधम्मपलज्जणे अधम्म
सीले समुदायारे अधमेणे चेव वित्तिकप्पमाणे विहर
ती हणछिंद भिंदग तिग लोहिय पाणी चंडे रुद्दे खु
द्दे साहासिए उकंचण वंचण माया नियडे कूडकव
मे साई संप्पयोग बहूलो दूसीले दुव्वए दुपडि आ
णंदे आसाहुं सवातो पाणाति वायते अप्पडी विरए
जाव सवातो परिग्गहातो अप्पडि विरए सावातो को
हतो जावमिच्छा दंसण सल्लातो अप्पडि विरय सवतो
न्हाणु मदण वण गंध विलेवण सद्दफारिसरस रूव
गंध मल्लालंकारातो अप्पडि विरय सवतो सगड रह
जाणयुग गिल्लिथिल्लीसिया सदमाणिया सयणासयण
जाणवाहण भोग भोयण पाविरिथर विहातो अप्पडि वि
रय) इत्यादि अनार्य कर्म करेछे ते स्वामी तुमे सम
झावो जिम ये १८ पाप न सेवे एहवी आत्मानो क
ल्याण थाय एहवो करो इम कह्यो जोईये पिण इहां
तो ३ पाठ कह्या ते ३ उपगारना कह्याछे ते माटे सा
धूयें पिण परजीव उगारे तेहवो उपदेस देवेछे ते सा
ख सुंयगडांग अध्येन १७ में (सेवेमिजा अतिता
जेय पडुप्पना जेयआगामिस्सा अरिहंता भगवंता
सवेते एवं माइखाति एवं भासंति एवं पन्नवेंति एवं
परुवेंति सवेपाणाजाव सवे समाण हंत्तवाण अज्ञावेय
वा णपरिघेतवा णपरितावेयवा न उदवेयवा एवं स

ाम्मे घुवे णीतिए सासए समिच्चलोगं खेयन्ने पवे
दैति) इहां इम कह्यो सर्व प्राणीनें हणवा नही दु
। देवा नही मारिवा नही भगवंत इम कह्योछे यही
ापदेस साधुनोंछे ते माटे चितसारथी केसी अणगा
नें कह्यो परदेसीनें समझावोतो घणा गुण नीपज
यै ८४ वले वादी कहस्ये जीवाने स्युं गुण नीपजे
ाणतो प्रदेसीनें होसी नहीमारे ते माटें ते उत्तर अ
ो दया उथापक थारे लेखें केसी कुमार उपदेस न
ो देता अनें चितसारथी परदेसीनें नही ल्यावतो
ो केसी कुमारनें अने चितने स्युं दोप लागतो पि
ा जांणज्यो चितना परणाम एहवाछां एहजीवां दो
ागा चोपगादी समण माहणादि अनें देसमां कोई
ां दुःख नही होयतो वारु अनें परदेसी समझे तो
ारु वले प्रश्न व्याकरणमां प्रथम संवर द्वारमध्ये पा
ठछे [इमच सव जगजीवरक्खण दयाठयाए पाव
एणं भगतासुकहिता] इहां कह्यो ८४ लाख जीवा
नोनिं तेहना राखवानें विपय कारण एहवी दया ते
हने अर्थें भगवंत प्रवचन भला कह्योछे वले विचा
ो जोवो ८५ वले वादी कहेसी ए पाठतो पांचोई सं
र द्वारमध्यंछे तो स्यूं ग्रहस्तने परिग्रहनी रिख्या
नेमते सूत्र कह्याछे पिण कोई जीव नीवर्ते ते भणी
सूत्र कह्याछे इम कहेछे ते उत्तर अरे अविवेकीयो तुमें
सूत्र ऊपर निरत करोगो के नही इहांतो पाठमें फेर

छे (इमंच सवजग जीवरखण दया ठताए १ इमंच अलिय पिसुण फरम कडुय चवल वयण पगी रखण ठयाए २ इमंच परदवहरण वेरमण परिरखण ठया ए ३ अबंभ बेरमण परिरखण ठयाए ४ इमंच परि ग्गह बेरमण परिरखण ठयाए ५ पावयणं भगवता सुकहितं) इत्यादि जोवो पहिलामेतो जीव रिख्या कही १ दूजामे बचन रिख्या कही २ तीजामे पर द्रव्यहरण बेरमणनी रिख्या कही ३ अब्रह्मचर्यथी बेरनणनी रिख्या कही ४ पांचमामे परिग्रहना बेरम णनी रिख्या कही ५ वले ५ में संबरद्वारे साधू ६ कारणे आहार करे ते ६काय परिरखणठा इम पाठ छे तो जीवकी जतना माटे तो साधू पहिलो महावि रत पालेहीजछे तेहनी साख उत्तराध्येन २८ में गा था ३३ मे पद (ईरीयठाए संजम ठाएए) इहां क ह्यो इरीया सोधवाने अर्थे साधू आहार करेछे वले गाथा ३५ मी पद ३ जो (पाणिदया तवहेउ) इ हां कुंथुवादिक प्राणीनी दयाने हेते साधू आहारछां डे वले ठाणांगे ६ ठांणे पिण कह्याछे तो साधूजीतो ६ कायनी रिक्षा करेछे तो साधूनो एहवो इज उप देसछे माहणो २ किणही जीवनें तो श्रावगनों यह वोहीज उपदेसछे माहणो २ जीवनें तो चितसारथी नी यहवी सदहणाछे जे प्रदेसी राजा किणही जीवने दुःख नही देतो बारु ते माटे परदेसीने समझाव्योछे

८६ तथा तेरा पंथी इम कहेछे जे मारगमां बेइंद्रिया
दि तरुस जीव पडयो होवे तेहने देखी तडका थकी
छांहरे मूंके अनुकंपा करे तो ठाणांग मध्ये कह्योछे
१० प्रकारनो असंजमलागे ते माटें ए काम न करी
ये ते उत्तर ठाणांग मध्ये इम नथी कह्यो इम कह्यो
छे (पचंदिय समारंभमाणे दसविहे असंजमे केज्ज
ई) पांच इंद्रिना सुखथकी विछोडे अने ५ इंद्रीना दु
खथकी जोडे पिण समारंभ करतो थको हिवे समारं
भ नामतो मारवानोछे दसविकालक अध्येन ६ [त
म्हाएयतिवियाणिता दोसं दुगाई बढ्ढणं पुढवीकाय
समारंभं जाव जिवाए बज्जए १) इम छ कायनी
६ गाथा कहीछे तो जोवो ए सूत्रमां साक्षात हणानुं
नाम दुखदाधानुं नाम समारंभ कह्यो पिण सुखने हे
तें अनुकंपा करे तेहनें समारंभ किम लागो ते सा
ख दसवी कालक अध्येंन ४ [सेभिखुवा भिखुणी
वासेकिडंवा पयंगंवा कुथुवा पपीलियंवा हत्थंसिवा
पायंसिवा) इत्यादि पडिलेहणा करता तथा उपाश्र
य पूंजता घणा जीव देखी वेगला परिठवे (नोणंसं
घायमावज्जेजा) इत्यादि जतनासुं मुंके ते माटे समा
रंभ किम लागस्ये वले मूढ कहस्ये इरियावहि पडि
कमस्ये तिवारे (ठाणोठाण संकामियां) नो बोल आ
लोईयेछे तेमा ए पिण जीवनी अनुंकंपा करता ठाण उ
ठाण करयो ते पिण भेलो आव्यो एमा लाभस्यानो ते

छे (इमंच सवजग जीवरखण दया ठताए १ इमंच अलिय पिसुण फरस कडुय चवल वयण पगी रखण ठयाए २ इमंच परदवहरण वेरमण परिरखण ठया ए ३ अबंभ बेरमण परिरखण ठयाए ४ इमंच परि ग्गह वेरमण परिरखण ठयाए ५ पावयणं भगवता सुकहितं) इत्यादि जोवो पहिलामेतो जीव रिख्या कही १ दूजामे बचन रिख्या कही २ तीजामे पर द्रव्यहरण वेरमणनी रिख्या कही ३ अब्रह्मचर्यथी वेरमणनी रिख्या कही ४ पांचमामे परिग्रहना बेरम णनी रिख्या कही ५ वले ५ में संबरद्वारे साधू ६ कारणे आहार करे ते ६काय परिरखणठा इम पाठ छे तो जीवकी जतना माटे तो साधू पहिलो महावि रत पालेहीजछे तेहनी साख उत्तराध्येन २८ मे गा था ३३ मे पद (ईरीयठाए संजम ठाएए) इहां क ह्यो इरीया सोधवाने अर्थे साधू आहार करेछे वले गाथा ३५ मी पद ३ जो (पाणिदया तवहेउ) इ हां कुंथुवादिक प्राणीनी देयाने हेते साधू आहारक हे वले ठाणांगे ६ ठांणे पिण कह्याछे तो साधूजीतो ६ कायनी रिक्षा करेछे तो साधूनो एहवो इज उप देसछे माहणो २ किणही जीवने तो श्रावगनो यह वोहीज उपदेसछे माहणो २ जीवने तो चितसारथी नी यहवी सद्दहणाछे जे प्रदेसी राजा किणही जीवने दुःख नही देतो वारु ते माटे परदेसीने समझाव्यो

८६ तथा तेरा पंथी इम कहेछे जे मारगमां बेइंद्रिया दि तस्स जीव पडयो होवे तेहने देखी तडका थकी छांहमे मूंके अनुकंपा करे तो ठाणांग मध्ये कह्योछे १० प्रकारनो असंजमलागे ते माटें ए काम न करी ये ते उत्तर ठाणांग मध्ये इम नथी कह्यो इम कह्यो छे (पचंदिय समारंभमाणे दसविहे असंजमे कज्ज ई) पांच इंद्रिना सुखथकी विछोडे अने ५ इंद्रीना दु खथकी जोडे पिण समारंभ करतो थको हिवे समारं भ नामतो मारवानोछे दसविकालक अध्येन ६ [त म्हाएयंतिवियाणिता दोसं दुगाई वढणं पुढवीकाय समारंभं जाव जिवाए वज्जए १) इम छउ कायनी ६ गाथा कहीछे तो जोवो ए सूत्रमा साक्षात हणानुं नाम दुखदाधानुं नाम समारंभ कह्यो पिण सुखने हे तें अनुकंपा करे तेहनें समारंभ किम लागो ते सा ख दसवी कालक अध्येन ४ [सेभिखुवा भिखुणी वासेकिडंवा पयंगवा कुंथुवा पपीलियंवा हत्थंसिवा पायंसिवा) इत्यादि पडिलेहणा करता तथा उपाश्र य पूंजता घणा जीव देखी वेगला परिठवे (नोणंसं घायमावज्जेजा) इत्यादि जतनासुं मुंके ते माटे समा रंभ किम लागस्ये वले मूढ कहस्ये इरियावहि पडि कमस्ये तिवारे (ठाणोठाण संकामियां) नो बोल आ लोईयेछे तेमा ए पिण जीवनी अनुकंपा करता ठाण उ ठाण कर्यो ते पिण भेलो आव्यो एमा लाभस्यानो ते

उत्तर एतो [अभिहया वत्तीया लेसीयाथी मांडी जाव जीवीयाउ विवरोविया] सुधी हिंस्याना बो लछे चढती २ हिंस्याछे पंथें परमादनें बसे कोई जीव विराध्यो होवे तो आलोउंछूं (जेमेंजीव विराहिया) यहवो पाठछे पिण जेमे जीवा उगारीया इम नथी कह्यो ए १० बोलतो हिंस्यामाछे अने प्राणीनें अनुकंपा एतो प्रत्यक्षये दयाछे ८७ तथा तमें कहस्यो जे ठाणा उठाण करता दुख ऊपजे अने नहीं उठावे तो किस्यो दोष लागे ते उत्तर दृष्टांत साधू सुखें बैठाथका कोई श्रावके आवी कह्यो हे स्वामी तुमनें फलाणे गामें गुरुतेडाव्याछे इम कह्या छता साधू तावडामा विहार करे जद कहण वालानें गुण थयो कें अवगुण थयो ते कहो १ तथा चोमासामे सामाचार गुरुआदिकना सुणेनें विहार करी जायतो कहण वालाने गुणथयो के अवगुण थयो ते कहो २ तथा साधूनें सरीरें दुख जाणी श्रावकें ओपध आप्यो लेणें करी घणो दुःख उपनो रोगथयो अतिसारादिक भोगव्यो हिवे ए दातारनें आसाता दीधी ते माटें असाता थायके साता वेदनी बंधाये ते कहो ३ ॥ ८८ ॥ तथा तुमे कहोछो जे असंजतीनें तावडाथी उठाय छाहडी मूंकेतो असंजतीनी वियावच्च लागी अने असंजमजीतव वांछ्यो ते उत्तर अहो दया उथापक ए वेयावच कीधी कहिये के अणुकंपा आ

णी कहिये वेयावच सो कहिये जे गृहस्तनें असनादि
क देवे तथा हाथ पगादि सरीर मसले मोहममता क
रीने उपध भेखज बतावे ते वियावचछे पिण वेइंद्री
यादि जीवनें तावडाथी उठावता छांहडी मूंकतां वेया
वचकरी न कहिये अनुकंपा करी कहिये ८९ तथा
वले वादी कहिस्ये उणरो काम करयो ते माटें विया
वचलागी ते उत्तर उपासगदसा अध्येन १ में गौतम
स्वामी आणंदनें देखवा आया (जेणेव आणंदे स
मणोवासए जेणेव पोसह सालाइ तेणेव उवागछई
२ त्ता तत्तेणसे आणंदे समणो वासए भगवंगोयमं य
जमाणं पासई हठजाव हियये भगवंगोयमं वंदाति ए
वं वयासी एव खलुभंते अहं इम्मेणं उरालेणं धम्मे
णा संतिले जाय नोसंचाएमी देवाणुप्पियस्स अंति
यं पाउ भवित्ताण तिखुत्तो मुद्धाणेणं पाय अभि वंदि
त्तए तुभेणंभंते इछा कारेणं अभिण उयणं इउचेव
एह आणंदे तिखुत्तो मुद्धणेणं पाय सुवंदामी नमंसा
मी तत्तेणं भगवं गोयमं जेणेव आणंदे समणो वास
ए तेणेव उवागछति) इत्यादि पाठ इण पाठमें आ
णंदनो काम कह्यो तो तुमारे लेखें गौतमस्वामीनें
आणंदनी वेयावच लागी ९० तथा तुमें कहिस्यो
इहांतो आणदनें लाभ दीठो तिणथी पासेगया पिण
जीवनें उठावतां स्युं गुणथाय ते उत्तर तथा उत्तरा
ध्येन २९ में (वंदणयाएणं भंते जीवे किंजणई गो

थमा नियागोयं कम्मं खवेई उच्चागोयं कम्मं निबंध
ई) ए लाभतो आणंदने थाय अनें उत्तराध्येन २१
में समुद्रपालजी केहवाछे [सव्वेहिं भूयांहिं दयाणुकं
पी] अस्यार्थः—सर्व जीवनें विषे दः दयाइकरी अः अ
नुकंपा परजीवने दुःख देखीनें कंपइ परजीवनाहित
नु करणहारछेतो जोवोजे साधुजी थानकमां तथा एकं
त ठाम बेठाथकां त्रसजीवने तावमांथी मरतो जाणी
छाहडी मूकेतो अनुंकंपामा भिलस्ये ते बिचारी जोवो
९१ तथा केईएक कुबुद्धि हीयामां मोहला उपजावी
नें खोटी खोटी युक्तिकरीनें दया उथापकछे ते कहेछे
जो तुम जीव उवारवामें धरम कहोतो श्रावक थारे
पासे बेठो थको भवलखाय हेठो पडियो तेहनी ना
ड तूटेछे तो तुम बैठा करो क्युं नही तथा सेवा विया
वचकरो क्यों नही १ इमहीज बाईने बैठी क्ररि वि
याबच करो क्यों नही २ वलीकिसी पुरसरो पेट दूखे
छे जीव जायछे तुमे हाथ फेरो क्यूं नही ३ वले को
ई ग्रहस्त मार्ग भूल अटवीमा पडोछे तेहने मारग ब
तावो क्यूं नही ४ वले रोडी परमुखमा घणी लटा
कीडा किलबिलेछे तावडामा मरेछे थे पात्रा भरीने
उठाय छाहडी मूंको क्युं नही ५ वले साधू बेठाछे ति
हां तालाव नाडामे पांणीमे नील फूल जोकां माछ
ल्यां परमुखसुं भरयोछे इतरामे गायां भेस्यां पांणी
पीवाने आवेछे तो तामो क्यों नही ६ वले सुसली

यां धानरो ढिगलो पड्योछे तेहने कुतरा खावेछे तुमे बरजो क्यों नही ७ वले बनसपती गाजर मूली आदिदेई घणापडाछे तेहने बकरा खावेछे थे बरजो क्यों नही ८ मीनकी परमुख उंदरो पकडयोछे तुमे छोडावो क्यों नही ९ वले जीव छठायामें धरम होयतो आखोदिन योही कांमकरो क्यों नही १० इत्यादिक अनेक पाखंडी युक्ति कहिकहिनें लोकानें भरममा पाडेछे दयाहीण करेछे पिण सुध साधूनें पूछेतो सूत्रसाहमुंदिष्टी करेतो ठीक पडे पिण आपणा मूढाकी युक्ति लगाई माननें बसे पहुंताछे तेहनें दया धरम किमरुचे ते साख सूयगडांग प्रथम स्कंधे अध्येन १३ में गाथा ३ (जेयावि पुठापलियं चयंति आयाण मठंखलु वंचयंति आसाहुणो तेईहसाहुमाणी मायाणिएसिं ते अणं घातं) इहां इम कह्यो जे परमार्थना अजाणनें पूछ्यो तुम किणपासे भण्या जद आपणा आचार्यने गोपवीने माया कपटाइं करी कहे अमे स्वयमेव भण्या इसो कहे ग्यान न पामे असाधू थका साधू कहावेछे ते रुलसी संसारमे अणेघात पामसी ता एहनें समझाविजे अहो मंद बुद्धी तुमे १० प्रश्न आदिदेई कह्यो ते उत्तर इहातो साधूनो कलप होसी तिम करसी एकेने दुःख नही ऊपजे इसो काम साधूजी करे थे धर्मनो नाम कहोछो ते सुणो साधूने पहोर रात्र तांई उतावलो शब्द क

रीनें सिज्झाय करे थारे लेखें जो धर्म होयतो आ
खीरात सिझाय किम नही करे १ साधूने परमाण स
हित जयणासुं पडिलेहण करे थारे लेखे जो धर्म हो
यतो आखोही दिन पडिलेहण किम नही करे २ सा
धू मर्जादासे आहार करे थारे लेखे जो धर्म होयतो
घणोही २ खावो किम नही करे ३ साधूनें विहार
परिमाण सहित करवो थारे लेखे जो धर्म होयतो ए
कठिकाणे कदेइ रहिवो नही ४ साधूनें ध्यान करवो
थारे लेखे जो धरम होयतो ध्यानहीमें क्युं नही रहें
५ साधू वखाण उपगार निमतें करे थारे लेखे जो
धर्म होयतो घर घरमें जाय वखाण करे क्यों नही
६ इत्यादिक अनेक हेतूछे तो थारी जुगतके लेखें ए
युगति किम मिलस्ये तो जाणजो साधूनो कलप
होसी जिम करसी धरमनी करणी अनें भली जाण
वी साधु केईएक काम करे तो नही पिण करतो हो
यतो भलो जानें जाणेछे दयामाटे हिवे कोई अनुकं
पा करुणा कीधा पाप कहे तेहने पूछीये ए पाप कि
म थयो ९२ तिवारे ते कहे साधू आज्ञा नथी देतां
तेंमाटे तेहनो उत्तर साधूनी आज्ञातो साधूना क
ल पमा होवे कोई वरसातमे साधू दिसा जावा भणी
गुरुनी आज्ञामांगेतो गुरु आज्ञादेवे तो इहा निरव
द्यनी आज्ञाछे के छदमस्तनाकारणनी आज्ञाछे तो
आज्ञामे तुमे समझता नथी आज्ञा २ भेदछे आदे

स अनें उपदेस तिहां आदेसछे ते कार्यछे उपदेसते कारणछे पिण कहो कोई दुष्ट ग्राम नगरादि बालेछे अने कोई बरजेछे ए बेनें स्युं फलहोय ते कहो ॥ १ ॥ कोई सतीनासील खंडेछे अनें कोई खंड ताने बरजेछे ए बेहुंने स्युं फल होय ते कहो ॥ २ ॥ कोई अज्ञानी बनडुंगर बालेछे अने तिणने कोई बरजेछे ए बेहुने स्युंफल होयते कहो ॥ ३ ॥ कोई पाणीमे नाठा नाखेछे अने बीजो बरजेछे ए बेनें स्यूं फल होय ते कहो ॥ ४ ॥ कोई अनार्य कुतुहल निमते रूंख बाडेछे अने बीजो तेहने बरजेछे ए बेने स्युं फलहोय ते कहो ॥ ५ ॥ कोई गाडी ऊंट महिष परमुख कीमी नगरा ऊपर चलावेछे अने बीजो तेहने बरजेछे ए बेने स्यु फलहोय ते कहो ॥ ६ ॥ कोइ ठगपापी किणने फासी देवेछे अने बीजो तेहने बरजेछे इन दोनाने स्यूं फलहोय ते कहो ॥ ७ ॥ कोई खडगसु किणरो गलो काटेछे अने दुजो तेहने बरजेछे इन दोनाकू स्युं फलहोयते कहो ॥ ८ ॥ कोई पापी बाल हित्या करेछे अने तेहने बीजो बरजेछे उन दोनाने स्यू फलथयो ते कहो ॥ ९ ॥ कोई आठम चौदस पक्खीनें दिवसे नीलोतरी रांधण निमिते लायाछे अने बीजो तेहने बरजेछे ते दोनाने स्यूं फलहुयो ते कहो ॥ १० ॥ कोई हिंसकनें मृगनो टोलो बतायो अने बीजो ते हिंसकने मारता बरजेछे तो

वेहुने स्यूं फल थयो ते कहो ॥ ११ ॥ कोई माकण ना माचा तावडे मुकेछे अने बीजो बरजेछे ते बेहुंने स्युं फलथयो ते कहो ॥ १२ ॥ कोईक तो कीमी नग रमें अगन घालेछे अनें बीजो बरजेछे ते बेहुंने स्युं फलहोय ते कहो ॥ १३ ॥ कोई अनंत कायनो आ रंम करावेछे ओर कोईक टलावेछे ए दोनोने स्यूं फ लहोय ते कहो ॥ १४ ॥ एक जणोतो सूलीयो धान दलेछे बीजो तेहने बरजेछे तो दोनोने स्यूं फलहोय ॥ १५ ॥ कोईकतो दया निमिते ग्रहस्तने धर्म उप गर्ण पूंजणी मालादी देवेछे अने कोई देनां बरजेछे ते दोनाने स्यूं फलहोय ते कहो ॥ १६ ॥ कोईक अ नार्य ज्ञानना पाना बालेछे बीजो तेहनें बरजेछे ते बे हुंने स्यूं फलहोय ते कहो ॥ १७ ॥ कोईतो नितप्र ते परस्त्री तथा बेस्या गमन करेछे बीजो तेहने बरजे छे ते बेहुनें स्युं फलहोय ते कहो ॥ १८ ॥ कोई सि रदार सिकार खेले अनें बीजो तेहने बरजेछे ते बेहु ने स्यूंफल होय ते कहो ॥ १९ ॥ कोईकतो चोरी क रेछे अनें बीजो तेहने बरजेछे ते बेहुंने स्यूं फलहोय ते कहो ॥ २० ॥ कोईक साधूनी आसातना करेछे अने कोई बरजेछे ते बेहुने स्यू फलहोय ते कहो ॥ ॥ २१ ॥ कोई अनार्य साधूनें मारेछे अने बीजो ब रजेछे ते दोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ २२ ॥ को ईक अनार्य साधूनें रुखसें बांधेछे अनें कोईक छो

डेछे ते वेहुंने स्यूंफल होय ते कहो ॥ २३ ॥ कोई अनार्य साधूने श्वान लगावेछे अनें बीजो तेहने ब रजेछे ए दोनोने स्यूंफलहोय ते कहो ॥ २४ ॥ कोई बचनादिकना परीसा देवेछे अने कोईक परीसा देता नें वरजेछे ए दोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ २५ ॥ कोईक तो साधूने अटवीमे घालेछे अने बीजो तेह नें वरजेछे ए दोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ २६ ॥ कोई भूलांने मारगवतावेछे अने कोई मारग भूलावे छे ते दोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ २७ ॥ अनें बिमल बाहन राजासु मंगल साधुनें परीसादेसी अ नें बीजो तेहने वरजेछे तो तेहने स्यू फलहोसी ते क हो ॥ २८ ॥ कोई अग्यानी जीव सहित इधन बा लेछे अनें कोई तेहने बरजेछे ए वेहुंनें स्यूंफल होय ते कहो ॥ २९ ॥ कोईक राजा परजाने दुख देवेछे अ नें प्रधान तेहने वरजेछे ए दोनोने स्युफल होय ते कहो ॥ ३० ॥ कोईक तो वैरीने मारवा सारु जहर देवेछे अने कोई तेहने दया आणीनें वरजेछे ए वेहुं नें स्यूंफल होय ते कहो ॥ ३१ ॥ कोईक जहर खाइ नें मरेछे अने बीजो तेहने वरजेछे ते वेहुने स्यूफल होय ते कहो ॥३२॥ इमहीज फासीखाई ३३ पाणीमें पडी ३४ शस्त्र प्रहारी ३५ डुगरथीपडी ३६ अग नमे पडी ३७ जीभकाटी इत्यादि अकाम मरणे मरे छे अने कोई दया आणी वरजेछे ए वेहुने स्युंफल

होय ते कहो ॥ ३८ ॥ कोई कुव्यसनी मांस मदिरा घणो खावेछे अने बीजो वरजेछे ते दोनोकुं स्यूंफलहो य ॥ ३९ ॥ कोईक आरंभी आरंभ घणो करे अनें कोईक तेहने बरजेछे ते दोनोने स्यूंफल होय ते क हो ॥ ४० ॥ कोईक कसाई बकरा परमुख घणा मारे छे अने कोई दया आणी तेहने वरजेछे ए दोनोने स्यूंफल होय ॥ ४१ ॥ कोईक अचखु कीमी नगरा ऊ परे पगदेवेछे अने कोईक तेहने वरजेछे ते दोनोनें क्या फल ॥ ४२ ॥ कोईक तो घरमें कलहराड पर मुख घणी करेछे अने बीजो तेहने वरजेछे ते दोनो ने स्यूंफल ॥ ४३ ॥ कोईक माहोमाही कटेछे अने द या आणी छुडावेछे ते बेहुंने स्यूफल होय ॥ ४४ ॥को ईकना गायाना बाडामे अगनलागी कोईक दया आणी वाडो खोलेछे तेहने स्यूंफल होय॥४५॥कोईक डुंगरथी मनुप हेठो पडेछे अने कोईक पडतांने दया आणी झलेछे तेहने स्यूफल ॥ ४६ ॥ कोईक श्वानपरमुख र स्तेमें सूतोछे इतरामे गाडो आयो जद कोईके करु णा करी श्वान उठाई दीयो तेहने स्युंफल ॥ ४७ ॥ कोइ मंजारी परमुख उंदरो पकडेछे कोईक दया आ णी छोडावे ते दोनोने स्यूंफल होए तथा वचनसु छुटावेतो तेहने स्यूंफल लागे ते कहो ॥ ४८ ॥ कोई क गरीबने मारेछे कोईक मारताने वरजेछे ए बेहुंने स्यूंफल होए ॥ ४९ ॥ कोईक जाला बरछी सेल पर

मुख घडेछे ओर कोई दया आणी तेहने वरजेछे य हदोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ ५० ॥ कोईक तो रांड परमुख घणी करेछे ओर कोईक तेहने वरजेछे ए २ स्यूफल होय ते कहो ॥ ५१ ॥ कोईक तो घर में अणछाणो पाणी पीवेछे ओर कोईकहे हे नाई अणछाणो पाणी मत पीवे ए दोनोने शुफल होय ते कहो ॥ ५२ ॥ कोईक साधूना दरसन करता वरजेछे अने कोईक दरसण करावावानणी बीजाने तेडी ले जायछे ए दोनोने स्यूंफल होयते कहो ॥ ५३ ॥ कोईक तो उघाडे मुख बोलेछे अने कोई वरजेछे ए दोनोनें स्यूंफल होय ते कहो ॥ ५४ ॥ कोईक तो आगधूवाडे करी त्रस जीव मारेछे ओर कोई तेहने वरजेछ ते दोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ ५५ ॥ कोईक तो नीलो बाघ बाधीने मारेछे अने कोई तेहने वरजेछ इनदोनोको स्यूंफल होय ते कहो ॥ ५६ ॥ कोईक वागरी मछी पकडवा बैठोछे इतरामे कोईक वरजेछे ते दोनोनें स्यूंफल होय ते कहो ॥ ५७ ॥ कोई हिरणारे वास्ते तीर मारेछे ओर कोई तेहने वरजेछे ते दोनोको क्या फलहोय ते कहो ॥ ५८ ॥ कोईक अनार्य कर्म करेछे अने कोईक तेहने वरजेछे ए दोनोने स्युंफल होय ते कहो ॥ ५९ ॥ कोईक पूरस उपवासकर मांगतो होय ओर कोईक तेहने वरजतो होय ते दोनोने स्यूंफल होय ॥ ६० ॥ कोईक तो होली

परमुख लगावेछे ओर कोईक वरजेछे ते दोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ ६१ ॥ कोईक श्रावकने का चा पाणीनो नेमछे अब मारगमें प्यास लागी जद काचो पाणीतो मने थयो इतरामे अचित पाणी कोईक पावे काचो पाणी टलायो एहने क्या फल लाग्यो ते कहो ॥ ६२ ॥ कोईक श्रावक गामथी आव्यो आरंभ करवानो मनथयो इतरामें दूजो श्रावग अचित आहार खवाय आरंभ टलायो एहने स्यूंफल लाग्यो ते कहो ॥ ६३ ॥ कोईकना उन्हां पाणीमे माखी पडीहोय कोईक करुणा करी बतावे तेहने स्यूंफल होय ते कहो ॥ ६४ ॥ कोईकनी तेलनी मुण फूटी धणी दीठी नही अने आगे रूई अगन पडीछे तिणमे तेल जावेतो अगन घणी वधे आगे घणाजीवानो घमसाण होय इतरामे किणी अनुकंपाकरी फूटी मुणने बताई अब कहो अनुकंपामें स्यू थयो ते कहो ॥ ६५॥ इत्यादिक अनेक प्रश्न दया उथापकाने पूछीया प्रश्न॥९३॥जद दया उथापक खिष्ट हुयां थकां इम कहे यां सर्व बोलामे घणो पाप करे तेहने घणो पाप मारता वरजे तेहने थोडो पाप कोईकनो कायायोग सावज अनें मनयोग निरवद्य कोई एक असंजम जीतव्य वांछे ते माटे लाय लगावे तेहने घणो पाप अने बरजे तेहने थोडोपाप पिण पुण्य नही इम कहेछे तेहना उत्तर अरे अग्यानीयों तुमतो दयाही

एठो तिणसुं तुमने संपली बुद्धिआवे नथी पिण जो वो न्नगवती सतग १२ उदेस १ जयंती पूछ्यो (सु सतंन्नंते साहु जगरीयंतं साहु जयंति अत्थे गईया णं जीवाणं सुततं साहू अत्थे गईयाणं जगरीयंतं साहु सेकेणठेणंजयंति जे इम्मे जीवा अहम्मिया अहमाणुया अहंमिठा अहम खाई अहम्म पलोई अहमपलजणा अहम्म समुदायारा अहम्मेणं चेवि त्ति कप्पे माणा बिहरंति ए एणं जीवा सुतासमाणा नो बहुणं पाण न्नुयजीव सत्ताण दुखणयाए सोयण याए जाव परियावणयाए एवदंति) इत्यादि पाठठे इमहीज दुवलानो आलसीनो पाठठे तो इहां अध मी जीव अवलीया सुता आलसी रूडा कह्याठे ते सापेक्ष वचनठे जे अधरमी जीवतो सरवथा न्नूंडाठे पिण जागतानी अपेक्षायें सूतान्नला कह्या जागता थका घणाजीवाने [अमम्मियाहिं संजोयणाहिं संजो यतारो न्नवति] इत्यादि अधमकारी संजोगना प्रे णाइं करी प्रेरइ घणा जीवाने मारस्ये ते न्नणी सूता थकां थोमा पाप करेठे ते माटे सूता न्नला कह्या वी जुं सूताथकां स्यूं न्नलो काम करेठे तिम घणो घणो आरंन्न टालेतो तेहने बीतरागे गुणना पक्षमा गवे रूयो जिम किणिनें तृपालागी काचो पांणी पीवा मा ड्यो हतो पिण अरिहंतनें बचनें करी दया आणी पीछो मूंक्यो तृपानेंही खमाई जद उन्हो पांणी पीधो

हिवे ऊंनो पाणी पीधो तेहमा स्यूं गुणछे पिण उष्णो दकना योगथी सीलो पाणी टाल्यो ए पाप टलावा नो कारणलो ऊंनो पाणी थयो १ वली विद्या भणवा नों कारण ते गुरुछे तेहनो गुणलेणो के नही २ जिम आपरे घणो पाप टलेतो वारू ॥ ९४ ॥ वली वादी कहसी इमतो हम कहाछाइज पिण पलारा अर्थात् दूसरारो पाप टलावामें स्यो गुण ते कहो ते उत्तर जिम कोईकनें राजा दंडे तिणें सो रूपीयामागे सो रूपीयानो खत लिखावी लीधोछे तिवारे घरना धणी जाणीजे सो रूपीया म्हारागया एहवें कोई प्रधान बीचमें पडी ५० रूपीयातो मुकाया अनें ५० देवराया अब कहो प्रधांन ऊपर भूंडो जानें जे एणें पापी म्हारा ५० रूपीया खोवराया इम जाणेके इम जाणे शाबास भाई तुमे माहिरा ५० रूपीया छूटको कराव्यो तुमें माहिरे घणो गुण कह्यो इम जाणीने गुणलेय के अवगुण लेय इण द्रिष्टांते कोइ अज्ञानी केउं अर्थात् पूर बालतो हतो तेहनें ऊढणो देई अगनीनो आरंभ छुटायो ए देणहारो मुहतानी परे अवगुणनो करणहार काहिए कि गुणनो करणहार काहिए अरे अज्ञानीओ वस्तु वस्तु थकी मापी जोउ ९५ वली तुमें कह्यो जें जीव हणसी तेहनें पाप लागसी पिण असंजमीने छुटावेतो स्युं गुण उपजे ॥ ते उत्तरः भगवती सतग ७ में उदेसे ६ गो

तमे स्वामी पूछयो हे भगवांन जीव कर्कस वेदना क
र्म किम करे (गोयमा पाणाइवाएणं जाव मिथ्या दंस
ण सल्लेणं) ए १८ पाप सेवतो कर्कस वेदनी उपाजैं
इम २४ दंडके उपारजे १ हे भगवान जीव अ क
र्कस वेदना किम उपाजैं (गोयमा पाणाई बाय वेर
मणेणं जाव परिग्गह वेरमणेणं कोह विवेगेणं. जाव
मिच्छा दंसणसल्ल विवेगेणं) ए १८ पाप थानकनो
पचखाण करतो थको जीव अकर्कस वेदना उपाजैं ए
क मनुप विना ओर दडकमें न उपाजैं संजमना अ
भावमाटे २हिवे हे भगवान साता वेदनी कर्म किम उपा
रजे (गोयमा पाणाणु कंपयाए भूयाणुकंप्पयाए जीवा
णुकंपयाए सत्ताणुकंप्पयाए वहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं
अदुकखणयाए असोयणाए अजुरणयाए अतिप्पणया
ए अप्पिहणयाए अपरिता वणियाए)इम साता वेदनी
उपाजैं२४दंडकां साता वेदनी करम उपाजैं ३हे भग
वान जीव असाता वेदनी कर्म किम उपाजैं (गोय
मा परदुखावणयाए) इत्यादि अ साता वेदनी उपा
जैं २४ दंडका अ साता वेदनी उपारजे ४ हिवे इहां
तो प्राणीनी अनुकंपा करतो थको साता वेदनी वां
धतो कह्योछे इहां मारतानें बंचावे तो अनुकंपामें भि
लसी तिवारे वादी इम कहें अनुकंपा तो नही मारे
ते कहिये ते उत्तर अरे अविवेकीयो नही मारे ते
तो पाठ कह्योहीजछे (अदुक्खणया) इत्यादि ९६

बलीबादी कहस्ये नारकीयादि देवता ५ थावर ३ वि कलेंद्री ए केहने गेमावेछे ॥ ते उत्तर ॥ अहो मंदबुद्धि कठेहीतो गेडावा आश्री कठेही प्रणामाआश्री जाणि वो कठेही सत्ता आश्री जाणवो इम थे एकेंद्रीनो नामलेइ दया उथापक गे तो कहो एकेंद्रीमा क्रोध कांई करेछे इम मान माया लोभ कांई करेछे इम ४ संज्ञा कांई करेछे तो जाणजो सत्ता आश्रीछे तथा ठाणांग उववाई परमुखमें नारकादिक गतमें जावणरा चार चार बोल कह्याछे (महा आरंभीयाए १ महा परिगहियाए २ पचिंद्रीए बहेणं ३ कुणिसमहारेणं ४) ए बोल सेवेतो नरकमें जाय १ (माइल्लयाए १ नियडिल्लयाए २ अलिय वयणेणं ३ उक्कंचणया बंचणयाए ४) ए ४ बोलां करी तिर्यंचमा जाय २ [नगति भद्दियाए १ पगइ बिणिया ए २ साणुकोसियाए ३ अमछरियाए ४) ए ४ बोलाकरी मनुषमें जाय ३ (सराग संजमेणं १ संजमा संजमेणं २ अकाम निज्जराए ३ बालतवो कम्मेणं ४) ए ४ बोलां करी देवमां जाय॥एवं सर्व१६ अत्र कह्याछे तो अव कोई दया आणी छुमावेछे थे केहा बोलमें घालस्यो ते कहो बले सूत्र उववाईमें पूछ्यो (जीवेणंभंते असंजय अविरते जाव एगंते सुत्ते उसण तस्स पाणघाती कालमासे कालंकिच्चा णेरईएसु उववज्जंति हंता) इत्यादि कह्योछे पिण जीव बचायामें पाप होयतो

सूत्र काढी देखाम्रो प्रश्न ९७ वली वादी कहेंछे ते तुम जीव वचायामें धर्म जाणो तो कोई कसाई पर मुखनें आहार कपडा दे दे जीव वचावो क्यो नही पिण जीव बचावामें धर्म नही तो थे आहार पानी नही द्योछो ते उत्तर अहो मूढ मती थे सर्वथा भूला छो साधुनो आहार पानी देवानो कलप ग्रहस्तनें न ही तथा तुम्हारी कहण ऊपर दृष्टांत कोईक ग्रहस्त कहे मोने आहार पाणी खवरावो तो संजम लेऊं ज द थारे लेखें साध पणो देवामें धर्म होयतो देवो क्यों नही १ तथा किणही ग्रहस्त घरमा आहार पा णीनें साधू आया जद ग्रहस्त कह्यो अठेवेसो मो नें वखाण सुणाउ अब तिहा साधूजी वेसे नही जद थारे लेखे बखाण सुणावामा धर्म होयतो बेसे क्यों नही २ तथा किणी ग्रहस्ते कह्यो मोने कपडो देवो तो संजम लेऊं जद थारे लेखे साध पणो देवामें धर्म होयतो देवो क्यु नही ३ इत्यादि अनेक युक्त छे जो जाणजो साध संजमरो काम भलो जाणेछे पिण आहारादि ग्रहस्तनें देवे नही तिम कसाईनें समझाइ जीव बचावे पिण आहारादि देवानो कल पनथी ॥ ९८ ॥ वली दया उथापक कहेछे अयोग दृष्टांत देवेंछे जो जीव बचायामें धर्म होयतो उजाड में नाहरनें मारी नाखेंतो घणाजीव वचें इम मंजारी सिकरा परमुखनें मारेतो घणाजीव वचजाय जीव व

चायानें धर्म जाणेंतो मारे क्यों नही इत्यादि खोटा दृष्टांत देवेछे ते उत्तर अहो मुगध थे केहवा कहोछो [विसोहियते अणका ह्यंति जे आय भावेण विया गरेजा अठाणिए होई बहुगुणाणं जेनाण संकाय मुसं वदेजा ३) इहा इम कह्यो निरमल शुद्ध मार्गनें ते मिथ्याती विपरीत पणें आघोपाछो कहे जे कोई पोतानें अभिप्राये जिम तिम परूपें ते अज्ञानी घणाने अस्थानक भाजन होय जे अज्ञानी संक्या इं मृषा परूपे इम कह्यो ते तुम्हारी सर्द्धा दीसेछे जिम किणही अजान नरनें कह्यो जो साधूनें असनादि ४ आहार देवामें धर्म होयतो सचित अचित तथा फासु अप्रासुक घणो घणो देवो क्यों नही जद साधयें समझाव्या हे भाई जिस वरतके साधु त्यागीहै ते देणी तिसमें धर्म नही और अप्रासुक दीधा मिश्रफल होयहै एकंत धर्म तो जो साधुनें कलपे तिस माहिं होयछे जिम जीव बचावामें धर्मछे पिण नाहर मंजारी सिकरा सर्पने मारीनें बचावामें धर्म होय नही जो अनुकंपा परिणाम होसीतो जीवनें किम मारसी डाहाहोय ते विचारी जो ज्यो ॥ ९९ ॥

वली दुष्ट खोटा दृष्टांत देवेछे दोय गणका कसाईना वाडामे २ हजार पचेंद्री मारता दीठा जद एक गणकातो आपरो सर्व गेहणो देइ हजार पंचेंद्री छोडाया अनें बीजी चोथो आश्रव सेवीनें हजार पंचें

स्त्री गेहणा पाया अब धर्म कहो केहनें हुवो इसो दिष्टांत देई दया उथापेछे—ते उत्तर इण लेखें २ जणी थारे दर्सण करवा भणी आवता बीचमें चोरा पकडी जद एक जणीतो सर्व गेहणो देई छूटी थारे दर्सण भणी १ बीजी थारे दर्सन भणी चोथो आश्रव सेवाय छूटी थारो दर्सण कीयो २ अब कहो थारा दरसन करयामें धर्म होयतो दोन्यानें होसी अने थारा दरसन करयामें पाप होयतो दोन्यानें होसी जद वादी कहे म्हारा दर्सनमातो धर्मछे पिण ए काम कीयो ते अधर्मछे ते उत्तर अहो अधरमीयो इमतो हम कहागां जीव बचावामे धर्मछे पिण ए काम कीयो तिणमा गेहणो देई जीव छुटाया तेहना परिणाम अनुकंपानाछे ते किम गेहणो अजीवछे ते माटे अने बीजीनें हिस्यानो काम घणोछे ते तो काम करवोज नही अने जे स्त्री मैथुन सेवास्ये तेहने घटमा अनुकंपा किम रहसी भलाहोय ते विचारी जो ज्यो॥ प्रश्नोत्तर॥ १०० ॥ केतलाएक इम कहेछे साधु तथा श्रावक नव जोगे करी जीवहणे नही इणवें नही हणतानें भलो जाणे नही यहवो अभय दानतो कह्यो अने मारता बचावेतो अनुकंपा थई ए बेमां दानतो घणो अभय दाननोछे ते तो नहीहणा माटें थयो अनुकंपामे केहो अभयदानछे ते उत्तर भगवती सतक ५ में तथा ठाणांगें ३ प्रकारे अल्प आऊखो

बांधे ते जीवहणता १ झूठ बोलता २ अफासु अणे सणीक आहार अर्थात् अफासु यानें जिम भोजन पाणमें ससस्त्र नही फरस्यो स्थावर जीव सहित जै से पाणी कच्चाहै नतो उसमें अग्नीसस्त्र प्राप्त हूवा न राखादि धोवनसें प्रासुक हुवा तथा सागभाजी आदी नूनादिसें प्रासुक होजाताहै सो जिस्में फर सा नही ते अप्रासुक तथा बीजादि वस्तुका दूसरा फर्स बिना प्रासुकनही ऐसा अफासु आहार आपे तो ३ तथा ३ प्रकारे सुभ दीर्घ आऊखो बांधे जीवनही हणेतो १ झूठ नही बोलेतो २ साधूने प्रासूक आहारदि आपेतो ३ इहां पूर्वअलप आऊखा बांधे ते आयुष्य पिण शुभ बाधे अर्थात् सुखदायक अशुभ नही बांधे कारणक्या भगवती सूत्रके आठमें सत कके छठे उद्देसेमें कह्योछे ते पाठ (समणो वासग स्सणं भंते तहारुवं समणं वा माहणं वाअफासुएणं अणेसणिज्जेणं असणं पाणं जावपाडिलाभे माणे किं कज्जई गोयमा बहुनिर्यासे निज्जराकज्जइ अप्पत्तरा एसे पाव कम्मे कज्जंते) ॥ अर्थ ॥ साधूनें अफासु अणेषणीक आहार देतां अलप अर्थात् थोडासा पाप अनें बहोत निर्जरा होय तो देखियेकि बहु नि र्जरा वालो जीव एवो अशुभ अर्थात दुखदायक आऊखा बांधे नही ओर भगवती सूत्रमें रेवती श्रा विकाने महावीरनो लोहीठाण मेटवा वास्तें बीजोरा

पाक बनाव्यो ओर घोडां वास्ते कोला पाक कराया पिण भगवत केवलनाणना धणी सिंहा अणगारप्रतें जणाव्यो तो कोलापाक लीधो पिण रेवती भाव सें तो करे माणे करेकी अपेक्षा दान दे चुकीथी तो पिण अलप आऊखो बांध्यो नही परत तीर्थंकर गोत्र बांध्योछे ॥ इहां बादी कहेछे ए ठामे जीवहणेतो अलप आउखो बांधे १ नहीं हणेतो दीर्घ आऊखो बांधे २ हिवे उगारे तो स्यूं फल पामें ते कहो ते उत्तर जीवने उगारवो अर्थात् बचाना ते नही हणवामे पैठो जेणे जीव उगारयो तेणे मरणना भयथकी मुकाव्यो के भयमा नाख्यो वले तुम कहो झूठ बोले ते अलप आऊखो बांधे १ झूठ न बोले ते दीर्घ आऊखो बांधे २ साचा बोलाना स्यूं फल ते कहो १०१ जद बादीकहे मारता बचावे तो त्रीजे करणे हिंस्यालागी तेहनो उत्तर अहो अजाण तुम भूलागो तुम ३ कर्ण ३ जोगमे पूरा समझता नथी ॥

हिवे १८ पाप ऊपर ३।३ बोलरे मांहि यंत्र लिखीये वे ॥ तेहथी जाणीये ॥

प्रणातिपात ९ योगें करे	९ जोगे नहणें	९ जोगें बुडावे
मृषावाद ९ जोगे बोले	९ जोगे न बोले	९ योगे वरजे
अदत्तादन ९ जोगे करे	९ जोगे न करे	९ जोगे वरजे
मैथुन ९ योगे सेवे	९ जोगे न सेवे	९ जोगे वरजे
परिग्रह ९ जोगे सेवे	९ जोगे न सेवे	९ जोगे वरजे
क्रोधमान माया लोभ ९ जोगे करे	९ जोगे न करे	९ जोगे वरजे
रागद्वेष ९ योगे करे	९ जोगे न करे	९ जोगे वरजे
कलह अभिख्या न पिसुन परिप रिवाद रतारति ९ जोगे करे	९ जोगे न करे	९ जागे वरजे
मिथ्यातदंसणसल्ल ९ जोगे सेवे	९ जोगे न सेवे	९ जोगे वरजे

(अफासु) अर्थात् सचितादि तथा अशुद्ध स
रीरको दुःख कारक आहार देतां अलप आऊखो
बांधे १ अफासु न आपे २ फासु आपे ३ तो दीर्घ
आऊखो बांधे एहना एक फल जिम जीवहणेतो अ
लप आऊखो बाधे १ जीव न हणें अनें मारतांनें व
चावेतो दीर्घ आऊखो बाधे ॥ ३ ॥ १०२ ॥ हिवे वा
दी कहेछे पोतें जीव न हणवो पिण आगलारा झग
डामें क्यों पडणो तेहणो उत्तर साधू नव जोगे जीव
नें हणतो नथी पिण आगलानें उपदेस देवेछे ए उ
पदेस नही हणयामा के पारका जीव उगारवानो ते
कहो १ महा सतकने दोप लाग्यो तिवारे भगवंत
गौतमनें कह्यो (नोखलु कप्पई गोयमा समणो वा
सग्गस्स अपछिम जाव झुसीयस्स सरीरस्स भत्तपाण
पडिया इखियस्स परोसंतेहिं तयेहिं अणिठेहिं अकं
तेहिं अप्पिएहिं अमणुन्नेहिं अमणामेहिं वागरितेहिं
तं गछहणं देवाणुप्पिया तुम्मं महासयहि समणो वा
सय एवं वदेह नोखलु देवाणुप्पिया कप्पई जाव त
न्नं तम्मं एयस्स ठाणस्स आलोयेहिं जाव जहारिहं
च पायछित पडि वज्जाहि) इहां भगवंत गौतमने मे
ळीने प्रायछित देवायो थारे लेखें भगवंत पराया झ
गडामें क्यो पड्या वली भगवती सतग १२ में उदे
से १ भगवंतना समोसरणमां सर्व श्रावकां संख
श्रावकने हिलवा निंदवा लाग्या तिवारे भगवंते वर

ज्या (माणंअज्जो तुम्मे संख समणो वासगं हिलह निंदह खिंसह गरह अवमन्नह संखेणं समणो वास ह प्पियधम्मेचेव दृढधम्मेचेव) इहां भगवंत संख श्रावकने हिलवाथी वचायो तो मरताथी वचावानो स्यूं अटकावछे वली श्रावकांने हिलणां करतां वरजा तो जीवमारतां वरजे तेहनो स्यूं अटकावछे २ व ली उपासगदसा ६ अध्ययने भगवंत आपणा सा धु साधवीने कह्यो (अज्जोसमणेहिं णीगंथेहिं दुवाल सग्गं गणिपडिगं अदिज्जमाणेहिं अणउत्थियाए अठे हिय जाव निप्पठसिण वागरणं करेंति ते) इहां क ह्यो तुमे अन्य तीरथीने पिष्ट करो जिम जस पामसो तो तुम्हारे लेखे इहां भगवंतने स्युं गुण थयो पिण भगवंतरो मिथ्यात मिटावणरो उपाय कह्योछे जिम भगवंत जीवाहिंस्या टलावानो उपाय कर्योछे वले मारगमां कीभी हरीकाय पडीहोय पोते तो टालीने हटाद्यां पिण बीजाने कह्यो इण तस्स ऊपर पग मति देवो ए उपदेस न हणानो कि जीव उगारवानो ५ तथा केसी गुरु चित सारथीने परदेसीनो कीधो पा पतो न लागतो पिण एतला उपाय करी समझाव्यो ए उपदेस माहणोमां के जीव उगारवानो ६ तथा द साश्रुत खंधमां १२ पडिमामे पाठछे साधु अगनी मे बलतो होवे तिवारे कोई साधूने काढेतो साधु वो हनी अनुकंपा काजे निकले पिण इम न जाणे ए प्रा

णो नीकलीने स्युं धर्म करसी अने हूं नही निकलूं तो ये जेलो वलसी तो कोई मोने हिंस्या लागती नथी इम न जाणे सुखे नीकले ए उगारवामाटे किमा हणो माटे ७ ॥ १०३ ॥ वली वादी कहस्ये जीव उगारामे लाभछे तो तुम ठाम ठामना जीवाने पूंजता क्यां नथी धर्मनो कामतो तुमने पिण करवोछे ते उत्तर–धर्म करवो ते खरो पिण अमारो कलप होय जिम करा पिण तमें धर्म उपदेस देवामें लाभ जाणोछो तो घर घरमें उपदेस क्यां देता नथी वले पहररात पछे उंचे शब्दे सझाय नथी पिण करो तो जाणजो आपणो कलप होसी तिम करसी १०४ वली वादी कहस्ये साधूनो कलप नथी पिण श्रावक सामाइक पोसामा विरतमे बेठोछे तिवारे पूंजतो क्या न फिरे ते उत्तर–सामाइक पोसा मांहितो और पिण घणा रूडा कारज अटकाव्याछे पोसह सामाइक मातो साधु मुनिराजनें दान पिण देवरावे नही अनें दूजो खुलो थको दान देवे तिणने भलो जाणेछे तिम सामाइकमें पिण जीव बचावे तेहने भलो जाणेछे इत्यादि जो ज्यो ॥ प्रश्न ॥ १०५॥ तथा केई अज्ञानी इम कहेछे साधुजीतो उपदेस देवेछे ते निरजरा निमितें देवेछे पिण जीव उगारवा माटें नथी देता ते साख देवे सुयगडाग १७ में (सेभिक्खु धम्मे किट्टे माणेणो अणस्स हेउ धम्मं आइखेज्जा णो पा

एस्स हेउंधम्मं आईखेज्जानो वत्थस्सेहेउं धम्मं आ
इखेज्जाणो लेणस्स हेउं धम्मं आइखेज्जाणो सयणस्सहे
उंधम्मं आइखे जाणो अन्नेसं विरुव रुवाणं काम
भोगाणंहेउं धम्मं आइखेज्जा अगिलाय धम्मं माति
खेज्जा ननत्थ कम्म निज्जरठयाए धम्मं माइखेज्जा)
तें उत्तर ए पाठतो सुधछे पिण तुम रहस जाणता
नथी इहांतो खुसामदी तथा आजीवका निमतें धर्म
नही सुणावे ए मनुष धनवंतछे येहनें सुणाऊंतो मुझ
नें मनोवांछित आहार देस्ये इम जाणी नही सुणावे
तथा तुम कहस्यो जे पाप कर्मथी मुकावानो उपदे
सदेणो दसवीयाल अध्येयन ४ गाथा (कहंचरे क
हंचिठे कहंमासे कहंसुय कहंभुजंतोभासंतो पावकम्मं
नबंधई १ जयंचरे जयंचिठे जयंमासे जयंसुय जयंभु
जंतो भासंतो पावकम्मं न वंधई ॥२॥ १०६ ॥ इहां
पाप कर्म न वंधवानो उपदेसछे पिण जीवरिख्यानो
उपदेस किहांछे ते उत्तर अहोमंद बुद्धि तुमनें अज्ञा
न तिमर छायोछे इहां जतना कही ते आपकी के
पारकी ते कहो भगवती सतग २ उदेसे १ खंदक
दिख्यालीधा भगवंतने पूछ्यो तथा ग्यातायें १ मे
घ कुमारे पूछे संजमनी विध भगवंत कह्यो (यवं
देवाणुप्पिया गंतवं चिठियवं णिसियवं तुयटियवं भु
जियवं भासियवं यवं उवठाबय उठाए पाणेहं भुते
हिं जीवहिं सतेहिं संजमेणं संजमियवं असिंचणं

अठे णोपमादेयवं) इहां कह्यो प्राणीयादि ४ तेह सर्वनी रिख्याते संजमेइ परवरतवो ए पाठ ओर पिण घणा सूत्रमेछे ॥ १०७॥ वले वादी कहेछे पृथ्वी काय जीवछे ते दयाछे के पृथवीकाय नें नही हणे ते दयाछे १ इम पाचोंही थावर जीवछे ते दयाछे कि याने नही हणे ते दयाछे ५ इम वेइंद्रीया पचेंद्री लगें जीवछे ते दयाछे के याने नही मारे ते दयाछे ९ वले वादीकहेछे ए ९ जीव आपने आऊखे मरेछे ते पापछे के याने मारे तेहने पापछे १८ तो जाणजो मारे तेहने पाप, नहीमारे तेहने दया स्वभावे जीवमरे ते पाप दया नथी इत्यादि कुबुधीनी वाता कर दया उथापेछे पिण जाणजो अठें गोता चलतो नथी हिवे उत्तर कहेछे इमतो अम कहांछाइज मरे ते पाप न थी जीवे ते दया नथी पिण मारे तेहने तो पापछे अ नें दया आणी मारेनही तेहने अने मारता दया आ णी बचावे तेहने दयाछे अने जो थे नही समझो तो युक्तसुणो पाना ऊपर अक्षर मांड्या ते ज्ञानछे कि अक्षरमे समजे ते ज्ञानछे १ रजोहरणो दयाछे के रजोहरणाथी दया पाले तेहनें दयाछे २ गुरु विनोछे के सिष्य विनो करे ते विनोछे ३ साधनो भेखछे ते साधपणोछे के माहिला परणामें साधपणोछे ४ गृ हस्थ वखाण सुणेछे ते उपदेसछे के सर्दहे ते धर्म रु चे ते धर्म उपदेसछे ५ पद्मासन बेठो ते ध्यानछे के

ध्यावे ते ध्यानछे ६ गुरवादिक वेयावच्चछे के चाकरी करे ते ते वियावच्चछे ७ मुपती ते जैणाछे के उघाडे मुखें दया परिणामे नही बोले ते जैणाछे ८ गुरुवादिक मोखछे कि धर्म करे जद मोखछे ९ इत्यादि अनेक युक्तिछे तो जाणजो कार्ण बिना कार्ज किम नीपजे जोतुम कारण नही मानोतो पाना परमुख ९ बोल किम सेवोछो अनुयोगद्वारमें (से किंत्तं कारणेणं २ तं तावो पडिस्स कारणं नोपडो तंतु कारणं एवं वीरणा कडस्स कारणं नकडो वीरणा कारणं मयपिंडो घडस्स कारणं न घडो मयपिंडस्स कारणं) ए पाठछे तो जोवो कारणछे तिहां कारजनी भजना: अर्थात् होय वा न होय ॥ अनें कारजछे तिहां कारणानी नीयमाछे माटीनो पिंडछे ते घडानों कारणछे पिण घडो ते माटीनो कारण नही तिम जीवछे ते दयानो कारणछे पिण दयाछे ते जीवनो कारण नथी तो जाणजो मारता जीवने देखीने करुणा आणी बचावेछे ते एकंत अभय दानमें भिलेछे सुयगडांग १ अध्येन ६ [दाणाणसेठं अभयप्पयाणं] इति वचनात् बले पन्नवणा पद २२ में (कहिणं भंते जीवा पाणा तिवा तिकिरिया कज्जंति गोयमा छसुजीवनीकायसु) इम पाठछे तो जाणजो जीवआश्रीतो दया पालेहींजछे ॥ प्रश्न ॥ १०८॥ तथाबले पाखंडी दया उथापक दृष्टांत देवेछे ते सुणो अनें किणहीक साहूका

रके २ बेटा हुता जिणामे एक बेटो तो रिण माथें करे १ अनें बीजो बेटो ते रिण चुकावे २ अब बाप किणनें वरजे अने किण ऊपर राजीहोय इम पूछे तेहनी रहस एछे पहलाने बरजे १ दूजा ऊपर राजी होवे २ जिम कसाई परमुख बकरानें मारेछे ते तो वैर लेवेछे अने बैर करो ते रिण चुकावेछे ते नणी साधु श्रावग मारताने बरजेतो तेहनो रिण किम कटे इसो दृष्टांत देवेछे तेहनो उत्तर अहो दुरबुद्धी इण थारे लेखेतो पशुपंखी आरजानें पकमी होयतो छुडावणी नही १ साध साधवी रोगमे पडा होयतो वैयावच्च करणी नही वेदनी घणी निरजरे तिणलेखें २ साधु साधवीने त्रुख त्रिपानो परीसो होयतो श्रावकने आहार पाणी बहरावणो नही परीसामे कर्म घणा निर्जरे तिण लेखे ३ इत्यादि अनेक युक्तिछे थारा द्रिष्टांतरे लेखे सर्व दया धर्म विछेदत होयजाय १०९ तथा वादी कहिस्ये आप २ ना करम करी पचेछे किण २ नें छुटावसो तेहनो उत्तर जे आपणे बस पड्होता तेहनी रिस्या करसी जिम अनंता जीव डूबेछे पिण साधुकने वाणी सुणस्ये तेहने तारस्ये ॥ ११० ॥ वली वादी कहेछे जीव बचायामे धरम होतो तो नेमनाथजी पशु छुटाव्या किम नथी पशुनें देखी पाछाहीज फिरगया पिण छुडाव्यातो नथी ते उत्तर अहो तुमें सूझतो नथी अंतर हीएमें जे

उत्तराध्ययनमे पाठछे २२ में अध्ययनें पशूवाना
वाडा देखीनें नेमनाथजी सारथीनें पूछ्यो (कस्स
अठाइमेप्पाणा ए ते सवे सुहेसीणो वाडेहिं पिंजरेहिं
च सन्निरुद्धा ए अत्थेहं १६ अहसारही तउ नण
ई ए एन्नद्दाउपाणिणो तुज्झं विवाहकज्जंमी नोयावेय व
हु जणे १७ सोऊण त्तस्स सोवयणं बहु पाणि वि
णासणं चिंते इसे महापन्नें साणुक्कोसेजिईहिय १८
जइ मज्झं कारणाए हणंति सुव हुजिया नम्मे एयं
निस्सेसं परिलोगेनविस्सई १९ सो कुंम्लाण जुय
लं सुतगंच महायसो आनरणाणिय सवाणि सारहि
स्स पणामए २०) इहां कह्यो नगवंत सारथीना व
चन सुणीनें अनुकंपा दया करी जीवाना हित बांछे
अनें १९ मी गाथामें स्वयंते पोतायनी दयाछे हिवे त
में कह्योछो जे जीव नही वंचाया पोतेंहीपाग फिरा
छे ते कहो फिरया ते तो आपणी आत्माना हितु वां
छे पिण जीवाना हितवा किम हुया ते कहो तथा त
में कहस्यो जे नही मारया ते नणी हेतु वांछे तो ठी
क पिण (जई मज्झं कारणाए) ए पाठछे तथा आ
पणें अर्थे जीव हणे तेहने वरजणो कह्योछे ते साख
आचारांग २ अध्येंन उद्देसे ९ में [सियासे परो
कालेण अणुप्प विठस्स आहाकम्मियं असणंवा ४
उव करेज्जत्रा उपखडेज्जत्रा तंचेव गातिउ तुसणीउ उ
पेहेज्जा आहमेव पचई खिस्सामी माइठाणं संफासे

नो एवं करेज्जा) इहां इम कह्यो कोईक ग्रहस्त सा धूना सगपणना रागे करी आधा करमी आहार नि पजावे अने साधू जाणें हिवणातो नही बरजुं मोनें देसी तरे निखेदसुं इसोजाणी मोनें रहेतो कपटाई लागे तो स्युं करे [सेपुवामेव आलोयज्जा आऊसो तिवा भागिणितिवा नोखलुमे कप्पई आहाकम्मियं असणंवा ४ भातयवा पाइतयवा माउवकरेहिं माउव खेडेहिं सेसेवंभव दत्तस परो अहाकम्मियं असणंवा४ उवखमेत्ता अहट्टदलएज्जा तह पगारं असणंवा ४अ फासुयं लाभेसते नोपडिगाहेज्जा] इहां कह्यो पहलें ही बरजे मतकरो मतरांधो इहां जोवो ने साधूजी आपणे अर्थे हंस्या करता बरजेछे तो नेमनाथजी प शुवानें मुकाव्याहीज जाणज्यो वले दसवीयाल अ ध्येन ५ उदेसे १ में [सम्मद्दमाणिपाणाणी वीयाणि हरियाणीए असंजमं करंतथा तारिसंपरिवज्जए२९] इहां इम कह्यो साधूनें आहार देवाभणी ग्रहस्तणी वेइंद्रीयादिकने दमती थकी वीज अने धान हरी ते दरभादिकनें दमतीथकी असंजम ते साधु निमतें सावज्जनी करणी करती थकी एहवो जाणीने साधु ते स्त्री परतें बरजे यो असंजम मतिकर इहां बरज वो चाल्योछे तथा तुम इहां-इम कहस्यो इहांतो आ हार लेणो बरजे तो तुम्हारे लेखे पाठते आगे ठाम ठामछे (दिंतियंपडि आईरके नमे कप्पई तारीसं)

एहवो तो नथी तो जाणज्यो इहां स्त्रीनें आरंभ
रता वरजीछे तो नेमनाथनें पशु मुकावी दिख्याल
धीछे तथा तमे कहसो छोडाव्यानो पाठ नथी ते
तर–बरसी दाननो इहां पाठ किहांछे पिण ज
णजो तीर्थंकर होसी ते संवछर दान देसीहीज योह
नेमछे ॥ १११ ॥ वले वादी कहेछे दया उथापे
मेघकुमार पूर्वे हाथीनें भवे एक सुसलारी दया अ
नुकंपाकीधी ते चालीछे पिण माडलामेंतो घणाजी
बचावाछे त्यारी अनुकंपानही कही ते उत्तर अहे
तुम सरीखा सूत्रना अजाणछो ते सूत्रना शब्द
समजता नथी पिण जोवो ग्याता १ भगवंत मेघ
कुमारने कहेछे हे मेघ तुम पूर्व भवे (जेणेव मंडले
तेणेव पहारत्थ गमणाए तत्थणं अन्ने बहवे सीहाय
वग्घाए वग्गए दीईया अच्छा तरछा परासारा सियाल
विराला सुणहा कोला ससा कोकंतिया चित्ता चिल्लल
पुव्वं पविठा अग्गिभया भिदया एगय उविल धम्मेण
चिठंति तत्तेणंमेघा जेणे वसे मंडले तेणेव उवागछई
२ ता तिहिं बहूहिं सिंहेहिं जाव चिल्लय हिय एगय
उविल धम्मेणं चिठंति तत्तेणं मेघा तुम्मं पाएण गत्त
कंडुइ सामिति कट्टुपाए उखित्ते ते सिचणं अंतरं
सि अन्नेहिं बलवंतेहिं सत्तेहिं पणोलिज्जमाणे॥२॥सस
ए अणुप्पविठे तएणं तुम्मे मेहागाइं कंडुइ २ त्ता
पायपाडिनिखमिस्सामि तिकट्टु त तंससयं अणुपविठ

ससंपासासि पाणाणुकंप्पयाए भुयाणुंकंपयाए जीवा णुकंपयाए सत्ताणुकंपयाए सेपाय अतराचेव संधारिए णोचेवणं णिखित्ते तत्तणं तुम्मे मेहा ताउ पाणाणुंकंप याए जाव सत्ताणुकंपयाए संसारे परितीकय माणुसा उयए निबंधे) इहां पाठमेंतो पाणाणं ४ इत्यादि ब हु बचनछे तो ४ जाणज्यो सुसानें देखीनें सर्वनी अनुकंपा आईछे जो एक सुसानी अनुकंपाहोयतो (सस्ससस अणुकंप्पणठयाए) इम पाठहोवे ते सा ख भगवती सतग १५ में गोशालानी भगवंत अ नुकंपा कीधी ते पाठ (तएणं अहं गोशाला तव अ नुकंप्पणठयाए) इहा एकनी अनुकंपा कही वलीज्ञा ता १ धारणीराणी (तस्सगब्भस्स अनुकंप्पणठया ए जयं चिठई जयं आसेणति ययं सुविंति आहारं पियए आहारे माणी) इत्यादि इहां पिण गर्भनी अनुकंपा कही अंतगढमा हरिणगमेखी देवता सुल सानीं अनुकंपा करी कही वळे कृष्ण डोकरानी अनु कंपा कीधी कही वळे उत्तराध्येनमे हरकेसीनी अनु कंपा कीधी कही तो जोवो इत्यादि अनेक ठामें तेह नीं अनुकंपा कीधी तेहना नामछे तो सुसांनी ठामें सुसानो नाम किम नथी पाणाणं ४ इसो बहु वचन नों पाठछे तो जाणजो जेतला मांडलामे निजरथा दीठा ते सर्वनो पाठछे तेहनी साख ज्ञाता १८ में (त त्तेणंतस्स धम्मई रुईस्स इम्मेयारुवे अजत्थिय जई

त्ताव इमस्स सालइयस्स जाव एगंसि विलंसि पखि
त्तंसि अणेगाई पिपीलिगा सहस्साति ववरोविज्जंति
तंजईणं अहंएयंसालितियं थंभिल्लंसिसव्वंणिसरामि तो
णं बहुणं पाणाणं ४ बहु करणं नविस्सति तंसयं ख
लुममेयंसालियं जावगाढं संयमेव आहारित्तए ममं
चेवणंए सरीर एणंणिद्याउ तिकट्टु) इहां पाठमें बहु
णंनो पाठछेहीज वले किडयां सिवाय नर पिण घणा
जीवनी हिंस्या जाणी धर्मरुचीजी जहरनो आहार
खायोछे तो जाणजो मेघकुमार पूर्व नवे घणानी अ
नुकंपा कीधी संनवेछे ॥प्रश्न ॥ ११२ ॥ तथा तुम क
होछो जे अनुकंपा आपरी करवी पिण पारकी कर
वी किहां कहीछे ते उत्तर अरे अज्ञानीयों आपकी
अनुकंपातो सुयगडांगमें १७ में अध्येनें कहीछे (य
वंसेन्निक्खुः आतठी आयहिते आयगुत्ते आयजोगे
आय परक्कमे आयरखीय आयाणुकंपए) इम इ
हां आत्मानी अनुकंपाकरे ते आत्मानी जन्म जरा
मरणना दुःख थकी छुटावे इम कह्योछे पिण नगवंत
आदिदेई पारकी अनुकंपा करीछे ॥ ११३॥वली के
ईक वादी इम कहेछे जो नगवंतनी पहिली वाणी
खाली गईछे तिहां देवता परमुख मिल्याछे तेहनें ज
ती धर्म तो आवे नथी पिण नगवंत इम कहता अ
हो देवता साराद्वीप समुद्रामें मछ गिलागिल लगरही
छे हजार हजार जोजनरा मछछे ते अनेक मछने

खाईनें पेट भरेछे जीवानें मारेछे ॥ तो तमें जाउ जीव बचाउ तो घणो धर्म होसी इम कहतातो देवता मानता धर्म करता तो वांणी खाली क्यानें जावती इमतो कह्यो नथी ते उत्तर अहो कुबुद्धी थारा मनमें मोहनीना प्रजोगथी अनेक विभ्रम उपजेछे पिणथारे लेखेंतो भगवंत कहता अहो देवता श्रमण साधूनें ४ प्रकारे आहार देवानुं घणो लाभछे तो तमें घर घर में जाई आहार सूझतो राखो तो घणो गुण नीपजे छे इम कहता तो देवता तुरत ये काम करता पिण थारे लेखें जीवबचायामें धर्म नथी तिम साधूनें आहार देवामें धर्म नथी तो अहो कुबुद्धि भगवत तो उपदेस धर्मनो दीधोछे पिण देवतासुं तो चारित्त धर्म होय नही अनें मनुष तिहां पिन होता नही ते माटे वानी खाली गईछे पिण तुम खोटो चोज दे दया उथापोछो ते किम उथापसो सिद्धांतमेंतो दयाहीज साखे ॥ ११४ ॥ तथाकेईक इम कहेछे जे साधू नावा में बैठाछे तिहां नावामें पाणी आवतादेखी साधू नावडीयानें जणावेतो लोक कुसलखेमें घरें आवे जो जीव बचायामें धर्म होय तो साधू बतावे क्यो नही पिण जीव बचायामें धर्म नही तिणसुं साधू पाणी आवता बतावें नही तेहनो उत्तर—आचारंग दूसरे अध्येंयन तीसरे ईरज्याध्यायनमें उदेसे १ (सेभिरूखुवा २ णावाए उतिंगेण उदयं आसवमाणं पेहाए उवरुवरिं

णावां कच्चलावे पेहाए णो परं उवसंकमितु एयंवया आऊसंतो गाहावती एतं तेणावाए उदयं उतिंगेण आसवति उवरुवरिं णावाकज्ज लावेतिय तप्पगारं मणंवा वायंवा णोपुरउकट्टु बिहरेज्जा) इहांतो साधू नो कल्प नथी पिन जो साधू नावडीयानें पाणी आवतो बतावेतो नावडीयो इम कहेछे तु मुजनें बतावे तो तुं पाणी रोके किम नही जद साधू कहे मुजनें कल्प नथी जद नावडीयो रीसकरी साधूनें पाणीमें पटके तिण कारण बतावे नही तथा बतावेतो पाणी नी हिंस्याघणी होय ते साधूने लागे पाणी उलिचे ते माटे वली साधुने तो जीव रिख्या कारणे मोन करवी कहीछे आचारांगे ईरज ध्येने ३ उदेसे ३ (सेभिखुवा २ गामाणंग्गमं दुईज्जमाणे अंतराविसे पाभे पथिया गछेज्जा तेणं पाडिपथिया एवं वदासी आउसंतो समणा अवियाइं एतो पडिपहे पासह तंजहा मणुस्संवा गोणंवा महिसंवा पसुंवा पखिंवा सरिसिवंवा सीहंवा जलयरंवा संतुम्मे आइख घदंसेह तं नो आइखेज्जा णोदंसेज्जा णोतंसतपरिणं जाणेज्जा तुसीणीउव्हेज्जा जाणंवानोजाणंति वदेज्जा ततो संजयामेव गामाणुगामं दुतिज्जेजा) इहा पाठ मध्ये कोई साधूनें पथमां पुछ्यो हे साधू तोनें हिरण परमुख मिला होयतो बतावो जद साधू जीव रिख्याभणी मोन साझे पिण इम न कहे जे मुजने मिलाछ तो इहाही जीव रिख्या

निमते मोन साधवी कही अने नावानें अधिकारे पि
ण अप्पकायनी रिख्याभणी मोन साधवी कही अ
नें जो बोलेतो वचन जोगमें सावद्य लागे ते माटे
मोन कहीछे पिण साधु इम जाणे जे हुं पाणी आव
तो बतावसुतो ए लोक बच जावसी ते माटें हूं नहीं
बतावूं इम चिंतवेतो साधूनें दोपलागे ते भणी इमतो
नही चिंतवणो अनें कलप नही ते माटे नही बोलवो
॥ ११५ ॥ तथा केई एक इम कहेछे जे साधू के
हनो जीवणो वछे नही वंछे तो पाप लागे वले साधू
आपणो जीववो वांछे तोही पापलागे तो पारका जी
वणो किमवंछे इम कहेछे तेहनो उत्तर प्रथमतो साधु
जी सूझतो आहार पाणी गवेषीने करे ते स्याभणी
(सजम भार वहण ठाणाएनुजेज्जा पाण धारणठया
ए) इहां कह्यो जे प्राण धरवानें अर्थे जीवतव्य रा
खणनें काजे आहार करेछे १ वले उत्तराध्ययन २६
में गाथा ३३ पद ३ (तहपाण वत्तियाए) इहां पिण
जीवतव्यने निमत्तें आहार करेछे २ वले दसविंयाल
अध्येन ५ उदेसे १ गाथा २९ पद ४ (साहुदेहस्स
धारणा) इहां पिण देह धरवानें अरथे साधू आहा
र करेछे ३ वलि दसवीयाल अध्येन ५ (साणसुइयंगा
वं दित्तं गोणं हयंगयं संडिभंकलहंयुधं दूरउ परिव
ज्जए) १२ इहां कह्यो स्वान १ व्याइगाय २ मदो
न्मतबलद ३ घोडा ४ हाथी ५ रमता बालक ५ रा

मनो संस्थान ७ संग्राम ते शस्त्रनो संस्थानक ८ त
था पूर्वे कह्या ते स्वान परमुख लडता होय तिण स्था
नक ८ ए ८ ठामें साधू नही जाय ते प्राण राखवानें
अर्थे ४ इत्यादि अनेक ठामें साधु आपणो संजम
जीतववंछेछे वले ठाणागे ५ में (हयणवा गयस्सवा
दुठस्सवा आगछमास्सभीय एयंते अरमणुप्प वि
सेज्जा ३) इहां कह्यो जे साधु हया दिकने देखीने रा
जाना अंतेवरमें पैसेतो आज्ञा उलंघे नही इहां पि
ण आपणो जीतव बांछ्योछे ५ वले आचारांग २ अ
ध्येन ३ उदेसे ३ नावानें अधिकारे साधु इम जाण्यो
मुझनें एह पाणीमें पटकस्ये इम जाणीनें [सेपुवामे
ववदेज्जा आउसंतो गोहावती मामेतो वाहाए गहाय
णाबातो उदगंसि पखिवेह सयं चेवणं अहंनावातो उ
दगंसिउगाहिस्सामि] इहां पाठमध्ये कह्यो साधु ना
वडीयानें वरजे मोनें पाणीमें नाखो मती इहां पिण
जीवतव्य वंछ्योछे ६ वले ठाणांग ५ मे उदेसे २ पा
चकारणें साधु चोमासामे पजुसणा पहिली विहार
करे ते पाठ [भयंसिवा] ते राजादिकने भयें तथा
वैरीनें भये १ (दुभिक्खंसिवा) ते भिक्षा न मिले
तो २ पवहेज्जमाणंवा ते ३ उदयो० पाणीनो प्रवाह
आवतो जाणीने ४ कोई अनार्य आवता जाणीनें
५ इहां पिण साधू जीतव वंछेछे ७ वले कारण पड्यां
उषधादि लेवेछे ८ इत्यादि घणा सूत्रामें साधूजी सं

जेम जीवतव्य वंछता कह्याछे ॥ ११६ ॥ इहां वादी कहेछे सूत्रमे तो साधूने यहवो कह्योछे (जीवियासा मर्णभय विप्पमुक्का) तो इहां जीतवनी आसा न राखवी कही ते उत्तर इहा तो आसा तृशनारूप जीवणो नही वाछे श्लाघताभणी जे हुं जीवूंतो रुडो माहिरी महिमा पूजा घणीछे ते माटे इसो जीतव आस नही राखे अने मर्णभय ते पिण नही राखे मरणस्युंतो स्युं होसी इम नचिंतवे नहीतरतो भगवती सतग ९ उदेसे ३३ में जमाली माताने इम कह्यो हे माता हुं [संसारभउविग्गे भीएजम्मण मरणेणं] इहां तो मारवानो भयकीनोछे तिवारे संसार छूटोछे तो जाणजो साधु आपणो संजम जीतव वंछेछे ॥ ११७ ॥ वली वादी कहेछे पारको वंछवो किहां चल्योछे ते उत्तर ज्ञाता अध्येन १६ मे कह्योछे धर्मरुचि मुनिराज नागश्रीना घरथकी कडवो तुंबो लेई गुराने दिखायो जद धर्मघोष आचार्य अति गंध जाणीने (एगबिंदुयं गहाय करय लंसी आसादेती तितगं खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसभूतिं जाणता धर्मरुतिअणगारं एव वयासि जइणं देवाणुप्पिया एयं सालतियं जावणे हावगाढं आहारेसि तोणं तुम्म अकालं चेव जीवियाउ ववरो विज्जसि तं गच्छहणं तुम्मे देवाणुप्पिया इम्म सालतियं एगंतमणावाते अचितथंण्डिले परिठवेहि २ अणं फासुयं ए

साणिज्जं असणं ४ पडिगाहेता आहारं आहारेति) इहां धर्मरुचीनो जीववानो उपाय कह्यो तथा ठाणांग ५ में साधू आरजाने ५ कारणे संग्रहे पकडे ते ग्रहीराखे ते बोल ५ पूर्वे कह्याछीजछे तथा ५ कारणे साध साधवी एक उपाश्रये भेला रहिवो कह्योछे तथा ठाणांगे ५ मे पांच कारणे करि साधु राजाना अंतेवरमे प्रवेसकरे (तं नगरे सिया सवउ समंता गुत्ता गुत्तदुवारे वहवे समणमाहणा नोसंचाएति भत्ता एवा पाणाएवा निखमित्तएवा पविसित्तएवा तेसिं विन्नवणठयाए रायंतेउरमणुप्पाविसेज्जा) तो जोउ इहा पिण अनेरा साधुनो आदिदेई सर्व साधु वली भगवंत सुनखत्र सर्वानुभूतिने वरज्याछे व्यवहार माटे जीवानो उपाय करयो जीववानो उपाय कह्यो वले व्यवहार सूत्रने ५ मे उदेसे (णगांथंचणं राउ वा वियालेवा दीहपुठो लुसेज्जाते इत्थी एवा पुरिसो उमज्जेज्जा पूरिसोवा इत्थी ए उमेज्जा येवंसे कप्प ति येवंसेचिठति परिहारचणो पाउणोति यसकप्पो थेर कप्पियाणं) इहां कह्यो जे साधवीने सर्प डस्यो होयतो पुरुष साध तथा ग्रहस्त पासे तिगछो करावे अने साधूने डस्यो होयतो आरज्याने तथा ग्रहस्थनीने पासे तिगछो करावे इम करेतो थेवर कल्प माथी भ्रष्ट न थाय तो जोउ इत्यादि अनेक ठामे पर साधूना जीववानो उपाय कह्यो ॥ ११८ ॥

हिवे इहां वादी पिष्ट हुया थकां इम कहेछे साधु सा
धवीनो संजोग एकछे ते माटे जीववानो उपाय क
रयामें अमे पाप किहां कहांछां ते उत्तर अहो अली
क वचनना बोलणहार तुमें साधु साधवीनो उपायमें
धर्म जाणोतो मर्म किम कहोछो गजसुकमालनी अनु
कंपा नेमनाथजी नही कीधी वीरनी अनुकंपा देव
ता न कीधी जो धर्म जाणतातो छोडावता किम न
ही इम कहोछो तेहना प्रायछित लो आगेसु इम क
हवो साध साधवी माहो मांहिं अनुकंपा करी छुडावे
तो धर्मछे पिण तुमारा वचनरी एक धारा नहीछे ॥
प्रश्न ॥ ११९ ॥ वली वादी कहेछे साधुनी अनुकंपा
साधुकरे पिण साधुनी अनुकंपा ग्रहस्तनें करणी न
ही ते उत्तर भगवती सतग १६ उदेसे ३ (अणगा
रस्सणंभंते भावीयप्पाणो छठं छठेण अणिखित्त॥
जाव आया वे माणस्स तस्सण पूरि च्छमेणं अवढं
दिवसं नो कप्पति हत्थंवा पायंवा बाहंवा ऊरुंवा आ
उटा वेतयवा पसारेतयवा पचात्थिमेणसे अवढ दिव
सं कप्पइ हथंवा पायवा जावउरुयंवा आउट्टा वेत
यवा पसारेतयवा तस्सय अंसिया लउवंति तेचेव वे
जे अदखु इसिंपाडेति २ त्ता असियाउ छिदेज्जा से
नुणं भंते जे छिंदइ तस्स किरीया कज्जई जस्स छिय
जइ नोतस्स किरिया कज्जई णणत्थगेणं धम्मं तरा
इएणं हंता गोयमा जे छिंदइ जाव धम्मंतराइए

सेवंभंते सेवंभंतेति १६।३) इहां कह्यो जे को
ई साधु ध्यांनमां खडोछे अने नासिकामा हरस ल
टकेछे इतरामां वैद्यदेखीनें लगारेक साधूनें हेटो पा
डीने हरस छेदीतो वैद्यने शुभ प्रकृतिनो बंधवारूप
क्रिया करी साता दीधा माटे १ अने साधुजी कटावा
रूप असाता गमावारूप किरिया न करी २ पिण का
टता बेदनी होयी जद ध्यान रूप धर्मनी अंत्राय पडी
साधूनें ३ तो इहां वैद्यनें साधुनी साता होयवानी बु
द्धिछे ते माटें शुभ प्रकृतिनो बंधपडे हिवे इण पाठनो
अर्थ केईक ऊंधमती इम करेछे वैद्यनें पाप रूपणी
किरिया लागी ॥ १२० ॥ साधूनें ध्यांननी अंत्रायदी
धी ते माटे तेहना उत्तर इहां पाठ मध्ये तो अंत्राय
दीधानो पाठनथी (धम्मंत्तराइणं) येह पाठछे ते
अंत्राय पडिवानु पाठछे ते किम कोइक ग्रहस्तसाधूनें
आहार आपता असूझतो थयो तो हिवणा साधूनें
आहारनी अंत्रायपडी के ग्रहस्थे अत्रायदीधी ते क
हो १ वले साधू वखाण करता घणा श्रावक सुणता
किणेक आय कह्यो स्वामी तुमनें तुम्हारा गुरू ता
कीदसुं वुलावेछे इम कहता विहार करेतो सुणणवा
लाके अंत्राय पडी के ऊण कहणवाले अंत्राय दीधी
ते कहो २ वले साधू रात्रे वखान करतां घणा श्रा
वक सुणता किणहीक ग्रहस्त कह्यो स्वामी पहिर रा
त्र आइ गईछे इम कह्या थका वखान ऊठावेतो सु

णणवाले के अंत्राय पडो के उग कहणवाळाइ अं त्राय दीधी ते कहो ३ वले कोई साधुनें आहार कर वाकी त्यारी करी इतरामें दुना साधु बोल्यो आहार उष्ण घणोछे ते माटें धीरारहो इम कहता साधूनें अं त्राय आहारनी पडीके कहणवाळाने अंत्राय दीधी ४ इत्यादि अनेक युक्तिछे तिम जाणजो वैद्यनें हरस काटिवानी बुद्धिछे ते साता होयवानी बुद्धिछे पिण धर्म अंत्राय देवानी बुद्धतो नथी वले क्रिया शब्दे पु ण्यनी क्रीयाछे पिण पापनी क्रियानथी ते किम साता थावा माटें वले मारता साधूनें वचावेतो जीवतव्य दान दीधो कहीजे तेहनी साख भगवती सतग ७ में उद्देसे १ [समणो वासएणं भंते तहारूवं समणं वा महाणंवा फासुएसणिज्जेणं असणं ४ पडिलाभे माणे कि-लब्भइ गोयमा समाणो वासएण तहारूवं समणंवा जाव पडिलाभे माणे तहारुवस्स समणस्स वा माहणस्सवा समाहिं उप्पायंति समाहिकारएणं तामेवसमाहि पभिलभई समणो वासएणं भते तहा रुवं ममणवा जाव पडिलाभे माणे किं चीयइ गोय मा जीवियं चयइ) इत्यादि आगें पाठछे इहा कह्यो जे श्रावक साधूनें आहार पानी प्रतिलाभे माणे तो साधूने समाधि उपजावे जिसो साधुनें समाधि दीधी तेहवोज समाधि आप पामें वले कह्यो जे साधुनें आहार पानी दीधो तो जीवतव्य दीधो कहीजे तो

जीवोनें आहार पानी दीधां जीवतव्य दीधो कह्यो तो साधूनें मारता बचावेतो जीवतव्य दीधो किम न कहीजे वली साधूनी असाता मेटया पिण जीवतव्य दीधो कहीजे इण लेखे बैद पिण साधूने साता दीधी कहीजे १ बली साधूनें पाणीमें वहतां डुबता थी ग्रहस्थ काढेतो साधूनें जीवतव्य दीधो कहीजे२ साधूनें अग्नमासुं बलताने ग्रहस्थ काढेतो साधूनें जीवतव्य दीधो कहीजे ३ किणी अनार्जें साधूनें बांधी नें मूकयोछे हिवे ग्रहस्त बंधणथी छोडेतो साधूनें जीवतव्य दीधो कहीजे ४ किणी अनार्यें साधूनें बांधीनें रूंखकें बांध्योछे हिवे ग्रहस्त बंधनथी छेडेतो साधूनें जीवतव्य दान दीधो कहिजे ५ बले साधू ग्रहस्तके घर गयो थको नवलबाई हेठो पडयो अचेत होय गयो हिवे ग्रहस्त साधूनें बेठो करे तो साधूनें जीवतव्य दान दीधो कहीजे ६ इत्यादि अनेक युक्तिछे थोडो कह्यांथी घणो समझवो पिण साधु ग्रहस्थनी चाकरी अनुमोदेतो प्रायछित आवे ग्रहस्तनो साहज बंछणो नही सूत्रमां ठाम ठाम कह्योछे जे साधू ग्रहस्तनें पासे कहीने वैयावच करावे तो प्रायछित आवे पिण (सहसातकारे) अर्थात् अचानक करण वालानें स्यूं थयो ते कह्यो ॥१२१॥ इहां वली वादी इम कहस्ये जे साधूनें (अप्राशुक) अर्थात् सचित सहित आहार पाणी दीधातो अल्प आऊखो बंधवो क

ह्योछे तो साधूनें पाणीयादिक माहिथी काढताहीज अल्प आउखो बधेछे ते उत्तर अहो दुरबुद्धी थे अप्रासुक आहारनो न्याव मति लगावो अप्रासुक अर्थात सचितादी आहार पाणीनो नेमछे ते जाणीनें न लेवो अनें अजाणें आयो-होयतो ठीक पड्यासूं परठदेवे तथा भोगवे तथा अणाशुद्धिथी शुद्ध जाण्या तो भोगवे ते आचारांगमें घणे पाठछे पिण दसाश्रुत खंधमध्ये कह्योछे जे पडिमा धारी साधूनें अग्नमाहिथी गृहस्त काढेतो सुखें निकले पिण प्रायछित कह्यो नथी थारे लेखें अप्रासुक तथा असूझतो आहार पाणी नलेवो तिम पडिमाधारीने निकलवो पिण नथी कल्पे १ तथा अप्राशुक आहार अजाण पणे आयो ठीकपड्यां संभोगीनें देवो पिण न कल्पे थारे लेखें तो नदी मांहिथी पहती साधवी तथा साध संभोगीनें पिण काढणो नही वले असूझतो आहार परठेहीज थारे लेखे जिम साधूनें पाणी मांहिथी गृहस्थ काढे तो जीवत असूझतो थयो जीवणो न कल्पे २ वले अप्राशुक आहारतो श्रावकने विना कारणें देणो नही साधूनें लेणो नही तिम थारे लेखे लायादिकमासूं साधूने गृहस्तनें काढणों नही अनें जो काढे तो साधूने निकलनो नही ४ वली अप्राशुक आहार दीधा ब्रतमें अतीचारलागे अनें साधूने अग्नादिकमेसूं काढेतो किसा बिरतमें अतिचार लागे ते क

हो ५ वली आधाकरमी आहार दिन दिन प्रतें जो गर्वीनें खुसी होय तो ४ गतिमें घणो रुले तिम थारे लेखें अग्न माहिसुं नीकलता पिण रुले ६ इत्यादि अनेक युक्तछे तो आहारनो न्यावतो लागतो नथी ॥१२२॥ तथा वादी इम कहेस्ये जे देवगुरु धर्म निमतें हिंस्या करवी नही ते उत्तर इमतो अमे कहां इज किंचत मात्र धर्म निमतें हिंस्या करवी नहीत पाठ (एवं खुनाणीणोसारं जंनहिं सइ किंचणं) इती बचनात् तो साधूनें काढतां जेतली हिंस्याहोय तेतली सर्व सावद्यछे अनें साधूनो काढवो ते एकांत धर्मछे अभयदानछे वली बादी कहसी जो गृहस्त साधूनें नही काढेतो किसो पापलागे अने किसो व्रत भांगेछे ते कहो आरज्यां बहतीनें साधू न काढेतो किसो पाप लागे किसो व्रत भांगे ते कहो तद कहसी संभोग भांगे नही काढेतो ते उत्तर संभोग निमितें किसी हिंस्या करवी कहीछे जीवघाततो काढण आश्री गृहस्तने पिणछे साधूनें पिणछे ते विचारी जो जो बले भगवती सतग ९ मे उदेसे ३४ में कोई पुरपने घोडाने हाथीने सिंहने वाघने बली अनेरा त्रसजीव प्राणीने इत्यादिकने हणतो थको अनेराइ पिण हणावे इम कह्यो अने ऋपीश्वरने हणतो थको अनंता जीवांने हणे इम कह्योछे तो एक ऋपीश्वरनी रिख्या करी तिणे अनंता जीवनी रिख्या करी

कहीजे॥ १२३॥ वली वादी कहस्ये साधुतो अनंता जीवाना पीहरछे पिण ग्रहस्थनो जीवतो अविरतमा छे तेहने छुडावेतो असंजम जीवतव्य वंछ्यो कही जे ते भणी छुडाणो नही इम कहेछे ते उत्तर अहो दुरबुद्धी मोह ममता करे ते पापछे पिण जीवणो वछे तेहनो तो पाप किहांइ कह्यो नथी वली दसवे-काल क अध्येन ५ में (सवेजीवाविइछंती जिवीयंन मरिजीयो तम्हापाणवहं घोरं णिगंथावज्जयंतेणं १) इहां कह्यो जे सर्व जीव जीवणो वंछेछे पिण मरणो कोई न वंछे ते भणी साधूजी जीवनी हिंस्या न करे वली सूत्रमे ठाम ठाम कह्योछे (माहणो माहणो) किणही जीवनें मतिहणो इहा जीवनी रिख्या करवा नो वचन कह्योछे तथा मारतां थका वरजवानो बचनछे वले एहनो अर्थतो वरजवानोछे किणे अनार्य कोई तिर्यचादिकने गाढे बंधन बांध्योछे इतरामें साधूनो उपदेसे करुणा ऊपनी पछे जायछोड्यो तेहनो स्यु फल तथा छोडयो ते काम आज्ञा माहिलोके बाहिरलो ते कहो ॥ १ ॥ कोई अनार्य कसाईरी जात छाउनें विणासतां कोई पुण्यवंत जीव रोटी तथा रूपीयो देईने करडासूंस कराय दीया छाऊनें छुडाय दीधी पछे कसाई दुजो जीव पिण मारयो नही अव उण छुडावण वालानें स्यूं होय ते कहो २ कदाच छुडावणरो उपाय करतां कोई जीव मुवो तिणरो पाप

मुख गिणोतो थाने आहार पानी दीधो पेटमें क्रि
ऊपना दिसां गया मर्ण पाम्या थारे लेखे लेवाल दे
वाल दोनोही डुब्या ॥ ३ ॥ वले अंतकृत गढमां क
ह्योछे श्री कृष्ण महाराजनें जरद कुमरने बाण म
र्यो पछे श्रीकृष्ण कहे हे भाई जा नहीतो बलभद्र तु
झनें मारसी ये उगारवानी सिखामण दीधी ए केही ले
स्या शुभ कि अशुभ ते कहो पछे नरकनी आनपूर्वी
आवी तव कह्यो जे मुझनें मारीने वली ए जीवतो
किम जासी ए भाव आव्या तिवारे ७ सागरने आ
उखे गया इत्यादि दया ऊपरे अनेक प्रश्नोत्तरछे ॥
वले दसाश्रुत खंधमा पडिमाधारीने अधिकारे वल
ता पडमाधारी साधूनें कोई करुणावंत उत्तम प्राणी
काढेतो न कल्पे पोतानी खातर नीकलवो पिण ए
तलो विशेष आगला प्राणीनी अनुकंपा माटे नीक
लवो कल्पे इहा जोवो साधूइं अनेरानी अनुकंपा क
री के न करी साधू अगनी मांहिथी न नीकलेतो ते
पुरष जो अगनीमा वले तो कांई साधूना ९ जोग
मा पाप न लागे पिण साधू ते पूरष काढनहारनी
अनुकंपा माटें सुखें नीकले ॥ १२४ ॥ वले वादी क
हेछे जो रुपियादेइ जीव छुडावेतो तारे रुपीयाना बीजा
तीर्यंच मोल लेईने मारे तो छोडावण वालाने पाप ला
गे तेहनो उत्तर भगवती सतग ५ में उदेसे ६ में क
ह्योछे जे कोई वध पूरष पंखीने हणवामाटे बाण ना

खेडे ते पंखी वाणथी मूवो तिवारें ते बाणना जीवनें अनें धनुषना जीवने अनें नाखणहारनें ए ३ नें पांच पांच लागती क्रिया कही अने तेहिज वाण पोताना भारथकी हेठो पड्यो तिवारे पडता विचाले अनेरो जींव हण्यो बीचलो जीव मूउ ते आश्री बाणना जीवनें धनुपना जीवने पाच पांच क्रिया लागी कही अनें बाणना नाखणहार पुरपने च्यार क्रिया लागती कही प्राणातिपातरी क्रिया न लागी इम कह्यो छे ॥ हिवे जोवो जे जीवमारवाना परणाम हता ते जीव आश्री पांच क्रिया लागती कही अने जेमा पोताने हणवानो जोग नथी तो ते च्यार क्रिया न कही हिवे उगारे तेहनें केटली क्रियालागे ते कहो उगारण वालानो ध्यान च्यारमां केहो छहलेस्या मांहिली केही लेस्या जोग अशुभके शुभ ते कहो वली भगवती सतग ५ में उदेसे ६ में कह्यो छे (गोयमा जेणपर अलीएणं असंतएणं अभाखाणेणं अभाइखई तस्सण तह प्पागारा कम्मा कज्जए) इहा कह्यो जे जेहवा कूठ बोले जेहवा आलदेवे तेहवा आवनेभवे तेहवाज फल पामें पिण एतलो विशेप कोई मृगप्रछानें समे मृग रक्षादिक कारणे कूठ बोले ते दयांना परिणामनो कूठ टालीने बीजा कूठना माठाफल कहो इहां प्रभुयें पिण ए कूठ टालीने माठा फल कह्या इहां कूठ बोलवानी प्रभूनी आज्ञा नथी पिण

ए पुरपने कूठ बोलवाना परणाम नथी मृगादिक जी
व राखवाना परणामछे ते माटे कोई एक ग्रहस्त सा
धूनें पात्र भरीनें घृतनो दान दीधो कोईके कह्यो हे
भाई तुमे धन्यतो आरीते पात्र भरीने घृतादिक दा
न देवोछे तिवारे तिण दातारे कह्यो हे भाई हूं तो
स्यूं दान दीधोछे लगारेक दान दीधोछे हिवे ए दा
तारने ए दान दीधाना स्यूं फल लागे के जेहवो कूट
बोल्यो तेहवा फलपामें जिम जीव दया ऊपर जाण
वो ॥ कोईक ग्रहस्त साधूने सरीर रोगादिक जाणीने
श्रावके महा विरस कडु कसायेलीया परमुखनी उष
धी दीधो उपधी लेतांज साधूने वमन बिरेच अवस्था
थई घणो दु:ख पाम्यो पछे साता थई रोग मिट ग
यो हिवे ए दातारने साधूने असाता ऊपनी तेहना
पाडुया फल लागे के मुनीने साता दीधी तेहनो फल
पामें ते कहो करतव्य परिमाणे फल लागे के जेहवा
मन परिणाम होय तेहवा फललागे ते कहो जिम जी
व उगारवानो परिणाम दयानोछे तेहवा फल पासस्ये
॥ प्रश्नोत्तर ॥ १२५ ॥ अथ दान आश्री प्रश्न लि
ख्यते ॥ केतलाइक दान विध्वंसी जीव कहेछे साधू वि
ना श्रावकथकी मांडी सर्वने दान दीधा एकंत पाप
कहेछे तेहना उत्तर भगवती सतग ८ में उदेसे ६ में
(समणो वासगस्सणं भंते तहारुवं समणंवा माहणं
वा फासूय सणिज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमं प

डिलाभे माणस्स किं कज्जई गोयमा एकंत सोसे णि जरा कज्जई नत्थियसे पावकम्मे कज्जई १ समणो वा सग्गरस्सणं भंते तहारुवं समणंवा माहणंवा अफासु यसणिज्जेणं असणं पाण खायमं सायमवा पडिलाभे माणे किं कज्जई गोयमा बहु तरायसे-निज्जरा कज्जई अप्पतरायसे पाव कम्मे कज्जई २ समणो वासग स्सणं भंते तहारुवं असंजय विरय पम्हिहय पच्चखाय पावकम्मं फासुएणवा अफासुएणवा एसणीज्जेणवा अ णेसणिज्जेणवा असणं ४ पम्हिलाभेमाणे किं कज्जई गोयमा एगंत सोसे पावकम्मे कज्जई नत्थिसे किंचि णिज्जरा कज्जई ३) इहां तीजा पाठमां तथा रुप अ संजतीनें दान दीधां प्रतिलाभ्याथका स्यु पामें एतले प्रतिलाभ ते गुरुनी बुधे देवेतो पाप कह्यो पिण अ नुकंपा माटें दान दीधा पाप नथी कह्यो गाथाटीका मांहे (मोखत्थं जंदाणं न पियस विही समरकाउ अनुकंपा दांन जिणेहिं कयाइ नपम्हि सिद्ध १) इहां पिण इम कह्यो जे गुरु बुधे आपे मोक्षहेते जाणीने तो मिथ्यात्वलागे पले वादी कहेछे ए तो तुम जुक्त मेलोछो तेहनो उत्तर एह तीन पाठ लगतां दान दी धानाछे जेहवो असजतीना दानमा पाप बोल्यो ए पाठ जेहवो कह्यो तेहवोज मानसो काई हेतु युगत मानसो नहीतो बीजा पाठमां तथा रूपसाधुने प्राशु क अप्राशुक एसणीक अणेपणीक आपेतो अल्प

मां जो कोई अन्यतीरथी क्षुधा तृषा पीड्यो थको आवे भिक्षुक मागणाने दान लेइ जाइतो ते दीधा नो आगारछे एतले भिक्षुकने दानतो आनंद श्रावक देवेछे इणलेखेतो अनुकंपा दान परमुख करणी ना धणीतोछे पिण एहवो नथी कह्यो जे हुं असंजतीने न आपुं असंजतीमां अन्य तीरथीमां घणो अंतरछे बेहुं सरीखा नथी अन्यतीरथीतो ३६३ पाखंड मिथ्यातीना दिपावणहारा जिनमारगना निंदक तेहने आपतां बांधतां आलाप संलाप करतां जिन मारगनी लघुता लागे पाखंड मारगदीपे लोक पिण इम जाणे आनंद श्रावक यहवा स्याहाछे तो पिण पाखंडयाने मानेछे तो कांइक खरादीसेछे इसी शंकादि दूषण घणा जीवपामे ते माटे अन्यतीरथी निषेध्याछे अने जो सर्वथा दान निषेध्यो होयतो इसो पाठ होवे [नोकप्पई अजप्पभिइचणं असंजय] इत्यादि ते तो नथी वली जेहवो आनंदनो आचार तेहवो १ लाख ५९ हजार श्रावकानो आचारछे अन्य तीरथीना तीन बोल सर्वने नकल्पे वली आनंदादिक तीन बोल पूर्वे वांदताहता ते टाल्या अने तुम भिक्षुक दालद्रीने रांकने अन्य तीर्थीने गिणोछो तो तुमारे लेखे आनंदादि श्रावक स्युं रांकवणी मग परमुखने वांदताहता तो हिया थकी तो बिचारो जेहनें करता हता तेहनें जे टाल्याछे एतो पांचवां गुणठा

णानी करणीछे ॥ १२८ ॥ तथा केईक वादी कहेछे नीछ्रकरांक ए अन्यतीरथीमां गिणस्यो के स्वयती रथीमे गिणस्यो ते उत्तर च्यार तीर्थवीना सर्व अन्य तीरथी अनंताछे पिण आनंद श्रावक पचख्या ते अन्यतीरथी षटदरसनना घणीछे जे वांदवा जोग कहवाइछे तेहनें नवादूं न बोलाउं मिथ्यातमें ए काम करतो हिवे न करूं ६ ॥ १२९ ॥ तथा केतलाएक कहेछे जे श्रावक असंजतीनें दान देवेछे पिण पनरमो करमादानछे असंजतीना भरण पोषण करया होयतो तस्समिसक्षामि दुकडं तो एह पडकमावा जोगछे ते माटे देवा जोग नथी ते उत्तर इहातो १५ कर्मादान शब्दे व्यापार वृती आजीविकाकरी जीवो नही ए अर्थछे एहनी साख उपासगदसा अध्येयन १ सातमा व्रतना २ भेद (भोयणउय १ कम्मोउय २) भोयण कहता भोजनना पाच अतीचार ते (सचित्ताहारे) इत्यादि ५ छे अनें कम्मोय कहता व्यापारना १५ भेद (इंगालकम्मे) इती इंगालाकरीवेची तेहनो लाभ लेई पोतानी वृती करे ते काम श्रावक न करे जे सहजे काम अर्थे घर अर्थ लावेतो (इंगालकम्मे) न कहिये इम जाव १४ बोलकरी पोतानी आजीवका न करवी तिम पनरमो बोल (असई जणपोसणया) तेह स्यां बुद्धें हिंसकजीवनें पोषे कुर्कट मार्जार शुक कूकर इत्यादि तथा दासी दास पोषण भाडा

लेवा माटे तथा गणिकाने पोषे स्वार्थे भोग हेते तथा कुतरा पाले सिकार हेते हिरण परमुख जीव हणवासारु इत्यादिक १५ पंदरमो करमा दानछे पिण कोई दान देवो ते पनरमो कर्मादान नथी अनें दान देतां करमा दान लागे तो दाननो देणहारनें सातमो व्रत मूलथीज रहे नही तेहनी साख भगवती सतक ८ मे उदेसे ५ में जे श्री वीरना श्रावकछे तें १५ कर्मादान त्रिविधे त्रिविधे वोसराव्याछे ते पाठ (जे इम्मो समणो वासगा भवंति तेसिंनो कप्पंति इम्माइं पन्नरस्स कम्मा दाणाइं सयं करे तयवा कारवे तयवा करंतंवा अन्न समणु जाणत्तएतं) एहवोछे ते माटे दान दीधा करमादान लागेछे तो व्रत किम रहेछे वले पन्नवणा पद १ (नाणावटी) सूत्रे (वंजा जरुथाला) इत्यादि आर्य व्यापार कह्याछे ते स्या माटे पाप थोडा भणी अने करमा दान न कहीए अनें १५ करमादान वरज्या ते स्या माटे हिंस्याघणीछे तथा त्रसजीव हणावेछे ते माटे ए काम करी पेट भरिवो वरज्योछे ए अर्थ साचोछे अने तमे पाठ खोटो बतलावोछो मत थापवा माटे (असंजती पोसणया) एहवो कहोछो एक अक्षर अधिको उछो बोलावेछे तो अर्थनो अनर्थ थई जाय जिम कुंती पुत्रो युधिष्टर अनें बिंदूनो आलोपथी कुती पुत्रो यधिष्टरथाय एहवो फेर पडीजायछे अने सत्रमा तो

(अमई जणपोमणया) एह पाठछे ते जाणज्यो वली ए अज्ञानी दानने करमा दानमा घाल्यो तो अहो अज्ञानीज एवमो स्यूं पापछे ४ कारण नरक जावाना कह्या ४ कारण तिर्यंचमा जावणना कह्या अनें १८ पाप पिण कह्या एमा कठेई दानने पाप घाल्यो नही तथा सूयगडांग १८ में अधर्मना लक्ष ण वखाणाछ ते इम [हणहछिंदह भिंदहकाकिणीमं साइ करेह हडिवभण करेहिं इम्मं हस्थिछिन्न पायछि न्नं कन्नछिन्नं नकछिन्नं ऊठछिन्नं वेयछिन्नं करेह) मा हली बाहरली परषदाने थोडे अप्रादें नारी दंड देवे एहवा लक्षण कही देखाडया तेमा पिण दाननी कर णी नथी कही वली नारकीना जीवनें परमाहधामी हणेछे ते पूर्वला भवना दुकृत सभारीनें देवेछे ते मा परदारागमन जीव हिस्या चोरी कपट आल निं दा प्रमुख कार्य संभारीनें वेदना देवेछे तेमा पिण दा न रूपीया अधर्म सभारीने वेदना देता न कह्या तो इहा श्री वीतरागे एहवो दानमां स्यूं पाप दीठो ते कर्मी दानमाज घाल्यो तो जाणज्यो जे अनुकंपा दा नने कर्मा दानमें कहेछे तेहनें एकंत झूठ लागेछे उत्त र सुत्रमाथी जाणज्यो वली परदेसी राजा केसी सम ण पासे धर्म पाम्या तो पहिला मिथ्याती नास्तक वादी हता ते दिनना लक्षण तिहां वरणव्या (लोहिय पाणिसेउ) हाथ लोहीखरडया रहेछे अणदीठीने दीठी

कहे दीठीनें अणदीठी कहे इत्यादि (उक्कंचणवंचण) क्रियानो धणीछे इम कह्योछे वली भगवती स तग १५ में विमल वाहन राजाना लक्षण वरणव्या तिहां (समणपडिकुला) कह्यो तेमां पिण दाननो वरणव नही जंबुदीव पन्नतीमें (अवाडचीलाया) अ नार्य राजाना लक्षण वरणव वखाण्या तेमां पिण दा न देता कह्या नथी अने परदेसी राजा धर्म मारग पाम्या तिवारे पछें दान देवो मांड्यो तो इम जाण ज्यो यह दान दीधानीकरणी आरज पुरषोनीछे पिण अनार्य पुरषानी नथी अनेए दान अनर्थादंडमा होवेतो १२व्रत लीधा पछे ए काम किम करे वली प्रदेसी च्यार भाग कस्या तिहां तीन भाग करया बिना तो सर तो नथी पिण चोथो भाग किम कस्यो ते विचारज्यो वली केसी कुमारे वरज्यो पिण नथी तु समझीनें नवो पाप किम बधावेछे इम पिण कह्यो नथी अने रमणी क पणामा दानने व्रत ए दो घाल्याछे ७ ॥ १३० ॥ तथा कोई कहे एह करणी सरब अविरतमाछे बिरत मा ए काम करवो नही ते उत्तर बिरतमातो ए कारज नथी तेतो जाणेछे पिण दाननी करणी निषेधी स्या नेंछे जिम कोई पुरपें साधू पासें आवीने कह्यो स्वा मी मुझनें अणगल पाणी पीवानी बिरत करावो ति वारे साधू सूखे व्रत करावे कोई कहे मुझनें पाणी ग लीने पीधानो पचखाण करावो तिवारे साधू न करा

वे ते किम साहमो गलवानी हिंस्या टली ते रुडो थयो पिण ए अजोग पचखाण पिण न करवो तिम साधू दानना पचखाण पिण न करावे पोताना खावाना पीवाना पचखाण करावे पिण अनुकंपा परमुख दान दीधाना पचखाण न करावे जो अनर्था तथा करमा दान जाणेतो पचखाण क्या नही करावे पिण जिन मारगना श्रावकनी करणीमा पिण दान देवो दीसेछे ते पाठ नगवती सतग २ में उदेसे ५ में तुंगीया नगरीना श्रावकनो वर्णवमा तिहां दान आश्रीतीन आलावा कह्याछे [विछडिय विपुल नत्तपाणा] एहतो घरनो आचार जे अन्नपाणी पुष्कल नीपजेछे जे खाधो पीधो तेहथी वधतो नाखी पिण देवेछें एरीते विस्तीर्ण नात पानी रंधायछे पछे श्रावकना पांचमा गुणठाणाना गुण वरण्व्या तेमां (उसियकलिहां अवंगुयदुवारा) ए वोलमा निक्षुकनें दान देवा सारू कमाड उघामा राखेछे पछे तीजो बोल साधूने दान दीधानो कह्यो [समणे निग्गंथे फासुए सणिज्जणं असणं ४ जाव बहरंति] दान दीधा करमा दान जाणे तो श्रावक (अवंगुयदुवारा) किम राख्यो ॥ १३१ ॥ तिवारे वादी कहेछे अनंग द्वारातो साधूनें प्रवेस करवा माटेछे जे आडेन्नारणे साधू आवे नही ते माटे कमाम उघामा राखेछे तेहनो उत्तर जे साधूनें काजे द्वार उघाडा मूकेतो साधू तिण

घरना जावे तोहीज नथी वली परदेसीनो जीव त
था अंबडनो जीव महा विदेह खेत्रमा दृढपईन्ना प
णो पामस्ये तेहना घर बखाण्या तिहां (विछडियन
त्तपाणा) ए गुण घरना आचारनोछे ते तो कह्यो पि
ण (अनंगदुवारा) न कह्यो एतले श्रावक पणुं न
ही हतो तिहा सुधीतो आडे वारणे जीमवानो नेम
नही अनें तिहांथी श्रावक पणो पांम्या ते दिवसथी
अनंगदुवारो पिण केडे वलग्यो जिन मारग पांम्या त
दिवसथी उदार्य पणो अधिक अधिक वध्यो द्रव्य अथिर
जाण्यो ते माटे अधिक दान देवा लाग्या वली कोई क
हस्ये (अनंगद्वारो) तो साधूनें काजेछे ते उत्तर सा
धूनो तो दान आर्य खेत्रमाछे अनार्य खेत्रमा साधु
नथी हिवे अनार्य खेत्रमां श्रावकने (अनंगदवारो)
किम नीपजे ते कहो तथा आर्य क्षेत्रमां कोई ग्राम
साधू चोमासो नथी कह्यो पिणश्रावक (अनंग दुवा
रो) राखे के नही ते कहो वले साधूनो उतम कुलनो
आहार लेवेछे अने कोईक अ कल्पनीक कुलमा श्रा
वक होयतो तेहने (अनंगदुवारो) किम नीपजे ते
कहो ८ ॥ १३२॥ केतला एक कहे छे साधूविना औ
रनें दीधो पुण्य अन्य पुण्यनो खेत्र किहाइ नही ते
उत्तर साधूना दानमें तो एकंत धर्मछे पिण अनुकंपा
भावे बीजाने दीधा पुण्यनी ना न कही वले साधुतो
आर्य खेत्रमा छे तिहांतो नव प्रकारे पुण्य नीपजे पिण

अनार्य खेत्रमा केतला प्रकारे पुण्य नीपजे ते कहो
१८ पापतो तिहां नीपजेछे तिवारे वादी कहस्ये अन्न
प्रमुख दीधां पुन्न थाय एहवोतो पात्र नथी पिण ३ जो
ग शुभ वरते तेह पुण्यछे तेहनें इम कहिये सूत्रमा
ठाणांग ३ ठाणे परमुखमा कह्यो होय सो अनार्य खे
त्रमा पुण्य बंधायछे इम कह्यो होयतो देखाडो वली
ठाणांगे नवमें ठाणे इम नत्थी कह्यो जे आर्य खेत्र
मा नव पुण्य नीपजेछे पिण अनार्य खेत्रमा न नीप
जेछे तथा ठाणांग १० में ठाणेदस प्रकारे दान कह्या
छे तेहना नाम अनुकंपा १ संग्गेहे चेव २ भय ३ को
लुणितिय ४ लज्जाते ५गारवेणं ६ धर्म दान ७ अधर्म
दान ८ कोहे तीय ९ कथंतीय १० ए दसमा धर्म
दान ते साधूनो चित्तवित्त पात्र शुद्ध होवे ते तथा
उत्कृष्टे भावे दानने परिणामे निशाणादि दुखण रहि
त दीधां थाय १ अने एक अधर्म दान ते पोताना
विषय कषाइने हेते जीवहिंस्या दिक मोटा दूसण त
थावेस्यादिकना दान विषयहेत देवे त अधर्म दान
कहिये २ अने शेष ८ दान ते धर्म दानमें भिले अ
धर्म दानमें पिण भिले जिम किणहीक ग्रहस्थनें सु
पात्र कुपात्रके गुणकीतो ठीक नही पिण भूख त्रीपा
ना पीड्या थका सुपात्र तथा कुपात्र देखीनें अनुकं
पा आणीनें देवेतो अनुकंपादान कहिये अनें सेठा
णीनें अर्णक मुनीको दान विसेहेतें दीधो ते अधर्म

दान पिण कहिये जिम चोरनें चोरी करवानो साहज देवेतो अधर्म दान स्यां माटे चेलो पोतानो पिण स्वारथछे ते माटे इम करता वेहीज चोर बंधणमा पड्या तेहनें खान पान देवेतो अनुकंपा दान थाय पोताना परणाम जेहवो होवे तेहवो दान कहिये फल पिण पोताना परिणाम शुद्ध अशुद्ध जेहवा होवे तेहवालागे जिम पात्रनो धर्म रुचि साधू घणा गुणहता पिण नागश्रीना परिणाम अशुभथा तेहनें कडवा तुंबा दीधा तेहवाज फल लाग्या ते माटे दान तप जप क्षिमा दया ए सर्व पदार्थना फल पोताना परणाम पक्षे लागेछे कोई अन्नव्यछे अनें साधू मध्ये रहेछे साधु चेलो खावो पीवो रहवो करेछे पिण परिणाम होवे तेहवो फललागे तेहनें वली बिवहार सुध देखी कोई साधूनी बुद्धें वांदेतो तेहनें असाधु वांद्याना फल लागे के साधु वाद्याना फल लागे पोताना परिणाम ऊपर घणी वारलाछे ते माटे ८ दान श्री बीतरागे एकंत धर्ममां पिण घाल्या नही एकंत अधर्म दानमां पिण घाल्या नही तथा सूयगडांग अध्येयन ११ में (जेयदान पसंसांते वहामिछंती पाणीणो जेएणं पडिसेहंति विर्त्तिछेयं करतिते १) तथा दूजा सूयगडाग अनाचार अध्येन (दखणोय पडिलंभ्य अत्थिवानत्थि वा पुणो नवियागेर जमेहावी सांतिम ग्गांच वूहय १) एठले वेठामें मुनुयें मध्यस्थभावे रहिवो कह्यो ॥ १३३॥

॥ श्रीवीतरागायेनमः ॥

॥ अथ पांच वादीयाकी चर्चा लिख्यते ॥

शार्दूल विक्रीडितं वृतम् ॥ पंचांधागजमीक्षणार्थ मगमन् कर्णांह्रि शुंडाद्विजः। पुच्छान् वीक्षगजो वदंत्य थमथोदृष्टोमयाकी दृशः ॥ सूप्पास्थंभकदलपयोथवल वच्चक्रु विंवावंजडा। स्तद्वत्यंचमतानु गामदयुता सर्वां गवादी जिनः ॥ १ ॥ अस्यार्थ ॥ पांच आंधे एक नगरमें हाथी देखण गये एक अंध सूंड ऊपर हाथ फेरे १ बीजो पगऊपर फेरे २ तीजोदांत ऊपर ३ चोथो कान ऊपर ४ पांचमो पूंछ ऊपर ५ पाछे आवी एकठा मिल्ये हाथीनो स्वरूप कहिवा लागे आपसमें एकें पूछ्यो हाथी केहवोछे तिवारे एक बोल्या केलिना थंभ सरीखो १ बीजो कहे देहरानो थंभ सरीखो २ तीजो कहे मुसला सरीखो ३ चोथो कह्यो सूपडा सरीखो ४ पांचमां कह्यो वली वंस सरीखो ५ इम मांहो मांहि वाद करिवा लाग्या एक कहे तुं खोटो बीजो कहे तूं खोटो इण दृष्टांतें आंधोनी परे पंचमतके धणी अहंकारना लीधा एक एकनें धर्म करीमाने अथवा कालादिक एक मनने विषे पंचे बोल परिमाण करे ते जिन मतमें मानीये ॥ दोहा ॥ मत खटछे संसारमें॥पंच अंधसमान, एक एक वस्तु ग्रहे, जिन मत सवे प्रमान॥१॥अथ पाच वादी नाम॥ काल वादी १ सुभाव वादी २ नियत वादी ३ पूर्व कृत वादी ४

पुरपाकार वादी ५ ए पांच वादी मांहिंथी काल वादी बो
ल्या एक कालहीज प्रधानछे ते किम काल जे जोवन
आवे गर्भ धरे काले जन्मे बोले चाले आसाढे श्राव
णी खेतीहोय वदामादिमेवा होय इत्यादि वस्तु काले नी
पजे १ हिवे काल वादी प्रतें स्वभाव वादी बोल्या
सर्व वस्तु स्वभावे नीपजेछे ते किम मोरका पंख कि
णें चीतरयाछे गाय भेसने किणे तरवो सिखायोछे
बचावचीने चूंघनो किणे सिखायोछे पंखीनें आलणा
करणा किणे सिखायोछे मनुपना बच्चा जनमता पगे
न चाले अने तीर्यंचना चालेछे तिर्यंचना बच्चा जन
मता थन पकडे मनुपना बच्चा जनमतां थनकिम न
पकडे एक साथे दो स्त्री निज निज पुरप संजोगमें हु
ई एक स्त्री गर्भ धरे एक स्त्री गर्भ न धरे किसीने
कोडीयां उछाली ते मांहिंथी कोई सीधी पडी कोईक
ऊंधी पडी एक काल माहिं न्यारी न्यारी भात कि
मपडी एकभात क्यूं नही पडी इत्यादि सर्व वस्तु स्व
भावे परगमीछे २ हिवे स्वभाव वादी प्रते नियत वा
दी बोल्या सर्व जीव नियतनें वसछे ते किम कोई क्रो
धी स्वभावते खिमावान नही खिमावान ते क्रोधी स्व
भाव नही किसीना सकत स्वभावते कोमल स्वभाव
नही कोमल स्वभावते सक्त स्वभाव नही सरल स्व
भावते कपटी स्वभाव नही कपटी स्वभावते सरल
स्वभाव नही लोभी सुभावते निरलोभी नही निरलो

भी स्वभावछे लोभी नही इम अनेक भावना अनेक स्वभाव थाय ते नीयत स्वभाव होणहारपे सब भाव हुवा जीवाने बसथी ॥ ३ ॥ हिवे नियत वादी प्रतें कर्म वादी बोल्या सर्व जीव कर्मने बसछे ते किम ए क इंद्री १ बेइंद्री २ तेइंद्री ३ चऊइंद्री ४ पचेंद्री ५ इना मांहि जीव ऊपजे तरस मरीनें थावर माहि ऊप जे थावर मरीनें तरस मांहिं ऊपजे राजा मरीनें रंक होय रंक मरीनें राजा होय ब्राम्हणथी चंडाल होय चंडालथी ब्राम्हण होय स्त्री मरी पुरप थाय पुरप म री स्त्री थाय सत्रू मरी मित्र होय मित्र मरी सत्रू हो य जे निश्चे होणहारछे एकेंद्री मरी नारकी देवता क्यो नही होय नारकी देवता तिर्यंचथी मोक्ष क्यो नही जाय दलद्रीनें संपत क्यो नही होय रंकते राजा क्यो नही होय चोरी जारी कर्म करी शुलीयादि क्यों हो य निर्लोभी ब्रम्हचारी सत्यवादी क्यों पूजीये ते भ णी सुभा शुभ कर्म भोगे बिना छूटे नही ते कारणे कर्म करताछे ॥ ४ ॥ हिवे करम वादीप्रते पुरपाकार बादी बोल्या जो परदेसी राजाने महा पाप कीया ते पाप किहां भोगसी जो जो पाप जीवने कीया ते पा प सवी भोगेसूं छूटेतो जीवका छुटकारा किम थाय ते भणी पुरपाकार ज्ञान दरसन चारित्र तप करी नि काचित कर्म अनेक भवना शुभ पिण भोगवी निंध त कर्म खपावीने मोक्ष जाय जे करम बलीया होय

तो जीवने मुक्त जावा नही देता ॥ यतः ॥ अठ विहं पीयकम्मं अरी भूये सव जीवाणं ते कम्मेण अरिहंता अरिहंता तेणवुच्चंति॥१॥ते माटे पुरषाकार प्राक्रम उद्यम विना कोई कार्ण नीपजे नही ॥ ५ ॥ ए पांच वाद्दी आप आपणी सरधाथापता पारकी सरधा उथापता थका तिवारे पछे जैन मती बोल्या जो बादी तुमे पोताना पक्ष थापता थका पारका तुम्ह पक्ष उथापताथका जासुं तुम्ह मिथ्या बादीहो तिवारे पाचो वादी बोल्या तुम स्यूं सरधोछो तिवारे पछे ते जैन मती बोल्या हमतो पाचोनें सरधेछें तिवारें पछे ते ५ वादी बोल्या पांचोना स्वभाव न्यारा न्यारा छे घणा फरक दीसे ते किम पांचोने खरा मानो तिवारे पछे ते जैनमती बोल्या हम आप आपने ठाम बीच उनानुं जुदा जुदा राखूबू ते माहो माहिं विरुद्ध न थाय ते कहेछे प्रथम् काल लब्धी विनां मोक्ष रूप कार्य सिद्ध न थाय एतले काल सर्वनो कार्णछे जे काले कार्य होणहारछे ते कार्य तिण वेला थाय ते कहेछे कोईक जीव समकित पामी तथा विरत पामीनें पछे ते किम काल पका नही देसऊणा अर्द्ध पुद्गल संसारथकी तिरवानो बाकी रह्यो ते माटे ए काल समवाय अंगीकार कह्यो तिवारे सिष्य पूछेछे अभव्य मोक्ष क्यो नही जाय तिवारे उत्तर कहेछे जे अभव्यनो काल मिले पिण अभव्यमे सुभाव मिले नहीं

जिम नारकीनो खिमा करवानो स्वभाव नही १ युग लीय.ने क्रोध करवानो स्वभाव नही २ देवताने वि रत करवानो स्वभाव नही ३ बांझरी गायने दूध देवानो स्वभाव नही ४ तिण कारण मोक्ष जाय नही एतले काल स्वभाव दोनो कारण चाहिज्ये तिवारे क है जे भव्यनो तो मोक्ष जायवानो स्वभावछे तो सर्व भव्य मोक्ष क्यूं नही जाय तिवारे कहि जे नीयत निश्चे समकित गुणजाग्यां मोक्ष जाय एतले काल १ स्वभाव २ नीयत ३ ए तीन कारणमाना तिवारे कहेजे समकित आद कारण श्रेणक नेथी मोक्ष क्यों गयो नही उत्तर पूर्व कृत कर्म घणाथा वा पुरषाकार प्राक्रम उरमे करयो नही तिवारे कहे जे सालभद्र प्र मुख घणाने उद्यम कीधो ते उत्तर पूर्व कृत कर्म खपा या नही तिणे पाचो समवाय मिल्या कार्य सिद्ध था य तिहां कोई पूछे जे मरुदेवी माताने च्यार कारण मिं ल्या पिण पुरषाकारतो कोई कीधो नही तिवारे क हिजे अलप कर्म माटें शुक्ल ध्यान क्षपक श्रेण चढ वानो उद्यम कीधो (यतः॥ कालो सहावय नियइ पु वकयं पूरस कारणो पंच समवाय समत्त एगंत होइ मिछत्तं ॥ १ ॥ इति पाच वादी मतम् प्रश्नोत्तर १३४

अथ३६३मत जिसके४भेद क्रियावादी १ अक्रियाबा दी२ अज्ञानवादी ३विनय वादी४ एकसो असीमत क्रिया वादीना ते कहेछे आपणो जीव सास्वतोछे पिण

काले नीपजे १ आपणो जीव सास्वतोछे पिण निय तने बसछे २ आपणो जीव सास्वतोछे पिण स्वभावे नीपजे ३ आपणा जीव सास्वतोछे पिण इश्वरने नी पायो नीपजे ४ आपणो जीव सास्वतोछे पिण एक आत्मा सर्व व्यापछे ५ परका जीव सास्वतोछे पिण काले नीपजे ६ परकाजीव सास्वतोछे पिण नियतने वसछे ७ परका जीव सास्वताछे पिण होणहार स्व भावे नीपजे ८ परका जीव सास्वताछे पिण इश्वर नें निपाया नीपजे अर्थात् इश्वरका पैदा करया होय ९ परकाजीव सास्वताछे पिण एक आत्मा स र्व व्यापछे १० आपणी आत्मा असास्वती छे पिण काले नीपजे ११ आपणी आत्मा असास्व तीछे पिण नियतनें बसछे १२ आपणी आत्मा अ सास्वतीछे पिण स्वभावे नीपजे १३ आपणी आत्मा असास्वतीछे ईश्वरीनी नीपाई नीपजे १४ आपणी आत्मा अशाश्वतीछे पिण एक आत्मा सर्व व्यापछे १५ परकी आत्मा अशाश्वती पिण काले नीपजे १६ परकी आत्मा अशाश्वती पिण नियतनें वसछे १७ परकी आत्मा अशाश्वती पिण स्वभावें नीपजे १८ परकी आत्मा अशाश्वती पिण ईश्वरनी नीपाई नीपजे १९ परकी आत्मा अशाश्वती पिण सर्व व्यापछे २० ए वीस जीव ऊपर लीधा तिम २० नो तत्व ऊपर लेणा जीव १ अजीव २ पुण्य ३ पाप ४

आश्रव ५ संवर ६ निर्जरा ७ बंध ८ मोक्ष ९ वीस नम्मा १८० हूवा इति क्रियापत वादी ॥ हिवे ८४ अक्रियावादीना मत ते कहेछे अपणी आत्मा शाश्वती पिण कालें नीपजे ए पांच पहली तरे कहणा छठी इछा ६ एवं ६ अपणी आत्मा शाश्वती एह ६ परकी आत्मा शाश्वती पूर्ववतु कहणा एवं १२ जीव आश्री अजीव आश्री १२ कहणा साततत्व उपर ८४ मत हूवा पुन पाप आश्री नही कहणा इती ८४ अक्रियामत वादी ॥ अथ ६७ अज्ञान वादी मत कहेछे कोई कहे जीव छतोछे पिण कह्यो न जाय२ जीव छतो अछतो पिण कह्यो न जाय ३ कोण जाणे जीव छतोछे ४ कोण जाणे जीव अछतो ५ कोण जीव छतो अछतो ६ अवाचत छतो अछतो कह्यो न जाय ७ ए सात नव तत्व ऊपर लेणा एवं सर्व नोरतां ६३ हूआ उत्पति छती १ उत्पति अछती २ उत्पति छनी अछती ३ अवाचत छती अछती नही कही जाय ४ ए ६३ अने ४ एवं ६७ मत अज्ञान वादीना कह्या ॥ हिवे विने वादीना ३२ मत कहेछे सूर्यकी विनय १ राजाकी विनय २ साधाकी ३ ग्यानकी ४ थेवरकी ५ माताकी ६ पिताकी ७ धर्मकी ८ ए आठरी मनसे वचनसें कायसे आठतीया २४ ए आठरी भक्ति करे १ वहु मानदे गुण ग्राम करे २ असातना टाले ३ एवं पूर्व २४ बोल मांहिं आठ मिला

ये तो सर्वे ३२ मत विनय वादीना कह्या (यतः ॥ अस्सीसयं किरियाणं अकिरियाणं चुल्लसीय अना नियाणं सतसठि विणेयाणं चवतीसं १ ॥ इति ३६३ मत क्रिये अक्रिये अज्ञान विनय वादी इन च्यारोंके ३६३ मतहें प्रश्नोत्तर ॥ १३५ ॥

॥ अथ चेईये शब्दका अर्थ लिख्यते ॥

श्री केवली परूपिया धर्म प्रमाणहै लेकिन द्रोपदी ओर सूरियाभ देवतानें तथा सक्र इंद्रने तथा चमर इंद्रनें इनोंने इत्यादिकोंने धर्म नही चलायाहे धर्मतो केवलीजी महाराजका फरमाया प्रमाणहे तुम कहते हो चमर इंद्र जबऊंचे लोकमें जाय तब प्रतिमाका शरना लेकर जाय ऐसा तुम बिना विचारे कहतेहो सरणा अरिहंत महाराजका १ तथा अरिहंत चेईयाणी वा जिणका अर्थ अरिहंतोका चैतः ॥ सो छदमस्त तीर्थंकरहें २ ओर तीसरा अणगार साधू ए ३ सरने लेकर जावेहें ए प्रत्यक्ष देखो जो चमर इंद्र श्रीमहावीर स्वामीके सरणे आया उसवक्त भग वान छदमस्त तीर्थंकरथे लेकिन ३ कालमें कोईभी वक्तमें प्रतिमाके सरने आया होयतो जवाबलिखो इ सवास्ते जगह जगह सूत्रके पाठहे अरिहंत महाराज कुं देवताओंनें तथा श्रावग लोगोंनें वंदना नमस्का र करीहे जिसका पाठ कल्लाणं मंगलं देवयं चेईयं दे खो श्री तीर्थंकर माहाराजकूं सूत्र भगवती ठाणायंग

राय प्रसेनींमे चैत कह्याहै जिसका अर्थ टीका कार में कह्याहै भगवान ग्यानवान तथा मन प्रसन्नका कारण तथा प्रसस्तमन हर्ष उपजनेका कार्ण जगह जगह अनैदेवसूरीजीनेबी टीकामें अरिहत महाराज कुं चैत शब्दका ए अर्थ कराहै ओर केसी कुमारजी कूं तथा ओर साधोकू पारसनाथ स्वामीके ५०० अणगार तुंगीया पुर नगरीमें पधारे उनको ओर इत्यादिक घने साधोंकूं घणे श्रावकोनें वंदना नमस्कार करी जिसका पाठ (कल्लाणं मंगल देवयं चेईयं) इहां भी टीका कारने अर्थ कीयाहै चेईयं शब्दका अर्थ साधू मन प्रसस्तका कार्णहै ओर श्री तीर्थंकर महाराजनें अरिहंत सिद्ध केवली साधू सरणे ४ सूत्रमे कहे जिसमे प्रतिमाका पांचमा सरना कह्या नही ॥ १३६ ॥ दोहा ॥ आदि ऋषभ अरिहंत जिन, अंत नाम महावीर॥सरन चोवीसी वंदता, कुमती जावे दूर ॥१॥गौतम गणधर गुण निलो, पामी केवल ज्ञान॥वीर पछें जिन केवली, बारह वर्ष प्रमान॥२॥ पाटो धर हूवा सही, स्वामी सुधर्मा जांन॥सिष्य साखा वरती घणी, शुद्ध सत्ताईस जान॥३॥जैन धरम उत्तम खरो, आराना परमान ॥ठलनी सरीखा ठेक जिम, खेंचातानी आन॥४॥पंचपरमेष्टी सुमरीए, तीर्थच्यारो माहि॥धर्म दयामें भेदन्ही, मुर्ख चितमन मांहि ॥५॥नागोरीगछहै बडो, श्री पूजवर्द्धमान ॥लघुभ्राता तपवंतहै, मनोहर

रिखसुजान॥६॥नगर मेडते पहोचीयां, वैरागे बहु फेश॥ कर्म संग्राम करि वामणी, पकडी तिन समशेर॥७॥सो ष्यो शकल शरीरको, तपस्याके परभाव॥ श्री पूज मनोहरदासके, नित प्रतमें गुणगाव॥८॥तास सिष्यपंडित हूवा, बहुत गुनाकी खांन॥पूज भागचंद विचरत, आगमके परवान॥९॥तास पटो धर जानीये, गुनधारक बहु भात॥पूज्यजु सीतारामजी, जारे मनमें पांति॥१०॥सिष्य ज्यारा गुनवंतहै, बहु आगमके जान, पूजस्योरामजुदासजी, गुरु भक्ता गुनवान॥११॥तास सिष्य गुनागरा, आज्ञाकारकजान॥नूंनकरनजी साधूहै, सुध संजम मतिमान॥१२॥श्री पूजस्योरामजी, बहुविध गुनभंडार॥दूजा सिष्य तेहना नमूं, हरजीमल हितकार॥१३॥अंतेवासीतास सिष्य, रतनचंद मुनिजान॥ ज्ञान क्रियाके भेदको, भिन्न भिन्न कहे वखान॥१४॥कुवरसेनजी तास सिष्य, तिनके सिष्य ऋखराज॥प्रश्नोत्तर संग्रह लिख्यो, सुजनोके हितकाज॥१५॥ सूत्र अर्थ गंभीरहें, जाणे बुद्धिनिधान॥मनशाकरता सूत्रनी, भेद अनेक वखान॥१६॥जैसे पूर्व प्रश्नथे, तैसेही मन धार॥इस प्रश्नोत्तर ग्रंथमें, लिखे बुद्धिअनुसार॥१७॥ माफ करो सब माहिरा, गुणि जन देखी दोश॥तुछ बुद्धी जाणुं नही, पूर्ण शब्द नर कोश॥१८॥१३७॥

॥ गाथा ॥ नोजाणइ नायरई नोपालइ भावजुय किरियाधम्मं॥ तिपणाहिं अठभंगा॥ तेसिदिठं तया ए

ए ॥ १ ॥ सामण लोय तव लिंगधारिणअगीयत्थ से णियाईया ॥ पंचुत्तरसुर संविग्गपखिणो अठमे सुज्झ ई ॥ २ ॥ पढमा मिछ दिठी चउरो संसार भमणहेउ त्ति इयरा सम्मदिठी अरिहा निवाणगमणस्स ॥ ३ ॥ इत्यागम सौरभम् ॥

॥ अर्थ ॥ नही जाणताहे जे परिज्ञा प्रत्याख्यान परिज्ञा करिके १ नही आदरताहे २ नही पालताहै प्राणी भावसेती जिन धर्म्मकुं ३ इनतीनोपदो करके आठ भांगे होतेहै तिनुंके दृष्टांत ए कहितेहै ॥ १ ॥ सामान्य लोक १ बालतपस्वी २ द्रव्यलिंगी सम्यक्त रहित ३ अगीतार्थ अपठित ४ श्रेणक राजादिक ५ पाच अनुत्तर विमानके देवता ६ संविग्न पाक्षिक अध्यात्म मत धारक ७ आठमें भागें शुद्ध चारित्र धर यती अर्थात् साधू॥८॥ २ ॥ पहिले भागे मिथ्यादृष्टि च्यारहै सो भव भ्रमणके कारणहै ओर अगले च्यार सम्यग् दृष्टिहै सो योग्यहैं मोक्ष जावणेकुं पहिले४भांगे नही ऐसी सिद्धातकी सुगंधता जाणणी ॥

न जाणे ॥	न आदरे ॥	न पाले ॥	सामान्यलोग १
न जाणें ॥	न आदरे ॥	पालइ ॥	तपस्वी २
न जाणें ॥	आदरे ॥	न पाले ॥	द्रव्यलिंगी ३
न जाणे ॥	आदरे ॥	पालइ ॥	अगीतार्थ ४
जाणइ ॥	न आदरे ॥	न पाले ॥	श्रेणकादि ५
जाणइ ॥	न आदरे ॥	पालइ ॥	अनुत्तरसुर६

जाणइ ॥ आदरे ॥ न पाले ॥ संविग्नपक्षी ७
जाणइ ॥ आदरे ॥ पाले ॥ चारित्रीयो ८

॥ श्री गौतमायनमः ॥ जिनेस्वरतारकहै ए देशी ॥

ये नर जव उत्तमहै, उत्तम श्री जिन सेव ॥ ये० ॥ ए टेक ॥ उत्तम आरजदेस कुल उत्तम, उत्तम नर ज व पायो॥ इंद्रीपाचों पांमी उत्तम, उत्तम दीर्घआयो॥ ये० ॥ १ ॥ उत्तम देह निरोग अवस्था, और उत्तम चतुराइ॥उत्तम साधू उत्तम वानी, उत्तम समकि त पाई॥ये०॥ २ ॥ उत्तम विरती उत्तम करणी, करता सुधगति जावे॥मनुप जनम सुफलोकर नविजन, तव उत्तम पदवी पावे॥ये०॥३ ॥ तीर्थंकर चक्री अरु हलध र, केसव पदवी पावे॥केवली साधू श्रावक सम्यग्, मं डली नूप कहावे॥ये०॥४ ॥ऐसी ऐसी पदवी उत्तम, मनु पतणें नव पावे ॥केवलज्ञानी धर्म अराधी, जन्म मर्ण मिटावे॥ये० ॥ ५ ॥ ऐसा मनुपतणा जव उत्तम, श्री जिन राज बतायो॥च्यारगतीमें नमतां जमता, अब उ त्तम नरजव पायो॥ये०॥ ६ ॥ क्रोधमान माया अरु म मता, इनसें प्रीत हटावो ॥ ज्ञान दरसन चारित्र वली तप, इनसें कर्मखपावो॥ ये०॥७॥संवत उनीसे अधिक पचासें, करनाल नगर चोमास॥ऋखराज कहे श्री जि न सेव्यां, पूरें मनकी आस ॥ ए० ॥ ८ ॥

॥ छंद शिखरिणी ॥

विद्यारत्नसरसकविताव्धिमारत्नंतपाश्री ॥

वांगारत्नंपरमपदवीयानरत्नंतुरंगः ॥
अंनोरत्नंत्रिदशनटनीमासरत्नंवसंतः ॥
नूनृद्रत्नकनकशिखरीदेवरत्नंजिनेंद्र ॥ १ ॥

इति श्री सत्यार्थसागर स्वामीजी ऋषराज प्रश्नो त्तर संग्रह करता नविजनोके उपकारार्थ द्वितीयो ना गवर्णनम् ॥ इती श्री सत्यार्थ सागरका द्वितीयो नाग

॥ संपूर्णम् ॥

॥ अथ सत्यार्थ सागर तृतीय नाग प्रारंनः ॥

॥ श्री ॐनमः सिद्धं ॥ णमो अरिहंताणं॥णमो सि द्धाणं॥णमो आयरियाणं॥ णमो उवज्झायाणं॥ णमो लो एसवसाहूणं॥एसो पंच णमुक्कारो सवपावप्पणासणो मंगलाणं च सवेसिं पढमंहवइ मंगलं ॥ १ ॥ श्री सि द्धांत मांहि मोक्ष मारगनों मूळ कारण श्री सम्यक्तछे जेहनें सम्यक्त तेहना तप नेम सर्व प्रमाण ते सम्यक्त श्री आचारांगनें चउथे श्री सम्यक्त अध्येनें लाने ते अध्ययने लिखीयेछे ॥ (सेवेमिझेयप अतीता जेय पडुप्पन्ना जेय आगामिस्सा अरहंता नगवंता तेस व एवमाइ रकंति एवं नासंति एवं पणवेंति एवं परू वेंति सवेपाणा सेवनूता सवेजीवा सवेसत्ता नहंतवा न अद्यावेतवा न परिघेतवा न परितावेयवा नउद्दवेयवा ए सधम्मेसुद्धे णितिए सासए समेचलोयं खेतन्नेहिं पवेति ते तंजहा उठिएसुवा अणुठिएसुवा उवठिएसुवा अ णुवठिएसुवा उवरयदंडेसुवा अणुवरयदंडेसुवासोव हि

तेसुवा अणोवहिए सुवा संजोग रएसुवा असंजोग र, एसुवातवंचेतं तहाचेतं असिंसचेत पवुच्चई तं आइज्ञ, ए णिहेए णिखेवे जाणिजु धम्मंजधातधादिठेहिं णि वेयंगछेज्जा णोलोगस्सेसणं चरे जस्स णत्थि इमाणा ती अन्नातस्स कउसिया दिठं सुत्तं मयं विन्नायजा ए यं परिकहिज्जइ समेमाणा पलेमाणा पुणो पुणो जातिं पकप्पेंति अहोयरातयज्जयमाणे धीरेसया आगयपन्ना णे पमत्ते वहिया पास अपमत्ते सया परिक्कमिज्जासि तिबेमि सम्मत्तस्स पढमो उद्देसो समात्तो १) ॥ एणें उद्देसे एहवो कह्यो जे सर्व प्राण भूतजीव सत्व न हणवा ए धर्म्म सूधो एतले दयामें धर्म ते सूधो अनें हिंस्यामें धर्म ते असुद्ध जाणवो ॥ इति प्रथम प्रश्न ॥ २ ॥ तथा सम्यक्तनें बीजे उदेसे एहवो कह्यो जे समण माहण हिंस्यामें धर्म परूपे अनें वली एहवो कहेहें धर्मनें काजें हिंस्या करतां दोस नही ते तीर्थं करे अनार्य वचन कह्यो एतलें एहवा बचनना बोल नहार अनार्य जाणवा ते अधिकार लिखीएछे ॥ (आवंतीके आवंती लोयंसि समणाय माहणाय पुढो विवादंवति सेदिठचणे सुयंचणे मयंचणे विन्नायं च णे उढअधं तिरियं दिसासु, सवतोसु पडिलहियंचणे सवेपाणा सवेजीवा सवेभूया सवेसत्ता हंतवा अज्जावे तवा परियावेयवा किलामेयवा परिघेतवा उद्दवेयवा ए त्थंपिजाणधनत्थित्थ दोसा अणारिय वयणमेयं

तत्थ जेते आयरियाले एवं बयासी सेदुदिठंचने दु स्सुयंचने दुम्मुयंचने दुचिन्नायंचने उद्दं अहं तिरि या दिसासु सवतो दुप्पडिलेहियंचने जन्नं तुने एवं आइखह एवं नासह एवं परूवेह एवं पन्नवेह सवे पाणा सवे भूता सवेजीवा सवे सत्ताण हंतवा णअ जावेतवा णपरिघेतवा ण परियावेयवा ण उद्दयवा एथंपि जाणध नथित्थ दोसो आरिय वयणमेयं पुव्र निकाय समयं पत्तेयं २ पुछिसामो हंनो पावा दुया किं भेसायं दुखं उदाहु असातं समितापडिवन्नेयावि एवं बूया सवेसिं पाणाणं सवेसिं भूयाणं सवेसिंजीवा णं सवेसिं सत्ताणं अस्सायं अपरिणिवाणं महन्भयं दु क्खं तिवेमि) ॥ २ ॥ तथा जे सम्यक्त अध्ययन ना बीजा उदेसानें धुरें कह्यो (जे आसवा ते परि सवा) ए आदिच्यार बोल तेहनो अर्थ लिखीयेछे जे [आसवा] कहिता जे स्त्री आदिक कर्म बंधना कारण तेहज वैराग्यनें आणवे करी (परिसवा) क हिता ते निर्जराना ठाम थाइ तथा ज (परिसवा) ते [आसवा] कहिता जे परिश्रव अरिहंत साधु आ दि निर्जराना ठाम ते दुष्ट अध्यवसाये करी आश्रव कर्म बंधना ठाम थाइ तथा जे (अणासवा) ते(अ परिसवा) कहितां जे अनाश्रव व्रत विशेपते अशु भ अध्यवसायें करी (अपरिसवा) कहिता ते नि र्जराना ठाम न थाइ कुंभरीकनीपरें तथा जे (अप

तेसुवा अणोवहिए सुवा संजोग रएसुवा असंजोग र
एसुवातवंचेतं तहाचेतं असिंसचेत पवुच्चई तं आइत्र
ण णिहेण णिखेवे जाणिकु धम्मंजधातधादिठेहिं णि
वेयंगछेज्जा णोलोगस्सेसणं चरे जस्स णत्थि इमाणा
ती अन्नातरस कउसिया दिठं सुत्तं मयं विनायंज्ज ए
यं परिकहिज्जइ समेमाणा पलेमाणा पुणो पुणो जाति
पकप्पंति अहोयरातयज्जयमाणे धीरेसया आगयपन्ना
णे पमत्ते बहिया पास अपमत्ते सया परिक्कमिज्जासि
तिबेमि सम्मत्तस्स पढमो उद्देसो समात्तो १,) ॥
एणें उद्देसे एहवो कह्यो जे सर्व प्राण नूतजीव सत्व
न हणवा ए धर्म्म सूधो एतले दयामें धर्म ते सूधो
अनें हिंस्यामें धर्म ते असुद्ध जाणवो ॥ इति प्रथम प्रश्न
॥ २ ॥ तथा सम्यक्तनें बीजे उदेसे एहवो कह्यो जे
समण माहण हिंस्यामे धर्म परूपे अनें वली एहवा
कहेहे धर्मनें काजें हिंस्या करतां दोस नही ते तीर्थं
करे अनार्य वचन कह्यो एतलें एहवा वचनना बोल
नहार अनार्य जाणवा ते अधिकार लिखीएछे ॥
(आवंतीके आवती लोयंसि समणाय माहणाय पुढो
विवादंवाति सेदिठचणे सुयंचणे मयंचणे विन्नायं च
णे उद्दअधं तिरियं दिसासु सवतोमु पडिलेहियंचणे
सवेपाणा सवजीवा सवभूया सवेसत्ता हंतवा अज्जावे
तवा परियावेयवा किलामेयवा परिघेतवा उद्दवेयवा ए
त्थंपिजाणधनात्थित्थ दोसा अणारिय बयणमेयं

तत्थ जेते आयरियाते एवं वयासी सेदुदिठंचने दु स्सुयंचने दुस्सुयंचने दुचिन्नायंचने उढं अहं तिरि या दिसासु सवतो दुप्पडिलेहियंचने जन्नं तुने एवं आइखह एवं नासह एवं परूवेह एवं पन्नवेह सवे पाणा सवे नूता सवेजीवा सवे सत्ताए हंतवा एअ जावेतवा एपरिघेतवा ए परियावेयवा ए उद्दयवा एथंपि जाएध नथित्थ दोसो आरिय वयएमेयं पुव निकाय समयं पत्तेयं २ पुछिसामो हंनो पावा दुया किं नेसायं दुख उदाहु असातं समितापडिवन्नेयावि एवं वूया सवेसिं पाणाएं सवेसिं नूयाएं सवेसिंजीवा एं सवेसिं सत्ताएं अस्सायं अपरिएिवाएं महन्नयं दु क्खं तिवेमि) ॥ २ ॥ तथा ने सम्यक्त अध्ययन ना बीजा उदेसानें धुरें कह्यो (जे आसवा ते परि सवा) ए आदिच्यार बोल तेहनो अर्थ लिखीयेछे जे [आसवा] कहिता जे स्त्री आदिक कर्म बंधना कारए तेहज वैराग्यनें आएवे करी (परिसवा) क हिता ते निर्जराना ठाम थाइ तथा जे (परिसवा) ते [आसवा] कहिता जे परिश्रव अरिहंत साधु आ दि निर्जराना ठाम ते दुष्ट अध्यवसाये करी आश्रव कर्म बंधना ठाम थाइ तथा जे (अणासवा) ते (अ परिसवा) कहितां जे अनाश्रव व्रत विशेषते अशु न अध्यवसायें करी (अपरिसवा) कहिता ते नि र्जराना ठाम न थाइ कुंमरीकनीपरें तथा जे (अप

रिसवा) ते [अणासवा] कहितां जे अपरिश्रव अविरतिना ठाम तेहिज अविरतना ठाम होवे पाडु वा जाणी वैराग्यें करी अध्यवसाय विसेष अविरति नें वांझवे करी अनाश्रवनाठाम थाइ एतलें कर्म बंध ना ठाम न थाइ ॥ तथा कोइक एहना अर्थ फेरवीने कहेछे जे (आसवा) ते (परिसवा) कहितां जे ध मनें कारणें हिंस्या करीये तिहां निर्जरा थाइ तथा वाली केतला एक इम कहेछे जे धर्मनें काजे हिंस्या कीजे ते हिंस्या न कहिये तो हिवे चतुर होय ते बि चारी जोवो जो धर्मनें काजे हिंस्या करतां निर्जराथा इ अने जो धर्मनें काजे हिंस्या कीजे तो ते हिंस्या न कहिए तो रेवतीनुं पाक श्री महावीरे किम न ली धो पिण रेवती सुध भावनी अपेक्षाये अलप कर्म बहु कर्म निर्जरा कीधी परंत महावीरनें तो थोमसी नी हिंस्याको टालीछे तथा वखान सुणतां मुहडे हा थ तथा वस्त्र देई ते स्याभणी तथा धर्मनें काजे हिं स्या परूपे तेहने बीतरागें अनार्य वचनना बोलण हारा क्यां कह्या तथा जे समण माहण हिंस्या परू पे तेहने (वहुदंमणाणं मुंमणाणं जाव ते माई मरणा णं पीयामरणाणं) इत्यादिबोल क्यां कह्या विवेकी होय ते विचारी जो जो अने वली जो धर्मनें कीधे आश्रव नही तो साधू ईरज्यांइचाले ते स्याभणी पिण जाणज्यो ते सूत्र ४ विरुद्ध कहेछे ॥ ३ ॥ तथा

श्री वीतरागदेवें श्री सूयगडांग अध्ययन १७में एहवो कह्यो जे पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिणनें विषे एणीपरें मोक्षपामें ते अधिकार लिखीएछे ॥ (सेवेमि पाईणंवा जाव एवसे परिन्नायकंमे एवं सेविये वेयकम्मे एवंसेवियं तकारए नवतीति मरकायं तत्थ खलु नगवता छ जीवनीकाय हेउपन्नता तंजहा पूढवीकाईए जाव तस्स काईए सेजहानामए मम अस्सायं दंडेणवा अठीणवा मुठीणवा लेलूणवा कवालेणवा आउडि ज्जमाणस्सवा हंममाणस्सवा तज्जिज्जमाणस्सवा ताडिज्जमाणस्सवा परियाविज्जमाणस्सवा किलाज्जमाणस्सवा उदाविज्जमाणस्सवा जाव लामुखण णमातम्मवि हिंसाकारगं दुक्खं नयंपडि संवेएमि इच्चेवं जावणं सवे जीवा सवेनूतासवे पाणा सवेसता दडेणवा जाव कवालेणवा आउट्टिज्जमाणा वाहंममाणावा तज्जिज्जमाणावा तालिज्जमाणावा परिताविज्जमाणावा विउदज्जमाणा वा जावलोमुखरगणमात्रमवि हिंसाकारगं दुक्खं नयं पडिसंवेदेति एवं नवा सवे पाणा ४ जाव सत्ताणहंतवाणज्जावेयवा न परिघेतवा न परितावेयवा न उदवेयवा सेवेमि जेअतीता जेयपडुपन्ना जेय आगामिस्सा अरिहंता भगवतो सवेते एवमाइक्खंति एवं नासंति एवं पन्नवंति सवे पाणा ४ जावसत्ताए हंतवा णअज्जावेयवा णपरिघेतवा णपरितावेयवा ण उद्दवेयवा ए सघम्मे धुवे णीतिए सासए समे सव

लोगं खेयणेहिंपवोदिते) ॥ इहां श्री वीतरागे एकांत दयाइमोक्ष कही दया सहित करणीये मोक्ष जाण वी पिण कही हिंस्याइंमोक्ष नथी ॥ ४ ॥ तथा श्री सूयगडांगने १८ में अध्ययने एहवो कह्यो जे श्रमण माहण हिंस्या परूपें ते संसारमांहिं रुलें गाढा दुखी थाइ वारवार जनम मर्ण करे दारिद्री दो नागीथाइ हाथ पगादि सरीरनुं छेद पांमे अने जे श्रमण माह ण दया परूपें ते सासार कांतार मांहिं रुलें नही ते दुखी न थाइ तेहनां हाथपगादि छेद न पामें ते सी झें बूझें सर्व दुःखनो अंतकरे ते आलावो लिखीयेछे ॥ (एसतुलाएसप्पमाणे एससमो सरणे पत्तेयंतुला पत्तेयं पमाणे पत्तेयं समो सरणे तत्थणं जेते समण माहणा एवमातिक्खंति जाव परूवेति सवेपाणा जा व सत्ताणं हंतवा अज्ञावेयवा परिघेतवा परितावेय वा किलामेतवा उद्दवेयवा ते आगंतु छेयाए ते आगं तु भेयाए जाव ते आगंतु जाईजरा मरण जोणि ज म्मण संसार पुण नव गभवास भवएवंच कलकली भागिणो भविस्सति ते बहूणं दंडणाणं बहूणं मुंडणा णं तज्जणाणं तालणाणं अदुबंधणाणं जाव घोल णाणं माई मरणाणं पिति मरणाणं भातिमरणाणं भ गणी मरणाणं भज्जापुत्तधूत सुण्हा मरणाणं दारिद्दा णं दोहग्गाणं अप्पियसंवासाणं पियविप्प उग्गाणं बहुणं दुक्ख दोमणसाणं अ भागिणो भविस्संतिनो सि

झंति नोबुझंतिस्संति जाव नोसब दुखाणं अंतं करि स्संति एसतुलाए सपमाणे एससमोसरणे पत्तेयंतु ला पत्तेयंपमाणे पत्तेयं समो सरणे तत्थणं जेते सम णा माहणा एवमाइखंति जावपरूवेंति सवेपाणा जा वसवेसत्ता णहंत्तवा जावण उद्दवेयवा तेणो आगंतुछे याए तेणो आगंतु भेयाएजाव जाईजरामरण जोणी जमण संसार पुणभव गभवास भवएवंच कलंकली भागिणो णोभविस्संति तेणो बहू दंडणाणं जावणें बहूणं दुक्खदो मणसाणंणो अभागिणो भविस्संति अणातीयं चणं अणवयग्गं दीहमद्धंवा भरंत संसार कंतार भूजो२ णो अणपरियट्टीस्संति ते सिझिस्संति जाव सवदुखाण मंतं करिस्संति)॥ ए आलावाने मेले जे श्री बीतरागना संतानिया ते एकांत दयाइ धर्म्म परूवें पिण हिंस्यां में धर्म न परूवें ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ केतलाएक इम क हेवें जो दयामें धर्मतो चारित्रियो नदी किम उतरे ते हनो उत्तर श्रीगो जो नदी उतरे धर्म होयतो वार वा र रयूं न उतरे श्री वीतरागेतो नदी उतरवानी संक्षा बोली तथा श्री समवायांगनें इकवीसमे समवाइं तथा दशाश्रुतस्कंधमध्यें एहवा कह्या जे [अंतोमासस्स तउ उदगलेवें करे माणेसवले] तथा (अंतो संवच्छ रस्स दस उदग लेवे करेमाणे सवले) इहां इम क ह्यो जे महीना मध्यें तीन लेप लगावे ते सवलु वर स दिवसमाहिं दसलेपलगावेतो सवलु तो हिवे जोवो

अने जो नदी उतरे धर्म्म तो श्री वीतरागें जिको अ
धिकी नदी उतरे तेहने सबलो क्यां कहे तथा जे ध
र्म कर्तव्यछे ते बहू बहू कीजे अने वली करीने अनु
मोदीए अने नदीतो बहू बहू उतरवी न कही अने
उतर्यांपछे अनुमोदे पिण नही जे विराधना हुवीहोय
ते निंदें ग्रहे तथा साधूनें विहार करता केईक वरस
तथा केइयकमास तथा केइयक दिवस खेत्र विशेपें
तथा देस विशेपे नदी नावी तथा न उतर्यो तो ते
काई साधू नदी अण उतर्यांनो पश्चातापतो न करे
पिण प्रतिमानो पूजणहारो केईयक मासें केईयक दि
वसे कारण विशेपें प्रतिमा पूजी न सके तो पश्चाता
पकरे इम चिंतवे जे माहिरे पोतें पाप जेमें प्रतिमा न
पूजाणी पिण साधू नदी अण उतरे इम न चिंतवे
जे म्हारे पोतें पाप जे मे नदी न उतराणी जिको प्र
तिमा ऊपर नदीनो दृष्टांत मांडेछे ते सूत्र विरुद्ध दी
सेछे ते एतलाजणी जे प्रतिमाना पूजनहारने प्रति
मानी पूजा अनुमोदवानें खातेछे अने साधूनेतो नदी
नो उतार निंदवा खातेछे तथा हिवे जेणे खाते नदी
छे ते प्रेछ्यो नदी असकय प्रझारछे अने अनाकुटि
छे ते अनाकुटि श्री समायांगमध्ये एकवीसमे समवा
येछे बिबेकीहोयते विचारी जो ज्यो ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥
तथा सिद्धांत मांहिं तुंगीया नगरीना तथा आलंभी
या नगरीना तथा सावत्थी नगरीना परमुख श्रावक

गाढाघणाना अधिकार दीसेछे पिण कुणें श्रावकें प्र
तिमाघडावी तथा भरावी तथा प्रतिष्ठावी तथा पूजी
तथा जुहारी कही दीसती नथी ॥ मनुष्य लोक मां
हि एक द्रूपदीए पूजीदीसेछे ते पूजवानो प्रस्ताव के
हु सिद्धांतना अर्थतो नय ऊपरि चाले एतो नय सं
सारना आरणकारणनों दीसेछे जे परणती वेलाइं पूजी
वली पुनरपी आखा भवमांहि द्रोपदीइ प्रतिमापूजी
कही नथी जो मोक्षनें खाते होयतो परणवाना अव
सर टाली वली वली पूजे पुन ए मोक्षनें खातें नथी
दीसती अने जे वास्तुक शास्त्र तथा विवेक विलास
मांहिं प्रतिमा घडावा भरावानी विध बोली थता जे
हिवडां नवी प्रतिमा भरावे तथा घडावे ते घडावना
हारो जेहने पूछे मुजने प्रतिमा घडावा भरावा तथा
प्रतिष्ठानी विधी कहो तेहनें ते जेहवीविधिवइ तेहने जो
तां संसारनें हेत दीसेछे ते किम ते लिखीयेछे (एक वीति
स्थयरासं तिकराहुंतिगेहेसु) जे एकवीस तीर्थंकरनी प्र
तिमा घरि मांडी शांति करे पिण त्रिण तीर्थंकरनी प्रति
मा घरिन मांडे जो मोक्षने खाते होइतो त्रिण तीर्थंकर घ
रें मांड्या शांति स्यूं न करे तीर्थंकरतो चोवीसें मोक्ष
दायकछे जेणें इम कह्यो जे त्रिण तीर्थंकर घरे न मां
डीये जेह भणी तेहने बेटा न होवे ते भणी न मांडी
ये एणें कारणें संसार हेतें दीसेछे पिण मोक्षने खाते
नथी तथा जिको नवी प्रतिमा भरावे तेहनीरा

मि पूजीने तीर्थंकरनी राशिसंघाते मेलता विसे जोई इम करतें जे तीर्थंकर संघातें नामी वेध पडे तथा बी था बारूं पडे तथा नवपंचकपडे तथा षडाष्टको पडे इत्यादिक योग ऊपजे ते प्रतिमा घडावे नही भरावे नही घरिमांडे नही एहंजोतां संसारने हेतें दीसेछे त था वली जिहां प्रतिमा प्रतिष्ठाइछे तिहां आरंभ का रण घणा करेंछे जवारा वावेंछे चउरी बांधेंछे मरडा सीग मींढोलगेवा सूत्रइं तथा जव अरीठानो काठलो तथा वली अनेरा आरंभ कारण गाढा घणा करेछे तेहहेते जोतें पीण संसारनें खातें दीसेछे तथा वली जे जिणदत्त सूरिनो कीधो विवेक बिलास तेहमाहिं प्रतिमा घडावा भरावानी बिधिबोलीछे तिहा इम क ह्योछे जो प्रतिमानो मुख रौद्र पडे तथा बीजा अव यवपाडुआपडे तउ ते प्रतिमाना करावनहारनें घणी जनसिनी हाणि बोलीछे पुत्रनी हांण तथा मित्रनी हांण तथा धननी हांण तथा सरीरनी हांण इत्यादि घणा दोप बोल्याछे एह ठाम जोतें संसारने हेते दी सेछे तीर्थंकरतो केहने इज्यांन न करे डाहाहोयते बि चारी जोज्यो ॥ तथा जिहां सुरियाभने प्रतिमा पू जी तिहां पिण मोक्षनें खातें पूजी नथी एतला भणी जे श्री वीतराग देव वांद्या तिहां यहवा कह्या जे ॥ (एयेणे पेच्चा हियाए) इत्यादि पेच्चा कहिता परभव जाणिवो अनें जिहा प्रतिमा पूजी तिहां (पुविंपछा

हियाए-सुहाए) इत्यादि कह्यो एह अधिकार जोता भोळनें खाते नही जो प्रतिमाने अधिकारे कह्यो हुं तोतो वीतरागवांधा अने प्रतिमापूजी सरीखो थाय इहांतो वीतरागवांधा अने प्रतिमा पूजी विचाले श ब्दनो फेरतो गाढा सवला दीसेछे जे चतुर होयते वि चारी जोजो ॥ तथा केतलाएक इम कहेछे जे सम्यक् दृष्टी टाली नमोथुणं कोई न भणे ते श्री अनुयोग द्वार मांहि इम कह्यो [जेइमे समण गुणमुक्कजोगी छ कायणिरणुकंपा हयाइव उदामा गयाइवनिरंकुमा घ ठा मठा तुप्पोठा पंडुर पड पाउरणा जिणाणं अ णाणाए सछंद विहरिऊण उभयोकालमावस्स गस्स उवठाति] तो जोवो अने लोकोत्तर-द्रव्यावश्यकना करणहार ते दिनप्रते वार वे आवश्यक करे ते मांहि नमोत्थुणं कहे अने ते वीतरागें समकित दृष्टी न क ह्या आज्ञा वाहिर कह्या तो जोउनें जे कोई इम क हेछे जे सम्यग दृष्टी टाली नमोथूणं कोन कहे ते वा त सूत्र विरूद्ध दीसेछे तथा श्री नंदी सूत्र माहिं इम कह्यो जे चौदह पूर्व पढनहारनी मति समी होवे जा व दस पूर्व पूराना भणनहारनें मति समी होवे अ नें नव पूर्वना भणन हारनी मति समीहोवे अने मि थ्यात पिण-होय एतले नमोथुणं आदिदेई ग्रंथ घणो भणें पीण मति मिथ्यातहोय॥ अनें समी पिण होइ तो इणें मले जोता जे इम कहेछे जे सम्यग् दृष्टिटा

ठी अनेरा कोई नमोथुणं न कहे ए बात सूत्रमुं वि
रुद्ध दीसेछे तथा प्रत्यक्ष खमणा यरथेण जोजग प्रमु
ख घणाइं नमोथुणं कहेछे ते कांई सम्यग् दृष्टी ज
एया नथी चतुर होयते विचारी जो ज्यो तथा केत
लाइक इम कहेछे जे गणधरे इम क्यां कह्यो जे (जि
णघरे जिणपडिमा) तथा (धूवंदाऊण जिणवराणं)
तेहना उत्तर श्रीछो जे जगमाहिं जेहना नाम जेहवा
परवरतता होय गणधर पिण तेहनो अधिकार आवे
तेहने तेहवे नामे कहे जिम श्री ठाणांग मध्ये त्रीजे
ठाणे गणधरे इम कह्यो जे (जारहेवासे तउ तित्था
पन्नता मागहे बरदामे पनासे) तो जोउने जिम ग
णधरे तीर्थ कह्या तिम इम क्यांन कह्यो जे तउ(कु
तित्था पन्नता) जो गणधरे ते तीर्थ कह्या तो कांई आ
पणपे तीर्थकरी आराधवा नही एतले गणधरे जेहनु
जेहवो नामहोवे तेहने तेहवो नाम कहे ते नाम कह्या
माटे कांई आराध्यन न थाय श्री वीतरागे तो
ज्ञान दर्सण चारित्र आराध्ये त्रिजे ठाणे बेल्या (ति
विहा आराहणा पन्नता तं नाणाराहणाए दंसणारा
हणा चरित्ताराहणा) तथा गणधरे आपणे मुखें इ
म कह्यो पूर्णभद्र यक्षने [जे दिवे सच्चे] ये यक्ष सा
चो जो गणधरे इम कह्या जे ए यक्षसाचा तो काई
आपणने आराध्य थयो नही तथा गणधरे इम के

चलागा अम्मा पीऊ सस्यु सगा] गणधरे इम कह्यो जे गोशालाना श्रावकने अरिहंत देवछे पिण गणध रे इम स्युं न कह्यो जे गोशालाना श्रावकने गोशा लो कुदेवछे एतले इम जाणजो जे लोक मांहि ने प दार्थ जेहवा परवरतेछे ते गणधर पिण तिमहीज कहे तथा द्रूपदीना आलावानी वृती माहिं इम कह्यो छे जे एक वाचनामे एहवोछे [जेजिण पडिमाणं अच्च णं करेंति] एतावन् एव दृश्यते जिनप्रतिमानी अर्चा कीधी एतलो दीसेछे एणें (जिणघरे) इत्या दिक बोल कह्या नथी हिवना जे सूत्र ग्याता प्रति प्र वर्तेछे अने ते प्रति बिचालें ओतरागाढा घणा दीसे छे डाहा होइते विचारीजो जो ॥ तथा केतलाइक इम कहेछे जे द्रूपदीये नारदनें इम कह्यो जे (असंजए अविरए) इत्यादि ए बोल सम्यक् दृष्टी विना किम कहवाय तेहनो उत्तर परण्या पछे समकित तथा वृत उदे आव्याछे नियाणा तीव्र परणामें नहीथा तिस कारणें विवाहपछे सम्यक्तनो उदेछे इम जाणीयेछ जे डाहाहोय ते विचारीजो ज्यो ॥ इती ७ मा प्रश्न ॥ तथा श्री बीतरागदेवे सिद्धांतमांहिं साधु चारित्रीया नें श्री ठाणांगमध्ये पंचमहाव्रत पाल्याना फल तथा श्री उत्तराध्ययन चोवीसमामध्ये पांचसमिती तिण गुप्तिनाफल तथा अध्ययन छवीसमें दस बिधि समा चारीना फल फासु आहार दीधाना फल श्री भगव

ती मध्ये बारे भेद तपकीधाना फल त्रीसमे अध्ययनें दसविधि वियावच्चना फल बोल्या श्री ठाणागमध्ये तथा विनय कीधाना फल अध्येन पहिले तथा अध्येन ३१ में चारित्र पाल्यानाफल उगणत्रीसमें अध्ययनें बोल घणाना फल बोल्या तथा श्रावकने बारे व्रत पाल्याना फल श्री उववाई उपांगे तथा समाई चोवीसथो इत्यादि आवश्यकना फल श्री अनुयोग मध्ये तथा श्रावकने जो साधू चारित्रिया वंदनीकछे तो साधूनें वांद्याना फल तथा साधूनी पर्युपास्ति अर्थात् सेवाभक्ति कीधाना फल तथा अन्नपाणी दीधानाफल तथा उपाश्रय दीधानाफल तथा वस्त्र पात्र दीधाना फल तथा उषध भेषद दीधाना फल इत्यादि जो तीर्थंकर देव गणधर आचार्य उपाध्याय साधु जो आराध्यछे तो तेहना घणा परिना फल श्री सिद्धांत माहिं कह्याछे अनें जो प्रतिमा मोक्ष मारगमें आराध्य नथी तो कही सिद्धांत मांहिं प्रासाद कराव्याना प्रतिमा घडाव्याना प्रतिमा भराव्याना तथा प्रतिमा पूज्याना तथा प्रतिमा प्रतिष्ठाना तथा प्रतिमा वांद्याना तथा प्रतिमा आगलिं घणी पर ढोइछे तेहना अर्थात् चढावाना फल तथा प्रतिमा आगल भावना भाव्याना फल इत्यादि घणा वाना लोक प्रतिमा आगल करेछे पिण एते कुबोलना फल सूत्रें श्री वीतरागदेवे नथी कह्या तो जोवो नें मोक्ष

ना फल पामें जिको वंदना पूजना करेछे तेहनें मोक्ष
नो लाभ किम होसी चतुर होइते विचारी जो ज्यो
॥ ८ ॥ तथा जीवाभीगम उपांग मध्ये लवण समुद्र
ना अधिकार कह्याछे तिहां श्री गौतम स्वामीनें पू
छ्यो छे जो पाणी ए वडो ऊंचोछे तो जंवूद्वीपनें एको
दकस्युं नथी करतो तिहां वलतो श्री वीतरागें इम
कह्योछ ॥ ते सूत्र पाठ लिखीयेछे ॥ (जतीणभंते
लवण समुद्दे दो जोयणसय सहस्साइं चक्कवाल विखं
भेणं पन्नरस्स जोयण सय सहस्साइं एकासीइंचस
हस्साइं सतंच उयालं किंचि विसे सूणे परिखेवेणं ए
गं जोयणसहस्सं उवेहेणं सोलस जोयण सहस्साइं उ
स्सेहेणं सत्तरस जोयण सहस्साातिं सवग्गेणं पन्नते
कम्हाणंभंते लवण समुद्दे जवूद्दीवंदीवं नो उवीलेति
नो उप्पीलेइ नोचेवणं एक्कोदग करेइ गोयमा जंबूद्दी
वेण दीवे भरहेरवते सुवासेसु अरहंत चक्कवट्टिस्स
वलदेवा वासुदेवा चारण विद्याधरा समणा समणी
सावयाउ मणुया पगति भद्दिया विणीता ते सिणं प
णिहाय लवणे समुद्दे जंवूदीवे दीवं नो उवीलेति नो
चेवणं एक्कोदकं करेति गंगासिंधूरत्ता रत्तवई सुसलि
लासुहवयाउ महिद्दियाउ जाव पलितोवम ठितीयाउ
परिवसंति तासिणं पणिहाय लवणसमुद्दे जाव णोचे
वणं एक्कोदयं करेति चुल्लहिमवंत सिहरि सुवासधर
पवतेसु देवा महिद्दिया तेसिं पणिहाय हेमवय रन्नव

सिद्धांत मांहिं जिहां जिहां देवताए अथवा मनुषे श्री वीतराग वांद्या तिहां (पेच्चाहियाए) अथवा इहनवे परनवे (हियाए) कह्यो पिण कही (पूविं पछाहियाए सुहाए) न कह्यो अनें जिहां प्रतिमा पूजी देवताइं तिहां [पूविंपछा हियाए सुहाए] कह्यो पिण किहांइ पेचा अथवा परनवे [हियाए सुहाए) न कह्यो एणें कारणे प्रतिमा मोक्षने खाते नथी जिम नगवती सूत्रमध्ये वीजे शतकें खंदकने आलावे बेहु अधिकार जूजूया कह्या छे तेलिखीएछे (जेणेव समणे नगवं महावीरे तेणेव उवागछइ २ समणं नगवं महावीरं तिखुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ २ जाव नमंसित्ता एवं वदासी अलितेणं नंते लोए पलित्तेणं नतें लोए आलित्तपालितेणं नंतेलोए जराए मरणेणंय सेजहानामति किति गाहावती आगारं सिझियायमाणं सिज्झसे तत्थनंडे नवइ अप्पसारे मोल्ल गुरुएतं गहाय आयाए एगंत मंतं अवक्कमति एस मे नित्थारिए समाणे पछापुराए हियाए सुहाएखमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए नविस्सई एवामेव देवाणुप्पिया मज्झपवि आयाएगे नंडे इठे कंते पिए मणुणे मणामे थेज्जे विस्सासिए समए वहुमए अणुमए नंडकरंमग समाणे माणं सीयं माणं उण्हं माणंखुहा माणं पिवासा माणंचोरा माणं वाला माणंदंसा माणंमसया माणं वाइय पित्तियसं न्नियसन्नि,

वाइयविविहारोगायंका परीसहो वसग्गा फुसंतु तिकट्टु एसानित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमा ए निसेसाए आणुयगामियत्ताए भविस्सइ) अहीयें खंदके श्री महावीरनें इम कह्यो जिम कोई एक गृह स्थनें घरे आग लागी होयते घरनो धणी सारवस्तु काढे अने इम कहे ए सार भंडार काढ्यो होइ हुंतो मुझनें (पछा पूरा हियाए सुहाए) आदिहोसी ॥ अनें हुं जे चारित्र लेऊंछूं ते मुझने (परलोगस्स हियाए सुहाए) आदिहोसी हिवे जोउने लक्ष्मी काढयाना अनें चारित्र लीधाना शब्दना केतला फेरछे (हियाए सुहाए जाव आणुगामीए) ए शब्दतो बहु अधिकारे कह्याछे पिण लक्ष्मी काढी तिहा इम कह्यो (पछापूरा) अनें चारित्र लीधो तिहा इम कह्यो (परलोगस्स) तो जोवोनें इम इहां एतला बडा फेर शब्दनाछे तिम सूरियाभनें पिण आलावे जिहां प्रतिमा पूजी तिहा (पूविंपछा) अनें जिहां वीतराग बांधा तिहां [पेच्चा] इम कह्यो एवमा शब्दना फेर छे ए आलावाने मेले सूरियाभजी देवताइं प्रतिमा पूजी अनें प्रतिमा आगे नमोथुणं कह्यो ते जूनी मर्याद अर्थात् पुरानी मर्याद रीतहै तथा जिम प्रतिमाने (पुविंपछा) कह्योछे तिम दाढानी पूजानें पिण [पूविंपछा] कह्योछे एवहुं अधिकार एकठाजछे तथा केतलाएक इम कहेछे जे सुधर्मासभाइ तीर्थंकर

नी दाढाछे तिहां देवता मैथुन न सेवे ते भणी ते
दाढ सम्यक्तमें खातेछे तो जोवो अनें जो सम्यक्तखा
तें होइ तो ॥ पुर्वि पछा ॥ क्यां कहे अनें ॥ धम्मियं
विवसाईयं ॥ पीण क्यां कहे तथा श्रीठाणांगमध्ये
त्रीजेठाणे व्यवसाय त्रीण कह्या ते लिखीयेछे ॥ तिवि
हे विवसाए पन्नते तंजहां धम्मिए विवसाए अध
म्मिए विवसाए धम्मिया धम्मिए विवसाए ॥ ते धम्मि
विवसाए साधनो धम्मी धम्मे श्रावकनो बाकी २२
दंडक अधर्म विवसाये कह्या तो जोवोनें देवता श्री
वीतरागें अधर्म व्यवसाई कह्या अने जिहां सुरीया
भ देवना प्रतिमा तथा द्रह वावि इत्यादि पूजवा ऊ
ठयो तिहां इम कह्यो जे धम्मियं विवसाईयं गिणिह
ज्जा अने ठाणांगमध्ये दसमेठाणे धम्मेतो दस कह्या
॥ दसविहेधम्मे पन्नते तंजहां गाम धम्मे १ नगर
धम्मे २ रठधम्मे ३ पासंड धम्मे ४ कुलधम्मे ५ ग
णधम्मे ६ संघधम्मे ७ सुयधम्मे ८ चरित धम्मे ९
अस्थिकायधम्मे १० ॥ ए दस धर्म कह्या तेहमाहि
जे ॥ धम्मियं विवसाइयं गिणिज्जा ॥ कह्यो ते तो कु
ल धर्म माहिं आवेछे अने केतलाएक इम कहेछे जे
॥ धम्मियं विवसाईयं ॥ कहता श्रुत धर्म कहियै तो
डाहाहोयते विचारी जो ज्यो ॥ जे मूरीयाभें तो प्र
तिमा द्रह वावि हाथियार इत्यादि घणा वाना पूज्यां
ते अनें ॥ धम्मियं विवसाईयं ॥ तो समुच्चयपद कह्यो

छे ज्यो (धम्मियं विवसाईयं) श्रुत धर्म तो द्रह वा वि हथियार प्रमुख जेतला वाना पूज्या ते सहु श्रुत धर्म थाय अने तिहांतो इम न कह्यो जे प्रतिमानी पूजा तथा नमोथुणं ते श्रुत धर्म अनें द्रह वावि हथियार इत्यादि ते कुलधर्म तिहांतो समुच्चय जे प दें (धम्मियं विवसाईयं) कह्योछे प्रतिमा नमोथुणं द्रह वावि हथिआर परमुख सहुने कह्योछे डाहा होइ ते विचारीजो ज्यो तथा वली प्रीछयो (धम्मियं वि वसाईयं) कह्यो ते पुस्तक वाच्या पछे कह्यो अने ते पुस्तकनें एहज सूत्र मांहिं इम कह्योछे जे (धम्मि येसत्थे) एतले ते पुस्तकनों नाम त धर्म सास्त्र अनें आचाराग आदिक जे सम्यक् सास्त्रछे ते तो ते न होय तो जोवोनें ते कोनसे धर्म शास्त्रछे जो श्रुत ध र्म शास्त्र होइतो तेहमाहिं द्रह वावि हथीयार प्रमुख जे वाना पूज्या ते पूजवा न नीकले एणे कारणे ते श्रुत धर्म शास्त्र न होय डाहाहोय ते विचारी जो ज्यो ॥ इति सूरिआनाधिकारः ॥ १० ॥ तथा केत लाइक इम कहेछे ॥ जे साधू चारित्री आने विद्याचा रण जंघाचारण लब्धि ऊपजेछे ते लब्धिनें प्रमाणे मानुषोत्र पर्वते जाइ तिहां (चेईयायं वंदित्तए) ए हवो शब्दछे तिहां केतलाइक इम कहेछे जे मानुषोत्त र पर्वते (चेईय) शब्दे प्रतिमा वांदीसेहना पडुत्तर प्रीछयो श्री वीतराग सिद्धांत माहिं मानुषोत्तर पर्वत

पे च्यार कूंट कह्या पिण सिद्धायतन कूंट न कह्या अ
नें अनेरे पर्वतें जिहां सिद्धायतन कूंटछे तिहां कूंटनी
वर्णव करता सिद्धायतन कूंट पीण माहे कह्याछे अने
जो एणें परवतें सिद्धायतन कूंट न कह्यो हिवे श्रीठा
णांगमांहि मानुषोत्रें जे कूंट कह्या ते लिखीयेछे (मा
णुसत्तरस्सणं पव्वएस्स चउदिसि चत्तारि कूडा पन्न
त्ता तंजहा रयणे रतणुवते सव्वरयणे रयणसंचए) तो
जोवोनें इहां शाश्वती प्रतिमा नथी तो (चेईय) श
ब्दे स्यूं वांचो अने श्री अरिहंत तो जिहां रह्या वा
दीए अनें (चेईय) शब्द अरिहंतनें तो घणे ठामें
कह्याछे ते ठाम लिखीएछे [तंगगामोणं देवाणुप्पिया
समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो
सम्माणोमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेईअं पज्जुवासामो
एतंणे पेच्च भवे इह भवेय हिताए सुहाए खमाए णि
स्सेसाए आणुगामियत्ताए भवस्सती तिकट्टं] श्री
उववाई मध्ये अरिहंत विद्यमाननें [चैत्य] तंगग
मोणं देवाणुप्पिये समणं भगवं महावीरं वंदामो नमं
सामो सक्कारेमो सम्माणोमो कल्लाणं मंगलं देवयं चे
ईयं पज्जुवासामो एयंणे इहभवेय परभवेय हियाए सु
हाए खमाए निसेस्साए आणुगामियत्ताए भावस्स
ति) श्री भगवती मध्ये शतक ९ ॥ चैत्या ॥ तंगग
मिणं समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्का
रेमि सम्पाणोमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवा

सामि ॥ रायपसेणी मध्ये अरहंत विद्यमान ॥ चैत्य ॥ अम्हेणं भंत्ते सूरीयाभस्स देवस्स अभियोगा देवाणु प्पियाणं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगल देवयं चेईयं पज्जुवासामो इम रायपसेणी मध्ये चैत्य कह्या॥उपासगदशा मध्ये ॥ चैत्य ॥ इह महा माहणे उपन्न नाण दंसणधरे तीयपडुप्पणा णा गय जाणए आरहा जिणे केवली सवनु सवदरिसीते लेकमहित पूयिते सदेव मणुया सुरस्सा लोगस्स अच्चणिज्जे वंदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणिज्जे कल्लाणं मंगल देवयं चेईयं पज्जुवासणिज्जा) इहा उपासगदशांग सातमा अध्ययनमध्ये अरिहंत विद्यमान [चैत्य] इत्यादि घणे ठिकाणे अरिहंतने चेईय शब्द कह्या छे जो मानुपोत्तरे रह्यां अरिहंत वाद्या तो इम जाणज्यो जे मगलेहीज अरिहंत बांध्या डाहा होयते विचारीजोज्यो तथा कोई इम कहस्यें जे नंदीसरवरे (चेईय) शब्दें स्यूं वाद्या तेहना उत्तर भीवंदया जउ मानुपोतरें [चेईय] शब्दें अरिहंत वाद्या तउ नंदीश्वर वरें प्रमख सघले (चेईय) शब्दें अरिहंत ज वाद्या मानुपोतरे अनें नदीसरवरें शब्द फेर कोई छे नही इह सरीखा शब्दछे तथा रुचकद्वीपें पीण शाश्वती प्रतिमा सूत्रें किहा कही नथी तथा जंघाचारणने आलावे बीजा प्रत्युत्तरछे पिण जो मानुपोतरें शाश्वती प्रतिमा नथीतो बीजा प्रत्युतर

नो स्यूं कारण ॥ म्हारा होइते विचारीजोज्यो ॥ ११
तथा श्री भगवती सूत्रमध्ये चमरेंद्रने अधिकारे ए
वा शब्दछे जे [णण्णत्थ अरिहंतेवा अरिहंतचेतिय
णिवा अणगारेवा भावियप्पणो निस्साएउद्दं उप्प
ति) तिहां केतलाइक इम कहेछे जे (अरिहंत चे
याणिवा] कहतां जिन प्रतिमानी नेश्राइं जाइ ते
ना प्रत्युत्तर लिखीयेछे जो प्रतिमानी नेश्राइ होइ त
चमरेंद्र भरतखंड लगें स्याने आवे शाश्वती प्रति
मातो चमरेंद्रने ढुकमी हती अनें जो तेनें गरजसरेत
भरत खंडलगे क्यों आवे तथा सौधर्म्मइंद्र वज्र
क्यो तिवारे चमरेंद्र भयभ्रांत हुंतो भरत खंडलगे
स्यूं आव्यो जउ प्रतिमाइं गरज सरइतो तिहां शा
श्वती प्रतिमा पासे हती अने तेहने सरने जात पि
ण जेहना सरणथी छूटीए तेहने सरणे आव्यो दीसेछे
अर्थात् महावीरजीके सरणे सेंगयाथा और उनही
के सरणे आयोछे तथा सौधर्मेंद्रें पिण वज्र मुंकी
एहवो चिंतव्यो जे चमरेंद्रनें एतली शक्ति नथीजे आ
पणी नेश्राये इहां लगें आवे पिण अरहंत चैत्य अ
णगार एहेनी नेश्राये आवे अने मेंतो वज्र मूक्योछे
सो ते अरिहंत भगवंत अणगारनी आसातनाइं मु
झनें महा दुःख होइ एतले जोवोने अरिहंत भगवं
न तथा छद्मस्त जिन तथा अणगारनी आशात
ना कही पिण कांइं प्रतिमानी आसातना न कही

एतले सौधर्मेंद्रे अरिहंत तथा छदमस्त भगवंत (चैत्य) शब्दनें कह्या दीसेछे अनें वृत्तिमाहिं पिण अरिहंतज फलाव्याछे पिण प्रतिमा नथी फलावी ॥ इहां होयते विचारी जो ज्यो ॥ १२ ॥ तथा श्री उववाई उपाग मध्ये अंवड श्रावकने अधिकारे एहवा शब्दछे जे ॥ ननत्थ अरिहंतेवा अरिहंत चेईयाणि वा) तिहां केतलाएक इम कहेछे जे अरिहंत ॥ चेईय ॥ शब्दें प्रतिमा तेहना प्रत्युतर लिखीयेछे ॥ अरिहंतेवा अरिहंतचेईयाणिवा ॥ ए बेहु शब्दें अरिहंतेज जाणवा केतलाइक इम कहेछे जे अरिहंतनें बे शब्द किम कहीये वा शब्दतो विकल्प होय तो जोवो नें सिद्धांत मांहिं ठाम ठाम इम कह्यो जे ॥ समणंवा माहणंवा ॥ एक साधूने बेहुं नाम कह्या तथा वा शब्द पिण कह्यो तथा श्री सूयगडांग अध्ययन सतरमें एक साधूना तेरे नाम कह्याछे अने १३ नामे वा शब्द पिण कह्योछे ते लिखीयेछे ॥समणेतिवा १ माहणेतिवा २ खंतेतिवा ३ दंतेतिवा ४ गुत्तेतिवा ५ मुत्तेतिवा ६ इसीतिवा ७ मुणीतिवा ८ कितीतिवा ९ विदूतिवा १० भिखुतिवा ११ लूहेतिवा १२ तीररठी तिवा १३ ॥ इमवली एक वस्तुना घणा घणा नाम आवेछे तथा वली वृत्तिकारें पिण ॥ अरहंतेवा अरिहंत चेईयाणिवा ॥ तिहां अरिहंतज फलाव्याछे तथा ॥ चेईय ॥ शब्दें सूत्रमांहिं घणे ठामें अरिहंत

कह्यांछे ॥ तंगछामो देवाणुप्पिया समणं भगवं महा वीरं वदामो ॥ इत्यादि वाकी आलावा जे (चेईय) शब्दें अरिहंतने कह्याछे ते पूर्वलीपरें जाणवा: तथा केतलायेक इम कहेछे जे वृत्तिकारे (चेईय) शब्द ऊघाडा माटे न फलाव्यो तो जोतनें [चेईय] श ब्द उघाडोके अरिहंत शब्द उघाडो जो उघाडो श ब्द न फलावे तो इहां अरिहंत शब्दनें फलाव्यो जो ईये डाहा होइते विचारी जो ज्यो ॥ १३ ॥ तथा श्री उपाशगदशांगमध्ये आणंद श्रावगनें अधिकारे के तलाइक इम कहेछे जे प्रतिमा आराधेछे तेहना प्र त्युत्तर प्रीछयो ॥ नो कप्पई ॥ कह्यो ते माहिं तो आ पणणें काई संमंध नथी आपणनें तो संमंध ॥ कप्प ई ॥ माहिंछे अनें ॥ कप्पई ॥ मांहिंतो प्रतिमा न क ही तथा ॥ नोकप्पई ॥ माहिं केतलाइक इम कहेछे जे अन्यतीरथी परिग्रहित ॥ चैत्य ॥ न कल्पे तो अ ण परिग्रहित कल्पे तेहना प्रत्युत्तर प्रीछयो इहां प्रति मानो स्युं अधिकारछे इहांतो इम कह्यो जे ज्यां लगे ए नथी बोलावे तां लगे हूं पूर्वे नथी बोलुं तथा मि थ्यातीने गुरुभावे अन्न पानादिक न देवुं तो जोवो, नें प्रतिमा काई बोले क्या अन्नादि प्रतिमानें काम आवे डाहाहोइते विचारी जो ज्यो ॥ १४ ॥ तथा श्री प्रश्न व्याकरण मध्ये त्रीजे संवर द्वारे ॥ चेईअ ठे ॥ एहवो शब्दछे तिहां केतलाइक इम कहेछे जे

साधू चारित्रीयो प्रतिमानो बियावच्चकरे तेहना प्रत्यु त्तर प्रीछयो तिहांतो एहवो अधिकारछे जे साधू चा रीत्रीयो गृहस्थना घरथकी उपधिन्नात पाणी आणें अने आणीनें अनेंरा साधूनें आपे ते स्यां भ णी आपे ते प्रीछो जे (चेई अठेय] चैत्यार्थ ज्ञा नार्थे ज्ञाननें अर्थे तथा निर्जरार्थे आपे तथा एहि ज सूत्रमध्यें घणुं विस्तारछे जे अप्रीतिकारीयाना घरमाहिं न पेसे अप्रीतिकारीयानो न्नातपाणी उपधि न लिये वली इम कह्यो जे ॥ पीढ फलगसिज्जा सं थारक वत्थ पाय कंबल दंडग रजोहरण निसिज्ज चोलपट्टय मुहपोतीय पायपुछणादि न्नायण भंडो वि हि उवगरण ॥ एतला वाना मांहिंलो प्रतिमानें स्यूं काजे आवे अनें साधूनेंतो ए सगला वाना काजें आ वे इहांतो दत्तनो अधिकारछे जे दातारनो दीधोलेवो डाहा होयते बिचारी जो ज्यो ॥ १५ ॥ तथा प्रश्न व्याकरण माहिं पहिले आश्रव द्वारें पृथवी कायनें अधिकारें गढ पाटण आवास घरहाट प्रतिमा प्रासाद सन्ना इत्यादिकनें कारणे पृथवीनेंहणें ते श्री वीतरागें अध र्म्मद्वार माहिं घाल्यो इहातो विशेष कारि आश्रव अधर्मद्वार माहिं प्रतिमा कहीछे डाहा होई ते विचा री जो ज्यो तथा केतलाइक इंम कहेछे जे इहांतो इम कह्यो जे ॥पुढवी हिसंति मंदबुद्धियात॥ते मंद बुद्धी शब्दें मिथ्यात्वीए अर्थ सूत्रस्यू मिले नही ते एतलान्नणी जे

पाचमा अधर्म द्वारमांहिं परिग्रहने अधिकारे चक्रवर्ति वासुदेव वलदेव अनुत्तर विमानवासी देवता ॥ इत्यादि घणा कही आगले कह्यो जे मंद बुद्धी हुंता परिग्रहनों संचो करेतो जोवोनें जे कोई कहेछे मंदबुद्धी शद्वें मिथ्यात्वी ते अर्थ झूठा सूत्र विरुद्ध दीसेछे डाहा होइ ते विचारी जो ज्यो ॥ १६ ॥ तथा केतलाइक इम कहेछे जे आज्ञामे धर्म कहिये पिण दयामें धर्म न कहीये तेहना प्रत्युत्तर प्रीछयो श्री वीतराग देवे घणेठामे दयामें धर्म कह्योछे अने यही आज्ञा धर्म छे दयामे धम्मंछे ते लिखीयेछे ॥ तुलीया विसे समादाय दया धम्मस्स खंतिए विप्पसी इज्जमेहावी तहा नूयएअप्पणो १ ॥ श्री उत्तराध्ययन पाचमामध्ये तथा ॥ दयावरंधम्म दुगंछमाणो वहावहं धम्म पसंसमाणे एगंपिजे नोययती असीलं णिवोणि संजातिक उसुरेहिं ४५ ॥ श्री सूयगडांग अध्ययन बावीसमा मध्ये गाथा ॥ धम्मो मंगल मुक्कठं अहिंसासंजमोतवो देवावित्तं नमंसांति जस्स धम्मे सयामणो१॥ श्री दसवैकालिक प्रथम अध्ययनमध्ये तथा॥ सेवेमि जेय अतीता जेयपडुप्पन्ना जेय आगामिस्मा अरहंता नगवंतो ते सवे एव मानिक्खंति एवं नासंति एवं पन्नवेंति एवं परूवेंति सवेपाणा सवेनूता सवेजीवा सवेसत्ता न हंतवा न अद्यावेतवा न परिघेतवा ण परितावेयवा न उद्दवेयवा ए सधम्मे सुद्धे ॥ श्री

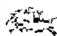
आचारांग चउथे अध्ययनेंछे तथा श्री वीतरागे द
याई करी मोक्ष कही ते लिखीएछे (सगरो विसाग
रंतं भरह वासं नराहिवो इस्सरियंकेवलं हिच्चा दया
ए परिनिव्वुउ) श्री उत्तराध्ययन अठारमे मध्ये
गाथा ३५ तथा श्री वीतरागें कुसीलीया दया रहित
कह्या ते लिखीएछे (नत्तंअरीकठ छिता करेइ जंसे
करे अप्पणिया दुरप्पया सेणाहिईमच्चु मुहंतुपत्ते प
छाणुतावेण दया विहूणो) श्री उतराध्ययन २० में
मध्ये गाथा ४८ तथा आज्ञा दयामें कही ते लिखीए
छे (तमेवधम्मं दुविहं आइक्खंति तंजहा आगार
धम्मंच अणागार धमम्मंच अणगार धम्मोत्ताव इहख
लुसवउ सवताए मुंडे भविता आगारातो अणगारि
तं पव तितस्स सवातो पाणाई वायातो वेरमणं म
सावाय अदत्तादाणं मेहुण परिग्गह राई भोयणाउ
वेरमणं अयमाउसो अणगार सामाइए ए धम्मे प
न्नत्ते एयस्स धम्मस्स सिखाए उवठिए णिग्गथेवा
निग्गंथीवा विहरमाणे आणाए आराहए भवति
आगारधम्मं दुवालस्सविहं आइखई तंजहा पंचअ
णुवयाइं तिन्निगुणवयाइं चत्तारिसिखावयाइं पच अ
णुवयायं तंजहा थूलाउ पाणाई वायाउ वेरमणं थूला
उ मूसावायाउ वेरमणं थूलाउ अदिन्ना दाणाउ वेरम
णं सदार संतोषे इच्छा परिमाणे तिन्निगुणवयाइं तंज
हा अणत्थ दंड वेरमणं दिसिवयं उवभोगपरिभोग

परिमाणं चत्तारिसिखावयाइं तंजहा सामातियं दे सावगासियं पोसहोववासो अंतिहिं संविभागो अप छिम मारणांतिया संलेहणा झुसणा अराहणा अयमा उसो आगार सामाइये धम्मे पन्नते एयस्स सिखा ए उवठिउ समणो वासएवा समणो वासिएवा विहर माणे आणाए आराहए नविति) इहां पंच महाव्र त अनें बारा व्रत आज्ञा कही एह मांहिंतो हिंस्या काई नथी श्रीउववाई उपांगे तथा (नत्थिमातत्तियाना सा जंवदित्ताणुतप्पत्ती जंछन्नं तंनवत्तवं एसाअणाणि यंठिया) श्री सूयगडांग अध्ययन नवमा मध्ये गा था २८ इम घणाइ अधिकारछे दयामें धर्म सूत्रें घ णोठामे कह्याछे तथा केतलाइक इम कहेछे जे धर्म आज्ञाइं कहीयेते अम्हारे आज्ञावादी प्रमाण तेडा ह्यो होइते बिचारी जो ज्यो जे श्री वीतरागनी आज्ञा तेतो पंच महाव्रत अने १२ व्रत तथा बारे भिक्षु प डिमा ११ श्रावगनी पडिमा इत्यादिक बोलनुं पालि वो ते श्री वीतरागनी आज्ञा ते तो दयामइंछे तथा कोइएक इम कहस्ये जे साधूनें आहार निहार विहा र करता काई काई सावद्य लागेछे तेहना व।र श्रि ओ ते तो असक्य परिहार अनाकुटिछे अनें ते पण असक्य परिहार अनें अनाकुटिइं जे काई साव द्य लागे ते सर्व आलोये निंदे एतावता श्री सिद्धांत मां हिंस्याते आलोवी निंदवीछे पिण श्री सिद्धांतमां

हिं हिंस्या कही अनुमोदवी नथी तथा श्री वीतरागे श्री प्रश्न व्याकरण मांहि श्री जीवदयानें सम्यक्तनी आराधना कही तथा बोधिकही तथा निर्मली दृष्टि कही तथा पूजा कही एहवा घणा बोल तथा उदाहर णा कह्यांछे ते अधिकार लिखीएछे [तत्थ पढमं अ हिंसाजासा सदेव मणुया सुरस्स लोगस्स नवित दीवोत्ताणं सरणगती पईठा नेवाणं नेवुई समाहिः सं ता कित्ती कंतीरईय विरतीय सुयगति त्तीदया विमु त्ती खत्ती सम्मत्ताराहणा महती बोही बुद्धी द्धित्ती संमिद्धीरिद्धीविद्धीठित्ती पुठी नदी नद्दाविसुद्धी लद्धि विसिद्धदिठी कल्लाणं मंगलं पामाउ विनूतिरक्खा सि द्धावासो अणासवो केवलीणद्वाणं सिव समिय सील संनमोत्तिय सीलघरो सबरोयगुत्ती ववसाउ उस्स तो य जणो आयतण जयणमप्पमाउ आसासो वीसा सो अनउसवस्स वियमाघाउ चोख पवित्तासु पूया विमल पनासाय निम्मलत्तरति एवमादीणि नियगुण निम्मियाइं पज्जवनामणिहोति अहिंसाए नगवतीरा ए सा नगवती अहिंसा जासानीयाणं पिव सरणं प क्खीणं पिवगयाणं तिसियाणं पिवसलिल खुहियाणं पिव असणं समुद्दमज्येव पोतवहणं चउप्पयाणंच आसमपयं दुहठियाणंच उसहिवलं अटवीमज्येवस त्थगमणं एतो विसिठतरिका अहिसाजासा पुढविज ल अगणि मारुय वणप्फति वीजहरिय जलचर खह

भर तस थावर सवनूय खेमकारी एसी भगवती अ हिंसा) एहवी जीवदया श्री बीतरागेसार प्रधान कही एहवी जीव दया श्री बीरागना मारगमांहिछे पिण अनेथिंनथी जेहनी मिथ्यामतिछे तेहनी कहणछे पिण करणि नथी ॥ १७ ॥ तथा श्री ठाणांगमांहि इम कह्यो (चउविहेसचे पन्नते तंजहा नामसचे ठवणसच्चे दवसच्चे भावसच्चे) इहा केतलाइक कहेछे जो बीतरागे स्थापना सच्च कही तो स्थापना आराध्यथई तेहना प्रत्युत्तर दीजयो ए चारि सत्यकह्याते भाष्या ऊपरछे पिण आराध्यऊपरी नथी एहज ठाणांगमध्ये दसमे ठाणे दससत्य कह्याछे तो ते कांई दसस्यूं आराध्यछे ते तो भाष्या ऊपरछे ते लिखीयेछे (दसविहे सच्चे पन्नते तंजहा जणवयसचे समयसचे ठवणासचे नामसचे रुवसचे पडुवसच्चे विवहारसचे भावसचे जोगसचे उवनसचे) तथा श्री पन्नवणाजी मध्ये दसविहेसचे भाषा पदमध्ये कह्याछे तो जोवोनें ते मध्ये (ठवणसचे) कह्यो ते भाषा सत्य कहीये पिण आराध्यनहीं डाहा होइ ते बिचारी जो ज्यो इहां सचे शब्द कह्यो ते एतला भणी जे जेहवो नामहोय तेहने तेहवे नामे बोलावतां झूठ नही इमकोईकनो नाम कुलवर्द्धन होई अने तेह जनम्या पछे कुलक्षय थयो होइ तेहो पिण तेहने कुलवर्द्धन कही बोलावतां झूठो नही तथा चित्रकारे हाथी चितारयां हाथी आ

लेख्यो होइ अनें ते देखीनें तेहने हाथी कहतां जूठो नही तथा घीनो घडोहोइ अने तेहमांहिंथी घी ठाल व्यो होइ अने ते घडानें घीनो घडो कहिये तो तेहने कहितां जूठो नही इत्यादि ए नाषा ऊपरिछे इहां आराध्यनों विशेप काई नथी डाहा होइ ते विचारी जोज्यो ॥१८॥ तथा श्री अनुयोगद्वारमध्ये आवश्यकना च्यारी निक्षेपा कह्याछे तिहां केतलाइक इम कहेछे इहां आवश्यक करतां थापना करी माडवी कहीछे ते कहण गाढासूत्र विरुद्ध दीसेछे ते प्रीछयो इहांतो आवश्यकना ४ निखेपा कह्याछे ते इम कह्याछे नाम आवश्यक ते कहिये जे कोई जीव अथवा अजीवनुंनाम आवश्यक दीधो होइ तथा थापना आवश्यक ते कहिये जे साधू अथवा साधवी अथवा श्रावक अथवा श्राविका जिम आवश्यक करे तेहनो आकार कोईएक करे अथवा असद्भावकाष्टादिकने कहे जे ए आवश्यक ते स्थापना आवश्यक कहिये तथा द्रव्यावश्यकना घना एक भेद कह्याछे जाणग सरीर भवीयशरीर तथा लोक विहाणामाहिं ऊठी मुख धोइ लूगडां पहिरे तंबोल वावरे इत्यादिक करे द्रव्यावश्यक कहिये तथा (समणगुण मुक्कजोगीक्क व आवस्सयं चिठई) एह पिण द्रव्यावश्यक कहिये इत्यादि घणा बोल कह्याछे एहमांहि आपणें काई आराध्यनथी आपणेंतो लोकोत्तर भावावश्यक आराध्यछे माहाहोइ ते विचारी



जो ज्यो इहां सूत्रमांहि आवश्यक करतां स्थापना करवी कही नथी तथा इहां सूत्रना पिण च्यार निखेपा कह्याछे तथा खंध आदिदेई घणा बोलना निखेपा कह्याछे एकला आवश्यक ऊपरितो निक्षेपा कह्या नथी डाह्या होइते विचारी जो ज्यो ॥ १९ ॥ तथा केतलाइक इम कहेछे जे राजा वांदवा गया न्हाण करीने गया ते स्यूं घोमाहाथी लेई गयाते स्यूं नगर फूटरा कराव्या ते स्यूं तथा मल्लिनाथे मोहनघर कराव्या ते स्यूं तथा सुबुद्धी मुहते फरस्यो द्रहनो पाणी आणाव्यो ते स्यूं तथा संखपोखलीने अधिकारे श्रावक एकठा जीम्या ते स्यूं तथा चारित्र महोत्सव कस्या ते स्यूं इत्यादि घणा बोल कहेछे तेहना प्रत्युत्तर प्रीछयो श्री सूयगमांगमध्ये अठारमे अध्येयन किरीएठाणे श्री बीतरागें त्रिण पक्षकह्या तिहां धर्म पक्ष ते सर्व सर्व विरति कह्यो अने अधर्म पक्ष ते अविरतिकह्यो अने त्रिजो मिश्रपक्षते काई विरति कह्यो इम त्रिण पक्ष कही सर्व बोल के थोक कीधी एक धर्म बीजो अधर्म्म श्रावकनी जेतली विरति तेतली धर्म मांहिं घाली अने जेतली अविरति तेतली अधर्म मांहिं घाली हिवे जोउने जे न्हाया घोमा हाथी लेईगया इत्यादि सर्व तेहनी बिरति के अविरति न्हाया घोडा हाथी लेइगया इत्यादि सर्व ते तेहनी अविरतीछे अनें अविरत तो श्री बीतरागे अ

धर्म माहिं कही अने बिरतले धर्म माहिं कही जो सा धूने बिरतछे तो ते साधू न्हावे नही घोडे हाथी चढे नही तथा श्रावकने जो पोसह माहिं बरतछे तो पोस हलीधे न्हाय नही घोडेहाथीइं चढे नही डाहाहोयते बिचारी जो ज्यो ॥ २० ॥ तथा श्री जीवाभीगममध्ये नंदीस्वरनें अधिकारे तीर्थंकरना कल्याणकादि कार णें घणाएक देवता एकठा मिलें मिल्याहुंता क्रीडाकरें इम अठाई महोछवकरे एतो देवताओनी स्थिती दी सेछे तथा मागधवरदाम प्रभास १०२ तीर्थना तीर्थो दक तीर्थनी माटी ल्यावेछे तथा गंगासिंधूआदिदेई न दीनें विषे जई गंगानो गंगोदक गंगानीमाटी तथा बीजी नदीना उदक माटी तीर्थंकरनें जन्ममें ल्यावेछे तथा द्रहनो उदक ल्यावेछे ए आदिदेईनें देवतानी गाढीघणी सूत्रमें स्थितिदीसेछे केतली एक लिखीये छे जोउनें गंगानागंगोदक गंगानीमाटी द्रहना उदक आण्यामाटे तथा मागध परमुख तीर्थना तीर्थोदक तीर्थनीमाटी आण्यामाटे कांई गंगा अथ वा द्रह अथवा ए तीर्थ मोक्षनें खातें न थाय इम दे वतोनी घणी स्थितीछे डाहाहोइते विचारी जो ज्यो ॥ ॥ २१ ॥ तथा प्रतिमाना थापक कनें पूछीयछे जे प्र तिमा केही अवस्थानी कर्या मांडेछे श्री महावीरतो प हिले तीसवरस ग्रहस्थी पणेंहता पछे ४२ वरप चारित्री या थया तेहवें पूछीयेछे जे को श्री महावीरकी प्रतिमा

करी मांडीएछे ते कही अवस्थानी करी मांडवेछे जउ इम कहे जे अम्हे ग्रहस्थना अवस्थाकरी मांडेछे तो चारित्रीयानें वंदनीक टले ग्रहस्थनेतो चारित्रीयो बंदे नही अनें जो इम कहे जे अम्हे चारित्रीयानी अवस्थाकरी मांडाछा तो जोवोनें ए प्रतिमा मांहिं चारित्रीयाना स्यूं लक्षणछे चारित्रीयानेंतो फूलपाणी आभरण इत्यादि एको न कल्पे अने प्रतिमातो फूल पाणी आभरण आदि घणा वाना सहित दीसेछे मा हा होइ ते विचारी जो ज्यो जेहने बंदना कीजे तेह नें विणउलखे किम वादीए मोक्ष मारगे तो आराध्य गुणछे पिण मोक्षमारगे आकार आराध्य नथी जिम चारित्रीयो गुणवंत होइ अनें सहू श्रावकादिक ते चारित्रीया गुणवंतने वांदे कदाचित कर्मयोगें चारित्र भ्रष्टथयो होवे सीतोदक सचितादिक सेवे समकित भ्रष्टहोवे मिथ्यात परूपे मिथ्यात मतीयोमे रहे मिथ्याती देवगुरुकी भक्तिकरे और लिंग तेहिजहोइ तो पिण तेहने कोई डाहो होइते बांदे नही एतलाभणी जे गुण सम्यक्त होणो थयो तउ जोवोनें जेहमाही ज्ञान दरसन चारित्रनो एको गुण नही तेहने किम वांदे सिद्धांत मांहि मोक्ष मारगे बंदनीक गुणछे विवेकी होइते विचारी जो ज्यो ॥ तथा श्री वीतरागें सिद्धांतमांहिं प्रतिमा कही आराध्य न कही अनें जे कोई प्रतिमा आराध्य कहेछे तेह कन्हें एहवा एहवा

बोल पूछीयेछे ते बोल लिखीयेछे ॥ २२ ॥ प्रतिमा स्याहनी करावबी कहीछे, चंद्र कांतिनी सूर्यकांतिनी वेडूर्यनी पाषाणनी सप्तधातनी काष्टनी लेपनी चीतारानी सिद्धांत सूत्रमांहिं केहवी कहीछे ॥ २३ ॥ प्रतिमानी ८४ आसातना कोणसे सूत्रमे कहीछे ते देखाको, तथा सूत्र सिद्धांत माहिं गुरु आचार्य उपाध्यायनी ३३ आशातना कहीछे अने ८४ आशातनातुम कहो ते केही ॥२४ ॥ प्रतिमानी प्रासादनी दंडवा ध्वजनी प्रतिष्टा किम कहीछे प्रतिष्टा श्रावक करे कि साधु करे आचलीया गछवाले कहे कि श्रावक करे बीजा गछमां कहेछे महातमा करे सिद्धांत सूत्रमें किम कह्योछे ॥ २५ ॥ दिगंबर पमणा इम कहे प्रतिमा नगन कीजे सेताम्बर कहें नगन न कीजे सिद्धान सूत्रमें किम कह्योछे ते देखाको ॥ २६ ॥ तीर्थंकर जिवारे मोक्ष पहोंता तिवारे अणसणकीधा पालठी वाली पर्य्यंक आसन ऊभा काउसग्ग निसिज्जा आसण हिवे एह माहि प्रतिमाकेणें प्रकारे कीजे सिद्धांत सूत्र माहि किम कह्योछे ते देखाको ॥ २७ ॥ प्रतिमा त्रिण कालमांहि केहवे काले पूजीये सूत्र सिद्धांत माहि किम कह्योछे ॥ २८ ॥ प्रतिमा पूजता कैसा फूल चढे कैसा न चढे अने वलि प्रतिमाने काजे शुचिकरीनें वस्त्र धोया पहिरीनें सोनाना नख करीनें आपणे हाथे फूल चूंटीये कि माली पास मंगावीये अने दि

गंवरीश्रा इम कहे सचित फूलसें प्रतिमा न पूजीये ए त्रिहुं प्रश्ना माहि सूत्र सिद्धांतमाहिं किम कह्योछे ॥ २९ ॥ प्रतिमाचउवीस २४ माहिं कोणसी प्रतिमा मूल नायक कीजे कितनी बडी कितनी छोटी मूल नायकनी प्रतिमानें आभरण सुकडी भोग फूल घणा चढै अने वीजी प्रतिमानें थोडा चढै मूलनायकनी प्रतिमा ठाकर थई बेठी बीजी प्रतिमा पाखती बेठी मूल नायकनी प्रतिमा ऊंचे आसणें वैसारी बीजी नीचे आसणे बैसारीये तीर्थंकर सगला सरीखा तो ए बडो अंतर काई करे ॥ ३० ॥ तीर्थंकरनो शरीर ऊंचो जघानि सातहाथ प्रमाण उतकृष्टो पांसै धनुष परिमाण एह प्रमाणमाहिं प्रतिमा केहे प्रमाणें करावियें किम कह्योछे ॥ ३१ ॥ प्रतिमा अण प्रतिष्टी पूजता स्यूं होय अनें प्रतिष्टी पूजता स्यूं होय प्रतिष्टी प्रतिमा माहिं केहागुणआव्या ग्याननना दरसनना चारित्रना तपना पूजनीकतो गुण बोल्याछे प्रतिमा प्रतिष्ट्यां पूठे केहागुण आव्या जेहवी अण प्रतिष्टी हती तेहवी प्रतिष्टी दीसेछे ॥ ३२ ॥ प्रतिमा आगें ढोइछे अर्थात् जे वस्तु चढाइयेछे धान फल वस्त्र सोना रूपा वलि वाकला पकवान तेह मालीनें आपीये के नापीये तेह द्रव्य स्यूं कीजे व्याजे दीजे कि व्यवसायकीजे किम करी वधारीये सूत्रमांहिं किम कह्योछे ॥ ॥ ३३ ॥ अठोतरी सनाननी विधी आरती मंगलेवु

पहिरावणीनी विधि जेहलूणसचित अगनि माहि हो मीयेछे तेह सघली विधि केहा सिद्धांत सूत्र मां कहीछे ते काढी देखाडो ॥ ३४ ॥ सिद्धांत माहिं श्रावकनें ११ प्रडिमा आराधवी कहीछे तिहां कांइं पूजा करवी कही नथी अने हिवे पहिले प्रतिमाइं त्रि काल पुजा करावेछे ते केहा सिद्धांतमांहि कहीछे ॥ ॥ ३५ ॥ श्रीमहावीरे सिद्धांत मांहिं तीर्थ बोलीयाछे चतुर विध संघ तीर्थ महात्मा महासती श्रावक श्रा विका अनें वली परदर्सनना तीर्थ सिद्धांत माहिं क ह्याछे मागध तीर्थ १ बरदाम तीर्थ २ प्रभासतीर्थ ३ वीतरागें सिद्धांतमांहिं परदरसनना तीर्थ बोलिया अ ने शेत्रुंज्यो गिरनार आबू अष्टापद जीरावलो एह तीर्थ सिद्धांत माहिं किहाइ न बोल्या तो इम जाणि वो एहतीर्थ न होइ ॥ ३६ ॥ ठवणाचारी लाकडानो सूर्यकातिनो अखिनो इत्यादि एहनी प्रतिष्टा करीने थापना चार्य करी थापेछे आचार्यना गुण ३६ अथ वा वली ज्ञान दर्सन चारित्रतप एकें एहचो गुण ठव ण चारी माहिं दीसता नथी जिवारे न हुंतो प्रतिष्टो तिवारे जेहवो हतो अनें प्रतिष्ठो पिण तेहवो दीसे छे ठवण चारी माहिं पहिलो अनें पछे गुण दीसता नथी थापनाचार्य थापीने तेह आगले खमासमण देईनें वादेछे अने वली तेहिज ठवण चारीने पूठिदे इने बैसें तो ते आसातना नथी हती तेहमे पूठिदेइ

किम बैसीये एहतो विपरीत उपराठो दीसेछे॥ ३७॥
श्री अरिष्टनेमीनें वारें पांचपांडवहुवा इम कहेछे पाड
वे शेत्रूंजे ऊपरि उध्धार कराव्यो प्रासाद प्रतिमा करा
वी अनें तेणें जिवारे श्री थावचा पुत्र अणगार सह
स्र १००० परिवार संघ ते सुक अणगार १००० प
रिवार सेलगराजरिखी अणगर ५०० संघाते अनें
५ पांडव अनें वली यादवना कुमर चारित्रलेईनें शे
त्रुंजे ऊपर अणसण कीधो पीण पहिले जिवारे च
ढया तिवारें प्रतिमा न वांदी चैत्य वंदन न कीधा
भाव पूजा न कीधी प्रतिमा आगलि तो इम जाणि
येछे तेणें वारे प्रतिमा प्रासाद न हुंता अने वली इ
म कहेछे श्री आदिनाथ सेत्रुंजा ऊपरि पूर्व निन्याण
वे ९९ वार चढया ते कोणसासूत्र माहिं कह्याछे ते दे
खाडो ॥ ३८ ॥ तथा केईएक इम कहेछे शेत्रुंजा ऊप
रि घणासीधा तेहभणी तीर्थ कहिये अने घणासी
धा भणी तीर्थ काहिये तो अढाईद्वीप ४५ लाख जो
जन माहिं तेहठाम नथी जेहं वालाग्रठामथी अनंता
सीधानथी (जत्थएगोसिद्धा तत्थ अनंतासिद्धा) इ
मतो अढाईद्वीप सगलो तीर्थ जाणवो सिद्धांत माहिं
सेत्रुंजो तीर्थ किहा नथी कह्यो ॥ ३९ ॥ श्री भग
वती माहिं श्री महावीरने श्री गौतमे पूछयोछे सनत
कुमार इंद्र तीजा देव लोकनो (सणं कुमारेणं भंते
देविंदेवराया किंभवसिद्धीए अभवसिद्धिए समदिठी

मिच्छदिदिठी परित्तसंसारिए अनंत संसारीए सुल भवोहीए दुल्लभ बोहीए आराहए बिराहए चरिमे अ चरिमे गोयमा सणं कुमार भवसिद्धी समदिठी परत संसारी सुलभवोही आराधक चरमे सेकेणठेणमं ते गोयमा सणत कुमार बहुणं समणाणं बहूणं सम णीणं बहूणं सावियाणं बहूण सावियाणं हिए कामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए णिस्सेयसिय हि य सुह अणुकंपिए णिस्से सकामए सतेणठेणंगोय मा समदिठी भवसिद्धी परित्तसंसारी सुलभवोही आ राधकचरिमे) श्री बीतरागे इम न कह्यो जे प्रतिमा पूजता समकितलहे अथवा केणें लाधो होइ त देखा डो साधू चारीत्रीयाना रुप देखी घणे जीवे समकित लीधा अथवा पूर्व भवना सम्यक्त उदय आव्या प रित संसारकीधा अथवा बली जीवनी अनुकंपा थ की परित संसारकीधा तेह जघन्यतो अंतर मुहूर्त माहिं सीझे उतकृष्टो तो अर्द्ध पुद्गल माहिं सीझे हिवे प्रतिमा पूजतां केणे जीवें सम्यक्तलाधो अथवा परित संसारकीधो होई तेह सिद्धात माहि देखाडो ॥ ४० ॥ श्री आचारांग मूल सूत्रमाहि साधू चारि त्रीयानें पांच महाव्रत कह्याछे एकेक महाव्रतनी पांच पांच भावना बोलीछे जिम आचारांगमाहिं बोलीछे तिम श्री प्रश्न व्याकरणमाहिं व्रत व्रतनी पांच भाव ना बोलीछे अने श्री आचारांगनी निर्युक्ती अनें व्र

तिमाहिं इस कह्यो जे सम्यक्तनी भावना भावीए ते
ह भावना लिखीयेछे तीर्थंकरनी जन्म भूमि चारित्र
भूमि ज्ञान उपजवानीभूमि निर्वाण मोक्ष गयानी भू
मि तथा देवलोक तथा मेरु पर्वत तथा नंदीस्वर दी
पादो तथा भवनपति सास्वती प्रतिमा तथा वली
अष्टापद सेत्रुंजा गिरनार तथा अहिछत्तायां श्री पा
र्श्वनाथनें धरणेंद्र महिमा एव रथा पर्वतिं वयरस्वामी
नां पादिकां श्री वर्द्दमाननें चमरेंद्रें निश्रा कीधी तेह
ठाम तीर्थ कह्यो एतला सघला तीर्थांनी भावना
भावीये निर्युक्ति माहिं वृती माहिं कह्यो अने श्री आ
चारांग माहिं नथी तो श्री आचारागनी निर्युक्ती व्र
ती माहिं किहांथी आव्यो इम कहेंछे निर्युक्ति वृ
तिइं सूत्रना अर्थ कहियाछे आचारांग माहिं ए केहा
आलावानो अर्थ नेह एतला ठाम वंदनीक कह्या अ
नें श्री बीतराग गणधरें न कह्या जे जे प्रतिमा प्रा
सादना ठाम ते मूल सूत्रमाहिं कहीं कह्या नथी बि
वेकी होय ते बिचारी जो ज्यो ॥ ४१ ॥ हिवे अत्र
कितनेक श्रावकानें परिग्रह परिमाण देइछे तिहां एह
वा नेम देइछे प्रतिमा वांद्या पूजा पाखें जीमूं तो नेम
भंगे एकासणों करु अथवा वलि प्रतिमानें बरस १
प्रतिं आंगलूणा ४ सुकडीसेर ४ सोपारीसेर ४ ब
दामादि सामग्रीसेर १० फूल नवोधान नवोफल मुह
में घालुं जो प्रतिमा आगे चढायो होइ एहवा नेम

श्रावकनें देहरो अनें श्री आणंद श्रावकनें परिग्रह परिमाण माहिं प्रतिमानें विहरइ एहवा नेम नही ते ह स्यूं कारण तो इम जाणीयेछे प्रतिमा वीतरागनें मारगें नथी जो वीतरागनें मारगें प्रतिमा होइतो आ णंद श्रावकने एहवा नेम जोईये ॥ ४२ ॥ हिवे श्री भगवतीमाहिं श्रावक कहियाछे घणा तेह श्रावकना क्या क्या आचारनो करिवो कह्योछे तेह आलावो लि खीयेछे (तेणं कालेणं तेणं समएणं तुंगीया नामं न गरी होत्था वणउ तत्थण तुगीयाए णगरीए वहवे स मणो वासया परिवसति अद्दा दित्ता विछिन्ना विपुल भवण सयणासण जाणवा हणाइन्ना वहूधण वहुजा त रूवरयत्ता आउग पउग संपउता विछड्डित विपुल भत्तपाणा वहूदासी दासगो महिस गवेयलप्प भूता वहू जणस्स अपरि भूता अभिगतजीवा जीवा उव लद्ध पुन्नपावा आसवसंवर निज्जर किरियाहिं करण बंधमोख कुसला असहेज्ज देवा सुरणाग सुवन्न जक्ख रक्खस किंनर किंपुरुष गरुल गंधर्व महोरगादिएहिं देव गणेहिं निग्गंथा तो पावयणाउ अणतिक्कमणिज्जा णिग्गंथे पावएणे णिस्संकिया णिकंखिया णिविति गिछिया लधठा गाहियठा पुछियठा अभिगतठा अ ठमिंज्ज पेम्माणुरागता अयमाउसो निग्गंथे पावयणे अठे अयं परमठे सेसे अणठे ऊसिय फलिहा अवंगु त दुवारा वियत्तंते उरपुरघरप्पवेसो वहूहिं सीलव्रय

गुण वेरमण पच्चखाण पोसहोव वासेहिं चाउद्दसट्
सुद्दिठपुन्न मासिणी सुपडिपुन्नं पोसहं सम्म
अणुपालेमाणो समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं अ
सणं पाणं खाइमं साइमेणं वत्थ पडिग्गह कंबल पा
द पुछणेणं पीढ फलग सिज्जा संथारएणं उसह जस
ज्जेणय पडिलाजे माणा अहापरिग्गहिएहिं तवो क
म्मेहिं अप्पाणं जावे माणा विहराति) हिवे एह आ
लावा माहिं श्रावकनें समकित कह्यो व्रत कह्या पोस
ह कह्या साधूनें आहारादि देता कह्या तो इहां श्राव
कनें वीतरागे इम क्या न कह्यो जेह प्रासाद कराव्या
अने प्रतिमाजरावीअने पूजी तो इम जाणजो जे वीत
रागने गणधरने बचनें प्रासाद प्रतिमा नथी जोइताती
एह श्रावकना आलावा माहिं कहतां ॥ ४३ ॥ श्रा
वकनें एहवीमनसा करवी तेह आलावो लिखीयेछे ॥
(तिहिंठाणेंहिं समणो वासए महानिज्जरे महापज्जव
साणे जवति तंजहा कयाण अहं अप्पंवा वहूंवा प
रिग्गहं परिवयिस्सामि कयाणं अहंमुण्डे जवित्ता अ
गाराउ अणगारियं पव्वयिस्सामि कयाणं अहं अप
छिम मारणांतिय संलेहणा जूसणा जूसित जत्तपाणपडि
या इखित्ते पाउवगए कालं अणुकंख माणे विहरिस्सा
मि एवं समणसा सवयसा सकायसा जागरमाणे सम
णो वासए महा नज्जरे महा पज्जवसाणे जवति)श्रावकनें
वीतरागे एहवी मनसा श्री ठाणांगमाहिं करवी कही

पिण इम कही नथी कह्यो प्रासाद प्रतिमा सेत्रुंजो गिरनार जात्रा करवी एहवी मनसा कही सूत्र माहिं करवी न कही ॥ ४४ ॥ श्री आचारांगना बीजा अध्ययननें बीजो उदेसो ते माहिं श्री वीतरागें इम कह्यो जे लोक एतले एतले कारणें आरंभ करे अनें साधू चारित्रीयो एतले कारणें आरंभ करे नही करावे नही करतां प्रते अनुमोदे नही ते अधिकार लिखीएछे (एत्थ सत्थे पुणो पुणो से आतबले सेनायबले से सयणबले से मितबले से पेचबले से देवबले सेरायबले से चोरबले से अतिथिबले से किवनबले सेसमणबले इच्चेतेहिं विरूव रूवेहि कज्जेहि दंड समायाणं संपेहाए भयाकज्जति पाव मोखोति मन्नमाणे अदुवाआ संसाए तंपरिन्नाय मेहा वीणेवसयं एएहिं कज्जेहिं दंड समारं भेज्जा णेव अन्नंच एतेहिं कज्जेहिं दंड समारं भावेज्जा एहि कज्जेहिं दंडं समारभंतए अन्नेसमणु जाणेज्जा ए समग्गे आयरिएहिं पंचेदिए जहित्थ कुसलेणो वलिंपेज्जासितिवेमि) ए आलावा माहिं इम कह्यो जे लोक संसारनें हेतें हिस्या करेछे अने मोक्षनें हेतें पिण हिस्या करेछे अनें साधू चारीत्रीयो एणें कारणें हिंस्या करे नही करावे नही अनुमोदे नही तो जोवोने आवडी हिस्या लोकमोक्षनें कारण करेछे ते केहनी देखाडी करे साधू तो देखाडे नही डाह्यो होइते विचारी जो ज्यो ॥ ४५ ॥ तथा श्रीआ

चारांगने अध्ययन छठाने उद्देसे पांचमे साधूनें श्री वीतरागे इम कह्यो जे श्रोतारनें एहवो उपदेसदेजे ते अधिकार लिखीयेछे (पादीणं पडीण दाहिण उदीणं आइखे विनये किट्टे वेदवीसे उठिएसुवा अणुठिएसुवा सुस्सूसमाणे सुपवेदएसंति विरतिं उवसम णिव्वाणं सोयवियं अज्जविय मद्दवियं लाघवियं अणइवत्तियं सवेसिं पाणाणं सवेसिं भूयाणं सवेसि जीवाणं सवेसिंसत्ताणं अणुवीई भिक्खु धम्मं माईक्खेज्जा अणुवीई भिक्खु धम्ममाई खमाणे णोअत्ताणं आसादेज्जा णो पर आसादेज्जा नो अन्नाणं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसादेज्जा) ए आलावाने मेले साधू चारित्रीयो जिहां जाइ तिहां दयामई उपदेस देवे पण हिंस्यानो उपदेस न देइ ॥ तथा श्री सिद्धांतमांहिं ठाम ठाम श्री जीव दया गाढीसार प्रधान कही छे ते अधिकार लिखीएछे(एवंतुसमणाएगे मिछ दिठी अणारिया असंकियाइं संकंति संकियाइ असंकिणो १ धम्म पन्नवणाजासा तंतुसंकति मूढगा आरंभाइएंसंकति अवियत्ता अकोविया २) श्री सूयगडागे प्रथम अध्ययने द्वितीये उद्देसे ॥ (एयं खुनाणीणोसारं जन्नहिंसइ किंचणं अहिंसा समयंचेव एतावतं वियाणिया १) सूयगडागे प्रथम अध्ययने चतुर्थो देसकः ॥ (पाणाई वातेवट्टंता मूसावाए असंजया अदिन्नादाणे वट्टंता मेहुणेय परिग्गहे १ एवमे

गै उपामत्था पन्नवंति अणारिया इत्थी वसंगयावा
ला जिणसासण परम्मुहा १) श्री सूयगडांगे तृती
य अध्ययन चतुर्थो देसकः ॥ (एता णिसोज्ञा णि
रगाणिधीरे नहिमए किंचणसव्वलोए एगंत दिठी अ
परिग्गहेउ वुज्झेज्जयलोयस्स वसंनगछे १) श्री सूय
गडांगे निरए विभती बीउ उद्देसो ॥ (दाणाणसेठं
अभय प्पयाणं सच्चे सुया अणवज्जंवयंति तवे सुया
उत्तिम बंभचेरं लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते १) श्री सू
यगडांगे छठे अध्ययनें ॥ पुढवीय आऊ अगणीय
वाऊ तणरुम रुखरुसवीयाय पाणा जेअंडया जेरज
राउपाणा संसेयया जेरसयाभिहाणा १ एयाइं का
याइं पंचेंदियाहिं एतेमुजाणे पडिलेहसायं एतेण का
येणय आयदण्डे एते सुयाविप्परिया सुविंति २ जा
तिंचखुहिंच विणासयंते बीयाइं असंजय आयदंडे
अहा हुसे लोय अणज्जधम्मे बीयाइजेहिंसति आय
साते ३) तथा जेहवी अवस्थाइं वरतती वनस्पती
छेदे तेहवा मरण पामें ते ऊपरि लिखीयेछे (गब्भा
इ मिज्जंति वुयावुयाणा णरापरे पंच सिहाकुमारा जु
वाणगामज्झिमथेरगाय चयंतितेआउखए पलीणा ४)
श्री सूयगडांगे सातमें अध्ययनें ॥ (पुढवीवाउ अ
गणिवा उतणरुखसवीयगा अंडया पोय जराउ र
ससंसेतउ भिया १ एतेहिं छहिं काएहिं तेविज्जंपारि
जाणिया मणसाकायवक्केणं णारंभीण परिग्गही २

तत्थिमावत्तियान्नासा जंवादित्ताणुतप्पती जंवन्नंतं न वत्तवं एसा आणाणियंठिया ३) श्री सूयगडांगनोंमे अध्ययनें (पूढवीजीवा पुढोसत्ता आउजीवातहागणी वाउजीवा पुढोसत्ता तणरुक्खसबीयगा १ अहावरातसा पाणा एवंछकाय आहिया इत्तावए वजीवकाय नावरे वि जईकाए २ सबाहिं अणुजुत्तीहिं मइमं पडिलेहिया सवे अकंत दुखाय अतो सवे अहिंसया ३ उद्दंअहेय तिरियं च जेकेति तसथावरा सवत्थविरतिकुज्जा संतिनिवाणमा हियं४हपांतंता णु जाणेजा आयगुत्ते जिइंदिए ठाणाइंमं ति सड्ढीणं गामे सुन्नगरे सुवा ५तहा गिरं समारंभ अत्थिपुन्नं तिनोवए अहवानत्थिपुन्नंति एवमेयं महब्भयं ६ दाणठयायजेपाणा हम्मंति तसथावरा ते सिंसारखणठाए तम्हा अत्थि त्तिनोवए ७ जेसित्तंउवकप्पंति अन्नपाण तहाविहं तेसिंलाभंतरायंति तम्हाणत्थित्तिनोवदे ८ जेयदाणं पसंसंति वहंमिवं तिपाणिणं जेयणं पडिसेहंति वितिछेयं करंतिते ९ दुहउ विते ण भासंति अत्थीति नत्थिवा पुणो आयरयस्स हेच्चाणं निवाणं पाउणंतिते १०) इति श्री सूयगडांग ११ अध्ययन मध्ये तथा जे साधू चारित्रीयो धर्मनें स्थानके तथा सम्यक्तनें कारणे जिहां आरंभ होइ पिण आदेस न देइ लाभ देखांऐ पिण कहावे नहीं और जिहां मिथ्याती असंजतीके दान आदिक कथनहे तिहां मोन धारणी ॥ पुण्य पाप जे

ला जाणकर ॥ [तेणवकुव्वंतिणकारवंति भूताहिं संकाए दुगंछमाणा सयाकंतविष्पणमंतिधीरा विन्नतिधीरायहवंतिएगे १ भहरेय पाणे बुद्देयपाणे ते आयउपासाति सव्वलोए उवेहती लोग मिणं महंतं बुद्धप्पमत्ते सुपरिवएज्जा २] श्रीसूयगडांग अध्येयन बारमे [उड्ढंअहेयंतिरिय दिसासु तसाय जे थावर जेयपाणा सदाजएते सुपरि वएज्जा मणप्पउसं अविकंपमाणे श्री (सूयगडांग अध्ययन १४ में [भूएहिं न विरुज्झेज्जा एस धम्मे वुसीमउ साहू जग परिन्नाय अस्सिंसजीवित भावणा १] श्री सूयगडांग अध्येयन पनरमें ॥ ४६ ॥ तथा आरंभ परिग्रह निरता न जाणे एतावता पाडूआ न जाणे तिहां लगे धर्म न लहे ते लिखीयेछे ॥ [दोठाणाइं अपरियाणित्ता आयाणो केवली पन्नतं धम्मं लभेज्जा सवणयाए तं जहा आरंभेचेव परिग्गहेचेव दो ठाणाइं अपरियादित्ता आयाणो केवल बोधिं बुज्झेज्जा]श्री ठाणांग बीजे ठाणे ॥ ४७ ॥ तथा जीवसाता वेदनी असाता वेदनी बाधे ते ऊपर लिखीयेछे (अत्थिणंभंते जीवाणं साता वेदणिज्जा कम्मा कज्जंति हंताअत्थि कहणंभंते जीवाणंसाता वेदणिज्जा कम्मा कज्जंति गोयमा पाणाणुकंपयाए भूताणुकंपयाए जीवाणुकंपयाए सत्ताणुकंपयाए बहूणंपाणाणं जावसत्ताणं अदुखणयाए असोयणत्ताए अजुरणत्ताए अपिप्पणत्ताए अपिट्टणता

ए अपरि तावणताए एवखलु गोयमा जीवाणंसा
वेदणिजाणं कम्मा कजंति एवंणेरनियाणवि एवं जा
वेमाणियाणं अथिणंभंते जीवाणं असाता वेदणि
कम्मा कजंति गोयमा परदुखणत्ताए परसोयणत
परजुरणत्ताए परतिप्पणत्ताए परपिठणत्ताए परप
तावणताए बहूणं पाणाणं जावसत्ताणं दुखणताए
यणत्ताए जाव परितावणत्ताए एवं खलु गोयमा
वाणं असाता वेदणिजा कम्मा कजंति एवणेरइ
णवि एवं जाव वेमाणियाणं) श्री भगवती शतक
तमें ॥ ४८ ॥ तथा गीतनाद तथा भोग भोगा
जीव वेदे पिण अजीव न वेदे अर्थात् अजीव
भोगवे ते ऊपरि लिखीयेछे (रूवीभंतेकामा अरु
कामा गोयमा रूवीकामाणो अरूवीकामा सचिता
ते कामा अचित्ताकामा गोयमा सचित्ता विकामा
चिता विकामा जीवाभंते कामा अजीवा कामा गो
मा जीवाविकामा अजीवाविकामा जीवाणं भंतेका
अजीवाणंकामा गोयमा जीवाणंकामा णोअजीवा
कामा कतिविहाणं भंते कामा पन्नता गोयमा दुवि
कामा पन्नत्ता तंजहा सद्दायरूवाय रूविभंते भोगा
रूविंभोगा गोयमा रूविंभोगानो अरुविंभोगा स
ता भंते भोगा अचिता भोगा गोयमा सचित
विभोगा अचिताविभोगा जीवाभंते भोगा पुग
यमा जीवाविभोगा अजीवाविभोगा जीवाणं भ

भोगा अजीवाणं भोगा गोयमा जीवाणं भोगाणो अ
जीवाणभोगा कति विहाणं भंते भोगा पन्नता गोय
मा तिविहाभोगा पन्नता गोयमा तंजहा गंधा रस्सा
फासा कतिविहाण भंते कामभोगा पन्नता गोयमा पं
चविहा कामभोगा पन्नता तंजहा सद्दा रूवागंधा र
स्सा फासा) श्री भगवती सातमोसतकनों ७ मो उ
देसो ॥ ४९ ॥ तथा केवली जेहवी भाष्या बोलें तेह
लिखीयेछे [रायगिहजाव एवंवदासी अन्न उत्थिया
णं भंते एवं आई खंति, जावपरूवेति एवंखलु केव
ली जखाएसेणं आतिछाति एवं खलु केवली भ
खायसेणं आतिठे समाणे आहच दो भासा उभास
ति तंमोसंवा सच्चमोसवा सेरुहमेयं भते एवं गोय
मा जन्नते अन्न उत्थिया जाव जेते एवमाहसु मिच्छं
ते एवमाहंसु अहं पुण गोयमा एवमा तिखामि ४
नोखलु केवली जखाएसेणं आदिस्संति नोखलु केव
ली जखाएसेणं आतिठे समाणे आहच दो भासाउ
भासंति संमोसंवा सचा मोसंवा केवलीणं असावजउ
अपरोव घाईयाउ आहच दो भासाउ भासंति तंस
च्चंवा असत्ता मोसंवा) श्री भगवती अठारमा सतक
नो सातमो उदेसो ॥ ५० ॥ तथा श्री वीतरागें जे
तीर्थ कह्यो तथा जे आलंबन कह्या तथा जे जात्रा
कही ते लिखीयेछे (तित्थं भंते तित्थ तित्थकरे तित्थं
गोयमा अरहाताव नियमा तित्थ करे तित्थं पुण चा

उन्नणाइ संघो तंसमणाउ समणीउ सावगाउ सावियाउ) श्री नगवती वीसमासतगनों ८ मो उदेसो ठे ॥ [धम्मस्सणंकाणस्स चत्तारि आलंवणा पन्नता तंजहा वायणा पडिपुठणा परियट्टणा धम्म कहा] श्री नगवतीसतक २५ में उदेसे ७ मे ॥ श्री महावीरे सोमिल ब्राम्हणनें जे यात्रा कही ते लिखीयेठे [किंतेनंतेजता सोमिलाजंमे तव नियम संजम सफायफाणा व सग्गमादीए सुजोए सुजयणा सेत्तं जता) श्री नगवती शतक १८ में उदेसे १० मेंठे ॥ श्री थावचा पुत्रे अणागारे जे यात्रा कही ते लिखीयेठे (तएणं सेसुए थावचा पुत्तं एवं वयासी किंनंते जता सुयाजन्न ममनाण दंसण चारित्त तवसंजम माई एहिं जोएहिं जयणासेतं जता) श्री ज्ञाता अध्ययन पांचमेंठे ॥ ५१ ॥ तथा फूल मांहिं जीव श्री बीतरागे कह्या ते लिखीयेठे (पुष्फाजलया थलयाय वेंट वद्वायंणालवद्वाय संखेजमसंखेजा वोधवाणंत जीवाय १ जे केइनालियावद्वा पुष्फा संखेज जीविया नणियानिहुया अनंतजीवा जेयावन्नेतहा विहा २ पुष्फफलंकालिगं तुंबंतंत सेलवा लुवालुकं घोसालयं पंडोलंतिं रूयंचवतं रूसं ३ विटमंसंकडाहं एयाइं हवंति एगजीवस्स पतेयं पताइं सकेरमे केसरंमिजा ॥ ४ ॥ ५२ ॥ तथा केतलाइक इम कहेठे जे सूचि कीधा विना धर्म कर्तव्य न होय अर्थात्स्नान करया

विना धर्म कार्य न होय ते ऊपरें लिखियेछे (तएणं थावचा पुते सुदंसणं एवं वयाति तु जेणं सुदंसणा किं मूलएधम्मे पन्नते अम्हाणं देवाणुप्पिया सोयमूल धम्मे पणते जावसग्गं गच्छति तएणं थावचा पुते सुदंसणे एवं वयासी सुदंसणा सेजहा नामए के पुरिसे एगंमहं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेणचेव धोएज्जा तएणं सुदंसणा तस्स रुहिर कयस्स रुहिरेण पखालिजमाणस्स अत्थिकायसोहीणो तिणठे समठे एवामेव सुदंसणा तुम्हंपि पाणा तिवाएणंजाव मिछादंसण सल्लेणं नत्थिसोही जहातस्स रुहिर कयस्स रुहिरेणचेव पखालिज माणस्स णत्थि सोही)श्री ज्ञाता पांचमे अध्ययनें कह्या ॥ [तएणं मल्ली विचोखं परिवाइयं एवंचतुम्हेणं चोखे किंमूल धम्मे तएणं साचोखा परिवाईया मल्लिवि एव वयासी अम्हेणं देवाणुप्पिए सोयमूलए धम्मेजन्न अम्हं किंचि असुइभवाते तंनं उदए दणमट्टियाए जाव अविग्घेणं सग्घं गच्छामो तएणं मल्लीविचोखं परिवाइग एवं वयासी चोखं सेजहा नामए केइ पुरिसे रुहिरकयं वत्थं रुहिरेणं चेवधोवेज्जा अत्थिणं चोरकीतस्सरुहिर कवयरुस वत्थरुस धोवमाणस्स कायसोही णोइणठे समठे एवामेव चोखीतुम्हेणं पाणाइ वाइएणं जावमिछा दंसणसल्लेणं णत्थिकाइ सोही] श्री ज्ञाता अध्ययन आठमें ॥ ५२ ॥ तथा श्री सिद्धांतमांहिं घणेठामे यक्षना देहरा कह्याछे

पिण तीर्थंकर २४ माहिं किसी तीरथंकरके नामसे सूत्रामें देहरा कह्या नही जो धर्म कारणें देहरा हो ताती तीर्थंकरोंके नामके सबसूत्रांमें होणे चाहियेथे परंत इहांतो विशेप करिके यक्षोके देहरे संसारकी मर्याद अर्थात् रीतीमें वर्णन करेहे तिन माहिला कितनेक के नामसे वर्णन लिखीयेछे [तीसेणंचंपाए नयरीए वहिया उत्तर पुरत्थिमे दिसिभाए पुणभद्दे नामं चेईये हुत्था चिरातीए पुव्व पुरिस पणत्ते पोरा णेसदिए वित्तिएणाए सत्थते सेच्छए सघंटेसे पभागा इ पभाग मंकिलो सलो महत्थो कय वेयड्डीए लाउल्लो इय महिते गोसीस सरसरत्त चंदण ददरादिण पंचगु ली तले उवचिय चंदण कलसे चंदणघड सुकयतोर णे पडिदुवारे देसभागे आसतो सत्त विउल वट्टव ग्घारीत मल्लदाम कलावे पंचविइ सरस सुरभिमुक पुष्फ पुंजो वयारकलिते कालागुरु पवर कुंदरुक्क धू व मघमघेंतगं धुधुता भिरामे सुगंधवरगंधगंधिए गंधवादि भूतेणडणद कज्झउ मल्लमुठेय वेलंबक पव ग कहं कलासक आइखक लंखमख तूण इल्लतुंव वी णिय भूयग मागरु परिगते वहुजण जाण वयस्सय कितीए वहुजणस्स आइस्स आहुणिजे पाहुणिजे अवणिजे वंदणिजे पूयणिजे सक्कराणिजे सम्माणणिजे कल्लाणं मंगलं देवयं चेईयं विणएणं पजवासणिजे दिवे सवे सवोवाए सन्निहिय पाडिहेरे जागसहस्स

भाग पडिठिए वहूजणोअचेइ) श्रीउवाई उपांगें इम कह्या १ (रायगिहेणामं णगरे होत्था वरुणउ तस्सणं रायगिहस्स णगरस्स वहिया उत्तर पुरत्थिमे दिसिभाए गुणसिलए चेईये होत्था) श्री भगवतीमध्यैंछे २ (तसरूणं उज्जाणस्स बहुमज्झ देसभाए सुरप्पिये नाम जखायायणे होत्था दिव वन्नउ तत्थणं वारवतीए नयरीए) श्रीज्ञाता ५ अध्येयनें ॥ ३ ॥ (तेणंकालेणं २ मियागामं नामे नयरे होत्था वन्नउ तस्सभियागामस्स नगरस्स वहिया उत्तर पुरत्थिमे दिसी भाए चंदपादवे नामं उजाणे होत्था सवोय वन्नउ तत्थणं सुहमस्स जखस्स जखायतणे होत्था चिएतीए जहा पुणभद्दे) श्री विपाक प्रथम अध्येयनें ४ (तेणंकालेणं २ वणियगामे नगरे होत्था रिद्धि तस्सणं वाणियगामे उत्तरे पुरत्थिमे दिसी भाए दुतिपलासेणाम उजाणे होत्था तस्सणं दुतिपलासे सुहमस्स जखस्स जखायतणे होत्था) श्रीविपाक दुतियोअध्ययन ५ (तेणंकालेणं २ पुरिमताले नामं नयरे होत्था जाव पछिमे दिसी यत्थणं अम्मोहं दंसीउजाणे तथणं अमोहदंसीस्स जखस्स जख आयतणे होत्था) श्रीविपाकें तृतीयाध्येयनें ६ (तेणंकालेणं २ साहंजणी नामं नयरी होत्था रिद्धिथम्मिता तीसेणं साहंजणी वहिला उत्तर पुरत्थिमे देवरमणे णामं उज्जाणे

होत्था तत्थणं अमोहस्स जखस्स जखायतणे हो त्था) श्रीविपाक चतुर्थ अध्ययनें ७ (तेणंकालेणं २ कोसंबी नामं नयरी होत्था रिद्धि वाहिं विंदोतरणे उज्जाणे सतन्नदे जखे तत्थाणं कोसंबीए णयरीए) श्रीविपाक पंचम अध्ययनें ८ (तेणंकालेणं २ म हुरा णगरी नंमीरे उज्जाणे सुदरिसणे जखे) श्रीवि पाक षष्ठोध्ययने ॥ ९ ॥ [तेणंकालेणं २ पाम्लीसम नगरे वणसंड उज्जाणं उंबर जखे) श्रीविपाक स प्तमध्ययने १० (तेणंकालेणं २ सोरियपुरे णयरे सो रियवडेसगं उज्जाणें सोरियजखो) श्रीविपाक अष्ट मध्ययने ११ (तेणंकालेणं २ रोहिएणामं णयरे हो त्था रिद्धी पुढवी वंडीसए उज्जाणे धरणोजखो) श्रीविपाक नवमें अध्येंयने १२ (तेणंकालेणं २ वद्ध माणपुरे णगरे होत्था विजयवद्धमाणे उज्जाणे मणि भद्दोजखो) श्रीविपाक दसमध्ययनें १३ [तत्थणं हत्थीसीसगस्स वहिया उत्तर पुरत्थिमे दिसी भाए पुष्फकरंडए णाम उज्जाणे होत्था सव्वोउय तत्थणं कतवणमाल पियस्स जखस्स जखायतणे होत्था) श्रीविपाकमें १४ (तेणंकालंणे २ उसभणयरे थुल करंडग उज्जाणें धरणो जखो) श्रीविपाकमध्यें १५ (सोगंधीया नगरी नीलासोग उज्जाणं सुकोसलोज खो) श्रीविपाकमध्यें १६ (कणगपुरं णयरं सेताउ य उज्जाणं वीरभद्दोजखो) श्रीविपाकमध्यें १७

(मुघोषं नगरं देवरमणं उद्याणं वीरसेणो जखो) श्रीविपाकमध्ये १८ (तेणंकालेणं २ सामं णगरं होत्था उत्तरेकुरे उद्याने पासमिद्द जखो) श्रीविपा कमध्ये १९ और ज्ञाता सुत्रमें शेलग यक्ष कह्या २० अंतगढ सुत्रमें मोगरपाणि जक्ष कह्या २१ उत्राध्ययनमें तिंदुक नामें जक्ष कह्या २२ इत्यादि ॥ ५४ ॥ तथा केतलाइक इम कहेछे जे अम्हारे वृत्ती टीका चूर्णं निर्युक्ति भाष्य सहु प्रमाण ते मा हो होइते विचारी जो ज्यो जे श्रीसिद्धांत पाठसें मि लतीहुई टीका तथा और प्रकरण ग्रंथादि ते सहु प्रमाणछे अनें जे सिद्धांतसें विरुद्ध होय ते किम प्र माणथाइ वृत्ती टीका माहिं एहवा एहवा अधिका रछे ते लिखीयेछे जो साधु पंचक मांहि कालकरे तो डाभना पुतला करवा कह्याछे ते लिखीएछे [दुन्नि यदविद्दखित्ते दभमया पुतलाय कायवा समरिकत्तं मिअइको अवढअभिईन वायवा)१ अवश्यक निर्यु क्ति पारिठाविणीया सुमति माहि तथा बृहतकल्प नी वृत्तीमध्यें पणिपुतला करवा कह्याछे तथा देहरा मांहिथी कोलीयावडानाघर तथा भमरी भमरानाघर साधु चारित्रीयो अपणें हाथें परहा करै नकरै तो तेह साधूनें प्रायश्चित आवे बृहतकल्पवृत्तिमध्ये ॥ साधूनें पासडा पहिरवा कारणें तथा कारणें पान खावा तथा कारणें फल केला आदि हाथी खूंटा खावा

घोल्योछे इत्यादि. बोल आदिदेइ गाढा घणा बोल वृत्तिचूर्णि मांहिं सूत्रांसें विरुद्ध दीसेछे तो वृत्ति चूर्णि किम मानिये सूत्रासें बहोत फरकहै सो कितने बोल लिखेहै और कितने बोल ग्रंथ बहु विस्तार होने कर नही लिखेहै सो इतने बोलोसें चतुर होय ते विचारी जो जो इति ॥ ५५ मा प्रश्नः ॥ हिवे जे जीव अनंता मोक्ष पहुता अनें वरतमान कालें जे मोक्ष पहोचेछे अनें अनागति कालें अनंता मोक्ष पहोचसी ते श्रीवीतरागें एणें परें मोक्ष कही ते लिखीएछे (अतविंसु पुराविभिखवो आए स्साविभवंतमुव्वता एयाइं गुणाइं आहुते कासव स्सअणुधम्म चारिणो १ तिविहेण विपाण माहणे आयहिए अनियाण संवुडे एवंसिद्धाअणंतसो संपयजे अणागथावरे २ एवंसे उदाहु अणुत्तरनाणी ॥ अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाण ॥ दंसणधरे अरहानायपुत्ते ॥ भगवं वेसालिएवियाहिए त्तिवेमि ३) श्रीसुयगडांगे बियाध्ययने तृतीयउद्देसक ॥ इहा श्रीजीवदयाइं करी मोक्षः ॥ ५६ ॥ श्रीवीतराग देव तथा श्रीगणधर तथा साधु चारित्रीया संसार माहिं एह उत्तमछे तो वंदनीक पूजनीकछे अनें एहज तीर्थंकरादिक जिवारें ग्रहवास मध्येंहोइ अनें षट कायने आरंभें वरतें तिवारे श्रीसाधुनें वंदनीक नही तो जोवोनें जे अजीव अचेतन चित्राम प्रतिमा मांहिं काइं ज्ञान दर

सन चारित्रनो गुणनथी अनें खटकायनो आरंभ तिहां वरतेछे ते किम वंदनीक होय ते विचारी जोज्यो ॥ ५७ ॥ तथा तीर्थंकर गणधर साधू एहनी भक्ति आरंभें नथाय तो प्रतिमानी भक्ति आरंभमे किम थाई ५८ तथा गुण वंदनीकके आकार वंदनीक अनें जो गुण वंदनीकतो प्रतिमा मांहिं केहवो गुणछे अनें जो आकार वंदनीक तो आ वडा पुरुप आकार वंतछे ते वंदनीक किम नही ॥ ५९ ॥ प्रतिमा माहिं केही अवस्थाछे जो गृहीनी तो साधुनें वंदनीक नही अनें जतीनों तो चिहन तो छे नहीं अनें जती अर्थात् साधू वृत्ती जाणो तो फूल पाणी दीवा प्रमुख आरंभ किम करोछो ॥ ६० ॥ तथा देव मोठा कि गुरु मोठा जो जाणो जे देव मोठा तो देवनें फूल जडे तो गुरुनें स्यूंन पहिरावो फूलमाला अनें जो जाणो गुरुमाह्यात्मतीछे तो देव क्या अविरतीछे तेविचारी जो जो ६१ तथा श्रावक साधूनें वांदवा आव्यो होइ अनें फूल फल कनें होइतो अलगो रहे जो संघट थाइ तो देवनें संघट स्यों न थाय ते विचारीये ६२ तथा केतलाइक श्रावक पास प्रतिमा पूजावेछे पूजनार धर्म जाणीनें पूजेछे तो जती स्यूं न पूजे धर्म तो जतीनेंवी करवो तो केतला इक कहसी जे जती विरतीछे पिण जोवोनें जतीनें अर्थात् साधूनें पाप करवानोनेमछे पिण धर्म करवानो नेम

नथी ते कहो ६३ तथा प्रतिमाना वंदन वाळा प्रतिमानें वंदे तिवारे वंदना केहनें करेछे जो इमकहे जेहुं प्रतिमानें वांदुछू तो वीतराग अलगारह्या वंदणा नही अने इम कहे जे ए वंदना वीतरागनें तउ प्रतिमा अ लगीरहे अनें जो इम कहे जे एहज वीतराग जूदा जूदा नही तो (अजीवे जीव सन्ना] थाय अ र्थात अजीव काष्ठ चित्राममें की प्रतिमाको जीव क ह्या ते मिथ्यात संज्ञा कही अनें जीव एकसमें बे क्रिया नवेदे ६४ तथा केतलाइकना देवगुरु अनें धर्म सारंभी सपरिग्रहीछे अनें केतलाइकना देव गु रू धर्म निरारंभी न परिग्रहीछे ते विचारी जो जो ६५ तथा केतला एक कहेछे जोउनें जो पुतली दीठे जो राग ऊपजे तो प्रतिमा दीठें वैराग स्यों न ऊप जे तेहना उत्तर कोईएक अनार्य पुरुषनें प्रहार मुकें तो पाप लागे तो तेहनें वांदे तो धर्म स्यों न लागे तथा बेटा बोसराव्या न होय तो तेहनो कीधो पाप वापनें लागे पिण बेटानो किधो धर्म स्यों न लागे तथा केतला इक इम कहेछे जे गाणानो गोहीस कीधो होई अनें भाजे तो पाप तो तथा तेहनें वांदे तथा दुध धरी पूजे तो धरम किम नही ६६ तथा केतला ए व, इम कहेवें जे अम्हारे प्रतिमानी पूजा करें ते हिं स्या अहिंस्याछे तउ रेवतीनों पाक श्रीमहावीरें स्यु न लीधो जो हिंस्या अहिंस्या समानथी फूल पाणीनी

हिंस्या प्रत्यक्षछे ६७ तथा कोईएक गुलीना विणज नो नेम नव भांगे लेई अनें गुलीना विणजनो ला भ बीजानें देखाडे इम तेहना नेम भाजे तो जोवोनें जेणें पंच महाव्रत ऊचरया होय ते सावद्य करणी माहि लाभ देखाडे तो तेहना विरत किम सुद्ध रहे विचा री जो जो ६८ तथा श्रीअरिहतनी स्थापना मांहिं अ रिहंतनागुण नथी अनें गुरुनी स्थापना माहि गुरुना गुण नथी अनें केतला इक इम कहेछे जे गुण तो स्थापना माहिं नथी जो पण आपणो भाव भेलेतो बंदनीक पूजानीक थाय तो हिवे जोवोनें गुणविना दे वनी गुरुनी स्थापना मांहिं आपणो भाव घाली गरज सरेतो बापनी मानी तथा रुपानी सोना रतन गुल खांड साकर परमुख आपणो भाव घाले गरज नसरे आगलिबरतु मांहिं पिता दिकनो गुण नथी अणे आ पणो भाव भेलेथि गरज काई नसरे डाहो होइने बिचा री जो जो तो देव गुरुनी गरज किम सरे धर्म ठिकाणे गुणबिना गरज नसरे मोक्षमारगमे तो ज्ञान दर्शन चारित्र तप प्रधानछे ॥ ६८ ॥ प्रश्न धर्म आ ग्यामेंहै अथवा आज्ञा बाहिरभीहै उत्तर धर्म आज्ञा मे सबही कहतेहै परंतु इसका यह प्रमार्थहै आज्ञा नाम उपदेसकाहै भगवंतकी आज्ञा उपदेस आराधे तिणाको आराधक कह्या जबलग साधुकुं संपराय क षाय संबंधी क्रिया लगेहैं तबलग ओ साधु उत्सूत्र

चालेछे पिणयथा सूत्र नही चालेछे यथा सूत्र तो य
था ख्यात संजमी १२ में १३ में गुण ठाणे वाला
चाले तिणानें इरियावही क्रिया लागे पिण उत्सूत्र
चलनें वाला आज्ञा विराधक नही किसकरके केवली
ये उपदेसमें एही भाष्यो सराग संजमी ते उत्सूत्र
चाले उपसांतिराग खीणराग होवे तिकेयथा सूत्र
चाले एउपदेसहै अवार वादीहै ते निन्हव वादी वा
तेरापंथी जिनको भीष्म पंथीजी कहतेहै तेकहेछे (सा
धूतो यथा सूत्रही चाले) थे इणा केवलीनो उपदेस
उथाप्यो तथा श्रावक पोसह पडिकमणो पडिमाको
वाहिवो इत्यादिक काम करे तिणमें पूजण पडिलेहण
राथडलो मातरो परिठणरी आज्ञा मागे तो साधू दे
वे नही तथा पडिमा धारी श्रावक आहार पानी
ल्यावणरी आज्ञा मागेतो साधूजी आज्ञा देवे नही
मोंनराखे उन्हाने पूछणो एहवातनो पाठ किसा सूत्र
में कह्योछे थेतो मुहसे कहोछो हमे सूत्र मुजब कहा
वां सो जिण सूत्रमे एहवात कहीहै सो सूत्रपाठ बता
वो तुम कहस्यो गृहस्तनी वियावच्च साधूनें नही क
रणी तो १० प्रकाररी वैयावच्च सूत्रमे कहीछे तिण
रो प्रमार्थ कांईहै संघनाम किणरोछे भगवती सूत्रमा
पाठछे (चउव्विहेसमणसंघे) इम संघ ४ विधि व
तायो इणारेमतवाला संघशब्दनो अर्थ आपणी इच्छा
सें ग्रह करेहै संघनाम घणा आचार्यांकाचेला इसो

कहेछे इणबातरे अर्थमें पिण झूठा जाणीयेछे इणमें तो साध साधवी दोय आया (चउव्विहे समणसंघे) एहबचन इणां उथाप्यो भगवंतरो तो साधूनें हियें उपदेसछे साधू जयणासें चाले जयणासे ऊभारहे परंतु एहवो केवलीको आदेस नही जयणासे चालों जयणासे उभारहो एह आदेस नही एह आदेस नही देवे सो आज्ञा नाम केवलीके उपदेसकोहै ७० प्रश्न धर्म व्रतिमें कि अविरतने वा दोनोंमें उत्तर धर्मतो कर्मकी निर्जरा तथा दीर्घ कालरी थिती कर्मारी थोभा काल की करणी तीव्ररजकर्म प्रकृति मंदरस करणी बहुल प्रदेसरी थोडा प्रदेसरी करणी एतो धर्म ॥ कर्मरो अशुभदलीयो सो पाप कर्म सुभदलीयो सो पुन्न एती नोंही जीवरे परिणाम लेस्या अध्यवसायसें होवे तिण ऊपर दृष्टांत विपाक सूत्रमध्ये सुमुखगाथापती विरत बिगर जो मनुषरे देसबिरत पिण होयतो मनुषरो आउखो किम बंधे साधूनें दानदीधो संसार परतकीधो मनुषरो आउखो बाध्यो तो बिचारो इण सुमुखरे किसीविरतीथी पिण परिणामें संसार परत कीधो ते धर्म सुभमनुषरो आउखोते पुन्य अविरत है तिणसे पाप बध पिणकीणही कारजमें पापरी रोटी होवे पुन्य बंध पलेथनरुपहोवे अनें किणही कारजमें पुन्य रोटी पाप पलेथणरुप होवे एकलो पापजीवरे नही बंधे एकलो पुंन्यपिणजीवरे नही बधे रोटी

रुवं) इण पाठरो अर्थ नही करे सो इणानें सूत्र उ
थाप्यो नय थोमो दीसेछे ७३ प्रश्न तथा सूयगडां
गें अध्यन ३ उदेसे ४ गाथा ५ तथा ६ मे इसो क
ह्योछे कोईजीवकहेछे सातादियां सातापामें तिणनें न
गवान आर्य मार्गसें अलगा कह्या जिन धर्मनो हील
णहार कह्यो इसतरे नीषम पंथी कहेछे उत्तर सो नणनी
पम पंथियांनें पूछनों एह गाथानों अर्थ तुम्हारे पंथ
वालानें पुछजो कि तुम अपनें मनोक्त अर्थ करोगे
पिण तुमारे ताई सूत्र विपरीति कहवानो नय नही
मत पक्षी बणनहार होई उद्देसे ४ पाछली गाथामें
अन्यमती वखाणयोछे तिणारेहिज बरणव ५,६,७ मी
गाथामेछे नणा अन्यमतीरीकही नगवतें कहीछे उरे
वे शाक्यादिक कहेछे (सायंमाएण विकरसु) अप
णे जीवनें सातादीया सातापामें एहजीव सुखनो अ
रथीछे तिणवास्ते इणजीवनें सुखहीजदेणो असो उ
णारो मत नगवंत वखाणयोछे सातमी गाथारे छेहले
पदमे कह्यो (अयहारीवकूरह) लोहवाणीयांनींपरें
वेकूरसी लोहस मानउणा आपणा जीवनें सुख वि
चारयो प्रं परजीवनी पीमा नही विचारो इणागाथा
में यह प्रमार्थहे सो जांणज्यो नगवंतें सर्व जीवनी
रिक्षा बरणवीछे ७४ प्रश्न आश्रव पांचछे तिणमें
मिथ्यात १ अविरत २ परमाद ३ कषाय ४ योग
५ जिनमे एहच्यार आश्रव पुन्य करताछे कि पाप

करताहै किसका करताहै ॥ उत्तर ॥तिणरो परमार्थ यह है मिथ्यात १ अविरत २ कषाय ३ परमाद ४ इणा री तो एकही वजेहै परंत योगना २ भेदछे शुभ योग अने अशुभ योग तिणमे अशुभ योग परवरते तिवारे पापकर्म बंधे अने शुभ योग परवरते तिवारे पुन्य प्रकृतिनो बंध होवे च्यारुंही आश्रवा मांहिं जोगनो प्रधान पणोछे प्रमादीसाधुने शुभजोग आसरीयने भगवती माहिं कह्योछे (सुहंजोगं पडुच्चनो आयारंभा नोपरारंभा नोतदुभयारंभा) अणारंभा शुभयोगनो एहवो प्रधान पणोछे तथा आश्रवहे सो शुभ अशुभ कर्मानो आगमनसो आश्रव परंत सब कर्म जीवरे कर्मनो आगमनछे तिणसें आश्रव रुपीहै कर्मना प्रधान पणाथी जैसें जीव नावा सकर्म जीवरे कर्म आगमनसो आश्रव छिद्र परंत नावरो गुण तिरवानो सो छिद्रमे नही छिद्ररो सुभाव पानी आवारो सो नावा गुणमे नही इणवास्ते आश्रव रुपीहै ७९ प्रश्न ॥ उपशम समकितमे उदय मांहिं मिथ्यात होवे सो खयजावे वा नही ॥ उत्तर अने उदयमें दलिया मिथ्यातना होवे. सो उपशमहै एहीतरे खयोपसमरीछे परंतु उपसममे अनुभागथी प्रदेसथी दोनु प्रकारें उपसम रहे ते उपसम खयोपसममे अनुभागथकी तो मिथ्यात नही वेदे उपसम खयोपसममे एविसेपछे वेदनी कर्मांके दलियाको

दोई तरेहै. अनुभागथी प्रदेसथकी ७६ प्रश्न ॥ क षायरी चौकडी च्यारहै तिणमे जिस चौकडीमे परभ वनो आउखो बांधे उसको मरती वक्त उही चौकडी उदे आवे कि और चौकडी उदे आवे॥उत्तर चौकडी ४ च्यारमे कोईसी चौकडीमे नरकादि आऊखो बांधे परंत मरती वखत सूत्र भगवतीमे शतक ३ उदेस ४ जोगरो परिणाम लेस्या प्रधान कहीहे (जीवेणं भंते जे भवीए णेरईयेसु उववज्जितए सेणंभंते कि ले स्सेसु उववज्जई गोयमा जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालंकरइ तल्लेस्सेसु उव वज्जई तंजहा कण्हलेसेसु वा णीललेसेसु काउलेस्सेसुवा एवं जस्स जा लेस्सा सातस्सभाणियव्वा) ए पाठ देखतां मरती वक्त चोक डी सागीरो नियामक नही लेस्यारो नियामक ७७ प्रश्न ॥ अबके कालमें स्वयंवुध तथा प्रत्येक बु ध तो है नही वुधिवोधितहे सो साधुपणो साधुके दी या आवे के और किणतरे आवे ॥ उत्तर ॥ सो स्व यंबुद्धनें करमनीक्षयोप सम होवे जद स्वयं वुद्ध होवे अै सी करमनी क्षयोपसम पंचमे आरामे संभवे नही गौत म स्वामीनें महावीर स्वामीके सासनके साधाको कह्या (वंकजडाउ पछिमा) इणांने परका उपदेससें समी सर धा रहे तथा विरत धरम आदरे तो पिण सुकरहे (सुच्चा जाणइ कल्लाणं सुच्चाजाणइ पावंग उभयंपिजाणइसुच्चा जंसेय ते समायरे) ए हवो भगवंतनो उपदेसहै. ७८

प्रश्न ॥ पुलाकलब्धिनें पुलाक नियंठा एकछे के दोयछे तथा पुलाकनो स्वरुपकिनतरेछे ॥उत्तर॥ पुलाक नियंठामे लेस्या ३ तेज १ पद्म २ सुक्ल ३ तथानोसन्ना वछत्ता कह्याछे और बुकसनियंठामेंभी लेस्या ३ भगवतीमध्ये कहीछे कषाय कुसील नियंठामे लेस्या ६ हे सन्या ४ है इणमें माठी लेस्या पिणछे सन्या संयुक्तहे सो पुलाक नियंठो तो उणांसाधरो गुणहे अनें लब्धिहे सो उणांरी शक्तिरुपहै अनें ज्ञानादि पुलाक न्यारो लब्धि पुलाक न्यारो आसेवन पुलाक लब्धि पुलाकनां २ भेदछे कार्यपिण न्याराछे सोइणरो स्वरूप ऐसोहै लेस्या इणमे ३ है सुभ लेस्याभाव आसरीछे ज्ञानीनें भाव लेस्या कहीछे और कषाय कुसीलमे ६ लेस्याहे सो संजम आदरतां तो ३ सुध लेस्यांमे आदरयो परंतपीछे कषाय कुसील पणाथी छ मा हली अनेरीलेस्या कषायके जोरसें होवे एह नियंठा नो घर छछोहै वडोपिणहै पुलाकनें नोसंज्ञा वछत्ता कह्यो सुग्यान संज्ञावंत जाणाहै तिणसे आहरादि सज्ञा ग्यानीनें लेखवी नहीं अमुख्यपणाथी निसार धान कणकनें पुलाक कहीजे संजमवांनहै पिणथोमो सो असार सजम करे पुलाक ७९ प्रश्न ॥ अनुयोग द्वारसूत्रमे ४ निखेपाहे ते गाथा (जत्थयजंजाणिज्जा तिखेवं निखेवेनिरविसेसं जत्थयजंतनाणिज्जा चउक्कं निखेवेतत्थ १) इसका भावार्थ कैसेंहै ॥उत्तर॥ अर्थ

जिहां जिस वस्तुमे जितना निक्षेपा जाणें तिहां तत
ला निक्षेपा करे और जे वस्तुमां अधिका निक्षेपा
न जाणीसके ते वस्तुमां च्यार निखेपानो अवश्य क
रे मित्यर्थ ॥ पिण निखेपो करी चीजरो नाम ठहरयो
जदइणांदिलसे नाम लिख्यो १ द्रव्य निखेपो २ स्था
पना निखेपो ३ भाव निखेपा ४ आपणो निखेपो जद उ
ण द्रव्यमें तो एक आपरो द्रव्यहैसो छेहीज उणद्रव्य
मे इणानें च्यारुंचीजां अपणी इछासें निक्षेपा जद इणा
री इछासेंहीज प्रतिमामे ४ निखेपा हुया पिण
उण द्रव्य धातु अथवा पृथ्वी माहिंतो नही हुया चि
त्तमे विचारी देखो जे भगवंते कह्यो होवे
नाममें पिणमाहिरो निखेपोहै थापनामे पिण
माहिरो निखेपोहै द्रव्यमे पिण माहिरो निखेपोहै भा
वमे पिण माहिरो निखेपोहै जदतो चारोहीज निखे
पा बंदनीक होय सो सूत्रमें एहवो उपदेस भगवंत
रो नहीं होवेतो सूत्र बतावो चारों निखेपा बंदनीक
ठहरावो स्थापना निखेपेनें बांदोतो नाम द्रव्यने कि
म नहीं वांदो परंतु इणारी इछामे एचार निखेपा प्र
तिमाजीमें ठहरावेछे जैसें बालक आपणी इछासें ला
ठारो द्रव्य तिणनें घोडो कहै जद उण घोडारो नाम
निक्षेपो स्थापना पिण वाकीरा लोकांमे कहे एह मां
हिरो घोडोछे द्रव्य निखेपे म्हारे घोडारे हाथ लगा
वजो मति भाव निखेपें दोय सांथला विचे आपणा

भावसें कूदे म्हारे घोडे कूदे ए ४ निखेपा पिण भावनिखेपा उणवालकरे मनकाहै तिम इण पिण आपणे मनका अभिप्रायसें च्यारोही निखेपावत्तावे सो (अदेवेदेव सन्ना) एहिज मिथ्यादृष्टीपणोंछे इणारा ही ग्रंथ तथा आवश्यककी निर्युक्तीमे एहवी गाथा जिन शब्दरा निखेपारी कहीछे (नाम जिणा जिण नामा ठवण जिणा जिण पडिमाए दवजिणा जिण जीवा भावजिणा समोसरणे १) एहवी गाथाहै इणानें आपणे मनसं जिन मंदिरही समोसर्ण ठहरायो एपिण एह गाथा मुजब मिथ्या वादीहे अनुयोगद्वारनी गाथा (जत्थयजं जाणेज्जा) इत्यादि इण गाथा साहितो व्याख्यान करणो सो अनुयोग कहिजे तिण चार द्वार उपक्रम १ निखेप २ अनुगम ३ नय ४ एह ४ द्वार उपक्रम ते तो सिद्धांत वांचवानो उद्यम १ निखेपना ४ भेद मुख्यनाम निखेप जैसे जंबुद्वीप पन्नती थापनासुं जबुद्वीप पन्नती सूत्रनी परत द्रव्य निक्षेपसुं पोथी माहिं पानाना अक्षर तथा विगर उपियोग वाचणे वालो भाव निखेप सो उपियोग सहित वांचणे वालो इसवजे ओर निक्षेप क्षेत्र कालादिनही निक्षेपा जाणे तो चार निखेपा जाणेसुं अनुयोग व्याख्यान करें इण गाथामे परमारथछै यह कहे हमे हमारो भाव प्रतिमाजीमे निखेप्योहे सो तुम्हारे भाव तो एकहै सो फूल सचित पाणी मृदग दुकमा ताल

कंसाल बजावामे वर्तेहै के भगवंत मांहिं वरतेंछे चि त्तविगरतो मृदंग दुकडा ताल कंसाल पिण नही बाजे भावतो एक जगां वरतें सराग भावमे तो इंद्री यानो पोषणछे परंत भगवंतनी भक्ति नही भगवंत भक्ति (मनसा स्मरणीयं वचसावक्तव्यंस्तुतिः काये नतद्गुणाचरणीयं) एहवो ध्यानते भगवंतनी भक्तिहै इणानें प्रतिमाजीकुं नाम स्थापना द्रव्य आपणे भा व करीनें थापाहै तो सम्यक्दृष्टी प्रतिमानें पूठ न ही देवे विप्रीत वचन नही बोले ॥ दोहा ॥ (जिन पडिमा जिन सारखी , कहे सो मिथ्यादृष्टी ॥ जिन पडि मा जिनपडिमा कहे भाठो बचन अनिष्ट १) समकती पु रुष जे चीज जिन भावे होवे तिन भावेहीज जाणें और नाम सामाइक करुंबु थापना सामाइक आसणऊपर अं ग मोडने बैठयो दोय घडीनी मर्याद द्रव्य सामाइक उपियोग विगर सामाइकना उपगरण भाव सामाइक उपियोग सहित स माप जोगनो छांडवो एह सामा इकरा चार निखेपा उणारी कहणी स्थापना सामाइ क करतां मुंदडीही सामाइकरी थापना करी किणनें उठायलीनी जद उणरी सामाइक गई और फेर तिसनें पाछी मुंदडी दीधी तो कहो मुंदडी दीधी के सामाइक दीधी ८० प्रश्न ॥ (सुत्तथोखलुपढमो बीउ नीयुत्ती मिसउभणिउतईउ निरवसेसो एसविहीहोइ अणुउगो १) इह गाथा भगवती मांहेछे ॥ उत्तर ॥

पिण इण गाथा मांहि तो अनुयोग नाम वखाणरी विधि करवारो अधिकारहै एक अनुयोग करतां सूत्र अर्थही वाचे दुसरो निर्युक्त मेले जैसे मेरु गिरिरे पूर्वरे अंतरो ४५ हजार जोजन विजय दरवाजो है तिणां योजनारी युक्ति मेले भद्रमालवन वखारा बिजय अंतर नदी सीता प्रमुख बन इणारे जोजनारी चोडासरी युक्ति मेले इसतरेसे पछिम दिसिना जोजन मेले दस इजार जोजननो मेरु मेले जदलाख जोजन प्रमाण पूर्व पश्चिम होवे इम युक्ति मेलवीनें वांचे तीसरो निरवसेख ते धर्म कथानुयोग हेतु दृष्टांत करी समझावे (एम विहीहोई अनुजगो) व्याख्यान करवाकी ए विधिहोवे जणारी कहणी निर्युक्तिरी कहणी पंचागी मानीतो पाचारा पाच मत न्यारा न्यारा निर्युक्तिकार कहे टीकाकार युं कहेछे टीकाकार कहे चूर्णी काररो मतछे चूर्णीकार कहे अवचूरकारको एह मतहे अवचूर कार कहे भाष्यकारको एह मतहे तो विचारो पांचारो पाचमतहे तो एक निर्युक्तिके कहणे पंचागी किम मानी जावे और केवलीनो एक मत इणापांचारा पाच मत तो बिगर केवली के वचन किम पंचागी मनाय ८१ प्रश्न ॥ अनुयोग चार द्रव्यानुयोग १ गिणतानुयोग २ चरणानुयोग ३ धर्म कथानुयोग ४ एह च्यार अनुयोग च्यार प्रकार को वखाणहे द्रव्यानुयोगमे षट द्रव्यनो वखाण गिणतानु

रहै ८२ प्रश्न ॥ द्रव्य हिंस्याकिणने कहिजे जीव हिंस्या किणनें कहीजे द्रव्य हिंस्यारो फल कांई ओर भाव हिंस्यारो फलकांई ॥ उत्तर ॥ सो द्रव्य हिंस्या इसतरे कहीजे श्रावकनें त्रस जीव हणवानो पचखाण करयो तिको माटी खणवानेकिहाइ गयो तिको प्रथ्वी खोदतो त्रस जीवने राखवानो कामीछे त्रस जीवहणवानो पिण संकल्प पिण नही अने त्रसनी पृथ्वी खणता विराधना होवे तो उणरोव्रत्त पिण अतिचरे नही इतरे व्रत्तमे अतिचारपिण नही लागे असो भगवती शतग ७ उद्देसे पहिले कह्योछे तो उण श्रावकने द्रव्य हिंस्यालागी पासे खडो होय सो कहै ते त्रस जीव मारनास्यो एहिज इनरो फल॥ भाव हिंस्यारो फल अशुभ कर्मरो फल सो जीवरे अशुभ कर्मना दलियारो बंध प्राणातिपातहै सो जिण जिवमें जितना प्रांणछे तिणारो अतिपात सो वियोग पापसो प्राणवालेरे पर प्राणरो वियोग कीयोसो कर्म बंध ८३ प्रश्न ॥ केवलीरो मारग सावद्य कहे कितनेक ते किसतरे ॥ उत्तर ॥ एह वचन बोलणे वाले केवलीके वचननी आसातना करेछे-(सियअस्थि सियनत्थि) एहवो स्याद्वादवचनहै सो पट द्रव्य आसरी वचनछे द्रव्य धर्मास्तिकाय आपरे स्वभावे सियअस्ति कहतांछे अधर्मास्तिकाय आसरीने सियनास्ति नहीछे धर्मास्ति कायरो चलणगुण

अधर्मास्ति कायरो थिरगुण चलणो सु ठहरणो नही ठहरनो सो चलनो नही असे षटद्रव्य रत्नप्रभा दि पृथ्वी माहो मांहिं अपेक्षाइं (सियअत्थिसिय नत्थी) एहवो सिद्धांतमे पाठछे एह पाठ हिंस्या राकार्य अनें दयाना कारजमे मिलावे तो कठे कठेहिंस्या मे धर्म दयामे धर्मयाने बावलेरी लंगोटी कभीकमरमे बांधे कभी मस्तकमे लपेटे एहवा केवली भाषित सिद्धात नही सूयगडांग माहिं कह्योछे (एवंखुनाणी णोसारं जंनहिसइ किंचणं अहिंसा समयंचेव एतावत वियाणह १) एह वचन केवली गणधरारो फूठो नही केवली महाराजरी सम दिष्टि चोथा गुण ठाणावालारी श्रद्धा तो एकछे परुपणा नाम बोलणरो, सो बोलता तो साधु परमादी हां बोलनो ना कहे ना बोलनो हा कहे सो परूपणामें फेरहै ८४ प्रश्न ॥ संवेगी प्रतिमानी पूजा करेछे सचितपाणी फूलचढावेछे आरंभसारंभकरेछे मुक्तफल बत्तावे ॥ उत्तर ॥ सो मुक्तफलतो जमामे अजाण मत पक्षसे कहेछे पुन्य फलतो घणा कहैछे सो केवली तो सिद्धांतमे ए, कहीछे (नहुपाणवहंअणजाणे मुच्चइकयाबिस वदुखाणं एवं आयारियेहिंअक्खायं जेहिंइम्मेसाहुधम्मो पन्नतो १) अर्थः निश्चे जिहां प्राणकोवध होवे तिणकारजको भलो पिण मतजाण क्यूंनही भलो जाण प्राणवध किणही कारजमे दुखसू छोडावे नही

इस्यो आरय पुरषे कह्यो जिणाकोमलो नाख्यो धर्महै ए गाथारो अर्थ इणाने मुक्तफल पुन्य फल इ णजीवाने बंधमे दीस्यो तो केवलीनें नही दीस्योदिसे छे इणारो ज्ञान केवलीके ज्ञानसेही जादा सो दीसे छे ८५ प्रश्न ॥ संबेगी सूत्र ४५ मानेछे आपणे ३२ की परुपणाहै सो १३ पईन्ना औरहै तिणमे शास्त्रसे मिलेतो जुवावकाई कहिये तथा १३ ही अणमिल ताहै क्या ॥ उत्तर ॥ पईन्ना सगले तो अण मिलता नही पिण ए पईन्ना नाम प्रकीर्ण विखरी वस्तुनोछे सो छदमस्त आचार्याने बिखरी चीज भेली करीहै परंतु भेली वस्तु करतां कूडो मिले छदमस्तनो ए कांत उपियोग न-रहे तिणकारणे ३२ रो पिण आ क आपारे परंपरायसे कहेछे सूत्र माहिं तो (दुवाल संगंगणि पिडगं) एह १२ अंग गणि आचारजनो रत्नलो करंडीयोछे एहवो पाठछे सुद्ध श्रद्धा वाखेको निरपाप वचन रागद्वेष रहित सर्व सिद्धातछे ८६ प्रश्न ॥ देवता प्रतिमारी पूजा करेछे सो समदृष्टी करेछे मिथ्यादृष्टी करेछे ॥ उत्तर ॥ सो सूत्रनी नेश्राय भग वंत देवाने कह्याहै देव तुम्हारो पुरानो जीत आचार छे भगवंते एतो नही कही समकती देवतानो पुरा णो जीत आचारछे देवता पिण आपरे सामानिक देवतानें पूछ्यो [किंमेपुवं करणिज्जं किंमे पछाकरणिज्जं) इसो पूछ्यो जब इण पाठमे सामानीक देवतानी कहनी

इसी पिण जुदी दीसे नही सो साहिब जैन श्रद्धा वा लाने तो एह प्रतिमा पूजनी श्रेष्टछे और श्रद्धावाला ने उणरी श्रद्धारी प्रतिमा बतावें चाकर धणीरी श्र द्धा मुजव अरज करता मनुष लोकमे पिण दीसेछे उणरे जेवा श्रद्धाही नही जद प्रतिमाजी उह श्रद्धा विगर देव करिके कद पूजे मिथ्यातीरे देव पूजनरी दूजी हरिहरादिकनी प्रतिमा पिण सिद्धातमे पिण नही चाली देव लोकमे तो पूजारो प्रतिमा संबधो तो एहीज ठिकाणो तथा च्यार महेंद्र ध्वजरे चौगर दे प्रतिमा कहीछे इण टालके और हरिहरादिकनी प्रतिमानी वस्त सिद्धातमे नही कही उणारे लेखे स मकती तो एह प्रतिमा पूजे पिण मिथ्यादृष्टी देवा धिदेवकरके किणनें पूजे जैसे मनुष लोक जे इणारी श्रद्धा मुजव येतो जिन प्रतिमाने देवाधिदेव कहिके पूजे मिथ्यादृष्टी अनमती नारायण रघुनाथजी माहादेव इणाने देवाधिदेव कहिके पूजे इण दृष्टी वालाने बाल तपकार्य अकाम निर्जरासे देव लोकमे जावे जदि वे कोणसी प्रतिमा पूजे सो सूत्रानुसारे जाणीयेछे उणा देवारो कुलाचार प्रतिमाने पूजवारोछे (हियाए सु हाए खेमाए निस्सेसाए अणुगामियत्ताए नविस्सई) ए पाठछे तिणऊपर सवेगी कहेछे हित सुख खेम मोख फल हमारे गेल एह कार्य चालस्यो एह पाठ तो घरमे लाय लाग्या घरको धणी बिचारे एह न

गदी धननी गांठडी इण लायमांसे काढया मुजने (हियाए सुहाए खेमाए निसेयस्साए अणुगामिय ताए भविस्सइ) सरीखो पाठछे तो देखो धननो पर भवमे गेल क्या चलसी पिण धन लाइसे वच्या सारी बातरी बर करारी घरमे रहै तैसें देवा पिण एह बात कहीहै यथायोग्य ३२ बाना पुज्यासे नवा देव रे सारी बातरी बर करारी इण भवमें रहैगी इस वास्ते एह बाना ३२ पूजवा योग्यछे ८७ प्रश्न ॥ प्रश्न व्याकरणजीरा संबर द्वारमे दयारा ६० नाम कह्या तिणमध्ये ४७ मो नाम (पूया) सो संवेगी कहैछे पूजा दयामा गिणीछे ॥ उत्तर ॥ सो इणानें द्रव्य पूजा सचित पाणीरो ढोलणो फूल फल सोना रुपानी कचोली धूप दीप वाजित्र वजावणा सारंगी सतार ताली बजावणी मुखमे राग गावणा द्रव्य पूजा ठेरी सो दयामे गिणीयो पूजानो संवेगी अर्थ करे तो प्रश्नव्याकरणमे ६० नाममे जाणो दयानें (यग्य) कहीये सो (यग्य) अन्यमती धर्म जाण करेछे अश्वमेधी गोमेध गजमेधीय महीपमेधीय अजामेधीयएह [यग्य] करेछे तस थावर जीवांना प्राण बध करेछे अने (यग्य) कीयानो मोटो स्वर्गादि फल बतावेछे सो (यग्य) दयामे होय साठा नामामे यज्ञ पिण नामछे परंत मत पक्षी (पूया) नाम प्रश्न व्याकरणमे दीठो जदखुसी थया पुया नाम दयानो

अर्थ द्रव्य पूजानो करेछे जैसे मथेन वंदामि इसो शद्द सुणिने कहे सगलाही जैनी मथेणा वंदामी कहैछे सो हमारेताइ वंदना करेछे ऐसे पिण इणा (पुया) इसो पाठमे देखकें मनराजी करेछे हमे द्रव्य पूजा कराछां सो दयामे गिणीछे परंतु अनयदेव सूरि (यज्ञ) नामनो अर्थ नाव अर्चननो कर्यो छे जिणपर जीव दया नाव अण्यो तिणे जाणे सर्व [यज्ञ] कीधो अने [पूया) शद्दगे अर्थ (पूया) प्राकृनमे शद्द होवे सस्कृनमे (पूना) इसो होवे (पूता) नाम पवित्र निर्मला दया समान दुसरी वस्तु पवित्र नही (सर्वं नूतदयाशौच्यं] इसो शद्द अनमतीके पिण शास्त्रमे कह्योछे सो पूया शद्दनो अर्थ टीकाकारे कर्यो जीवहिंस्या होवे तिको दयागे नाम कदेही नही जाणनो ८८ प्रश्न॥ पक्खीकरनेकी चरचालिख्यते गाथा नमीऊण सयल जिणवर धम्मसमायारीय चउविहोसंघो पव पखीय वियारो नणामि जिणसासणेसारो १ आगारि समाईयगाणि सढाकाएण फासए पोसहोदुहउ परखं एगराईनहावइ २ सवे सुकाल पव्वेमो पसत्थो जिणमए तवो जोगो अठमिपनरसीसूय नीयमेणहविज पोसहीयो ३ छठि सहियाउ अठमि तेरससयं न पखीयं होई पडवे सईयं कयावि ईय नणीय जिण वरिंदेहिं ४ पनरसंमि दिवसे कायवं पखीय तुपाएण च

उदससयं कईयावि नह तेरस सोलमे कहवे ५ अ
ठमि दिणमिसायं कायवा अठमीखपाएण कईयावि
सत्तमंमि नवमे छठे न कयावि ६ पखस अद्धा अठ
मि मासद्धा उए पखीयंहुति सोलसम दिणे पखियं न
का यवं होइ कयावि ७ पखीयपडिकमणाउ सठिय पुहरं
मि अठमा होई तत्थेवपच्चखाणं करंति पवसुजिणत्र
यणे ८ जहीआउ अठमीलगा तहीयाउ हवंति पख
संधीसो सठि पुहरंमिनेया गरेए तिहि पखिपडिकम
ण ९ चदेचदे अभिवढीइया चंदे अभिवढीएचेत्र प
चसाहि ययुगमिणं नणीयंतिलुक दंसीहिं १० नहवक
तीपोसो फागुणवयसाह मासि आसाढो एया पडंति
तत्थी नूणं ए ए सुमासेसु ११ किन्हे बीयचउत्थी छ
ठठमि दसमि दुवालसीचेव चाउदिसी सुक्केपुण पडि
वतीयाय पंचमीया १२ सतामिनवामिकारासितेरसि त
हपुणमाय वोधवा एया युगपारिमढि ताइचियपाडि सिद्धि
वि १३ पडिवगं विय तइयाय चउत्थी पंचमीय छठीया
सत्तमि अट्ठमि नवमी दसमी एकारसीचेव १४ बार
सि तेरसि चाउद्दसीय निठ विणगाय पनरसी कि
न्हंमि [शुक्ल] जोन्हंमिय एसवि वहीमणे यवो
१५ ॥ इति श्री सूत्रात् पाक्षिक विचारो ज्ञेयः ॥

एह गाथानो विस्तार पूर्वक अर्थ लिख्यते.

प्रथम चंद्रवर्ष १॥ भाद्रपदवदि २ कार्तिक वदि ४ पोस वदि ६ फाल्गुन वदि ८ वैसाक वदि १० आषाढ वदि १२.

द्वितियचंद्र वर्ष २॥ भाद्रपद वादि १४ कार्तिक सुदि १ पोससुदि ३ फाल्गुन सुदि ५ वैशाक सुदि ७ आषाढ सुदि ९

त्रतीय अभिवर्द्धन वर्ष ३॥ भाद्रपद सुदि ११ कार्तिक सुदि १३ पोस सुदि १५ फाल्गुन सुदि २ वैसाक वदि ४ आषाढ वदि ६

चतुर्थचंद्र वर्ष ४॥ भाद्रपद वदि ८ कार्तिक वदि १० पोसवदि १२ फाल्गुन वदि १४ वैसाक सुदि १ आषाढ सुदि ३

पंचम अभिवर्द्धन वर्ष ५॥ भाद्रपद सुदि ५ कार्तिक सुदि ७ पोस सुदि ९ फाल्गुन सुदि ११ वैसाख सुदि १३ आषाढ सुदि १५

आठमनी तिथी विचार---तिथी नाम जया॥ दिन नाम इंद्रसुधाभिसलेय ॥ रात्रि नाम वेजयती ॥ रात्रीनी तिथी नाम भोगवती ॥ तिथी खुटे तिवारे साते दीन आठमि होई सूत्र मांहिं विमासी जो जो सिद्धांते जो तिथी न खुटे तो आठे दिन आठमी होवई ॥ जया तिथी आठमकिजे ॥

पाखी पूर्णा तिथी किजीये--तीथी नाम पूर्णा ॥ दि

न नाम उवसमे १ सुवयगा १॥ रात्री नाम देवानंदा २ द्वितीय निरती २॥ रात्रीनी तीथी नाम जसवती ॥ तिथी खुटे जद्चऊदे दिने पाखी आवे तिहां कीजे अतिचार आलोईये विशेषजो तिथी न खुटे तो पंधरे दिनमे पाखी होय ॥ पूर्णा तिथी पाखी किजीये॥ प्रश्न ८९ ॥

॥ अथ संवत्सरी पंचमीके दिन करणी ते चौथकी संवत्सरी करणे वाले साधु श्रावकोसें प्रश्न लिख्यते ॥ प्रश्न १ चोथके दिन पंचमी कोणसे सूत्रसे करतेहो प्रश्न २ चोथको चोथ कहणी पंचमीको पंचमी कहणी चोथको पंचमी कोण कहे औसा विवहार वरतताहे सो आप चोथको पंचमी तथा संवत्सरी कैसे कहते हो ॥ प्रश्न ३ और आलोयणा गये कालकीहे या ने बीते हुये कालकीहे तो पंचमीका काल बीता नही तो आलोयणा पूर्ण कैसे हुई क्योंकि दिन छिपे चोथमे पंचमी आई तबतो पहर दो पहरकी पंचमीकी आलोयणाभी न हुई ॥ प्रश्न ४ और आगमी कालका तो पचखानहे परंतु आलोयणा नहीं होवे तुम संवत्सरीकी आलोयणा कैसे करते हो विना कालबीतेपे दिनकी आलोयणा सूर्य अस्त होते वक्त करनेहें रातकी आलोयणा सूर्य उदै होते वक्ततक करतेहे इसीतरे संवत्सरीका दिन व्यतीत हो लेवें तब आलोयणा करणी युक्तिहे ॥ प्रश्न ५ और

कालिका आचार्यनें तो कार्ण सिर चोथमे पंचमी क
रीथी ॥ पईठान पुरमे सालिबाहन राजाने कह्या
कि महाराज पंचमीको इंद्रमहोछाव मेला करुं छठको
पोसह करदुंगाजव गुरूने १ रात दिनका अंतर
यानें फरक पडता जानकर चोथमे पंचमी कराई
क्यों कि छठके दिनमे तो पंचमीका कोई अंस ज
रासाजी नही रहता और वहातो सत्तमीकी घ
डीया आजातीहै इसवास्ते एक रात दिनका अंत
र पडता जानकर उनोंनें चोथमे संवत्सरी करीथी प
रंतु पहली असलमे महावीरजीके बारेसे तथा परं
परायसे पंचमीकी संवत्सरी चली आवेथी तो तुम
लोगोंने उसका मानना कैसे छोड दिया ॥ प्रश्न ६ और
बहोतसी बाते नवे ग्रंथ शास्त्रोकी नही मानतेहो कि
जैसे धर्म रत्न शास्त्रकी गाथा (अवलंविऊण कज्जं जं
किंपिसमयारंतिगीयत्था थोवावराह वहुगुण सवेसिंतं
प्रमाणंतु८५) अर्थ अवलंबनको आश्रित होके जो जो सं
जोपकारी कृत्य गीतार्थ सिद्धांतानु सारी आचरणकर
तेहै तिस्मे दूपणतो अल्पहै और निक्कारणें परिभोग क
रे तो प्रायछित पामे और जिस्मे बहुत गुण होवे गुरु
ग्लान बाल वृद्ध प्रमुखोके उपकारक होवे मात्रक अर्था
त मोटे बडे पत्रादि परिभोगकीतरे जो सब चारित्रीयों
को परिमाणहै मित्यर्थ ॥ और आर्यरक्षित सूरिने मुनी
यो की दयाकरिके मात्रक मोटे बडे पात्रके परिभोग

णमेतंचा आहार माहारित्तएवा णणत्थ गाडेहिंरोगायं केहिं) इसका अर्थ इसी पाठके शद्वोंसें, समजना तथा वृहत्कल्प सूत्रके टवेसें अर्थ जाणना इसतरे गाढे रोगादि कार्णे सूत्रमें निषेध नही और कार्णे साधू वृद्ध अवस्थामें एक नगरमे रहे १ कार्णे चो मास उतरया पछे उसी नगरमें साधू रहे २ कार्णे औप धी साधु लेवे ३ कार्णे साधू जलमेसें वहती साधवीको निकाले ४ कार्णे साधू चोमासमें विहार करे ५ कार्णे साधू नदी उत्तरे ६ कार्णे साधु रोग तथा संथारेमे लोच नकरे ७ कार्णे साधू आहार लेवे ८ कार्णे साधू आहार न लेवे ९ कार्णे साधू नवणी घ्रत तीन पहिर तक रक्खे १० कार्णे खाडामे पडता साधू वृक्षकी साख पकडै ११ कार्णे साधू लब्धि फोडे १२ कार्णे साधू जोतिस प्रकासे १३ कार्णे साधु वेक्रे लब्धी करे १४ कार्णे साधू मास उपरांत गामनगरमे रहे १५ साधू ग्रहस्थीके घर बैसे १६ इम कार्णे साधूके औरभी बहोतहे तो इस वास्ते श्री प्रवचण सारोद्धार ग्रंथमे रातको सूचिके लिये पाणी रखणा लिखाहै ९१ और कितनेक साधु वा श्रावकोको जिस गुरुनें धर्म उपदेस दीया और समकित धर्म बताया आरे समकित धारण कराई तथा धर्म ध्यानका करणा धर्म लक्षन बताया मिथ्यात छुडाया अनेक सूत्र वा शास्त्रोके जाणकार कीये तो, ऐसा

परम उपकार गुरु महाराजका हुआ जिस ते मनु पो की बुद्धि निर्मल हुई और ज्ञान दरसन चारित्र तपके धणी हुये फिर वे ऐसे उपकारी गुरुको छोड कर ऐसा दूसरे गुरुकी समकित सरधा करतेहै औ र पूर्व गुरुके द्वेषी वनजातेहै वा अवगुण बाद बो लतेहै तो वे महा दोपके अगवाणी होतेहै सो आ गमद्वार स्मरण कराके कहतेहै (एवंअवमन्नतो वुत्तो सु त्तंमिपावसमणुत्ति महमोहवंधगोविय खिसंतोअप्प डि तप्पंतो) अर्थ ऐसे पूर्वोक्त कहे गुरुको हीलता हुआ साधु सूत्र उत्तराध्ययनमें पापी श्रवण कहाहै और गुरुको निंदनें खिजनें वाला आवश्यक समवा यांगादिकमें महा मोहनीय कर्मका बंध करने वाला कहाहै मित्यर्थ ॥ और जो शिष्य कठिन क्रिया का रकभी होवे तोभी गुरुकी आज्ञा करने वाला होवे उक्तंच (छठम दसम दुवालसेहिं मासद्ध मासखमणे हिं अकरंतो गुरुवयण अणंत संसारीउ भणिऊ) अर्थ छठ अठम दसम द्वादसम अर्ध मास मास क्षमण तप करनेवाला शिष्य गुरुका वचन न मानेतो अनंत ससारी कहाहै अथ गुरु सेव्यया फल माह ॥ (वि दलयतिकुबोध बोधयत्यागमार्थं सुगतिकुगति मार्गौ पुण्य पापेव्यनक्ति अवगमयतिकृत्याकृत्य भेदंगुरो र्यो भविजलनिधिपोतस्तंविना नास्तिकश्चित) व्या ख्या ॥ भोभव्यास्तं गुरुं विना अन्यः कश्चित भवजल

निधि पोतः भव संसार सएव जलनिधि समुद्रस्तत्र पोत इव पोतः संसार समुद्र तारणे प्रवहण समानो गुरु बिनाऽन्यः कश्चिन्नास्ति तं कथं योगुरुः कुबोधं कुत्सित ज्ञानं मिथ्यात्वं विदलयति पुनर्योगुरुः आगमार्थानां सिद्धांतानां अर्थं बोधयति ज्ञापयति पुनर्योगुरु पुन्यपापे अन्यंच पापंच पुन्यपापे तद्धर्माधर्मौ अपिव्यनक्ति प्रगटयति इदं पुन्यं पापं इति कथंभूते पुन्यपापे सुगति कुगतिमार्गौ सुगतिश्चकुगतिश्च सुगतिकुगति तयोमार्गौ पुन्यंदेवनरादि सुगतिमार्गः पापं नरक तिर्यकरूप कुगतिमार्गः पुनर्योगुरु कृत्या कृत्य भेदं अवगमयति कर्त्तुं योग्यं कृत्यं अयोग्यंअकृत्यं कत्यंच अकृत्यं कृत्याकृत्ये तयोभेदोविवेको विचारस्तं ज्ञापयति यथा प्रदेसी नृपः महानास्तिकमतिः केसी श्रमण गुरुणां प्रतिबोध्य तत्व मार्गे स्थापितः॥ पुनः गुरुसेवायाफलमाह॥

पितामाता भ्राता प्रिय सहचरी सुनुनिवहः सुहृत्स्वामी माद्यतकरिभटरथाश्वपरिकरः निमज्जंतंजंतुनरक कुहरे रक्षितुमलं गुरोर्धर्माधर्म्मं प्रगट नपरात्कोपिनपरः

॥ व्याख्या ॥ नरक कुहरे नरक विवरमध्ये निमज्जंतं बुडंतं पततं संतं जंतु जीवं गुरोः परोऽन्यः कोपि रक्षितुं न अलं कोपिन समर्थः कथं पिताजनको रक्षितुं नालं माता जननीनालं भ्राता सहोदरंनालं प्रीया अत्यंत वल्लभा सहचरी स्त्रीरक्षितुं नालं सुनुनि

वहः पुत्र गणोपिरक्षितुंनालं सुहृत्मित्रमपिनालं सम
र्थं स्वामी नायकोपिनालं किंनुतः स्वामो माघत क
रि नटरथाश्वः माद्यतो मदोन्मता कारिणो गजा भ
टाः सुभटाः रथा अश्वाश्वयस्यस एवं विधो बलवानपि
स्वामी रक्षितुनालं पुनः परिकरः प्रभूत सेवकादि वर्गो
पि नकरे पतंतं जीवं रक्षितुं न समर्थः किं विशिष्टात्गुरो
धर्माधर्मं प्रगट न परात धर्मश्च अधर्मश्च ध
र्मा धर्मा पुण्य पापे तयोः प्रकटने प्रकाशने परस्त
परोयः स तस्मात्गुरुः धर्मा धर्मो द्वावपि दर्शय
ति ततश्चयः प्राणी धर्म मंगी करोति सनरके नपत
ति किंतुसुगाति सुखं भवाति ॥ इस वास्ते सुगुरुसेवा
सदा सुखदायक है ९२ प्रश्न ॥ मुहपाति कोणसे सू
त्रमे कहीहै ॥ उत्तर प्रश्नव्याकरण उत्तराध्ययन सू
त्रमे कहीहै ॥ ९३ प्रश्न रजोहर्ण का प्रमाण कोणसे
सूत्रमें कह्या ॥ उत्तर नसीथ सूत्रके पांचमे उदेसेमें
९४ प्रश्न ॥ मैलावस्त्र वहोत जादे साधुरखे कि नहीं उत्त
र ॥ नही रखे जो रखेतो तिस साधूको प्रायश्चित कह्या
नसीथ उदेसे ६ मे ९५ प्रश्न ॥ साधूने रोग उपना साधू
औपधी देवेके नही उत्तर ॥ साधू औपधी आणी दे
वे नही देवेतो प्रायश्चित कह्या नसीथ उदेसे दसमे ९६
प्रश्न सूत्र ॥ कितने प्रकारके होतेहै उत्तर सात प्रका
रके ते विधि सूत्र १ उद्यम सूत्र २ वर्णकसूत्र ३ भ
य सूत्र ४ उत्सर्ग सूत्र ५ अपवाद सूत्र ६ उभय सू

त्र इन सातोंका ७ स्वरुप इसतरे है कि कितनेक सूत्र विधि मार्ग केहै तथा दशवैकालिकके पांचमे अध्ययने (संपत्तेभिख कालंमि असंभंत्तो अमुछिउ इ म्मेण कम्मजोएण भत्तपाणं गवेसए १) इत्यादि १ और कितनेक उद्यम सूत्र जैसें उत्तराध्ययन दसमे अध्ययने [दुम्म पत्तए पंडुए जाहा निवडइ रायगणाण अच्चए एवंमणुयाण जिवियं समय गोयम मापमायए १)इत्यादि २ और कितनेक वर्णक सूत्र जैसें ज्ञाता उववाई प्रमुखमें जैसें (रिद्धित्थमियसमिद्धा) इत्यादि ३ और कितनेक भय सूत्र कि जैसे सूयगडांग प्रथम श्रुत्स्कध निरय विभती पंचमाध्ययने प्रथम उदेसे (हणछिदह भिंदह दहेणं सद्दंसुणित्तापरह‍म्मिायाणं ते नारगाउभयभिन्न सिंन्ना कंरकंतिकिंन्नामदिसंवयामो) इत्यादि ४ उत्सर्ग सुत्ताणि यथा [इच्चेसिंछण्हं जीवनिकायाणं नेवसयं दंडं समारंभिज्जा) इत्यादि ५ अपवाद सूत्रतो प्रायेछेद ग्रंथोंसे जाने जातेहैं तथा [नयालभिज्जा निउणं सहायं गुणाहियं वा गुणउस्समं वा इक्कोवि पावाइ विवज्जयंतो विहारिज्जकामे सुय सज्जमाण १)इत्यादि भावार्थ जब निपुण सहायक गुणाधिक अथवा बराबर गुणवाला न मिलें तब पापाको बर्जता हुआ और काममे अनासक्त होकर एकलाभी विचरे साधू ॥ ६ ॥ तथा तदुभय सूत्र जिनमे उत्स

गापवाद दोनो युक्त कहे जातेहै यथा (अट्टजाणा भावेसमं, अहियासियब संत्राही ॥ तजावं मित्तवि हिणा, पडियार पवत्तणंत्तेयं ॥ इत्यादि भावार्थ जिस रोग व्याधिके हुए आर्तध्यान न होवे तव तो सहनी जेकर आर्तध्यान तिस रोग व्याधिके हुए हुवे तव तिस वे उपचारमे बर्त्तना औषधी करणी ऐसे नाना प्रकारके स्वसमय परसमय निश्चय व्यवहार ज्ञान क्रियादि नाना नयोके मतके प्रकासक सिद्धातमे गंभीर भाव वाले महा मतिवालोके जानने योग्य जिनका अभि प्रायहै इस इस तरहकें सूत्र बहुत विस्तार करिकहै ॥ ७ ॥ ९७ प्रश्न ॥ श्रावक कितने प्रकारकेहै ॥ उत्तर च्यार प्रकारके श्री ठाणांग सूत्रके चउथे ठाणेमे क हेहै यदुक्तं (चउविहा समणो वासगा पन्नत्ता तंजहा अम्मापिइसमाणे १ भायसमाणे २ मित्त समाणे ३ सवत्ति समाणे ४ ॥ गाथा ॥ चिंतइ जइ कज्जाइं नदिह ठ खलिउविहोईनिन्नेहो एगंत वछलो जइ जणरसज णणी समोसहो १) भावार्थ साधुओके सर्व कार्य आहार पानी वस्त्र पात्र औषधी प्रमुख जे होवे ति नको तिनके दान देनेकी चिंतवणा रखे शुद्ध भाव सें दान देवे कभी परमादके वसते साधु समाचा रीसै चूक जावे तव आखोसे देखकेभी स्नेह रहित न होवे साधुजनोका एकांत वत्सल कारक होवे सो माता पिता समान श्रावक कहतेहै १ (हिजएससि

णेहोच्चिय मुणीणमंदायरो विणयकम्मे नाइ समोसा हुणं पराजवे होईसुसहाउ २) नावार्थ ॥ हृदयमे तो साधुओ उपर बहुत स्नेह रखताहै परंतु साधुओ की विनय करनेमे मंद आदर वालाहै साधुओको संकट पमे तव नलीरीते सहाय्य करे सो श्रावक नाई समानहे २ (मित्त समाणो माणाई सिरुसइ अपुछिउकज्जे सन्नंतो अप्पाणं मुणीण सयणाउअज्झ हियं ३) नावार्थ ॥ जव साधु किसी कार्यमे न पुछे तव रूसजावे परंतु साधुको अपने स्वजनोसेंनी अधिक मानताहै सो मित्र समान श्रावकहै ३ [थद्धोछिद्प्पेही पमाय ॥ खलियाणिनिच्च मच्चरईसढो ॥ सवत्तिकप्पोसाहु ॥ जणं तणसमंगणइ ४ ॥ नापार्थ॥ अनिमानी काष्टवत कठिन होवे छिद्र देखने वाला होवे प्रमादसे चूकजावे तो तिस दोषको नित्य कहे साधुजनोको तृण समान गणे सो श्रावक शौकन तुल्यहै ॥ ४॥ १८ प्रश्न ॥ तथा श्रोताजन श्रावक चतुर्दस प्रकार उपमा सहित कहहे यदुक्तं (मृत १ चालिनी २ महिष३ हंस ४ शुक ५ स्वनावा ६ मार्जार ७ कंक ८ मशकौघ ९ जलोक तुल्य १० सछिद्र कुंन ११ पशु १२ सर्प १३ सिलोपमाना १४ ते श्रावका नूविचतुर्दशधानवंति ॥ १ ॥ नाषार्थ ॥ पृथ्वीवतधीर्यवान १ चालनीवत जिम गाणसलेय तिम अवगुन लेवे २ नैसाजिम पाणी गदला करी पिवे तिम

जिन वाणी मेले प्रणामसें सुणें ३ हंस जिम दूध पा
णी न्यारा न्यारा करे तिम मिथ्यात दूर करे जिन
वाणीके रसको धारण करे ४ तोता जिम फल कुत
र कुतर गेरे तिम गुरुनां बचन काटें ५ श्वान जिम
जीमे करी ऊवेल करे औरनें देखी चुके तिम ईर्षा
करे ६ बिलाव जिम छिद्र ताके जीव मारवानें तिम
साधुना छिद्रताके ७ कागसों जिम ऊलऊँ केस जु
दे करे तिम संदेह दुर करे ८ मछर जिम चठका
देवे तिम कठिन वचन बोले ९ जलोक जिम दुध
न पीवे तिम जिन वाणी रसको न चाहे १० छिद्र स
हित घड़ा माहिं पाणी न रहे तिम जिन वाणी याद
न रहे ११ गाय जिम पाणी पीवे गातन भिगोवे ति
म प्रणाम मेला न करे शुद्ध भावसे जिन वाणी सु
णें १२ सर्प डंकवते वचन कहीनें क्रोध करे पिण
मुरख बुद्धी समझे नहीं जैसें (उपदेशोहिमुर्खाणा
प्रकोपायनशांतये पयपानभुयंगानां केवलंविश वर्द्ध
नं १] १३ सिलाऊपर जिम मेघबरसे पिण भेदे
नहीं तिम जिन वाणी सुणे पिण समझे नही १४
अक्रोध वैराग जितिंद्रियत्वं क्षिमादयासत्तजणे न
प्रीतं निर्लोभ दाताभय शोक मुक्ता ग्यानप्रलद्दश
लक्षणानि १॥९९॥ प्रश्न कितनेक वादी ऐसा कहते
हें कि मुखपोतियं का पाठहे परंत सूत्रमे डोरेका
पाठ नहींहे ॥ उत्तर जो डोरा नहोतो रायसी देवसी

का पडिकमणा करे जबे इच्छामी खमासमणोके १२ आवर्तन प्रदक्षिणा दोनों हाथ जोडके मस्तक मि लाट पर लगाके किसतरां करेगा मोपती मुखके बां धे बिना तो १२ आवर्त्तन तथा प्रदक्षिणा ३ का उमे वणें नही और तागे बिना मुहपती बंधाजावे नही और सूत्र भगवती शतक ९ मे उद्देसे ३३ मे (अठ पडलाए पोतिय मुहवधंति मुहबंधइत्ता) ऐसा पाठहे तो डोरे बिना मुहपती का बंधई पाट न हो ता इहातो (बंधइ २ त्ता) कह्याहै कि मुहपती बांधी बांधीनें और सोमिल ब्राम्हणेने अन्यमत की दिक्षा व्रतमे (कठमुदाएमुहबंधइ बंधइत्ता) अ र्थ काष्ठकी मुखपतीसे मुख बांधीबाधीनें ऐसा निरा वलका सूत्र मांहि पाठहे इस वास्ते मुहपती बांध नी योग्यहै और ३२ सूत्रां मांहिं किसी सूत्रमे हा थमे रखणा मुहपतीका कही कह्या नही और बं धई का पाठ तो कई जगेहे सोइ लिखदिखलायाहै और कितनेक अज्ञानी विवेक रहित ऐसा कहतेहै कि मोहोपती मुखपर बांधणेसे मुहपतीमे जीवकी उत्प ती होतीहे जिसका उत्तर जैसे भठीमे अंगारे ज लरहेहे उनके ऊपर मट्टीकी हंडी चढा दियी उसमें आटा और पानी डाल दिया लेकिन जवलग भठी मे अग्नीहे तबलग उसहंडीमे जीव नही उपजेंगे और अग्नीतो बुझजावे लेकिन जबलग हंडी गर्महै तोवी

जीव नही उपजेंगे जब हंडी शीतल ठंढी होजावेगी और भीतरका आटा तथा पानी बिलकुल ठंढा शितल होजावेगा जब कितनाक काल पीछे जीव उत्पन्न होनै का संभवहै इसतरह तेजस्स सरीर भटी समानहै प्रत्यक्ष देखो ठंढ कालकी ऋतुमे तडके के वखत आ दमीके मुखसे धुवाकी लाटे निकलतीहै साक्षात जैसे अग्नीमेसे धुवा निकलताहै और कबूतर पारेवा पखेरू इत्यादिक कंकर पत्थरका आहार करलेतेहै लेकिन पेटसे गया फिर सब चूना बनजाताहै एह सब तेजस्स सरीर का पराक्रमहै जैसे अग्नी जलत भ ठी पर मट्टी की हंडी चढीहै इसतरा मुखपर मोहोपती है सोई मुहपतीमे जीव उत्पन्न नही होते और जो कोई कहै सो अपने कर्म भारी करताहै.

श्लोक ॥ अनुष्ठुब् वृतम् ॥ इत्यक्तं बहुशः धर्म्म सारस्य लिखितंमया दृष्ट्वा ग्रन्थाननेकस्य संग्रह्यते प्रयत्नतः ॥ १ ॥

॥ इति श्री स्वामीजी ऋखराज कृत सत्यार्थ सागर ग्रंथका धर्मसार संग्रह नाम तृतीयो भाग संपूर्णम् ॥ श्री ॥ शुभंभवतु ॥

॥ श्री वीतरागायनः ॥

॥ अथ सत्यार्थ सागर चतुर्थ भाग प्रारंभः

———०○———

अथ सम्यक्त निर्णय लिख्यते ॥ अरिहंतो महादे

वो जाव जीव सूसाहूणं गुरुणं जिनपन्नत्तं तत्तं एस,
त्तं में गहियं ॥ १ ॥ अस्यार्थ अरिहंतादि पंच परे
ष्ठीमे प्रथम देव लक्षण जाणकर देव अरिहत क
मानीये ते देवाधिदेवके गुण लक्षणोका वर्णन च
श्यते ॥ छंद ॥ उपजातिर्वृतम् (अर्हन जिनः पारगत त्रि
कालवित् क्षीणाष्टकर्मा परमेष्टयधीश्वरः शंभूःस्वयं
भगवान जगत्प्रभूः तीर्थंकरस्तीर्थकरो जिनेश्वरः १
स्याद्वाद्यभयदसार्वाःसर्वज्ञःसर्वदर्शिकेवलीनौदे वाधिदे
व बोधिद पुरुषोत्तम वीतरागाप्ताः २) अर्हन पुल्लिंग
(चतुस्त्रिंशतिमतिशयान सुरेंद्रादिकृतां पूजां वा अर्ह
ति इति अर्हन) अथवा अष्ट कर्मरुप वैरियोंको हननने
से तीर्थंकरकानाम अर्हनहै १ जिनः (जयतिरागद्वेषमो
हादि शत्रून इति जिनः) रागद्वेष महामोह आदि
शत्रुवोकु जितनेसे जिनः २ पारगतः (संसारस्य प्र
योजनजातस्य पारंकोर्थः अंतं अगमतामिति) संसा
र समुद्रके पार जानेसें और सब प्रयोजनोका अंत
करनेसें पारगतः ३ त्रिकालवित (त्रीनकालान वे
त्ति) तीनकालकी वार्ता जाणे ४ क्षीणाष्टकर्मा (क्षी
णानि अष्टौ कर्माणि अस्य) क्षीण होगये ज्ञानाव
र्णादिकर्म ५ परमेष्टी (परमेपदे तिष्ठति) परम उत्कृष्ट
ज्ञानदर्शन चारित्रमेस्थित ६ अधीश्वरः जगतामधीष्टे
इत्येवंशीलोऽधीश्वरः स्थसन्नासपिसकसोवर इति व
रः जगत जनोको आश्रयभूतहै ७ शंभूः [शं शाश्व

तसुखं तत्र भवति] सदा सुखके समुदायहै ८ स्व यंभूः [स्वयंआत्मना तथा भव्यत्वादि सामग्री प रिपाकात नतु परोपदेशात भवति] अपनी भव्य पनेकी स्थिति पूर्ण होनेसे स्वयमेव पैदा होताहै ९ भगवान ॥ भगः कोर्थः जगदैश्वर्यं ज्ञानं वा अस्ति अ स्य इति भगवान अतिशायिने मतुः ॥ अर्थ ॥ इस जगतका सब ऐश्वर्य और ज्ञानहै जिसकुं ते भगवा न १० जगत्प्रभूः (जगता प्रभुः) जगतका स्वामी है ११ तीर्थंकरः (तीर्थते संसार समुद्रोऽनेन इति तीर्थं प्रवचना धारश्चेतुर्विधः संघः तत् करोति) च्यार प्रकारे तीर्थसंघकरे १२ तीर्थकरः तीर्थंकरो ती ति तीर्थकरः) तीर्थसंघके प्रवर्तकहोनेसे तीर्थक रहै १३ जिनेश्वरः ॥ रागादिजेतारोजिनाः केवलिनस्ते पामश्विरः जिनेश्वरः ॥ रागद्वेपादि महाकर्मशत्रुवोके जि तनेवाले सामान्य केवलीकोभी जिनेश्वरः १४ स्या द्वादि ॥ स्यादिति अव्यय मनेकान्त वाचकं ततः स्याद्दि ति अनेकान्त वदतीत्येवंशील स्याद्वादी स्याद्वादोऽस्या स्तीति वा स्याद्वादी यौगकित्वादनेकान्तवादी इत्यपि पाठः ॥ अर्थ सकलवस्तुस्तोम अपने स्वरुप करिके क थंचित अस्तिहै और पर वस्तुके स्वरुप करिके कथं चित नास्तिरुपहै ऐसातत्व प्रतिपादन कर्ता स्याद्वा दीनामहै १५ अभयदः ॥ अभयंददाति ॥ सर्व जीवाको अभयदानदायकहै १६ सार्वः (सर्वेभ्यः प्राणिभ्यो

हितः सार्वः) सर्व प्राणिके पर हितकारीहै १७ सर्वज्ञः सर्वं जानातीति सर्वज्ञः सर्व पदार्थोंकु ज्ञानकारी जाणतेहै १८ सर्व दर्शी सर्वंपश्यती त्यवंशील सर्वदर्शी ॥ सर्व वस्तुदेखतेहै १९ केवली सर्वथाऽऽवरणविलये चेतनस्वभावाविर्भावः केवलं तदस्यास्तीति केवली ॥ सर्व कर्म आवर्णके दूर होनेसे चेतन स्वभाव का प्रकट होना सो केवलीहै २० देवाधिदेवः (देवानामप्यधिदेवोदेवाधिदेवः) देवोंके देवहै २१ बोधिः [जिन प्रणित धर्म प्राप्तिस्तां ददाति मिति बोधिदः] बोधवीजकेदेने वालेहै २२ पुरुषोत्तमः (पुरुषाणां उत्तमः सर्व पुरुषोंमें उत्तमहै २३ वीत रागः वीतो गतो रागोऽस्मात] दूरहुया अंगनादिकोंसे राग २४ आप्तः ॥ जीवानां हितोपदेश दातृत्वात आप्त इव आप्तः जो जीवोंके ताईं हितोपदेस करने वालेहै ऐसे गुणो संयुक्त अरिहंत देव १८ दोषोसे रहितहै ते श्लोक ॥ अन्तराया दान लाभ वीर्य भोगोपभोगगाः हासोरत्यरती भीति जुगुप्साशोकमेवच १ कामोमिथ्यात्वमज्ञानं निद्राचाविरतिस्तथा रागोद्वेषश्चनो दोषा स्तेषामष्टादशाप्यमी २) अर्थ दानगत अंतराय १ लाभगत अंतराय २ वीर्यगत अंतराय ३ भोगगत अंतराय ४ उपभोगगत अंतराय ५ ए पाचों अंतरायोंके भगवानके विघ्न नहीहै हांसी ६ रति अर्थातप्रीति ७ अरति अप्रीतीतथाचित्या ८

नय ९ जुगुप्सा अर्थात तृष्णा १० शोक ११ काम अर्थात मन्मथ १२ मिथ्यात दर्शन १३ अज्ञान मूढपणा १४ निद्रा सोना १५ अविरति १६ राग १७ द्वेष १८ ए १८ दोष रहित अरिहत देव देव करिमानीये और यह देव स्त्री संयोग शस्त्र जपमाला कमंडल पुस्तक विभूति ऽस्वारी इनोके धारी नहीहै क्योंकि जो देव कामी होय तो स्त्री सग धारन करे जिस देवको वेरियांसें भय होय वह शस्त्र धारण करे जिसको पुराज्ञाननही हो वह जपमाला धारण करे जो जिसका शरीर अशुद्ध होता होय वह पाणी का कमंडल धारण करे जिसको केवल ज्ञान वा अंतर जामी पणा नहो तो तिस वास्ते पुस्तक धारण करे जो कृत्याकृत्य धर्माधर्म हिताहित न जाणताहो वह विभूती रमावे और जो असमर्थपणा जिसमेहो वह सवारी करताहै और पशूपक्षीयोको पिडा देता है तिसको देव न कहीये देवतो पूर्ववत गुणलक्षणो सहित है ऐसे देवका भजन ध्यानस्तुती हमेस्या करणे योग्यहै याने जावजीवतक इन्ही देवोको ध्यान करणा तथा स्तूती नमस्कार करणा योग्यहै और शुद्ध साधू कनक कामनीके त्यागी छहकायाके दयालते गुरू करिके मानीये २ और जिन, तथा केवली महाराजका कह्या उपदेश तिसको धर्मसे सत्य कर मानीये ३ ॥ दोहा ॥ देव अरिहंत निर्ग्रंथगुरु,

जीव दया धर्म सार ॥ एकवार आराधीयां निश्चैखेवा पार १ ॥ ते देव ३४ अतिसय ३५ वाणीकर सहित होय १००८ लक्षण वज्र रिषभ नारायच संघयण समचौरंस संठाण जघन ७ हाथ सरीर प्रमाण उत्कृष्ट ५०० धनुष सरीर प्रमाण अनंता ज्ञान दर्सन चारित्र तप बलवीर्य सहित ते देव अरिहंत के १२ गुण अंनत ज्ञान १ अनंत दर्सन २ अनंत सुख ३ अनंत वीर्य ४ सोवनमय सिंहासन पाएपीठ सहित ५ देवदुंदभी ६ तीन छत्र ७ चौसठ चमर ८ भामंडल ९ अशोकवृक्ष १० देव कृत्यफूलाकीवर्षा ११ जोजनसमाणी वाणी १२ इत्यादि और अनंत गुण करी अरिहंत जाणीये १ गुरु ते सू साधु पाच महाव्रत पाले ॥ ते हिंस्याके त्यागी १ झुठ २ अदत्त ३ स्त्री ४ परिग्रह ५ के त्यागी श्रुत्त १ चक्षु २ घ्राण ३ रस ४ फरस ५ ए पांच इंद्रीयांको वस करे १० क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ कषाय टाले १४ भावसचे १५ कर्णसचे १६ जोगसचे १७ खिमावंत १८ वैरागवंत १९ मन समाधारण २० वय समाधारण २१ कायसमाधारण २२ नाणसंपन्ने २३ दंसण संपन्ने २४ चारित्र संपन्ने २५ सीतादिक वेदनासहे २६ मरण आए सम आहियासे २७ ए २७ गुण जाणवा वली परिग्रहके २ भेद बाहिर परिग्रह १ माहिलो अर्थात अभिंतर परिग्रह २ ते बाहिर परि

ग्रहके १० भेद भूमि १ जान २ धन ३ धान ४ ग्रह ५ भाजन ६ कूप ७ सयणासण ७ चौपद ९ द्विपद १० अभिंतर परिग्रहके १४ भेद क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ हास्य ५ रति ६ अरति ७ भय ८ सोग ९ दुगंछा १० मिथ्यात ११ वेद १२ राग १३ द्वेष १४ सर्व मिली २४ भेद परिग्रह रहित ते शुद्ध साध जाणिये २ ॥ धर्म के २ भेद देसथी धर्म श्रावक नो १ सर्वथी धर्म साधुनो २ ते जीव दयाधर्म केवली पन्न त्तं धम्मं (अहिंसा संजमोतवो) ते धर्म श्रद्धा स हित प्रमाण करिये ॥ ३ ॥ ते सम्यक्ती जीवकुं २५ प्रकारकी मिथ्यात त्याग कर शुद्ध सम्यक्त करे ते लिख्यते (अधम्मेधम्मसंन्ना) अधर्ममें धर्म कहे १ [धम्मे अधम्मेसन्ना) धर्मसें अधर्म कहे २ उ मग्गो मसग्गन्ना) कुमारग कोमारग कहे ३ (मग्गो मसग्गन्ना) मार्गकुं कुमारग कहे ४ (अजोव जीवस न्ना अजीवसे जीव कहे ५ (जीवे अजीवसन्ना) जीवसूं अजीव कहे ६ [असाहूसाहूसन्ना) असाधूको सा धूकहै ७ [साहूअसाहूसन्ना] साधको असाधकहै ८) अमुत्तेमुत्तसन्ना] अमोक्षकुं मोक्ष कहे ९ [मु त्तेअमुत्तसन्ना) मोक्षकोअमोक्ष कहे १० ॥ अभिग्रही क मिथ्यात ॥ जो पकडी सोपकडी ११ (अणभिग्र हीक) जैनभी अछा शिवभी अछा १२ [संसईक] मनमे संदेह रहे १३ (अनाभ्योगी) अनादि कालकी १४

(अग्निनिसेवक) एक वचननों उथापक जमालीवत्त १५ (लौकिक) हरिहर ब्रम्हादिकको मानें १४ (लोकोत्तर) गुण रहित को गुण सहित मानणा १६ (कुप्रावचन) जोगी जंगमादिक १८ (उणाइरित्ते ऊणा परुपणा १९ ॥ अइरित्ते ॥ अधिकपरुपणा २० ॥ वइरित्ते ॥ विपरीत परुपणा ॥ अक्रिया ॥ दुष्टपणा माटे २२ ॥ अविनय ॥ सास्त्रकी अविनय २३ अन्नाण अज्ञान २४ आसातना गुरां की तथा वडांकी २५ ए २५ प्रकारकी मिथ्यात दुर कर सम्यक्त सुद्ध पाले तथा सम्यक्तके ९ भेद द्रव्य सम्यक्त १ भाव सम्यक्त २ व्यवहार सम्यक्त ३ निश्चैसम्यक्त ४ निसरग सम्यक्त ५ उपदेस सम्यक्त ६ रुचकसम्यक्त ७ कारक सम्यक्त ८ दीपक सम्यक्त ९ प्रश्न ॥ द्रव्य सम्यक्त किसकु कहिये उत्तर तीर्थंकरके बचन ऊपर प्रतीत रक्खे लेकिन परमार्थ न जाणे नव तत्व खट द्रव्य ४ निखेपा इनके भेदा न भेद न जाणे देव अरिहंत साधु मुनिराय धर्म केवली भाषित तिनकी सर्दहणा जिस्कूं होय तिकु द्रव्य सम्यक्त कहिये १ ॥ प्रश्न २ भावसम्यक्त किसकुं कहिये उत्तर तीर्थंकरके बचन ऊपर प्रतीत रक्खे देव गुरु धर्म इनकी सर्दहणा जिस्कूं होय नवतत्वकुं जाणे ते प्रथम तत्व जीव चेतनालक्षण अजीवजड वस्तु २ पुण्यशुभ कर्म ३ पाप अशु

मकर्म ४ आश्रवकर्माका आवन ५ संवर करमांकुं रोक
ना ६ निर्जरा पूर्व कर्म १२ प्रकारके तपसे दूर करना
७ बंध जीव अजीव संजोगसे कर्मका बांधना ८ मो
क्ष कर्मासे निवर्त्त होणा अर्थात कर्मांका छोडना ९
और जीव अजीव पुण्य एह तीन जानणे लायक है
और पाप आश्रव बंध एह ३ छोडने जोगहै और
संवर निर्जरा मोक्ष एह ३ आदरणे जोगहै षट द्र
व्यको जाणपणो करे रूपीको अरूपी बोलाको जान
पणो करे ते भाव सम्यक्त कहिये २ ॥ प्रश्न ३ व्यव
हार सम्यक्त किसकुं कहिये उत्तर लक्षणे करी जा
णे इसजीवकुं व्यवहार समकितछे तथा ६७ बोला
माहिंसे ६१ बोलके गुण करी सहित उपसम सम्य
क्त क्षयोपसमसम्यक्त जिस जीवकुं होय तिसकुं
व्यवहार समकित कहिये ३ ॥ प्रश्न ४ निश्चै सम्यक्त
किसकुं कहिये उत्तर वेदक सम्यक्त क्षायक सम्यक्तो
जे जीव होय समकत आयापीछे जाय नहीं तथा
ज्ञानादिकने प्रणाम शुद्ध होय तिस्कुं निश्चै सम्यक्त
कहिये ४ ॥ प्रश्न ५ निसरगसम्यक्त किसकुं कहिये उत्तर
नीसरग समकतते पोताना क्षयउपसमे आपणी बुधे
करी सर्व वस्तुनो प्रमाण करे साचो करी सरदेह जा
तीसमर्ण ज्ञानकरीजाणे तेहने निसरग सम्यक्त कहि
ये ५ ॥ प्रश्न ६ उपदेस सम्यक्त किस्कुं कहिये उत्तर न
वतत्वनो स्वरूप देव अरिहंत गुरू निर्ग्रंथ

ली भाषित ए ६ तत्वना स्वरूप द्रव्यनो स्वरुप इ
त्यादिक आगमनो स्वरूप गुरू उपदेसथी जाणे ति
स्कुं उपदेस सम्यक्त कहिये ६ ॥ प्रश्न रुचक सम्यक्त कि
स्को कहिये उत्तर श्री वीत्तराग देवनी आज्ञानें रुची स
हित तहत करी सरदहै लौकीक धर्म जाणें लोकोत्तर
धर्मजाणें सिद्धनो स्वरूप जाणे एतले श्री वीतरागकी
बांणीसुं सरव वस्तुनो स्वरूप जाणे वीतरागनी आ
ज्ञामे रुची घणी ऊपजे पिण उदे भावकरी संसारकी
अवस्थामे सुं निकल सके नही तिस वास्ते अनेक
प्रकारे भाव शुद्ध आणे बिषे कषायना फल बिषमा
न जाणे धर्म साधवानी रुची घणी करे पिण उपाय
थकी छूटसके नही ते जीव चोथे गुन ठाणेछे ते रुच
क सम्यक्ती जाणीये ७ ॥ प्रश्न ८ कारक समकत कि
सकुं कहिये उत्तर जो पहिले रुचक समकितमे भाव
कह्या ते सर्व जाणकर आदरे संसारका सर्व काम
छांडीनें छठे सातमे गुणठाणेमे प्रवरते तिसको कार
क सम्यक्त कहिए ८ ॥ प्रश्न ९ दीपक सम्यक्त किस
को कहिये दीपक कहतां दीवासे आगे उद्योत होई
पाछे देखतां दीवाने अंधारो रहै एह दृष्टांत मिथ्या
ती अथवा अभवी ओराने उपदेस देईकरत्यारे पि
ण आपतीरे नही तिसकुं दीपक सम्यक्त कहिये ९
सम्यक्ती जीवांको दस प्रकारकी रूचीया करणी जो
ग्यहै ते लिखीयेछे ॥ नीसग्गरूची १ उपदेसरूची २

अज्ञारुची ३ सूत्ररुची ४ श्रद्धारुची ५ संक्षेपरुची ६
अभीगमरुची ७ विस्ताररुची ८ क्रीयारुची ९ धर्म
रुची १० ए दस रुचीका जिस जीवको ज्ञान होवे ति
सजीवको क्षायक समकती कहिजे॥ नीसरगरुची क
हता आश्रवरुपकामावरजे संवर निर्जरारुप कामासे
प्रवरते जातीस्मरण ज्ञानादिकसु जाणे तिसकुं निस
रगरुची कहिये २ उपदेसरुची कहतां गुरूना उपदे
सथी जाणीनेसरदहै परतीतराखे ते उपदेशरुची क
हिये २ अज्ञारुची किसकुं कहिये जे प्राणी रागद्वेप
मोह खयगया अज्ञान मिट गयाछे ऐसे अरिहंत देव
की अज्ञा परिमाणकरे ते अज्ञारुची कहिये ३ सूत्र
रुची किणनें कहीये केवली भापित सूत्र १० पूर्व त
था ११ पूर्व तथा १२ पूर्व तथा १३ पूर्व तथा १४
पूर्व धारीके कहे सूत्र तिणां ऊपर रुची होवे सूणवा
नो पढवानो उद्यम करे तिसको सूत्ररुची कहिये ४
श्रद्धारुची किसकुं कहिये बीतरागदेवके बचन ऊपरें
आस्ता राखे मिथ्यात्वने वोसरावे तिसको श्रद्धारुची
कहिये ५ अभिगमरुची किसको कहिये सिद्धांत अर्थ
सहित जाणे सुणवानी भणवानी चाहघणी राखे सि
द्धांत पढवानो उद्यम करे तिणने अभिगम रुची क
हिये ६ बिस्तार रुची किणनें कहिये द्रव्यना सगला
भाव सर्व प्रमाणें करी सर्व नये विधीनो जांण नवत
त्वनो जाण होय तेहने विस्ताररुची कहिये ७ क्रि

र्थी गुरु तथा परतीर्थीना शास्त्र धर्म ए ३ पदारथ छह बोल नकरवा ते केहा ॥ वंदणा हाथ जोडवा मस्तक नमाववो ए न करवा १ नमंसण वचने करी नमस्कारनो करवो गुणग्रामनो करवो तथा मननुहुरपं करवो ए न करवा २ दान देवो गउरव अर्थात अभिमान पिण न करवो धर्म बुधि ३ अनुप्रदान घणे आदरे आवकार सहित वस्त्र पात्रादि दान देवो नही ४ विना बोलावे एकवार मीठे वचने कुशल पूछवो सुखे आव्याते आलाप न करिवो ५ संलापते घणोवणो पूछे सुखीछो किहाथी आव्या किहां जास्योते न करवो ए ६ जयणा ४९ छह समकितना आगार छह आगारे करी समकित पालवो पिण छींडी टालवानो खपकरवो ते कांई बारवार सेविवा नहीं राजानाआगार राजादिक कहे १ गणसमुदायना आगार सज्जन कबीलो कहे २ बलवंतना आगार बलातकारे कोई हठ पडे ३ देवताना आगार देवता आवी कहे आहार पाणी देवे वांदना करे तो समकित भांगे नही ४ मातापिताना आगार मातपिता हठ करे मातपिताने कहे भक्ति करै ३ दुर्भिक्षने विषे अने अटवी उजाडमे भूले पडा होय तेहना आगार अर्थात दुर्भिक्ष अथवा अटवीमे भूला प्राणी मिथ्या मती तथा मिथ्यामतीना गुरु तेहने अनुकंपा हेत दान देवा ते आगार ६ ए ६ आगार ५५ छे समकितनी भावना

एणे करी भाविवो समकित केहवाछे मूल उतावली मोक्ष फल प्रते देइ तेणेकरी सगला धर्मनो मूल जे णे मूलेकरी धर्मरुपीयो वृक्ष वढे मोक्ष फल प्रति देइ ते णे मूल भूत १ बारणा ॥ जिन धर्म रूपीया नगरमां पे सवाने बारणारुप समकितछे जिम नगरमे बारणेज पैसाइ तिम २ नीव ॥ धर्मरुपीया महिल तेहना नीचे नीव समानछे जिम व्रत रूपीयो महिल रहे जो सम कित रुपीयो नीव होइ तेणे नीव भूत कहिये ३ नी धान भूत ॥ मूल गुण उत्तर गुण रूपीया रत्न तथा ज्ञा न दरसन चारित्र रुपरत्न तेहना नीधान समान स मकितछे ४ आधार भूत ॥ जिम सर्व जीव संसारना पृथ्वी ऊपरे रहेछे तिम चारित्र रूपीया जीवलोकनो आधार ते समकितछे ५ भाजन भूत ॥ ते श्रुतशील रूपीयोरस समकित रूपीये भांजने भराइ तेणे भां जन भूत दुध शंखनां ऊपमा जिम दूध संख माहे वि राजे तिम खिना धर्म दया रूपीयो विनय धर्म सम कितना कोठा मांहिं विराजे अविनासी भाजन कह्यो विपयकरीने दुधने विनसाडे नही खाटो करे नही ए ६ भावना ६१ समकितना ६ स्थानक तेणे करी आ त्मा ओलख्यो जाइ ते किहां अनुभव सिद्धआत्मा चे तना लक्षण असंख्यात प्रदेशी सदीव सास्वतो द्र व्यछे अवरणी अगंधी अरूपी अफरसी ज्ञानवंतनें प्रत्यक्ष छे सिद्ध सरीखोछे १ द्रव्यार्थीक नयने मते शा

स्वतो परज्यायक नयनें मते अशास्वतो अनीत्य करमे कीधोने अनुसारे नित्यछे २ पुन्य पापनो कर्ता कर्मनोछे मिथ्यात अविरत योग कषाय एणिकरीबांधिछे जिम माटी मंड चक्र दोरो तेणे करी कुंभार सर्व करि तिम ४ कारणे जीव करमकर ३ भुंजइ भोगवे पोताना कीधा पिण परकाकार्धां नो कोई भोगवनार नथी निश्चेज ४ निर्वाण मोक्षपद शाश्वतो छे जेहनी ऊपमा सुखनी न कहिवाइ राग द्वेप रहित पुरपे कह्यो अनंत ज्ञानीये कह्योते सत्य ५ मोक्षनो उपाय समकित ज्ञान दर्सन चारित्र तप पोतानी समकिते आराधवो ते उपाय ६ ए ६ सम्यक्तस्थानक ६७ एह सम्यक्तके ६७ बोल कह्या ॥ और समकितके आठ गुण कहेंछे निसंका १ जिन आगममे सुक्ष्म अर्थ कह्याते साचा सर्द्दहै पिण संदेह नाणे अने सात भय पिण न आणे ॥ १ ॥ बीजी निकंख्या गुणजे पुन्यरुप फलनी चाह नराखणी जिहां इछा तिहा कर्मनो बंधछे २ तीजो निविगंछागुण जे सुग न करवी शुभअशुभ पुदगलांनो स्वभावछे अने पुन्य उदे शुभ संजोग मिल्या खुशी होवे अहंकार करणो नहीं पापने उदये अशुभ संयोग मिल्या दिलगिर होवे नहीं ३ चोथे अमूढद्रिष्टि गुणजे आगममे सुक्ष्म विचार निगोदना छ द्रव्यना तेसुं मुझवे नही जे धारणी आवे ते धारे जे धारणी नावे ते सरदहे ४ पाचमो

अवगुह गुणजे एणे आपणें जीवमे अनंत ज्ञानादि गुणछे ते छिपावणो नही शुद्ध सत्ता जेहवीछे तेह वी कहवी रागद्वेष अज्ञान कर्मनी उपाधीछे जीव एणे उपाधीस्सु न्यारोछे ५ छटो थिरी करण गुणजे आप णो परिणाम ग्यान ध्यानमे थिर करणो डिगावणो नही ६ सातमो वछलता गुण जे जीवरसुं ग्यानध्या न तप पडिक्कमण भेलोकीजोये सर्दहणा एक होवे तो ते आपणा साधर्मीछे तेहनी भक्तिकीजे ते वछ लता कहीजें अथवा सर्व जीव आपणा सारीखाछे तिणे सर्व जीवानी दया कीजे ते वछलता गुण जाण वो अथवा एणे आपणा जीवना साथी ज्ञानादिक गुणछे तेहने पोखवा जे ज्ञानादिध्याननो अभ्या स करिवो ते वछलता गुण जाणवो ७ आठमो प्र भावक गुण जे भगवंतना धर्मनी प्रभावना महिमा करवी अथवा आपणो जीव ग्यानादिक गुण वधारण ओराने धर्म उपदेशकी वडाई करे ए प्रभा वना गुण ८ ए सम्यक्तना ८ गुण कह्या ॥ समकित शुद्ध करीने चारित्र आराधे तेहना २ भेद तिहा निश्चै चारित्र १ विवहार चारित्र २ इहा प्रथ म विवहार चारित्र कहेछे प्राणातिपात विरमण प्रमु ख ५ महाव्रतरुप जे पंचाश्रवनो त्याग ते सर्व विर ति कहिजे अने श्रावकना १२ व्रत थूल प्राणातिपा ति वेरमण ते देसाविरति कहिजे ए २ भेद चारित्र

त विवहार चारित्र ते विवहार चारित्र सुखनो कारणछे
हवी करणीरुप साधूना ५ महाव्रत अनेश्रावकना १२
तना विवहार कर्तव्य अनव्यने पिणआवे तेदेवगति
ामे पिण सकाम निर्जरानो कारण नही सम्यक्त रहि
त करणी विवहार रुपछे मोक्षनो कारण नही इहां
ुछस्ये जे मोक्षनो कार्ण नहीतो एतलो कष्ट क्याने कीजे
ो उत्तर ए तो सत्य परंत जिनराजनो मारग निश्च १
विवहार २ ए दोइ नयरोछे जे कोई एक माने तेहने मि
थ्यात्वी जाणवो जे त्याग बुधे निश्चे ध्यान सहित
मोक्षनो कारणछे तिणने निश्चे ध्यान सहित चारि
त्र विवहार चारित्र पालणो मोक्ष मार्ग निश्चे विवहार
स्याद्वाद नय करी साधकछे परंत एकांत वादी साध
क नही ते नणी एकांत विवहारथी मोक्ष नही अने ए
कांत निश्चे चारित्रथी पिण मोक्ष नही ते नणी दो
नो ही चारित्रसु मोक्षछे जिम अंधपुरपनें कंध उपरी
पंगु नर चढे तो दोनो मिल मार्ग उलघे तिम नि
श्चै विवहार दोनो मिल्या संसार उलंघे ते नणी
निश्चे व्यवहार दोनोही आराधवा जोग्यछे ॥ हिवे
शब्द नय ऊपर च्यार निखेपाकी चर्चा लिखीयेछे ॥
जे वस्तु गुणवंत अथवा निगुण तेहना नाम कहि
बोलावबो ते नापा वरगणाथी शब्द कह्यो ते शब्द
व्याकरणसे प्रकृति प्रतएधार करी शब्द सिद्ध होय सो
शब्द नय कहिए तिहां शब्दनो जे अर्थ ते माहि होय ते

शद्ब नय कहिजे जैसें अरिहंत कह बोलाव्या ते श
ब्दना अर्थ करया अरि कहिए कर्मरूप शत्रु हंत क
हतां हएया ते अरिहंत कहिए अने नामादि अ
रहंत होय ते मांहिं शद्वारथ न होय तेहने अरिहं
त नमानें ते शब्द नय इम तीर्थ ४ करे सो तीर्थंक
र इम शद्व सिद्ध होय ते शद्व ते शब्द ४ नाम
१ थापना २ द्रव ३ भाव ४ ए निखेपा कह्या ते
विस्तारसुं कहेछे हिवे प्रथम नाम निखेपा कहे जे
आकारछे हित गुण रहित वस्तु होय तेहना नाम
गुण सहित सरीखो वस्तुना दीधा ते नाम निखेपा
कह्या जिम लकडीना नाम जीव दीधा तथा काली
डोरीना नाम साप दीधा ते नाम निखेपा तथा जिम को
ई गोपालदारकना नाम इंद्र दीधो पिण नामना गुण
सुधरमी सभाकेविषे बरतेछे ३२ लाख विमाननी इ
श्वर्यता करि संजुक्तहै तेह इंद्रमे बे पिण दारीद्री
भ्रामणीना बालकमे नही ते माटे अर्थ सुन्यछे तथा
ते इंद्रना बीजा परजाय नाम मघवा १ पाक सास
न २ शक्र ३ सहस्राक्षी ४ इत्यादि नाम ते गोपा
लदारकने विषें नही एतला नाम नो भाव इंद्रमे
संभवे पिण निर्गुण नामने विषें न होय पिण गर्व
गहेली माताइं मोहांधथई व्याकुल चित्तथी आपणा
मननी अभिप्राये नाम इंद्र दीधो ते नामनो जे स
द्भारथ ते ईश्वर्यता ते मांहिं नथी ते भणी सद्द

नय पोखतां तेहने इंद्र नमानें इति नाम निखेपा १ बीजाथापना निखेपा तेहना अर्थ कहैछे भावरहित होय गुणरहित होय पिण भावपणाना अभिप्राय कल पीने थाप्या होए ते थापना निखेपा कहिये एतलै काष्ट पाषाणनी मूरत अथवा चित्राम करी हाथी घोडाना आ कार कीधा होय तेहने थापना निखेपा पिण ते थापना ना गुणतिनमांहि नथी ते किम काष्ट पाषाण चित्रा मनी गाय दुग्ध दान गुण नही इत्यादिकहेतुकरि सरदहीजे थापना निखेपामे भावार्थ कहता जे वस्तु नी थापनाछे तेहना अर्थतिण मांहिं नथी प्रयोजन नसरे ते भणी सब्द नय थापना ने थापना माने पिण गु ण न कहै जिम इंद्रनी मूरति बनावी मस्तके मुकट और कंठे हार काने कुंडल वज्रायुध सुंदर वस्त्र विभूपित करी इंद्र थाप्या तेहने ८४ हजार सामानीक देवता सेवा करता नही देवीनी भोग संबंधी इछा पूराय न ही ते भणी गुणविना थापनाना मोह दसाना बि कलपछे ते शब्द नयकी अपेक्षाइं ते थापना भाव सून्यछे ते थापना निखेपा कहिये हिवे थापना अने नाम निखेपा माहिं भेद किसा ते एह भाव सुन्यतो दोनोही निखेपाहै इसा प्रश्नकीधा तव गुरु कहै अ होभव निखेपा दोना माहिं अरथ भेद नथी पिण कालथी भेदछे नाम निखेपा जावजीव तांई रहै बी चमे मिटै नही अने बीचमे मिटैछे जिम किणी बा

लक लाकडीका घोडा थापी तिण ऊपर चढी कित
नीक देर रामत कीधी पाछे तेहज बैल थापी रामत
कीधी पाछे गाडीरथ इत्यादि जीवथी अजीव थापी
अजीवथी जीव थापी रामत कीधी इमहिज पिण को
ईक कुमारी कन्याने गुड्डी थापी ते गुड्डी सासू थापी
पाछे तेहिज बहु कीधी तेहज गुड्डी दोहती तेहिज
गुड्डी सखी पणें थापी इम नवी नवी थापना करीएछे इ
म नवी नवी थापना एम नर मामी पिणथापना नि
खेपानो परमारथ नाम निखेपाने विषे नथाए नाम
घडी घडी नवा न कलपिजे जिम इंद्रना नाम पलटया
न जाए थापना इंद्रनी फेरी औरनी कल्पना करजछे
नाम निखेपा सदा रहे थापना थोडा काल पिण र
है घणा काल पिण रहै इति थापना २ हिवे द्रव
निखेपा कहैछे अतीत अनागत काले ते प्रजाएना
कारणछे ते द्रव निखेपा कहावे अत्र दृष्टांत कहेछे जि
म घृतादिना घडाछे वरतमानकालै ते घडा माहिं
घृत नथी परं पूर्वे घी घाल्या होता तिण माटे घृ
तना घडा कहिजे ए अतीत प्रजायें द्रव निखेपा
कह्या हिवे अणागत प्रजाय द्रव निखेपा कहैछे
जिम कुंभकारे घी घालवाना भाजन घडा तेहनें घी
ठोडी कही बोलावेछे तिण मांहे पहिलां अतीत का
ले घी नथी घाल्या बरतमान काले ते माहिं घृत
नथी जे आगमीये कालें घी घालवाना कारणछे ति

ण भणी घीलोडी कहियेछे एअनागत प्रजाए द्रव नि
खेपा कहिजे दूजा दृष्टांत जिम कोई राजाना प्रधा
नछे पाछे राजाना मन भंगथया तेहनी प्रधान मुंद
री उतारि लीधी तिवारें लोक सहु प्रधान कहै एह
वरतमान कालें प्रधानपणा तिण मांहिं नथी परंत
अतीत प्रजाय भणी प्रधान कहिजे ए अतीत प्रजा
ए द्रव निखेपा कह्या अने प्रधानना पुत्र कला सा
म दंड भेद करी निपुणछे वरतमानकालें प्रधान मु
द्रका तेहने नथी परंत आगमीयें कालें प्रधान पद
थापवाना कारणछे तेहने लोक पिण प्रधान कहेछे ते
अनागत कारण द्रव निखेपा कहावे ॥ तीजा दृष्टांत
जिम अष्टोत्तर सहस लक्षण करी देह विराजे ३
ज्ञान मत १ श्रुत २ अवधि ३ एतीन ज्ञान सहित ती
र्थंकर गृहवासें वसतां ४ अतिसे करी संजुक्त तेहने
तीर्थंकर कहिये तीर्थंकरथाना कारण आगमी काल
होसी परंतु तेहने अणागत प्रजाए द्रव तीर्थंकर
कहिये जिम सूत्रना पाठ कह्या [तएणंसे समणेभग
वं महावीरे तीसं वासायं आगारमज्झे वसित्ता] ए
एवा आचारांग तथा कल्पसूत्र पाठ कह्याछे जे
अतीत प्रजाय कार्ण दरव तीर्थंकर कहिये तथा ती
र्थंकर निर्वाण गया पाछे तीर्थंकरना सरीर रह्या ते
ह ते अतीत प्रजाय कार्ण द्रव तीर्थंकर कहिये ए अ
तीत प्रजाये द्रव निखेपा कहिये जिम (समणे

नगवं महावीरे कालगए जाणित्ता) इत्यादि पाठ नी निश्राय अतीत द्रव निखेपा कहिये अणुयोग द्वारे जाणग सरीर १ नविए सरीर २ जाणग सरीर नवियसरीर वइरित्त तत्र निखेपा द्रवना नेद कह्या इतिद्रव निखेपा ३ हिवै नाव निखेपा कहैछे जे वरतमान काल गुणवतछे जे वस्तुना नावगुण जेहवाछे तेहवा वरतेछे ते नाव निखेपा जिम अरिहंत शद्बनो अर्थ जे ते वस्तु मांहिं परगट दीसे छे ४ घातियाकर्म खय करी अरिहंत पद थया ते नाव अरिहंत जाणवा दूजा दृष्टांत जिम पूर्व पुन्योदय करि उत्पात सनानें विषे उपजीने सुधर्मा सनाइं ईश्वर्यता गुण सहित बैठाछे ३२ लाख विमाणवासी देव आज्ञा मानेछे इंद्राणी हात जोमी ऊनीछे इत्यादि ठकुराई सहित वरतेछे ते नावनिखेपा इंद्रमे कहिये इतिनाव निखेपा ४ ए ४ निखेपा अणुयोगद्वार सूत्रमे कह्या ते शब्द नय अनुसारे जे जेहवाछे ते तेहवामाने जिम नाम अरिहंत आकार नही गुण नही ते नाम मांहिं शब्दना अर्थ न संनवे ते नणी शब्दार्थ न थाय जिम किसी पुरुषनो नाम अमरछे पिण ते मरस्ये ते नणी नामके गुण रहित १ जिम किसीका नाम धनपालछे पिण ते दोहिला पेट पालेछे धनने पाले नथी तेनणी नामना गुण रहित ते नणी शब्द नयनमाने तथा नाम मंगलछे पिण महा उदंगलछे त

था नाम धरमचंद पिण अधर्मनों चांदछे तथा नाम लक्ष्मीछे पिण परघर घरटी पीसेछे इण दृष्टातें करी शब्द नयनी अपेक्षाये जे शब्द गुण रहित होय ते नमाने इमाहिज पिण थापना जाणवी गुण रहित जे वस्तुछे गुण विना निवल कल्पना रुपछे पिण गरज न सरे जिम थापना गायमे दूधना गुण नथी थापना स्त्रीसें भोग कर्म नथी थापना अरिहंतमा ग्यान गुण नथी इण दृष्टाते शब्द नय गुण रहित थापनाने नमाने इमहीज पिण द्रव निखेपा जाणवा अतीत अणागत गुण कारण ते द्रव निखेपाछ अतीत कालें गुण हुंतो अथवा आगमीये काले गुण थासी पिण हिवणा गुण नथी अर्थात वरतमान कालमे गुण नथी ते दृष्टांत करी देखाडेछे किसी बालकनी माता मृत थईने कलेवरपड्योछे ते बालकनें दुध धवरावा गुण नथी तथा कोई पुरषने रुपवान राजानी पुत्री दीठी ते पुरुपने किसी ज्ञानीने कह्या ए स्त्री तुम्हारे पत्नीं पणे थासी इम सांभली परम हरष पाया जाण्या ए स्त्री आगमीए कालें म्हारी होस्ये तो पिण आलिंगण दे सके नही अणागत प्रजाए वरतमान कालगुण दे सको नही इमहीज पिण अतीत काले पूर्व भव म्हारी स्त्री होती इम निश्चै ग्यानथी वचनथी जाणी पिण आलिंगणदेवाय नही इम अतीत प्रजाए वरतमान कालें गुणवंत नथी तिण वा

स्ते द्रव निखेपाने शब्द नय नमाने भाव निखेपा जो वस्तुना नामादिक करी निखेपतां तिण वस्तुना सहत गुणना अर्थ तिण सद्द मांहिथी नीकले ते भाव निखेपा जाणवा जिम अरिहणवे ते अरिहंत अने तीर्थंकरता तेतीर्थ४कर इत्यादि अनेक हेतु जाणवा शब्दनां जे अरथ सहत वस्तु थाय तिणे भाव निखेपा कहिये ते गुणने वस्तु माने ते शब्द नए मित्यर्थ हिवे कोईएक पाचमा काल्क प्रभावसे इण ४ निखेपाकी वाख्या विप्रीतपणे करेछे ते इम कहे छे निखेपा च्यारो वंदनीकछे आपणा भाव भेलता नामादि निखेपाभे भाव निखेपा थाय ते भणी वंदनीकछे ते विरुधछे सूत्र देखतातो भावनिखेपा वंदनीकछे अने ३ निखेपा भेद प्रकास रुपछे अत्र हेतु कहैछे भगवान ग्रहवासे वसता भविए सरीर द्रव तीर्थंकरछे तिण मांहे द्रव निखेपाछे अने साधू श्रावक वांदना न जाएया ते ऊपर मत पक्षी कहेछ चतुर संघाभजी थापना नकीधी ते माटे मिले नही अने वांदे पिण नही इम कहे तेहने दूजा प्रमाण बतावेछे तीर्थंकर मोक्ष गया सरीर रह्या महुरत प्रमाण ते सरीरमाही (जाणग सरीर)द्रव निखेपाछे ते सरीरने पासे गणधर साधू छता होता ते सरीर भणी वदनी न करे ते क्यूं न करे द्रव निखेपा वंदनीक होय तो गणधर साधूवाने अवस्य वांदवा जोइजे अने गणधर साधू वांदना न

जाणया ते द्रव निखेपामे भाव भेलीने वंदना न की
धी ए अनुमान प्रमाणथी जाणीयेछे तो भाव निखेपा
वंदनीकछे अने जाणनभाविये सरीर द्रव निखेपामे
भाव भिल्या नही तो थापनामे भाव भेलीने बंदणा
किम होसी ते अनुमान प्रमाणथी ओलखणा करवा
जोगछे जो आपणा भाव भेली थापनामे भाव नि
खेपा थाय तो द्रव निखेपामे भाव भिले स्यूं नथी इ
न प्रमाणे आगम प्रमाण देखतां तो भाव निखेपा
बांदणीकछे इति ४ निखेपाकी चर्चा संपूर्णम्॥ अथ
आज्ञा अणाज्ञा सावद्य निरवद्य इत्यादि बोलांनी च
र्चा लिख्यते॥ ते पिण नय प्रमाणे प्रमाण करि देखि
ये श्री जिन धर्म आज्ञामेछे आज्ञा बाहिर नथी इम
सर्व कहैछे पिण एहना बिचार आलोचवा अर्थात
बिचारवा अति कठिनछे ते कहेछे जिनराजनी आ
ज्ञा दोय भेदनीछे एक उपदेस १ बीजी आदेस २
हिवे ए दोइ आराधना जिणराजनी आज्ञा ओलंघा
ए नही इहां चोभंगी थायछे ते कहैछे प्रथम भागा
उपदेसवी देवे अने आदेसवी देवे १ ते पहिला भागा
ते माहिं सिझाए ध्यान पोसह व्रतादि जाणीये १
अने दूजा भागा उपदेस तो देए पिण आदेस न
देय ते इस भागा माहिं जिम श्रावकने उपदेस दीजे
छे साधूने आवताने लेणजाय रह्याने सेवा करे जा
ताने पहुंचावण जाय तथा साधू आवे तो ऊभा था

यवो इत्यादि उपदेस देवेछे पिण श्रावक पूछे साधू ने पहोचावण जावांगां इम पूछ्या साधू आदेस न देइ अहो श्रावक जाओ इसो न कहणा ते बीजा भां गामे जाणवा २ तीजा भागा उपदेस दे नही आदे स देवे ते मांहिं नदी उतरवानी तथा मेघ वरसते वाह्य भोम जावानी मेघ वरसते लघुनीत प्रमुख पर ठवानी आज्ञादे पिण उपदेस न देवे अहो शिष्य न दी उतरवा मेघ वरसते वाह्य भोम जावामे वडा लाभ छे अवस्य जाएवा जोगछे इम उपदेस तो न देवे पिण कारज पड्या आदेस आज्ञा देइ एतीजा भागा जा णवा ३ चोथा भागामे आदेस न देवे ते हिंस्यादि का रज ४ तथा चोथा भागाना दोय भेदछे एक तो उ पदेस न देवे आदेस न देवे निषेध करे अर्थात मने करे ते १८ पाप जाणवा १ अने बीजाभेद उपदेश न दे पूछ्या निषेधे पिण नही ते विन पूछे निषेधे न ही दुपित भूपतके दानादिकको जिस मांहिं पुंन्य पा प भेलाछे ते कार्यनी उपदेस आदेस आज्ञा पिण नही निषेधपण नही अर्थात मने करे नही तेहनी साख सूय गडांग सूत्र अध्ययन ११ मे की (जे ये दान पसं संति वहामिछंतिपाणीणो जेदाणंपडिसेहंति वितिछेयंक रंतिते ॥ दुहउवितेण भासंति अत्थिवा नात्थिवापुणो आ यंरयस्सहच्चाण निवाणंपाउणंत्तिते २) जे मिथ्यात म ते दानादि प्रसंसता प्राणि वध वांछे और दानादि

निषेध करतां घणानी वृत्ती आजीवकाना छेद करे अर्थात भंग करे इण गाथाको देखतां मिथ्याती दानादिक निषेधे नही क्योंकि साकला पुन्य पाप भेलाछे किणी ठामे पुन्य घणो पाप थोडो केणे ठामे पाप घणो पुन्य थोडो इतिज्ञेयम हिवै ७ नय दृष्टांत करी उतारेछे अनुयोगद्वार सूत्रमे कह्या वासा रहिवा ऊपर नय ७ दिखाडछे जिम किसी पुरषने पूछ्या तुं किहा वसेछे तवते बोल्या लोकमा वसूंहू ए वचन नएगम नयरोछे परंतु नयगम नय अशुद्धछे जिसने लोकमा वसता कह्या ए अशुद्ध नयगम जाणवी वली तेहनेहीज पूछ्या लोकतो ३ है स्वर्ग १ मृत २ पाताल ३ तुं किसा लोकमे बसैछे तिवारे थोडीसी शुद्ध नयगम वाला कहैछे हुं मृत लोकमा वसूंहू ए शुद्ध नयगम वली पूछ्या तिरछा लोकमा असंख्याता द्वीप समुद्रछे तुं किसी समुद्रमा बसेछे तिवार बोल्या हूं जंबुद्वीपमा वसुंहू ए और शुद्ध नयगम नयरो वचनछे वली पूछ्या जंबूद्वीपमां भरत प्रमुख क्षेत्र घणाछें किसा क्षेत्रमा तुं बसैछे तिवारे बोल्यो मगध देसादि देसमा बसांगां ए और शुद्ध नयगम नयरो वचनछे वली पूछ्या मगधदेसमा नगर ग्राम घणाछे तुं किसे नगर तथा गाममे बसैछे तिवारे बोल्या नालंदा प्रमुख पाडानो नाम लेई कह्यो असके पाडे वसंहुं ए और शुद्ध नएगम नयरो व

घनछे वली पाडामे घर घणाछे तु किसा घर मारहै छे तिवारे बोल्या अमुके घरमा मधशाला प्रमुख ना नामलीधा ए और शुद्ध नइगम नयरो वचनछे वली पूछ्या घरमा जायगा घणीछे तु किसी जायगामे बसे छे तिवारे बोल्यो अमुकी जायगामे बसुंहूं जिसजाय गा ढोलीया प्रमुख जिस जायगानो नाम लीधो ए वचन अत्यंत शुद्ध नैगम नयरो वचनछे इहा लगे नैगम नयरा वचनछे शुद्ध अशुद्ध विकल्प जाणवा इति नैमग १ वली पूछ्या घरमा जायगा घणीछे तुं किसी जायगामे रहेछे तिवारे बोल्या जिसजायगा ढो लीया प्रमुख बिछावणा रहैछे इतरी जायगामे रहुंछुं ए सं ग्रह नयरो वचन जाणवा जे भणी ढोलीया तथा विछा वणा तथा सरीरने जायगारुंधीछे ते सर्व आपणामे संग्रह्या ते भणी संग्रह नयरो बचनछे २ वली पुछ्या ढोलीया परमुख विछावणामे खेत्र घणाछे तु किसा खेत्रमारहैछे तिवारे बोल्या सरीर अवगाहणा प्रमाण खेत्रमा रहांछा ए विवहार नयरो वचनछे जेणे ढो लीया प्रमुखनी जायगा टालदीधी जीवनो व्यापार वरते हालण चालणरो तेतली जायगालीधी इति विवहार नय ३ वली पूछ्या असंख्यात प्रदेसमा स रीर अवगाहणा प्रमाण खेत्रमे धर्मास्ति १ अधर्मा स्ति २ पुदगल प्रमुखनी पिण अवगाहनाछे तु कि सी अवगाहणामे वसेछे तिवारे बोल्या चेतन गुण

मे वसांछा जे चेतनाछे ते मांहिरे गुणछे अने धर्म १
अधर्म २ चेतन स्वभावछे ते मांहिं माहिरा गुण नथी इ
ए न्याये चेतन गुणम बसूंछू एऋजु सूत्र नयरो बचन
छे वली पूछ्या चेतन गुणनी प्रजाय अणंतीछे तु कि
सी ग्यान चेतना अज्ञान चेतना इत्यादि चेतनाछे
तु किसी चेतनामे बसेछ तिवारे बोल्या ग्यान चेत
नामे वसांछा इहां अज्ञान मिथ्या दृष्टी प्रमुख अशु
द्ध चेतना टाली ए शब्दनयरो वचनछे ५ वली पूछ्या
ग्यान चेतन गुणनी प्रजाय अणंतीछे तु किसी ग्यान
चेतन गुणमा बसेछे मत्यादि ग्यानना भेद घणाछे
तु किसी चेतना गुणमा बसेछे तिवारे बोल्या आत्म
स्वरुपमा बसूंछू आत्मानुभव ग्यान चेतना गुणमे
बसूंछू इहा व्यवहार ज्ञान टाल्या निमा ग्यान चेत
न गुणमे बतायो ए समभिरुढ नयना वचनछे ६ व
ली पूछ्या आत्मानुभव चेतन गुणमे तो हानि वृद्धि
घणीछे भाव अपेक्षा घणा स्थानकछे तुं कोणसे ठि
काणे बसेछे तिवारे बोल्या जे हुं शुद्ध क्षायक भाव
अवस्था निजरुप सच्चिदानंद शुक्ल ध्यान रूपाती
त एहवा जे सिद्ध रूप अवस्थाने ठिकाणे वसुंछू एह
एवंभूत नयरो वचनछे एवं बासा ऊपर ७ नए कही
हिवे जीव ऊपर ७ नय उतारेछे नएगम नय निम
ते प्रजाए प्राण सहित सरीरने जीव कहे ते सरीरमाहिं
धर्मास्तिका ए देस प्रदेस एवं अधर्मास्तिकाए देस १ प्र

देस २ आकाशास्तिकाय देस १ प्रदेस २ तथा पुद्गल प्रमुख अजीवना भेद सरीरावगाहणाछे ते जीव मां गिण्या १ अथ संग्रह नय निमिते असंख्यात प्रदेसावगाहणाने जीव कहे इहां आकासटाल्या धर्म अधर्म तथा तेहज सरीर सबंधी पुद्गल जीवमा गिण्या, २ तिवारे बिवहार नय वालो कहे वासना विषयादिकनी लेवेछे ते जीवछे, एणे इंद्री जीवमा गिणी अने मोठा पुद्गल टाल दीधा द्रव लेस्या द्रव जोग मन प्रमुख जीवमा गिण लीधा कारणे इंद्री लेस्या जीवथी न्याराछे पिण जीवना व्यवहारछे इंद्री लेस्या जोगना व्यवहार देखी जीव जाणीजेछे ते भणी विवहार नयने मते इन्द्री लेस्या जोग जीव में गिण्या ३ तिवारे ऋजुसूत्र नयनेमते उपियोगने जीव कहे इण नय निमते लेस्या इंद्री वासना प्रमुख सर्व पुद्गल टाल दीधा परंतु शुद्ध तथा अशुद्ध उपियोगने जीव कहे ग्यान तथा अज्ञान बेहुंने जीव कह्या जे कारणे अज्ञानमे मिथ्यात मोहनी कर्म नी वर्गणा भेली जीवमा गिण लीधी ते ऋजुसूत्र नयरो वचनछे ४ तिवारे शब्द नय वालो कहेछे जीव शब्दनो अर्थ मिले तेहने जीव कहे अर्थ (जीवं जीवित जिविस्सइ) पूर्वे जीवे अवजीवे आगे जीवसी एहवा अर्थ संभव तेहने जीव कहे इण द्रव्यात्माने जीव बतायो आत्माना जे गुण सदा जीवछे ते भणी

जीव केहेव इण तेजस कारमण तथा आउखा
मेना उपियोगसा पुद्गल तथा परगुण ते जीवन
अनादि संगी जीवमा गिण लीधा ए शुद्ध नयन
वचनवे ५ तिवारे समभिरूढ नय वाला कहेवे द्रव्य
रमाने परगुण पिणवे ते जीवमान गिणजे शुद्ध स
रूप सत्ता जेणे उलखी आत्माना स्वद्रव १ स्वखे
२ स्वकाल ३ स्वभाव ४ निजगुण रमणरुप सम
क दृष्ट अनुभव आस्वादित मोह ग्रह स्थलता रहि
होय तेहने जीव कहिये एणे क्षायक सम्यक्त प्रमु
ने जीव कह्या ए समभिरूढ नयना वचनवे ३ ति
वारे एवं भूत नय वालो कहे अणंत ज्ञान अनंत
सन सुद्ध रुप चेतन कर्म रहित तेहने जीव कहेएणे
नयने मते तो सिद्धने जीव माने निमा जीव सि
है एह एवं भूत नयरो वचनवे ए ७ नय जीव ऊपर
तारी हिवे ७ नय धर्म ऊपरि कहेवे नैगम नयने स
र्व धर्मने धर्म कहे ने कार्णे सर्व पाखंडी जनवे जे
ला धर्म चाहेवे एहनी बांवा धर्म करवानीवे एणे न्य
ये करी सर्व धर्मने कहे ते ठाणांगे १० मे ठाणे कह्य
(दसधम्मे पन्नते तंजहा गामधम्मे १ नगरधम्मे २
कुलधम्मे ३ गणधम्मे ४ पासंड धम्मे ५ संघध
म्मे ६ गिहत्थधम्मे ७ सुयधम्मे ८ चरित्तधम्मे ९
अत्थिकायं धम्मे १०) इहा गाम धर्म नगर धर्म इ
त्यादि वचन नैगम नयना जाणीयेवे एक अंस रूप

ते कहेछे एवं नैगम नय १ हिवे संग्रह नयवाला कु
ल धर्मने धर्म कहेछे वमे वडेरा आदरयाते धर्म ए
णें नय निमते अणाचार छोरुया पिण कुलाचारने ध्र
र्म माने ते मे अधर्म कुलाचार पिण धर्ममे गिणली
धा ए सग्रह नय २ ऋजुसूत्र नय वाला उपयोग स
हित वैरागरूप प्रणाम होय तेहने धर्म कहे एणे न
य निमते यथा प्रवृत्ति करण ना प्रणाम प्रमुख सर्व
धर्ममा गिण्या इसा उदासीनता प्रणामरूप मिथ्या
तीने पिण थाय ए ऋजुसूत्रना वचनछे ४ हिवे शद्द न
य कहेछे शद्द नय वाला सक्तने धर्म माने सुयधम्मे
१ चरित्तधम्मे २ ए वचन शद्द नयरोछे सम्यक्त धर्म
ना मूलछे संसार बूमता जीवने उधारि राखे ते धर्म
कहे ए अवृती समगदिष्टीने पिणथाए ए शद्द नयरो वच
नछे ५ हिवे समभिरूढ नयवाला चारित्र प्रमुख उ
पादेय वस्तुने ध्यावे तेहने धर्म कहे अवस्तुथी विर
क्त इंद्री विषयाभिलापारूपहो ए वस्तुना त्यागवो
ते साधक पदछे तेहने धर्म कहे एणे व्यवहार त्याग
ने धर्म कहे ए समभिरूढ नयना वचनछे ६ हिवे एवं
भूत नए निमते ते जीवना मूलस्वभावते धर्म कर्म
वर्गणाथी भिन्न थायवो ते धर्म शुक्क ध्यान रूप क्ष
पक श्रेण चढवा ते कर्म खपना कार्ण ते धर्म कहे आ
त्मा उज्वलपणा थाय ते धर्म कहे एवं भूत नयरो
वचनछे ए ७ नय धर्म ऊपर लगावी ॥ हिवे सिद्ध ऊ

पर ७ नय लगावेछे नैगम नए निमते तो सर्व जी
व सिद्ध समानछे सिद्धथावानी सक्त सर्व जीवमाछे प
रंतु द्रवात्मा सर्व जीवनी सरीखी ते भणी आगम
प्रजाय लेइने तथा द्रवात्माना असंख्यात प्रदेसप
णा लेईने सर्व जीवने सिद्ध कहे १ संग्रह नय वाला
कहै द्रवार्थिक नयरी अवस्था अंगीकार करी सर्व
भव जीवनी सत्ता सिद्ध रूपछे सिद्ध जीव १ संसारीजीव
२ द्रव एक छे द्रवात्मामे भिन्नता नही कर्म भेदछे परंतु
द्रव भेद नथी एकजातछे सर्व भव सरीसा ए संग्रह
नयना वचनछे २ विवहार नय वालो विद्या लब्धि
प्रमुख गुण साधीने बाह्य तप प्रमुख करि कार्य सि
द्ध कीनो ते सिद्ध कहिजे जिम अमुके विद्या सिद्धछे
ते बाहिर वस्तु सिद्ध कीनी ते विवहार सिद्ध ए विव
हार नयना वचनछे ३ ऋजुसूत्र नय वालो सम्यग
दृष्टीने सिद्ध कहै जे भणी सिद्धसत्ता आत्मारी उलखी
जे अने ध्यानना उपियोग वरतेछे सिद्ध अवस्थामे
वरतमान समे सिद्ध समान ध्यावेछे इण न्याये ऋजू सूत्र
नये सम्यक्तीने सिद्ध कहे ए ऋजुसूत्र नयना वचन
छे ४ शब्द नय वाला जे शुक्ल ध्यान रूप परणाम रू
ढ थयो गजसुकमालनी परे निजगुण सिद्ध कीनो
तेह रूप ध्यानने सिद्ध कहै सर्व कार्य सिद्ध कीधा
जे निजगुण ध्यावेछे तेणे ए शब्द नयना वचनछे ५
हिवे समभिरूढ नय वाला केवल ज्ञान १ केवल

दरसन १३ मे १४ मे गुणस्थान वरती मुक्तने स नमुखहुवा सलेसी अवस्थाने सिद्ध कहे ए समानेरू ढ नयना वचनछे ६ हिवे एवं भूत नयवाला सकल कर्म खपाए लोकने अंते विराजमान अष्टगुण संपन्न तेहने सिद्ध कहे एह एवं भूत नयना वचनछे ए ७ नय सिद्ध ऊपर लगावी हिवे ज्ञान ऊपर ७ नय ल गावेछे ग्यान ते मुक्ति कार्ण इहा नैगम नयवाला जा णपणा भणी अज्ञानने पिण ज्ञान कहे तथा अक्ष रादिकने पिण ग्यान कहे एक अंसग्याननोछे ते भ णी ज्ञान कहे भगोती सूत्रमे जिम (नाणअठ वि हे) ए नैगम नयरो वचनछे जिम श्रुतज्ञान १४ भेद मांहिं अक्षर श्रुत १८ जातिनी लीपीना व्यंजन अ क्षरना आकार लवध अक्षर ते आकार देखीने जा णपणानी लवध ऊपजे ते मिथ्या श्रुतना अक्षर पि ण श्रुत अज्ञानमे आया तेहने पिण आठ ज्ञानमा ग्यान कह्या एक अंस ज्ञानवरणी कर्मना क्षयोपस मथयो तेतला मुक्तिने अंस जाणवा कर्मथी मुकाय वा ते मुक्ति कहिजे ते भणी अज्ञानने पिण ज्ञान क है ए नैगम नयरो वचनछे १ हिवे संग्रह नय कहे छे संग्रह नयवाला एकाहि ग्यान कहे ५ ज्ञान ३ अ ज्ञान सर्व नाणमे (एनेनाणे) इति वचनात ए संग्र ह नयरो वचनछे २ हिवे बिवहार नय वालो ज्ञानी ने ज्ञानी कहे अज्ञानीने अज्ञनी कहे वा

ह्य विवहार देखे जैमा कहे अभ्यंतर भाव न लेवे जैसे कोई सूत्र के अर्थ विस्तारसुं धर्म कहता होइ ते हने विवहार नय वालो कहे ए बड़ा ग्यानीछे अभिंतर स्वरूप न लेवे ए विवहार नय ३ ऋजुसूत्र नय वाला जे जे ज्ञानने विषे प्रयोग प्रवर्त्तता होय ते हज ग्यानी कहिए जैसें छदमस्तने ४ ज्ञान विवहार नयने मते कह्या अने ऋजुसूत्र नय वालो अतीत अनागत माने ते भणी ग्यान कहे एक जो मत ज्ञानने विषे उपियोग वरततो होए तो मत ज्ञानी कहे जे कारणे एकसमेसे एक ग्यान विषे उपियोग वरतेछे जे ज्ञान विषे उपयोग बरते तेहज ज्ञानी कहे ए ऋजुसूत्र नयना वचनछे ४ इमहीज अग्यान पिण दर्सन जाणवा ए ऋजुसूत्र ४ शब्द नय वाला सम्यक्त सहत ९ पदार्थ जाने तेहने ज्ञान कहे ते शब्द नयना वचनछे ५ समभिरूढ नयनी अपेक्षा ए सम्यक्त सहत ज्ञानवंत परगुणसे विरक्तहोए तेहने ग्यान कहे ग्यानने सनमुखथावो ते परगुणसे विरक्त होणो ते समभिरूढ नयना वचनछे परगुण जो कहीये कें जो ७२ कला विधि चतुसई लौकिक ते तिस परगुणसे विरक्त होणो ६ एवं भूत नय वालो केवल ज्ञानने ग्यान कहे ७ एवं ७ नय ग्यान ऊपर लगावी हिवे धर्मास्ति काया ऊपर ७ नय नैगम नय एक प्रदेस ते धर्मास्तिकाय कहे जे कारणे नयेगम नयवाला

एक अंसने वस्तु माने १ देस प्रदेसादिने अस्तिका ए कहे ले कारण अस्तिकाए देस प्रदेस आया ए सग्रह नय २ विवहार नय प्रदेस प्रदेस विषे जीव पुदगल गतगमण करेछे ते धर्मास्तिना विवहार षट गुणी हान वृद्ध रूप धर्मास्ति कहे ३ ऋजुसूत्र नय जीव पुदगल चालता वरतमानकाले गत गुण करे तेहने कहे अतीत अणागत काल न लेखवे ए ऋजुसूत्र नय ४ सद्द नय वाला स्वभावने धर्मास्तिकाये तेतले ग्याणादिना उपियोगमुं धर्मास्तिने जाणे ५ समभिरूढ नए वाला गुण परवरत्तन जाणे ते धर्मास्तिना गुण प्रवर्त्तताले देखे ते समभिरूढ ६ एवंभुत नय धर्मास्तिना अनेकातस्वरूप सप्त भंगी सप्त नय प्रमुख करी सिद्ध वचन थाए तेहने कहे एतले निश्चै ग्यानने धर्मास्तिकाहे कए एवंभूत नय ७ इण प्रकारे धर्मास्तिपिण कहवा २ आकास्ति नैगम नय एक आकास प्रदेसने ए आकास्ति कहे १ संग्रह नय (ए गेल्लोए एगेअलोए) खंधदेस प्रदेस भेद न करे २ विवहार नए अधो लोकना आकास १ तिरछा लोकना आकास २ उरध लोकना आकास ३ लोकाकास ४ अलोकाकास ५ घटकास ६ इत्यादि नाम लेई कहै जैसो बाह्य विवहारछे जैसा कहे ते विवहार ३ ऋजुसूत्र षट्गुणी हान वृद्धि रूप क्रिया करता आकास एतले जीव पुदगलने अवकास दे

ता ते आकास ४ शब्द नय वाला आकास उगाह
लक्षण विकासपणाने एतले पोलाडने आकास ५ स
मभिरूढ आकासना गुण जीव पुदगल ऊपर थया
ते आकास ६ एवं भूतनये आकासना द्रवगुण प्र
जाएना जाणपणाते आकास ७ ए आकास ऊपर
७ नय लगावी हिवे कालदरव ऊपर ७ नय कहेछे
नैगम नय अतीत अनागत वरतमानरूप एक सम
यने कहे एक गुण तीन कालना समएनोछे ते अंसने व
स्तु कहे इणन्याये १ संग्रह नय अभेद रूपसम आ
वलका आद सर्पणि उत्सर्पणी प्रयंत सर्व काल
वरतणरूप एकछे २ बिवहार अढाई द्वीपमा दिनरात
अएण संवत्सर प्रमुखछे अढाई द्वीपबाहिर कालना सं
ख्या रूप बिवहार नथी ते विवहार काल अढाई द्वी
पमाछे दिनरात संख्या बिवहार नय ३ ऋजुसूत्र
नय वर्तमान कालना सम कालछे अतीत काल बि
णस गया अणागत काल अजी आया नथी ते न
णी काल तो वरतमान समछे एऋजुसूत्र नय ४ स
ब्द नयेजीव अजीव ऊपर वरतेछे अनंत प्रजाए ते
हने काल कहे ५ समभिरूढनए जीव पुदगलनी
थित पूर्ण करवाने सनमुख थया तेहने काल कहे ६
एवं भूत नए कालना द्रव गुण प्रजाएना ग्यान
पणाने काल कहे ७ हिवे पुदगल ऊपर ७ नय कहे
छे नैगम खंधना एक गुणमा गुण नही जिम एक

गुण कालाने काला पुदगल कहै एक अंसने ग्रहवे करी वस्तु कहे ते भणी १ सग्रह नय पुदगल द्रव एकछे ऐसा कहणा ते संग्रह जे कारण पुदगल द्रव अ णंताछे परंत पूर्ण गलण स्वभाव सर्व इमछे ते भणी भेदान भेद न करे ते संग्रह जिम ठाणागे (एगे पो गलत्थिकाए) ए संग्रह नयका वचनछे २ विवहार नय साथे लागा ते उपियोगसा जिम करम वरगणा नी पुद्गल १४८ प्रकृतना भिन्न भिन्न स्वभाव ते उ पियोगसा पुदगल १ जीवने छोडया परकारांतरपणे परणम्या नही जहांलगे मीसा पुदगल २ स्वभावे मिले स्वभावे विखर जाय ते अभ्र पटल इंद्रधनुप प्रमुखना पुदगल ते वीस्सा पुदगल ३ बाह्य विवहार देखे जेसा कहे ए विवहार नय ३ ऋजुसूत्र नय पूर्ण गलणने पुदगल कहै वरतमानकाले गुण होय सो क हे ए ऋजुसूत्र नय ४ शब्द नय पूर्ण गलणरी क्रि याने पुदगल कहै एक प्रमाणयामे गुणछे तेहिज अ णंत प्रदेसमे गुण एकछे ते शब्द नय ५ समभिरूढ नय वाला कहै एक अणुमे बीस गुणी एक एकगुण मे एक गुण लगाये अणंत गुणपरजाये ते मांहिं पटगुणी हान वृद्धि रूप प्रजाये फिरे तेहने पुदगल कहै ६ एव भू त नय वाला पटगुणी हान वृद्धि प्रगट होय ते पुद गल ७ इति पुद्गल ऊपर ७ नय लगावी इत्यादि सर्व पदार्थ ७ नय करी प्रमाण कीजे ए ७ नय माने

तो सम्यक्ती एक नय मानेछे नय न माने २ नय मा
ने ५ नय न माने इम जावत छह नय न माने एक
नय नमाने ते मिथ्यातीछे ऊक्तंच [सत्तनयाज्जिणेन्न
णीया सद्दहंत्तासमदिठी एगोपुणनसद्दहंतो मिछादिठी
उनाएवा [७ ए ७ नयसुं वचन सिद्ध थायते प्रमाण
अने ७ नयसुं असिद्ध वचन होय ते अप्रमाण ॥
इति सप्त नय चर्चा संपूर्णम् ॥ अथ अजीव मतनी
चरचा लिख्यते ॥ प्रश्न अजीव मती किणने कहिये
उत्तर श्री तीर्थंकर महाराज ने २४ जातके धान
मे तथा इण उप्रांत अनेक जातरा धान होवे तिणमे
तथा बीज फलसु न्यारा हुवा पछे तथा तलावका
पाणीमे तथा प्रत्येक वनस्पती प्रमुख ठिकाणोमे
केवल ज्ञानीने एकेंद्री जीव बत्तायाछे अजीव मती
इसमे जीव नथी मानता ते भगवंतनी आज्ञा विरा
धकछे जैनी साधु श्रावक नाम धरावे पिण पूर्व क
हे ठिकाणोमे भगवंते जीव कह्याहे एजीवानी रक्षा
करे अनुकंपा करे ते जीवांने बचावणको उपदेस दे
वे ते उपदेस देणे वाला तथा बचावणे वाला साधु
अथवा श्रावक भगवंत महाजकी आज्ञाका अराध
कछे अने ए वचनाने नमाने ते मिथ्या दृष्टी जाण
वा ॥ प्रश्न केई बीज फलथी न्यारा थया पछे बीजमे जीव
न माने तेहनो उत्तर लिखीयेछे प्रथम आहारके प्र
माणमे सूयगडांगके श्रुतस्कंध दूजा आहार परिज्ञा

अध्ययनमे अग्र बीजादि ४ जातिना बीजमे ठे दिस
ना आठ्या पुदगलनो आहार करे और ठही कायके
पुदगलांको आहार जावत् (पुढवी सिर्णंह माहा
रंति) इत्यादि पाठ देखता तो ऐसा निश्चै नही दी
याहै अग्र बिजादि पृथ्वी ऊपर जलकाही आहार ले
इ इण न्याये पवनादिकना आहार बीजने पिणठे ॥ प्रश्न
किसीकुं ऐसा सदेह ऊपजे पाचथावरमे एक जीव कह्या
नही संख्याता असंख्याता अनंता जीव कह्याहै तो
बीजमे १ जीव किम मानीये तेहनो उत्तर पत्तादि ७
स्थानमे बीजमे एक एक पन्नवणा सूत्रमे कह्याहै ते
हनी निश्राये और जीव ऊपजे जिम लाखनी गो
ली अग्निसे तपायने तिलामे नाखेतो तिल लाखनी
गोलीसुं चिमटे तिम एक जीवनी निश्राये संख्याता
असंख्याता जीव ऊपजेठे ते भणी एक जीवनी कहीजे
संख्याता असंख्याता भी कहिजे एणे न्याये एक
जीव कहता संख्याता असंख्याता के पाठमे विरुद्ध
नही निश्राय भूत जीव चठ्या एक रह्यो ते नैगम
नयने मते अतीत प्रजाए अपेक्षाये संख्याता असं
ख्याताना पाठ विरुद्ध न थाय सर्वज्ञ वचन स्याद्वा
दठे अणंत नयात्मक बे जिसका हेतु पूठ्यो पन्नव
णाजीमे १ वणस्पतीमे (सिय संखेज्जा सिय असं
खेज्जा सिय अणंता) एहवो पाठबे वलि इम कह्यो
(जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा अपज्जता)

तो सिय संखेज्जानो पाठ किम संभवे इण न्याये देखतां एकने संख्याता नैगम नय पूर्वे प्रज्ञा ए अपेक्षांइ बिरुद्ध नही एहना परमाण प्रीछज्यो पन्नवणा १८ मा पदमा कायस्थित पदमे सागारोवउत्ता अणगारोवउत्ता उपियोगनी काय स्थित अंतर मुहुर्तनी कही केवल ज्ञान केवल दर्सननी काय स्थित एक समयनीछे प्रथम समय ज्ञान बीजे समयदर्सन, दर्सन पूर्व ज्ञानछे ते एक समयनी स्थिति परंतु इम न कही ४ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्सननी काय स्थित अंतर मुहुर्तनी केवल ज्ञान केवल दर्सननी इम एक समयनीछे इम तो नथी कही जे कारणे संग्रह वचन अपेक्षांइं १ समयने अंतर मुहुर्त कहीजे इण प्रमाणे नयेगम संग्रह नय अपेक्षांइ एकने संख्याता कहता विरुद्ध नही कोई इहा प्रश्न पुछे अनुयोगद्वारे ष्याखाने अधिकारे दोइने जघन्य संख्याता कह्या एकने किम न कह्या तेहनो उत्तर सूत्रनो प्रमाण ओलखज्यो विशेष अविशेषपणे सूत्रमे विस्तार कीधो जिम किणे किणे ठामे विशेष शद्बे स वेदीनी काय स्थित मनयोगी वचनयोगी १ समय कही अविशेष शद्बे केवल ज्ञानी एक समयनी स्थितिने अंतरमुहुर्त कही इण प्रमाणे एकने संख्याता कहिता बिरुद्ध नही पछे केवलीकहे ते प्रमाणछे १ इण न्याय प्रमाणे तथा परं परायसे पिण जाणी

है परंपराय नमानां केहनी परंपराय नमानीजे इम कहे ते सत्य परंतु सूत्र पाठमे अर्थमे खुलासा होइ ते परंपराय नमानीजे सूत्र पाठ अर्थमे नथी खुल्यो ते परंपराय मानवा योग्यछे कोई पूछे बीजमे जीव किसा सूत्रना पाठ अर्थमे कह्या सूत्र पाठ कहेछे ते बीजमे जीव प्रत्यक्षहे ते इरीयावही पडिकमता (बी यकमणे) कोई हरया बीज सरदहे ते संदेह टालण भणी गणधरे (हरीयक्कमणे) भिन्न कह्या इण पाठ नी अपेक्षाइं निश्चे बीजमे जीव सर्दहीजे तथा अव स्यकमे [बीयभोयणहरिय भोयणाए] हरी (या) बीज (हरीयभोयणाए) कह्या ते [बीयभोयणाए) किसा कहजे तथा दशवे कालक ४ अध्ययन (बी येसुवा बीयपइठेसुवा हरियेसुवा हरियेपइठेसुवा) इ हा पिण बीज हरी भिन्न पणे कह्या तथा दसवे कालिक अध्ययन पाचमे गाथा (सम्मदमाणी पाणीणी बी याणी हरियाणीय) इहा हरी बीज भिन्नपणे कह्या तथा उत्राध्ययनमे (बीएसुहरिएसुवा) इत्यादि ठा म सूत्र पाठ देखता बीज सचित जाणीजे कोई बी ज हरयानी रूढ करे तेहना प्रमाण सूत्रथी लिखी एछे ॥ जिण वंदन वेला पांच अभिगम सांचव्या तिहा [सचिताणं दवाणं विउसरणयाए) तेहना अर्थटीका कारे पुष्फ तंबोल कह्या ते तंबोल इला यची कंकोल प्रमुख हरया संभवता नही इण प्रमा

हांमिश्र, दान न्याय तिहां लाधोरे ॥ सू० ॥ २२
दोप चाले तेहनी मुंन चाली, ओररे मौनन कोई
॥ च्यार न्याण्या जिमछे तिम कहता, साध आरा
क होईरे ॥ सू० ॥ २३ ॥ एकंत बोल्यां पाप लगे
हां, बेकंत ते सत बाणोरे ॥ पाठ सझाओ सारो
ल्यो, मिश्र अर्थमे जाणोरे ॥ सू० ॥ २४ ॥ धर्म
लछे व्रत धर्मरो, अधर्म फल मिश्रछेएमोरे ॥ श्राव
ने कह्यातीजे ठाणे, तीन वीसते साठोरे ॥ सू० ॥ २५
गुण दोपण कहनो जिम पाल्यो, वली गुण दोप
तायोरे ॥ वीरवचन तो विरचे नही, मेलदिखायो न्याये
रे ॥ सू० ॥ २६ ॥ पाप महा नय पुन्य कह्याथी
पुन्य नही मतिकाहिज्योरे ॥ पुन्य पिणछेनर एगजणायो
मोख मारगमे जोज्योरे ॥ सू० ॥ २७ ॥ गुणने दे
प एकंत सर्वथी, कहता दोष दिखायोरे ॥ देसथकी
गुण दोषण कहेतो ॥ दोप नहीओ न्यायोरे ॥ सू०
॥ २८ ॥ मिश्र लगे तिणरी मुंनज करणी, ए बाता
सांचीरे ॥ इणरो फलमे तो क्यूं नही जाण्यो, ए व
तछेकाचीरे ॥ सू० ॥ २९ ॥ कोई कहे गृहस्थराजग
डामे, साधाने क्याने पडणोरे ॥ जिनमत मेगे बोल
न चाले, दुध पाणी ज्यूं निरणोरे ॥ सू० ॥ ३० ॥
अधर्म दान तेहने चाल्यो, उपादेय धर्मदानोरे ॥
मिश्र दान मेगे बहु ठामे, न्यायसूत्ररो मानोरे ॥ सू०
॥ ३१ ॥ मौन वालाने तो बोलणो नही, पेलोपरूपै क्यूं

हीरे ॥ मिश्रउथाप्यामुनंज भांगी, मुंनबतावेयोहीरे ॥ सू० ॥ ३२ ॥ तीजा मिश्रदानने ठेले, पुन्यके पाप बतावेरे ॥ मुनकपटसरणो लेवे पिण, माफ ज्वाबन ही आवेरे ॥ सू० ॥ ३३ ॥ मिश्र धर्म किणकहियो नाही, ले कोई परनोनामोरे ॥ कूठज्ञघाभो तेहने लागे, आलदियोवेकामोरे ॥ सू० ॥ ३४ ॥ धर्ममिश्रतो पाप मिश्र होवे, ते तो दीसेनाहीरे ॥ तीजो ठाम कर्णपख वीर्था, साचग्रहो मनमाहीरे ॥ सू० ॥ ३५ ॥ आचारांग पहिलारे बाजे, दान वलीकर्मदाख्यारे ॥ इहपर लोकर हेते करे, आरंभ अनर्थ भाख्यारे ॥ सू० ॥ ३६ ॥ आचाराग पहिलारेवठे, पाचमउदेसएहीरे ॥ आत्मपर आशातणाटाली, साध धर्म कहे तेहीरे ॥ सू० ॥ ३७ ॥ लौकोककुलिगी मिथ्यामतरो, दान प्रसंसे कोईरे ॥ छकायानी बिराधना लागे, निंद्याअंतरायहोईरे ॥ सू० ॥ ३८ ॥ दूजे संबरसोजन दिया पूछे, पुन्य के ता पाप थायोरे ॥ बेमाहि एकही बोले, तिण हिंस्या कूठलगायोरे ॥ सू० ॥ ३९ ॥ आणंदजीकह्यो अन्य तारथीने, देणोन कल्पे मोनेरे ॥ सिकडाल गुरुगुण थीदृहट, धर्मजाणनघुंतोनेरे ॥ सू० ॥ ४० ॥ जगन मवानोकारण जाणी, साधुअनेराने नदेयरे ॥ सूयगडांग नवमे अध्ययने, ओरने हाना न देयरे ॥ सू० ॥ ४१ ॥ बेकंतरो एकतपरूप्या, मिश्रलागे ज्वाबनावेरे ॥ बेकंत एकंतवे ज्युं कहीता, सांचोज्वाबवतारे ॥ सू० ॥ ४२ ॥

इरीयावही संपराई क्रिया, समकतने मिथ्यातोरे ॥ सा
ता असाताने विगोनर, साथे बंधनथातोरे ॥ सू० ॥
॥ ४३ ॥ समे समे कर्म साते बांधे, साध प्रमादीजोयोरे
॥ पुन्य पाप पिणसुदगत बांधे ॥ एक समामेदोयोरे
॥ सू० ॥ ४४ ॥ सतभापा आराधनाचाली, असत
विराधनी जाणीरे ॥ सच्चामोसाते वेहुंकहिए, बिवहा
रएकमे नाणीरे ॥ सू० ॥ ४५ ॥ सतभापा एकंत ध
र्मछे, असत एकंतछे पापोरे ॥ धर्म अधर्म तीजोहुवे,
तो क्यां मिश्रउथापोरे ॥ सू० ॥ ४६ ॥ साधथकी पुन्य
नव निरवदसुं, करी जिणेसर थापोरे ॥ सावद्यथी सर्व
था पुन्य नमाने, ताहे लागे बहु पापोरे ॥ सू० ॥
४७ ॥ अनेरानेदीया अन्य प्रकृत, पुन्य अर्थमे घा
ल्योरे ॥ देस टालसर्वथा पुन्यथापे, ते तो चवडे उजा
ड चाल्योरे ॥ सू० ॥ ४८ ॥ श्वान साप बाजने बि
ल्ली, जेल अल्प बहु आवेरे ॥ आउखो वारो पुन्य प्र
कृत, पापउदे गत पावेरे ॥ सू० ॥ ४९ ॥ अनुकंपा आ
णीतपसीते, आरंभ करीनेजीमायोरे ॥ मिश्रथापक
ने फल पूछ्यां, साफ ज्वाब नही आयोरे ॥ सू० ॥
५० ॥ पुन्य पाप कहणो जिण पाल्यो, मिश्र रह्यो
तेही पाल्योरे ॥ नास्तक मतिसुं मिलतो बोले, झूठो
झगडो झाल्योरे ॥ सू० ॥ ५१ ॥ पुन्य पापएकंत न
कहणो, मिश्रदान जिहां जाणोरे ॥ मोखमारगमे पाठ
अर्थछे, कूमकिसाने ताणोरे ॥ सू० ॥ ५२ ॥ आठ

दान एकणमे घाल्यो. मिश्रदानजो नहीठेरे ॥ मुंनः थक्यां सुधज्वावनदीधा; पिछतावोला पीठेरे ॥ सू० ॥ ५३ ॥ चित्तवित्त पात्रसुद्दसुं धर्म होवे, कुविसनीसुं अधर्मोरे ॥ दुरवल दुखिया मिश्रदानमे, ओलखल्यो ओमर्भेरे ॥ सू० ॥ ५४ ॥ जीव दुखे तिहामोन बताई, निर्णो दीधोदिखायोरे ॥ सुंन मुंन कहेज्यां जे मनुषां, परमार्थ नहीपायोरे ॥ ५५ ॥ साधटाली सर्व पाप कहे, कूठ जोडीजरमावोरे ॥ मिश्रठेल पुन्यरी करजोडा, ते पिणक रीदढावेरे ॥ सू० ॥ ५६ ॥ पुन्य पाप एकंत दानके, ते तो न्याय उथापोरे ॥ पुन्यपाप मिसरदानतीने, कहिने सांचो सुधथापोरे ॥ सू० ॥ ५७ ॥ पुन्य पापएकेरी मौनचाली, जेलरी भौनेन कायोरे ॥ निर्वद्यक वोलणो कह्यासुत्रमें, एह उथामो न्यायोरे ॥ सू० ॥ ५८ ॥ साचा सिंहगाजे जिण ठामे, कुरंगिदड ते जाजेरे ॥ मुंन कहे तेहनो लेओलो, प्रत्यक्ष पुन्यसु लाजेरे ॥ सू० ॥ ५९ ॥ एकंते एकंत कह्याते, सत्य वेकंत बेकंतोरे ॥ उरकह्यां मिश्रजापा लागे, पामे दोष अनंतोरे ॥ सू० ॥ ६० ॥ ॥ पापीसूतो जला कह्याछे, ते तो नहणे जीव अपेक्षारे ॥ ए पिण अंस थकीआछेने, सर्वथकी मतलेखोरे ॥ सू० ॥ ६१ ॥ प्रमादी सकषाई साधु, जथातथनचलायेरे ॥ अंसथकी एसापिणधरमी, पापी कह्या नवीजायोरे ॥ सू० ॥ ६२ ॥ जगवती सातमेश्रु

तखंधे, नवमे उदेसे एहोरे ॥ प्रमादी असंवरीसाधु, ते करे विक्रिय तहोरे ॥ सू० ॥ ६३ ॥ जघन्य उ त्कृष्टो जिहां नाही, तिहां उघोकजणायोरे ॥ स्वार्थ सिद्धअसनी मिनखमे, देखगम्मांरो न्यायोरे ॥ सू० ॥ ६४ ॥ पापपापथी धर्मथकी पुन्य, वूरानलाएकं तोरे ॥ मिश्रमेरजुखिसतो नाही, तीजो बोल बेकं तोरे ॥ सू० ॥ ६५ ॥ नियमकूडो टिकसे नाही, जिहां प्रगटयोसाचोरे ॥ हीरो घणसेती नहीं भांगे, टूक टूक होयेकाचोरे ॥ सू० ॥ ६६ ॥ धर्म अधर्म एकंत नही जे, जिहां मिश्रभेदानोरे ॥ पखियो प्रगट बोले नहीं, जाणे सूत्र निदानोरे ॥ सू० ॥ ६७ ॥ एक गाथारे मां हिं अटकलो, बीजारो नहीकामोरे ॥ धर्म अधर्म ए कंत नही जिहा, मिश्रदान तिणथामोरे ॥ सू० ॥ ६८ ॥ पापवुरोने धर्म भलोछे, एकंत कहे सवलोयोरे ॥ सम चे मिश्र भेलथीहुवे, लखसे पारखहोयोरे ॥ सू० ॥ ६९ ॥ धर्मसंजलने व्रतपख, पंडित दृष्ट एकेकोरे ॥ धर्म अधर्म ने मिश्रथी, हुआतिन तिन अनेकोरे ॥ सू० ॥ ७० ॥ पाप अठारे एकंत भुंडा, रूडा धर्म समाणारे ॥ या मे मिश्र एकही नाही, मिलिया मिश्रकहाणारे ॥ सू० ॥ ॥ ७१ ॥ पुन्यपाप एकंत नही जिहां, मिश्रदानसही जाणोरे ॥ सच्चामोसाव भेलापाठमा, मिश्रअर्थने आ णयोरे ॥ सू० ॥ ७२ ॥ मिश्रभेलवे एकज वाणी, कि हां अर्थ किहां पाठोरे ॥ साचझीरसातेरे तिम सम

ऊो, तीन बीसते साठोरे ॥ सू० ॥ ७३ ॥ पापएकं तने परोनिपेध्यो, धर्मरी आज्ञा देवेरे ॥ मिश्र ठि काणे हाना न कहवे, इम कह्यो जिण देवेरे ॥ सू० ॥ ७५ ॥ बायबागा कणीयाइज ठहरे ॥ तूतराते उडजायोरे ॥ सतसर्द्धा मे काहा टिकमो नोलाते नर्मनुलायोरे ॥ सू० ॥ ७४ ॥ नेम कियो नही तिण -गिरसतरे, घरघरनो पाप आवेरे ॥ निर्वद्य दोप तजो नही तिणरो, निर्वद्यकेम कहावेरे ॥ सू० ॥ ७६ ॥ पुन्यपापसुन मुन तिणगि, सूत्र जे करे उथापोरे ॥ मिश्र रह्याते पाल्यालागे, कूड कपटनो पापोरे ॥ सू० ॥ ७७ ॥ बेकंत ठेल्या एकंतरहीयो, ते किमकहीजायोरे ॥ मुंनकहे तिणरो ओलोलेवे, पिणनसकेसाफ बतायोरे ॥ शु० ॥ ७८ ॥ वेकंतने बेकंत कह्या, सत्य एकतने एकोरे ॥ कुडक पट विणपरगटकहसी, ते होसीसत्यवंतोरे ॥ शु० ॥ ७९ ॥ धर्म सदर गुण जोग दिसादी, बेवे शुना शुनहो योरे ॥ समचेतो जो मिसर कह्योते, तिणमे ओही हीजदोयोरे ॥ शु० ॥ ८० ॥ पापपुन्य धर्म मिसर नहीछ; एकंत प्रगट नाख्यारे ॥ मुंनमिसररो निर्ण यकाढयो ॥ छाना कपट नराख्यारे ॥ शु० ॥ ८१ ॥ कहे मे तीजो बोलनमानो, बले मानताजायोरे ॥ मुं न करीने मिसरछिपावे, कपट करे इण न्यायोरे ॥ ॥ शु० ॥ ८२ ॥ इति ॥

॥ अथ तेरा पंथीयांकी चरचा लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ यासमीकत शुणताथका, राखेरोपञ्च पार ॥ तिणेरेसिरपर लागसी, चरणपङ्कीमार ॥ १ ॥
॥ ढाल ॥ प्रथम उठीया पापीपुरा, गद्यांगुराकांगेरी ॥ पुन्यहीणनेदुष्ट प्रणामी, वीतरागरा बेरी ॥ १ ॥ सुण ज्यो पंचमहाव्रत नही पाले, पर्मीया श्रौर निंद्यारे चाले ॥ एटेक ॥ गिनातामे गुरुका गुणछे, सूत्र देख लो साखी ॥ निगुरानिगुणा जावेनारकी, यानगवंता नाखी ॥ शु० ॥ २ ॥ नंडशुरोजीष्टापरजावे, चोखीब स्तनचावे ॥ उत्राध्ययन पाचमो गाथा, श्री जिनरा जवतावे ॥ शु० ॥ ३ ॥ जीवमातररो सुख नही चावे, ऊरखा बोलेझुठा ॥ दानदयारो नाव न जाणे, परत खहीयाफूटा ॥ शु० ॥ ४ ॥ वाताजायने करे ज्ञानरी, लुडातिणशुंलडसी, ऊगमाकोराझुठा वोलो, कुत्रा कुबा कज्जां करसी ॥ शु० ॥ ५ ॥ निगुणा कपट चलावे नागा, एक वेस साधरोधारी ॥ दसमी कालक मांहिं कथीयो, होसीवोहल संसारी ॥ शु० ॥ ६ ॥ असल धर्मरी नही आसता, नोलानकर जाणे ॥ नवसागर मे तिरसीनमतां, उत्राध्येयन प्रमाणे ॥ शु० ॥ ७ ॥ चूकाकहे बीरजीने चोडे, कारलोपनाकीधी ॥ पापत णो तो पंथपकडीयो, नीवनरकरी दीधी ॥ शु० ॥ ८ ॥ चोडे कहो थें बीरने नूला, तो तुम परतख पापी ॥ जगतारण जिनराजरी ॥ इतरी बात उथापी ॥ शु० ॥

॥९॥ आचारांग नवमे अध्येने; वीरतणीहे वाणी ॥ किंचित पापकीयो नही गोतम, जिनसासन सह नाणी ॥ सु०॥ १० ॥ श्रवणे वात सुणे नही सखरी, मुंहे बोले मीठा ॥ जीवातणा तो दूस्मनजबरा, परतख जग मे दीठा ॥ सू० ॥ ११ ॥ सिद्धंतामे जगतजीवनी, साता वेदनी सुझो ॥ अनयदानने मुक्तसुखारी, गौतमस्वामी वुझो ॥ शु० ॥ १२ ॥ संकाघालकहे श्रावकने, आलधरे अपराधी ॥ देता दाननावनाफेरे. ताने खुंटे वांधी ॥ सू० ॥ १३ ॥मगजधरने कहे मूरखा, जगमे म्हेइज साधु ॥ घात अनंती होसीथारे. फिर फिर पडसी बांधु ॥ शु० ॥ १४ ॥ निंद्या न करो किणीपराई. सिद्धतामे साची ॥ परीनमणते परीयाकरसी. व्रेहत कलपमे वाची ॥ शु० ॥ १५ ॥ दान दया अनुकंपाकेरी, सरधामानो साची ॥ दान दया विनकोई न तिरीया. येही जिनेश्वर वाची ॥ शु० ॥ १६ ॥ इति ॥

अथ नीपमपंथीयाने तेरा पंथीयासे चरचा लिख्यते

॥ दोहा ॥ सांनल जो सहुको तुमे, चितराखीजे ठाम ॥ परख करो जिन धर्मनी. सीझे आतमकाम ॥ १ ॥ नगवंतनें चुक्या कहे. दान दयादिइ उठाय ॥ विनें वियावच वंदणा. कुडकुहतलगाय ॥ २ ॥ ठाम ठाम बहु सूत्रमे. दान दया अधिकार ॥ तिणउपर निरणय करू. सांनलजो नरनार ॥ ३ ॥ ढाल ॥ जगतगुरू त्रिस

लानंदनवीर ॥ एदेसी ॥ आचारांग श्रुत खंध पहिले
कह्योजी. नवमा अध्ययनमे होय ॥ भगवंत किंचित
पापकीयो नहीजी. चौथा उदेसा लेवो जोय ॥ चतुरन
र सुणज्यो ज्ञानविचार ॥ १ ॥ एटेक ॥ बावीसपरी
सां आयाथकांजी, मेरुआडिंग जिमथाय ॥ भगवंत च
लीया चूक्या नहीजी, जोवो आचारांगमाय ॥ च०
॥ २ ॥ दोषतो लाग्या थकाजी, बिराधक होयजाय
॥ प्रायश्चित लीया बिनाजी, केवल ज्ञान किम थाय
॥ च० ॥ ३ ॥ भगवती सूत्रमे कह्योजी, पनरमा सत
करेमाय ॥ केवल ज्ञान उपनापछे वीर कह्योजी ॥
सुणो गोयमचितलाय ॥ च० ॥ ४ ॥ दया अनुकंपारे
वासतेजी, गोसालाने दियोरे बचाय ॥ च्यार ज्ञान
तणाधणीजी, अनुकंपा करीजिणराय ॥ च० ॥ ५ ॥ छ
दमस्त साध चूकापछेजी, पूछे भगवंतने जाय ॥ केवल
ज्ञानी सांसो भानदेजी, प्रायश्चित देवे जिणराय ॥ च०
॥ ६ ॥ दया अनुकंपा सूत्रमे कहीजी, सांभलजो
चितलाय ॥ सावज अनुकंपा चाली नहीजी, किणही
सूत्ररे माय ॥ च० ॥ ७ ॥ उपासगदसामे कह्योजी,
आठमा अध्ययनरेमांय ॥ श्रेणक ढंढेरो फेरीयोजी;
जीवमारण नही थाय ॥ च० ॥ ८ ॥ जीवबचायां
पाप हुवे तो, भगवंत बरजता जांण ॥ भगवंत बरज्यो
को नहीजो, मूरख करे कुडीतांण ॥ च० ॥ ९ ॥ च्यार
बोल राजाने कह्याजी, कथाकाररे मांहिं ॥ दान समा

इ नवकारसीजी, कपाइ भैंसामारण नहीथाय ॥ च० ॥१०॥ भगवती सतगसातमेजी, छठा उदेसारे मांहि॥ जीवदया अनुकंपा कीयाजी, साता वेदनी पुन बंधाय॥ च० ॥ ११ ॥ दया अनुकंपा कीथांथकाजी, बंधे पुन्यराठाठ ॥ पापतो बंध कह्यो नहीजी, किण हीसूत्ररो पाठ ॥ च० ॥१२ ॥ ज्ञाता पहिले अध्येन मेजी, अनुकंपा कहीसार ॥ गजभवसुसलोराखियोजी, श्रेणकघर अवतार ॥ च० ॥ १३ ॥ दया अनुकंपा करताथकांजी, पामीये सुखराथाट ॥ हाथी घोरा रथपा मीयेजी, जिहाबहुली कमाई पाट ॥ च० ॥ १४ ॥ ज्ञाता सूत्रमे कह्योजी, पाचमा अध्येनरेमाय ॥ थावचा सुदरसण सुखदेवनेजी; कह्यो विनें मूलधर्म थाय ॥ च० ॥ १५ ॥ विनयतणादोय भेदछेजी, आगार नें अणगार ॥ च्यार प्रकारे संघनोजी, विनो किया खेवापार ॥ च० ॥ १६ ॥ विनोकरे सुधभावसुंजी, कर्मारीकोडखपाय ॥ जिनजीरा वचन अराधनेजी, मुकतणा फलपाय ॥ च० ॥ १७ ॥ भगवती सतक बारमेजी पहले उदेसे मांहि ॥ उतफलाने पोखलीतणोजी, विने कियोसाम्हीलाय ॥ च० ॥ १८॥ बंदना कीधी भावसेजी, दीधो आसन ताय॥ पोखली उतफलाने पूछेजी, वदे संखन ते जाय ॥ च० ॥ १९ ॥ संखने वंदन कीयापछेजी, दुजाने ऊपन्यो द्वेष ॥ भगवंतकने जायनेजी, संखने निंदस्या विशेष ॥ च० ॥ २० ॥

भगवंत कहे निंदोमतीजी, संखरा चोखाभाव ॥ संखने सहुखिमावीयाजी, श्रावककरसुधभाव ॥ च० ॥ २१ ॥ ॥ वंदनमे जो पापथोजी, तो जिनवर वर्जताजाण ॥ जिनवर वरज्या को नहीजी, वोलेकूठीवाण ॥ च० ॥ २२ ॥ भगवती सतग ग्यारमेजी, बारमा उदेसा रेमाय ॥ असोभ पुत्र आय वंदना करीजी, बीजा श्रावककांइ चितलाय ॥ च० ॥ २३ ॥ उववाई सूत्र० मे कह्योजी, अमर सिष्यसातसे जाण ॥ नमोथुणरापाठ सुंणो, वंदणा करी प्रमाण ॥ च ॥ २४ ॥ नसीत सूत्र मे कह्योजी, अष्टम उदेसमाय ॥ न्याति अन्याति स्त्रीभणीजी, रात रख्यां प्रायश्चित थाय ॥ च० ॥ ॥ २५ ॥ जिणअर्थरो निर्णोकरोजी, भोजनस्त्री परिग्रहपास ॥ जाणीने राख्याथकाजी, प्रायश्चितछे चउमास ॥ च० ॥ २६ ॥ ब्रेहत कलप मांहिं कह्योजी, पहले उदेसे माहिं ॥ अस्त्रीरहे जिणजायगांची, साधुनरहे तिहां जाय ॥ च० ॥ २७ ॥ पुरुप रहे जिणजायगा जी, आरज्यांनरहे काय ॥ ब्रेहत कलप मांहिं कह्योजी, पहला उदेसाजोय ॥ च० ॥ २८ ॥ भगवती सूत्र मांहें कह्योजी, पनरमासतकमाय ॥ गोसालो ग्रहस्थेपणेजी, रह्या जिनपासे आय ॥ च० ॥ २९ ॥ ग्रहस्तीने रखणो नही हुंतोजी, तो भगवंत वर्जताजाण ॥ गोसालो नहीजो मानतोजी, जिनरहते और ठिकाण ॥ च० ॥ ३० ॥ सूयगडांग पहले क

ह्योजी, दूजा अध्येनरेमांय ॥ च्यार बोलसेवे नहीजी,
जिनकलपी मुनिराय ॥ च० ॥ ३१ ॥ अडोकिवाड़
जडे नहीजी, वखाण नही दीराय ॥ तिणपिण विग
ये नहीजी, काचो नहीं लेवे मुनिराय ॥ च० ॥ ३२॥
(ऐसे मुनीजिनकल्प इस आरेमे नही होते अ
ब साधू थेवर कलपीहै) जिन कलपीने वरज्यासही
जी, थेवरकलपे वरजन कोय ॥ इण मांहें संक्याहुवे
तो, दूजोउदेसो जोय ॥ च० ॥ ३३ ॥ ब्रेहतकलप
मांहिं कह्योजी, पेहला उदेसामाय ॥ अवंगद्वार क
लपे नहीजी, आरज्याने तिनमाह ॥ च० ॥ ३४ ॥
आडो न जडणो साधनेजी, इसोन कह्योतिणमात ॥
आज्ञा लेइ खोलणो कह्योजी, देखो सूत्रसाख्यात
॥ च० ॥ ३५ ॥ आचाराग दुजे कह्योजी, सातमा
अध्येनरे माय ॥ग्रहस्ती बार ढक्यो हुवे तो, अज्ञा
खोले मुनिराय ॥ च० ॥ ३६ ॥ अज्ञाले बार खोलणोजी,
दसवी कालक माय ॥ पंचमाअध्येनमे देखल्योजी, अ
ठारमी गाथा थाय ॥ च० ॥ ३७ ॥ आचाराग दुजे
कह्योजी, पंचम उदेसे माय ॥ संजोगीसाधआयांथका
जी ॥ आहार पाणीदे मुनिराय ॥ च० ॥ ३८ ॥ अ
संजोगी साधआयाथकाजी, पाटपाटलादेय संथार ॥
विनोसांचवे बडा तणोजी, होसी खेवोपार ॥ च० ॥
॥ ३९ ॥ उत्तराध्येन तेवीसमेजी, केसी गौतम
सो जाण ॥ पंचप्रकार तिणादियाजी, विगवणको हि

न आन ॥ च० ॥ ४० ॥ व्यवहार सूत्रनी चूलका
नी, तीजा सुपनविचार ॥ समाचारी जूई जूईजी,
ओलखजो ततसार ॥ च० ॥ ४१ ॥ दसमी काल
कमे कह्याजी, तीजा अध्येनमंझार ॥ ग्रहस्तीरे घर
बैठताजी, सताईसमा अनाचार ॥ च० ॥ ४२ ॥
ब्रिहत कलप माहें कह्योजी, चोथा उदेसा मांहिं ॥
घरमे वखाण देणो, वरजगया जिनराय ॥ च० ॥ ४३
॥ जो काम पडीया थकाजी, उना गाथा दे सुणाय ॥
थिरता होतो वखाणदेजी, जो उतरे उणघरमाय,
॥ च० ॥ ४४ ॥ उववाई सूत्रमे कह्योजी, बठबठ पा
रणो थाय ॥ अंबडने लवध ऊपनीजी, पारणे सो घर
जाय ॥ च० ॥ ४५ ॥ सक्र ईसाण इंद्रनणीजी, झगडो
नारीजी थाय ॥ लड लड अपकाया होवेतो, संत
कुमार बुझावे आय ॥ च० ॥ ४६ ॥ गौतमस्वामी पू
बा करीजी, सूत्रनगोती मांहिं ॥ किण अरथेसुख
पामीयेजी, फुरमावो जिनराय ॥ च० ॥ ४७ ॥ नगवं
त कहे गौतम सुणोजी, चउविधसंघ सुखकार ॥ ही
येमुयेपतकामीयेजी, सुखनो वहु विस्तार ॥ च० ॥
४८ ॥ रायप्रसेणी देखलोजी, परदेसी धर्मसु राग ॥
सात हजारे गांवनाजी; कीधाच्यारजुनाग ॥ च० ॥
४९ ॥ एक नाग राण्या नणीजी, दुजो नागखजान
॥ तीजो नागज फौजनेजी चौथे नाग दे दान ॥ च०
॥ ५० ॥ कोई तपसीने विष देवेजी, कोई पावे दूधनी

जांत, पापकहे दोनो माहेजी ॥ ज्यारीकिण विध मा ने वात ॥ च० ॥ ५१ ॥ कोई सतीने सतावताजी, कोईक बरजे आण ॥ पापकहे दोनो विशेजी, बोले झूठीवाण ॥ च० ॥ ५२ ॥ बारे सूत्र मांहे कह्योजी, श्रीजिनभाष्या सोय ॥ अधिकाउंग जो होवे तो, मिछा मिटुकडंमोय ॥ च० ॥ ५३ ॥ संवत अठारसे गुणा सिसेजी, सहर पिपाडरे माहिं ॥ ऋषचोथमल प्र सादसेजी, श्रावक गुमानचद धर्म पाय ॥ च० ॥ ५४ ॥ इति ॥

॥ अथ चैत्य मतीयासे चरचा लिख्यते ॥

सासणनायकादियो उपदेस, धर्मकरो ज्युं मिट जावे क्लेस ॥ ज्ञान दरसन चारित तपभाव, इनकुं आराध्यां भविजन तरणरोडाव ॥ १ ॥ थे जिनजीरा वचनहीये धरोजी, तुमजीवहणीने पूजा काई करो जी ॥ एटेक ॥ सतरे भेदी पूजालेईनाम, पटकायजी वांराकरोछोहाम ॥ इमाकिमरीझे श्रीवीतराग, जिके अ ठारे पापराकर बैठाजी त्याग ॥ थे० ॥ २ ॥ पूजा करा वो साधू नामधराय, इसडो अंधेरो नही जिन धर्म माय॥ माहिरा माताने भल कहीजजीबाझ, दिनदोपहरो कि मथायजी सांझ ॥ थे० ॥ ३ ॥ प्रभूने अंगीरचो फि र गहिणापहिराय, नाटककरोवलीतालबजाय ॥ धामक धेयाकर चावोजी मोख; जिणसांसो पडीयो जावणरो देवलोक ॥ थे० ॥ ४॥ प्रभूत्यांगा हुवाजाने भोग ल

त आन ॥ च० ॥ ४० ॥ व्यवहार सूत्रनी चूलका
जी, तीजा सुपनविचार ॥ समाचारी जूई जूईजी,
ओलखजो ततसार ॥ च० ॥ ४१ ॥ दसमी काल
कमे कह्याजी, तीजा अध्येनमंझार ॥ ग्रहस्तीरे घर
बैठताजी, सताईसमो अनाचार ॥ च० ॥ ४२ ॥
ब्रेहत कल्प माहें कह्योजी, चोथा उदेसा मांहिं ॥
घरमे वखाण देणो, वरजगया जिनराय ॥ च० ॥ ४३
॥ जो काम पडीया थकाजी, उन्ना गाथा दे सुणाय ॥
थिरता होतो वखाणदेजी, जो उतरे उणघरमाय,
॥ च० ॥ ४४ ॥ उववाई सूत्रमे कह्योजी, बठग्ठ पा
रणो थाय ॥ अंबडने लवध ऊपनीजी, पारणे सो घर
जाय ॥ च० ॥ ४५ ॥ सक्र ईसाण इंद्रनणीजी, झगडो
न्नारीजी थाय ॥ लड लड अपकाया होवेतो, संत
कुमार वुन्नावे आय ॥ च० ॥ ४६ ॥ गौतमस्वामी पू
बा करीजी, सूत्रन्नगोतो माँहिं ॥ किण अरथेसुख
पामीयेजी, फुरमावो जिनराय ॥ च० ॥ ४७ ॥ न्नगवं
त कहे गौतम सुणोजी, चउविधसंघ सुखकार ॥ ही
येमुयेपतकामीयेजी, सुखनो बहु विस्तार ॥ च० ॥
४८ ॥ रायप्रसेणी देखलोजी, परदेसी धर्मसु राग ॥
सात हजारे गांवनाजी, कीधाच्यारजु न्नाग ॥ च० ॥
४९ ॥ एक न्नाग राणया न्नणीजी, दुजो न्नागखजान
॥ तीजो न्नागज फौजनेजी, चौथे न्नाग दे दान ॥ च०
॥५० ॥ कोई तपसीने विप देवेजी, कोई पावे दूधनी

जात, पापकहे दोनो माहेजी ॥ ज्यारीकिण विध मा
ने वात ॥ च० ॥ ५१ ॥ कोई सतीने सतावताजी,
कोईक वरजे आण ॥ पापकहे दोनो विशेजी, बोले
कूठीवाण ॥ च० ॥ ५२ ॥ बारे सूत्र मांहे कह्योजी,
श्रीजिनभाष्या सोय॥ अधिकाउंग जो होवे तो, मिच्छा
मिदुकडंमोय॥ च० ॥ ५३ ॥ संवत अठारसे गुणा
सिमेजी, सहर पिपाभरे मांहिं ॥ ऋपचोथमल प्र
सादसेजी, श्रावक गुमानचद धर्म पाय
॥ च० ॥ ५४ ॥ इति ॥

॥ अथ चैत्य मतीयासे चरचा लिख्यते ॥

सासणनायकदियो उपदेस, धर्मकरो ज्युं मिट
जावे क्लेस ॥ ज्ञान दरसन चारित तपभाव, इनकुं
आराध्यां भविजन तरणरोडाव ॥ १ ॥ थे जिनजीरा
वचनहीये धरोजी, तुमजीवहणीने पूजा काई करो
जी ॥ एटेक ॥ सतरे भेदी पूजालेईनाम, पटकायजी
वांराकरोछोहाम ॥ इमकिमरीझे श्रीवीतराग, जिके अ
ठारे पापराकर बैठाजी त्याग ॥ थे० ॥ २ ॥ पूजा करा
वो साधू नामधराय, इसडो अंधेरो नही जिन धर्म माय॥
माहिरो मातने भल कहोजजीवाझ, दिनदोपहरो कि
मथायजी सांझ ॥ थे० ॥ ३ ॥ प्रभूने अंगीरचो फि
र गहिणापहिराय, नाटककरोवलीतालबजाय ॥ धामक
धेयाकर चावोजी मोख, जिणसांसो पडीयो जावणरो
देवलोक ॥ थे० ॥ ४॥ प्रभूत्यांगी हुवाजाने भोग ल

गाय, थे खलगुलकीधोजी एकणभाव ॥ भोला न जा णे गाडरीप्रवाय, सीखदीया चोर दडेजी सहाय ॥ थे० ॥ ५ ॥ सतरे प्रकारे करीजीवानेराख, ए पूजा कही सूत्रनीसाख ॥ भावसुं पूजो श्रीअरिहंत देव, सत्य वा सील चदनतुं अगरज खेव ॥ थे० ॥ ६ ॥ आचारांग प्रश्नव्याकरण पाट, दया पालो ज्यूं बंधे पुनराजीथा ट ॥ साठ नाम कह्या दयारा सोय, जिनमे जीव रि ख्याते पूजा लेवोजोय ॥ थे० ॥ ७ ॥ महणोमहणो बाणी तो श्री जिनराज, थे हिंस्या धरम कर काईकीयो जी अकाज ॥ तीर्थंकर ल्यो तीनकालरादेख, सूत्र आ चारांगमे बाणीजी एक ॥ थे० ॥ ८ ॥ दयारा सागर कह्या श्री भगवान, थें जीव हणीने कोई तोभोजी तां न ॥ फूलचढावो फिरपाणी ढोल, धर्म बतावो थारे घटमे जी घोल ॥ थे० ॥ ९ ॥ छकायनो कूटोकर मानोजी धर्म, इण बातासुं बंधे जादाजीकर्म ॥ आश्रव कह्या प्र सण व्याकरण माय ॥ मंदी बुद्धी कह्या श्री जिन राय ॥ १० ॥ नवोप्रासाद करावेजी कोय, ज्याने सु रगबारमो बतावेजीसोय ॥ आरंभ करताजाये मोख सरग, तो चक्री केशव क्यों जावेजीनरग ॥ थे० ॥ ११ ॥ ऊजवणा करिने टलावोजी पाप, बलिरोकडदाम दिरावोजी आप ॥ नाम लेई ल्यो प्रभू देवलठोड, वे त्यागी थया गया मोख करम तोड ॥ थे० ॥ १२ ॥ जगमे तार्ण तो हुवा बीतराग, थे करो सो ओकुण

सोजी माग ॥ निरवद्य मारग दाख्यो जिनराज, इण ने अराध्यां सरे आतमकाज ॥ थे० ॥ १३ ॥ बिना भरतार चोडे सुवे नार, तग बांधे मिलीया चोकी जीदार ॥ जोवो इणरी किम रहे सर्म, थे जीवहणी ने काई कर रह्या धर्म ॥ थे० ॥ १४ ॥ इति ॥

अथ तेरेपंथी (भीषम पंथी) आम्नासे चरचा लिख्यते

-इण आरामे निन्हव बिगडीया, दुषम पंचम काल जी, बोगा लोकाने भरमावे मूरख मांभ्यो जाल जी, निन्हव जाणो इण चलगतसुं ॥ १ ॥ एटेक ॥ दुष्टांरी आसरधा देखो, साधपणो दीयोखोयजी ॥ कूडो मारग काढयो कुमती, दान दया उठायादोयजी ॥ नि० ॥ २ ॥ साधपणारो सांगजधार्‍यो, पापगिने छ कायाजीवजी ॥ पंचमाहाव्रत कुभा पभीया, ज्याने नहीं दयारी नीवजी ॥ नि० ॥ ३ ॥ गायारे गोकुल बाडा मे, आण पहुंती आगजी ॥ काढे जिणने पाप बतावे, माठा ज्यारा भागाजी ॥ नि० ॥ ४ ॥ काढण वालो धर्मजजाणे, तो लागे पाप अपारजी ॥ या सरधाने साधुकहावे, ते जिन आज्ञा बारेजी ॥ नि० ॥ ५ ॥ भरीया भारसो गाडो आवे, मारगमे सूतो बालजी ॥ दया देख कोई लेवे मानव, तिणने पाप कहे चंडालजी ॥ नि० ॥ ६ ॥ तीमहला ऊपरसु बालक पडतो, कोई झेल लेवे ते देखजी ॥ झेले जिणने पाप बतावे, ए साध नहींवेभेपजी ॥ नि० ॥

७ ॥ कोई किणरोग लोम सोसे, कोई वरजे धर्म जा
णजी ॥ दोनो जणानेबताके; एदुष्टरा अहिनाणजी ॥ नि
८ ॥ कोईक बेठयोकीमीया किचडे, कोई वरजे पुरुष
सुज्ञानजी ॥ दोनुंजणाने पाप बतावे, मूरख घोर अ
ज्ञानजी ॥ नि० ॥ ९ ॥ कोईक ग्राम बालणने ढुक्यो,
कोई वरजे दया नंभारजी ॥ दोनु जणाने पाप बता
वे, तिके निश्चे नही अणगारजी ॥ नि० ॥ १० ॥
कोई सुपातर दानजु देवे, कोई वरजे अज्ञानजी ॥
दोनोजणाने पाप बतावे; आ पाखंमीयानी बाणजी
॥ नि० ॥ ११ ॥ कोई किणहीनेकू वामे नांखे, को
ई वरजे जाणी धर्मजी ॥ दोनुजणाने पाप बतावे,
ते मूरख बंधे कर्मजी ॥ नि० ॥ १२ ॥ कोई ऊबकेर
कोई ऊटके मारे, मुसलमान रजपुतजी ॥ प्राण बचा
यारो पाप बतावे, ज्यादिया माठी गतरा सूतजी
॥ नि० ॥ १३ ॥ दान दयामे पाप बतावे, निन्हव
नीच करमरा पुतजी ॥ निन्हव सरधा घटमे पैठी,
जाणे लाग्यो भूतजी ॥ नि० ॥ १४ ॥ कोई सतीरो
सीलज खंडे, कोई पुन्यवंत राखे पालजी ॥ दोनुज
णाने पाप बतावे, महा मिथ्यातमे लालजी ॥ नि०
॥ १५ ॥ कोईक वेस्याने घर देवे, कोई देवे पोसाने
सालजी ॥ दोनु जणाने पाप बतावे, ज्यारी सरधा
हुई आलमालजी ॥ नि० ॥ १६ ॥ कोई भूखाने
भाठा मारे, कोई रोटी दे प्यावे गांसजी ॥ दोनु जणाने

पाप बतावे, ज्यारो हुवो ज्ञानरो नासजी ॥ नि० ॥ १७ ॥ मास पारणे कोई जेहरज पावे, कोई पावे दुधनीबातजी ॥ दोनुंजणाने पाप बतावे, देखोविक लारी बातजी ॥ नि० ॥ १८ ॥ गोसालाने बीरबचा यो, सूत्र भगोतीरो पाठजी ॥ निन्हव भगवंतने भु ला जाणे, ज्यारी पुन्याई घाटजी ॥ नि० ॥ २० ॥ वीर कदे नही होवे भोला, नही लगावे दोपजी ॥ ज्या पु रुपाने दोष बतावे ॥ करणी ज्यारी फोकजी ॥ नि० ॥ ॥ १९ ॥ भगवंतने पिण भारी करमा, लाग्यो जाणे पा पजी ॥ मनरा लाडु खावे मूरख, माठो मारग थाप जी ॥ नि० ॥ २१ ॥ बुध तो बुडगई निन्हवारी, जिन जीने दीयो आलजी ॥ तिके गुरसेंती कहो किम वुझे, धुर दया बिनाने बालजी ॥ नि० ॥ २२ ॥ ही रा माहें हुंता भेला, वाने दीया कंकरा टालजी ॥ री सां बलता अवगुण बोले; बांधे गुरासुं चालजी ॥ नि० ॥ २३ ॥ भागल कुटल कर कर भेला. सामा मांडे सींगजी ॥ वेसरमाने भारी करमा ॥ होय बैठावा बाराधीगजी ॥ नि० ॥ २४ ॥ उर बोलणने नही कोई काचा. जमाली ज्यूं जोइजी ॥ भगवंत आगे मूखा भाख्यो, हुं केवल ज्ञानी होईजी ॥ नि० ॥ २५ ॥ अरिहंत आगे कूठज बोल्या, तो हिवडास्यूं बातजी ॥ दान दयामे पाप बतायो. आ विकलपणेकी बात जी ॥ नि० ॥ २६ ॥ दान दयारो कोई निरणो

तरे बोले वली न बोलजी ॥ पूछयां उत्तर देवे नही पाछो, कोई कुहेत देवे मेलजी ॥ नि० ॥ २७ ॥ चित लभाय चहु टामे चाले, गातीरी देवे गाठजी नीची गरदन चाले निन्हव, पिण घटमे घणांज आंटजी ॥ नि० ॥ २८ ॥ दासका नरता धव धव चाले, जठे ईरज्या निरती जोयजी ॥ घणा कोसारी मजल कर जावे, कपटी श्वान तणी परे जोयजी ॥ नि० ॥ २९ ॥ फुंक फुंकने पावजमेले, वंदरने जिम न्हारजी ॥ तिमजीणी चाल चहुटामे चाले, कपटी चले कपट आचारजी ॥ नि० ॥ ३० ॥ सूयगडांगे तेरमे अध्येने, अरिहंत भाख्यो एमजी ॥ निन्हव निकलसी साधान्हांसु; ए परतक्ष दीठीजेमजी ॥ नि० ॥ ३१ ॥ मनमें जाणे म्हे मारग काढयो, हुवारहे वडा निवजी ॥ आज्ञामेटी श्री जिनवरकी, दई दुरगतिकी नीवजी ॥ नि० ॥ ३२ चोरासी मांहिं चाल्या जासी. दान दया उठाई दोयजी ॥ साधांरी पिण निंद्यामाडी, निन्हव दीखे जमारो खोयजी ॥ नि० ॥ ३३ ॥ दान दयारी सरधा राखो, जिन आज्ञा तत सारजी ॥ निन्हवा केरी श्रद्धा त्यागो, जिम होय सुध आचारजी ॥ नि० ॥ ३४ ॥ ए सांभलने निन्हव सरधा, नही माने पुन्यवंत प्राणीजी ॥ आ सुणने सरधा नीकी राखो, ज्यारो होसी परम कल्याणजी ॥ नि० ॥ ३५ ॥ एवतीसी नही कोई बानी. नही इणमे कांई धेख

जी ॥ जोकिणरे मनमे हुवे सकां, तो अरू चू रू ल्यो देखजी ॥ नि० ॥ ३६ ॥ इति ॥

॥ अथ मिश्र चरचा लिख्यते ॥

पुन्य जोगे तो नर ज्ञव पायो, साध श्रावक व्रत धारीरे ॥ नव बोलारो निर्णयकीजो, चतुर केई नर नारीरे ॥ १ ॥ हिंस्याधर्म थाप्पो ने मिश्र उथाप्पो, ज्यारी अकल गई दपटाईरे ॥ भोला लोकाने भरममे पाडे, कूडा कुहेत लगाईरे ॥ २ ॥ हिंस्यां धर्म थाप्पोने मिश्र उथाप्पो ॥ एटेक ॥ नव बोलसेती पुन्य परूप्पो, दस परकारे दानोरे ॥ उगनीस बोल ए तीजा आगममे, भाख गया जगवानोरे ॥ हि० ॥ ३ ॥ धर्म दानमे तो धर्म बतावे, तिणरी साधकरे प्रसंस्यारे ॥ आठ दानरी न करे प्रसंस्या, तिणमे थोडी वा बहु हिंस्यारे ॥ हिं० ॥ ४ ॥ अधर्म दान तो बेस्यादिकनो, ते तो लगाडे पापोरे ॥ स्त्रीसेवन बहु जीव हिंस्या तो, अधर्म ए थाप्पोरे ॥ हिं० ॥ ५ ॥ एक तो सावद्य बले दूजो निरवद्य, दोनुंदान ज जाणीरे ॥ दोनु माहिं एकलो धर्म बतायो, आपाखंडीयारी बाणीरे ॥ हिं० ॥ ६ ॥ निरवद्य दान तो निर्ग्रंथ केरो, तिणमे नही काई हिंस्यारे ॥ करण करावण न अनुमोदे, तिणरी साधकरे परसंस्यारे ॥ हिं० ॥ ७ ॥ सावज दान संसारी जीवांरो, जिनमे पुन्य पापछे बेईरे ॥ चतुर हुवे सो विचारी ले

ज्यो, पछे मिश्ररा भागाछे केईरे ॥ हिं० ॥ ८ ॥ अनु कंपा आदि आठ दानमे, दोई बात नही गनीरे ॥ पुन्य पाप थोडाने वहु तो. ते विध जाणे ज्ञानीरे ॥ ॥ हिं० ॥ ९ ॥ श्रावक भठरप भात संभाले, छकायच वदे नेमोरे ॥ आगार राखे तो रांध जिमावे, तो हिंस्या गिणे नही केमोरे ॥ हिं० ॥ १० ॥ कोई कहे मिश्रकठे चाल्यो, ते सूणजो सूत्रनी साखोरे ॥ मिश्र ठिकाणे वहु सूत्रामे, श्री जिनवरने भाख्योरे ॥ हिं० ॥ ११ ॥ मिश्रदान शत्रुकारज केरा, सूयगडांग सूतखंध दूजेरे ॥ पंचम अध्येन बतीसमी गाथा, ते देखी चतुर नर वुभेरे ॥ हिं० ॥ १२ ॥ सतुकारनो साधुने पूछे, देणवालो कोई आणीरे ॥ पुन्यछे के पापछे इम भाषे, साधु मौन करे मिश्र जाणीरे ॥ हिं० ॥ १३ ॥ जे निषेधे तो अंत्राय लागे, पुन्य कहै तो व्रत भांगेरे ॥ त्रसथावररी होवे हिंस्या, तिणरो पाप साधूने लागेरे ॥ हिं० ॥ १४ ॥ एकंत धर्म ठिकाणे बोले; पापरो कर्म निपेध्योरे ॥ मिश्र ठिकाणे किम नही बोले, इहां पुन्य पापना बंधोरे ॥ हिं० ॥१५॥ सूयगडांग इग्यारमे अध्येनें, मोख मारग साख्यातोरे ॥ संक्या होवेतो निचिंता देखो, कोई नही मुंडारी बातारे ॥ हिं० ॥ १६ ॥ धरमी अधरमी धर्माधर्मी, तीन करण तीजे ठाणेरे ॥ तिण ठामे फल कह्यो मिश्रनो, मूरख नमाने जाणीरे ॥ हिं० ॥ १७॥

मिश्रगुणठाणों तीजो चाल्यो, मिश्र चाल्यो वले योगोरे ॥ ए दोनु पाठ समावांगमे चाल्या, ते सद्द जो नो जे लोगोरे ॥ हिं० ॥ १८ ॥ सचित अचित मिश्र द्रव्ये तीन, नाम राजग्रही बोलाईरे ॥ सूत्र नगो तीरी पाठ उघाडो, विन जाएया खवरनकाईरे ॥ हिं० ॥ १९ ॥ अराधणी विराधणी मिश्रनाष्या, पाठ पन्नवणामे चाल्योरे ॥ साक्षात सूत्रनी वातनमानों, मत कूठो जिण झाल्योरे ॥ हिं० ॥ २० ॥ श्री वीर जिणंदने सुरियाभे पुछ्यो, आप कहो तो नाटक पारूहो ॥ थारा गोतमादिक साधाने, म्हारी ऋद्धि दिखाडुं हो ॥ हिं० ॥ २१ ॥ आज्ञा न दीधी नकारो न कीधो, मिश्रजाण मुंनराखीरे ॥ अर्थमे उघाडो देखो, रायप्रसेणीछे साखीरे ॥ हिं० ॥ २२ ॥ दसमीकालक मे मिश्र पाणी; कांई उनो कांई काचोरे ॥ पंचम अध्येन आहार मिश्रते, सूत्रमे जाणो थे सांचोरे ॥ हिं० ॥ २३ ॥ दोप बयालिसमे बेठामे, दोय मिश्र तिहां देखोरे ॥ इणरो निरणो थारे हात न लागे, तिणसुं मांडोरागने द्वेषोरे ॥ हिं० ॥ २४ ॥ इत्यादिक इम सूत्रमेछे, मिश्रतणा घणा बोलोरे ॥ इण बातरो म्हाने इचरज आवे, थे अंतर पाठ क्यों न खोलोरे ॥ हिं० ॥ २५ ॥ जिन बचनाकी श्रद्धा न राखे, तिणसुं उलटो पड गयो आटोरे ॥ इण श्रद्धामे नही निकले दाणो, थे कांई फोकटगणोरे ॥ हिं० ॥ २६ ॥ ध

रम पक्षामे साध मुनिसर, मिथ्याती अधर्ममे घा ल्यारे ॥ मिश्रपक्षमे श्रावक कहीया, ए तीन पाठ दूजे अंग चाल्यारे ॥ हिं० ॥ २७ ॥ पुन्य ठिकाणें पुन्य परूपो, पाप ठिकाणे पापोरे ॥ मिश्रठिकाणे मोनज राखो, इम सरधा सुधथापोरे ॥ हिं० ॥ २८ ॥ शिव धरमी तो धर्म बतावे, ते पंचथावर नही जाणेरे ॥ केईक जैनी हुवाज्यारा जोडायत, ए दोनो बात मिली एक ठाणेरे ॥ हिं० ॥ २९ ॥ पहले श्रावक केई साधारा धरमी, पाछे निन्हवारे पासोरे ॥ जाईने हुवा हिंस्या धरमी, श्रद्धारो कतीयो कपासोरे ॥ हिं० ॥ ३० ॥ कोईक भूखाने भाठामारे, कोई देवे वासने बाटीरे ॥ दोनोने एकंत पाप बतावे, ज्यारी अकल किहाने नांठीरे ॥ हिं० ॥ ३१ ॥ दया धर्मरी श्रद्धामीधी, सूत्र परखकर जाणोरे ॥ कुमी बातरो पक्षन करणो, पक्ष धर्मरो मानोरे ॥ हिं० ॥ ३२ ॥ कोई तो भोजनरांध जिमावे, कोई सूखडी देवे सुज्ञानीरे ॥ पुन्य विशेषरो निरणो कीजो, चतुर हीयामे जाणीरे ॥ हिं० ॥ ३३ ॥ मूरख लोक हुवा वसज्यारे, बोले जिम पढायासूवारे ॥ जाणपणारी जुगतन जाणे, निंदक साधारा हूवारे ॥ हिं० ॥ ३४ ॥ हिंस्या अहिंस्या कर दई सरखी, दान अदानज सरीखोरे ॥ कुडोमत ओ परतखदीसे, हाथ कंगण स्यूं अरीसोरे ॥ हिं० ॥ ३५ ॥ इम जाणी मिसरको मत उथापो, घ

णा सूत्रनी माखोरे ॥ पुन्य पाप पिण ओळखीखलीजो, निरवद बीतराग भाखोरे ॥ हिं० ॥ ३६ ॥ निन्हवण एकंत झूठ बतावे, नव बोलांमे पापोरे ॥ ज्यारी श्रद्धा सुणने अलगा रहिजो, सुधकीजो घट आपोरे ॥ हि० ॥ ३७ ॥ जिणमे कोई पडोलारे भाई, ते जाणो अपछंदारे ॥ घोर मिथ्यात ले दुरगति गामी, ते तो निन्हवारा बंदारे ॥ हि० ॥ ॥३८ ॥ सतरे बोलमे सगले ठामे, पुन्य पाप दोय जाणीरे ॥ श्रावक गुणवंत व्रतमे घाल्या, समझे चतुर सुग्यानीरे ॥ हि० ॥ ३९ ॥ आरंभरी तो थे हिंस्या जाणो, अनुकंपा ते दानोरे ॥ इम साभलजो थे उत्तम प्राणी, लीजो मिश्र ठिकाणों मानोरे ॥ हिं० ॥ ४० ॥ त्रसथावरना जीव विणासे, ते हिंस्या निश्चेकर भाखोरे ॥ सगला सूत्रना अर्थ विचारो, श्रद्धासाची राखोरे ॥ हि० ॥ ४१ ॥ दान दयासुं तो शिवपद होसी, इणसे सुख अपारोरे ॥ साधारी तो सुणजो वाणी, उत्तम करजो विचारोरे ॥ हि० ॥ ४२ ॥ आगम पाठ अरथमे देखी, सिझाय जोसी इम जोयरे ॥ अधिको उंणो भाख्या होवे तो, मिच्छामि दुकडं मोयरे ॥ हिं० ॥ ४३ ॥ सात सूत्रनी साखठे इणमे, घणा सूत्रनो समासोरे ॥ श्री बीतरागना वेणसुणीने, श्रद्धामे नकरोसां सासोरे ॥ हिं० ॥ ४४ ॥ हिंस्यारो पाप अनुकंपारो पुन, आ श्रद्धाछे सूधीरे ॥ हिंस्यागिणे नही त्रस थावररी, अक

ल ज्यारी मुंधीरे ॥ हिं० ॥ ४५ ॥ चर्चा सिझाय कही जुक्तीसुं, सोजतसहर मंझारेरे ॥ पुज्य श्री जैमलजी प्रसादे, ऋषरायचंद पर उपगारेरे ॥ हिं० ॥ ४६ ॥ इणरी तो परतीतजुराखो, जिम होसी सिव पुरवासोरे ॥ संवत अठारेसें वर्ष तेतीसे, कही चैत्रज मासोरे ॥ हिं० ॥ ४७ ॥ साची श्रद्धामे सेठो रहिज्यो, खोटी श्रद्धा द्यो टारोरे ॥ सूत्र अर्थरो निर्णो कारेने, लेजो सुरत विचारीरे ॥ हिं० ॥ ४८ ॥ इति भीषम पंथी वा तेरा पंथी जो संवत १८१८ के मे रघुनाथ साधूजीका चेला भीपम तिसने तेरा पंथी मत चलाया तिन को निन्हव नामसे कहिकर चरचा करीहै ते मिश्र चरचा सपूर्णम्. ॥

॥ अथ चेईय मतीयांसें चरचा लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ श्रावक धर्म करो सुखदाई ॥ एदेसी ॥ दया भगोतीछे सुखदाई, मुक्त पुरीकी साईजी ॥ साठ नाम दयारा चाल्या, प्रश्न व्याकरण मांहिं जी ॥ १ ॥ हिंस्या धर्म मिथ्यामत बाणी ॥ एटेक ॥ हिंस्या आद अनादरसिधी, बगरो चूंघण ध्यावेजी ॥ छोटा मोटा करकर इरखे, गुराबिन ज्ञान न पावेजी ॥ हिं० ॥ २ ॥ धर्म अपूर्व करतां दोहिरो, इंद्रीया स्वाद घटावेजी ॥ हिंस्या करता धामक धैया, भोलाने मन भावेजी ॥ हिं० ॥ ३ ॥ धर्म बतावें सुरग बारमो, नवो प्रासाद करावेजी ॥ इण बाता देव लोक सि

धावे, तो धनवंत नरक नजावेजी ॥ हिं० ॥ ४ ॥ ला
खा कोडांरो द्रव्य लगावे, जोलानर वहिकावेजी ॥तीका
चूरण जापा दिखावे, गोलागूंथ चलावेजी ॥ हिं०
॥ ५ ॥ एक सूत्रनी वात नही मानोतो, सगला सू
त्र देखोजी ॥ हिंस्या करकर कुगत पोहोता, तिहांमा
रतणो नही लेखोजी ॥ हिं० ॥ ६ ॥ जिण सासणनी
नीव दया ऊपर, खोजी हुवे तिको पावेजी ॥ हिंस्या
मांहिं धर्म वतावे, जलमथीया घृत न आवेजी ॥ हिं०
॥ ७ ॥ जिण आलाते पापनो थानक ॥ महानसीत
पाटउथाप्याजी, देवरा जोजग पेट जरीया, हीन आ
चारी थाप्याजी ॥ हिं० ॥ ८ ॥ देखादेखी बात्र प
डीया, अंधाआगल अंधोजी ॥ पुन्यरा थाट दयासुं
वंधसी, नही हिंस्यासुं सधोजी ॥ हिं० ॥ ९ ॥ पच
महाव्रत साधुजीलीना, दूर जांगा इक्यासीजी ॥ ते हि
स्याने रूडी जाणे, तो वरतमे होय विनासजी ॥ हिं०
॥ १० ॥ देसथकी श्रावक व्रतपाले, हिस्याकरे घर
बैठोजी ॥ जो हिंस्याने आछी जाणे तो, समकतमे न
ही सेठोजी ॥ हिं० ॥ ११ ॥ हिंस्या माहिं धरम प
रूपे, ए अनार्जनी वाणीजी ॥ आचारांग सूयगडाग
मे सुणता, नरकतणी सेनाणीजी ॥ हिं० ॥ १२ ॥
ग्याता अंगे द्रोपदा पूंजी, परणेवाने वारेजी ॥ जो
द्रोपदा श्राविका हुवे तो, पांच धणी किम धारेजी
॥ हिं० ॥ १३ ॥ तेहने समकत किण विध आवे,

नियाणो नही पुंगोजी ॥ मदन मास पचावे कान्हो, श्रावक आणे सूंगोजी ॥ हिं० ॥ १४ ॥ सुरसुरियाने प्रतिमा पूजी, राजवैसणने ठाणोजी ॥ वीजीवीरीया पूजी नही दीसे, वीजे देव इम जाणोजी ॥ हिं० ॥ १५॥ आणंदने आलावे भाखी, प्रथही चैतन वंदेजी ॥ साधु होयने निलियाजमाली, ते आणंद नही वंदेजी ॥ हिं० ॥ १६ ॥ अरिहंतने अरिहंत साधांने, अंबड वंदे धर प्रेमोजी; चेइय अर्थ प्रतिमाने वांदेतो साधुने वांधेसे केमोजी ॥ हिं० ॥ १७ ॥ पर मंदिर दोनुने लेगा, साधूने जाय जुहारोजी ॥ प्रतमाने दोपण रयूं लाग्यो, त पूजताने वारोजी ॥ हिं० ॥ १८ ॥ जंघा विद्या चारण वादता, केवल ज्ञान के ताईजी ॥ बिन आलोया बिराधक भाष्या, मानुपोत्र चैत नाहीजी ॥ हिं० ॥ १९ ॥ चमर इंद्रने अधिकारे चरचा, तिहां तुम प्रतिमा जाणोजी ॥ प्रतिमा तो सुर लोकमे हुंती, पिण बीर वचाया प्राणोजी ॥ हिं० ॥ २० ॥ अरिहंत चेइय साधुनो सरणो, तिहां तुम आटोआणोजी ॥ चेइय शब्द छदमस्त जिनेश्वर, तीजो शब्द एम पिछाणोजी ॥ हिं० ॥ २१ ॥ राजा नगरादिक सिणगास्या, सैन्यासुं परवरीयाजी ॥ जिण आरंभमे धरम वतावे, तो लागे सावद्य किरीयाजी ॥ हिं० ॥ २२ ॥ मान बडाई कारण कीधा, ऋद्धिवंत विधकर गर्जेजी ॥ संसारयानो बांदो जाणी, भगवंतते नही

वरजेजी ॥ हिं० ॥ २३ ॥ वांदणनी अज्ञा दीधी, ति हां तुम धर्म पिछाणोजी ॥ तीखुत्तो गुण वंदणाकीधी, भावे सुणो बखाणोजी ॥ हिं० ॥ २४ ॥ सुरियाभने नाटकनी वरीया, भगवंत मौनज कीधीजी ॥ वांदवा काणे अज्ञामागी, भगवंत हरखेदीधीजी ॥ हिं० ॥ २५ ॥ तीर्थंकरने घरमे बैठाणे, साधु न वादे कोई जी ॥ तो साधु प्रतिमा किम बदे, अतिसे एक हो ईजी ॥ हि० ॥ २६ ॥ चामर छत्र सिंहासणछाजे; भ गवंत आप विराजेजी ॥ भगवंतरे मूरछा नही कांई, देवतणी चतुराई साजेजी ॥ हि० ॥ २७ ॥ बीजो सा धु इण विधसेवे, करमांसु लीपावेजी ॥ भगवंतरे इरी या वहीकिरीया, तीजे समे खपावेजी ॥ हिं० ॥ २८ ॥ गोसालो निंद्याकर बोल्यो, भगवंत ऋधि किम मानो जी ॥ साधकहे भगवंत बीतरागी, तुं धरमरो मरम न जाणेजी ॥ हिं० ॥ २९ ॥ गौतमने पाखंडी बोल्या; थे सूध व्रत नही पालोजी ॥ ऊठो बेठो हालो चालो, थे पाप किसी विध टालोजी ॥ हिं० ॥ ३० ॥ म्हे साधु सू धा आचारी, करां छकायानो पालोजी ॥ थांरी कहणी थेईज मूरख, बिरत्त बिनाछो बोलोजी ॥ हिं० ॥ ३१ ॥ च्यार निखेपा सूत्रे चाल्या, भावबिना किम मानो जी ॥ तीन बोलमे गुण नही लाधे; भाव मिल्या पर धानोजी ॥ हिं० ॥ ३२ ॥ सूत्रमे चरचा बहुली चाली, कहता लागे बारोजी ॥ हलुकरमी हिंस्यासुंडरसी; ते

हनो खेवा पारोजी, हिंस्याधर्म मिथ्या मत बाणी ॥ हिं० ॥ ३३ ॥ इति चेईय मतीयासें चरचा संपूर्णम्

॥ अथ सामाईक सूत्रपाठके शह्वार्थ लिख्यते ॥

॥ अथ बंदन नमस्कार करनेका पाठ अर्थः (तिखुत्तो) तीनबार [आयाहिणं] आदक्षिणतः एतले जीमणा पासाथकी प्रारंभीने (पयाहिणं) प्रदक्षिणा प्रते (करीकरीत्ता) करीकरीने (बंदामि) वादूबुं पगें लागुंबु (नमंसामी) मस्तक नमाडीने नमस्कारकरूबुं (सक्कारेमि) सत्कार देवुंबु (सम्माणेमि) सन्मान देवुबुं (कल्लाणं) कल्याण कारी [मंगलं] मंगलकारी ॥ देवयं ॥ धर्मदेव (चेईयं) बकायना जीवाने सुखदायक एहवा ज्ञानवंत प्रते [पज्जुवासामि) पर्युपासुबुं एतले मन वचन कायाये करीने सेवा करूबुं (मत्थएण बंदामि) मस्तके करी वांदुबुं ॥ १॥ अथ रस्तेके चलेनेकी क्रियाका पाठ अर्थः (इच्छाकारेण) तुम्हारी इच्छा पूर्वक [संदिसह] आज्ञा करोतो (भगवन) हे महाभाग्य ग्यानवंत (इरिया वहियं) चलवानो जे मार्ग ते माहे थई एहवी जे जीव बाधादिक सपाप क्रिया ते थकी हुं (पडिक्कमामि पडिक्कमु निवर्तुं इहां गुरु कहे (पडिक्कमह) पाडिकमो निवर्तो पाप टालो तिवारे सिष्यकहे (इच्छ) प्रमाणछे हुं पिण (इच्छामि) इच्छुंबुं जे [पडिक्कमिउं] पाप कर्मसुं निवर्तन वास्ते (इरिया) रस्ता मांहि (वहियाए) चलता (विराह

णाए) दुखदीनोहोए (गमणागमणे) जावाताने आ वतां [पाण] प्रांणी जीव (कमणे) पगे करी चां प्या होय (बीय) बीजने [कमणे] पगें करी चां प्या होय [हरियक्कमणे] नील वर्ण वाली बन्स्प तीं पगेकर चांपी होय (उसा) सूक्ष्म अप्पकाय आकाससे पडेते [उतिंग] कीमीयाना नागरां (प णग) पाचवर्णनी नीलण फूलण [दग] पाणी (मट्टी) काची माटी ' मकडा ' कालेकातण मर्कट ' संताणा ' जालो पाडते जीव मर्कटना संताण ' सं कमणे ' एसर्वने पगेकरी पीड्या तथा मसल्या ' जे ' जे कोई ' मे ' मे पोते ' जीव ' जीवने ' बिराहिया ' विराध्या होय दुख दीनो होय ' एगिंदिया ' जेहने स रीर रूपि एकज इंद्री होय ते पृथ्वी पाणी अग्नि वायु वनस्पतीना जीव ' बेइंदिया ' सरीर तथा मुख दोय इंद्रीवाला जे संख सीप गंडोला अलसीया एहवा जेहने पग न होय ते बेइंद्री ' तेइंदिया तीन ' इंद्रीवाला शरीर मुख नाक होय ते कुंथुवा जूं लीख माकड कीडी ' चउरिंदिया ' च्यार इंद्री सरीर मुख नाक ने आं ख होयते माखी मछर डांस विछु भमरी जे उडन वाला जीव जेहने आठ पग तथा मस्तके सींग हो यते ' पंचिंद्रिया ' पांच इंद्रीयवाला जेहने सरीर मुख नाक आंख ने कान होयते जलचर १ थलचर २ खेचर ३ उरपर ४ भुजपर ५ एतिर्यंच तथा मनुष्य

हनो खेवा पारोजी, हिंस्याधर्म मिथ्या मत बाणी ॥ हिं० ॥ ३३ ॥ इति चेइय मतीयांसें चरचा संपूर्णम्

॥ अथ सामाईक सूत्रपाठके शद्बार्थ लिख्यते ॥

॥ अथ बंदन नमस्कार करनेका पाठ अर्थः (तिखुत्तो) तीनबार [आयाहिणं] आदक्षिणतः एतले जीमणा पासाथकी प्रारंभीने (पयाहिणं) प्रदक्षिणा प्रते (करीकरीत्ता) करीकरीने (वंदामि) वादूबुं पगें लागुंबु (नमंसामी) मस्तक नमाडीने नमस्कारकरूंबुं (सक्कारेमि) सत्कार देवुंबुं (सम्माणेमि) सन्मान देवुबुं (कल्लाणं) कल्याण कारी [मंगलं] मंगलकारी ॥ देवयं ॥ धर्मदेव (चेइयं) छकायना जीवाने सुखदायक एहवा ज्ञानवंत प्रते [पज्जुवासामि) पर्युपासुबुं एतले मन वचन कायाये करीने सेवा करूंछु (मत्थएण वंदामि) मस्तके करी वादुबुं ॥ १॥ अथ रस्तेके चलेनेकी क्रियाका पाठ अर्थः (इच्छाकारेण) तुम्हारी इच्छा पूर्वक [संदिसह] आज्ञा करोतो (भगवन) हे महाभाग्य ग्यानवंत (इरिया वहियं) चलवानो जे मार्ग ते माहे थई एहवी जे जीव बाधादिक सपाप क्रिया ते थकी हुं (पडिक्कमामि पडिकमु निवर्तुं इहां गुरु कहे (पडिक्कमह) पाडिकमो निवर्तो पाप टालो तिवारे सिष्यकहे (इच्छं) प्रमाणछे हुं पिण (इच्छामि) इच्छुं हुं जे [पडिक्कमिउ] पाप कर्मसुं निवर्तन वास्ते (इरिया) रस्ता मांहिं (वहियाए) चलता (बिराह

णाए) दुखदीनोहोए (गमणागमणे) जावाताने आ
वतां [पाण] प्रांणी जीव (कमणे) पगे करी चां
प्या होय (बीय) बीजने [कमणे] पगें करी चां
प्या होय [हरियक्कमणे] नील वर्ण वाली वनस्प
ती पगेकर चांपी होय (उसा) सूक्ष्म अप्पकाय
आकाससे पडेते [उतिंग] कीडीयाना नागरां (प
णग) पाचवर्णनी नीलण फूलण [दग] पाणी
(मट्टी) काची माटी ' मकडा ' कालेकातण मर्कट
' संताणा ' जालो पाडते जीव मर्कटना संताण ' सं
कमणे ' एसर्वने पगेकरी चांप्या तथा ममल्या ' जे '
ने कोई ' मे ' मे पोते ' जीव ' जीवने ' विराहिया '
विराध्या होय दुख दीनो होय ' एगिंदिया ' जेहने स
रीर रूपि एकज इंद्री होय ते पृथ्वी पाणी अग्नि वायु
वनस्पतीना जीव ' बेइंदिया ' सरीर तथा मुख दोय
इंद्रीवाला जे संख सीप गंडोला अलसीया एहवा
जेहने पग न होय ते बेइंद्री ' तेइंदिया तीन ' इंद्रीवाला
शरीर मुख नाक होय ते कुथुवा जूं लीख माकन कीडी
' चउरिंदिया ' च्यार इंद्री सरीर मुख नाक ने आं
ख होयते माखी मछर डांस विछु भमरी जे उडन
वाला जीव जेहने आठ पग तथा मस्तके सींग हो
यते ' पंचिंद्रिया ' पांच इद्रीयवाला जेहने सरीर मुख
नाक आख ने कान होयते जलचर १ थलचर २
खेचर ३ उरपर ४ भुजपर ५ एतिर्यंच तथा मनुष्

देव नारकी सर्व संसारी जीवते 'अभिहया' साम्हा आवतां हण्याहोय 'वत्तिया' एक ढिगले करी या त था धूलमें ढक्या होय 'लेसिया' भूमिमे घस्था त था लगारेक मसल्या होय 'संघाईया' माहोमाहि सरीरने मेलवीने एकठा मेलव्या होय 'संघटिया' थोडो स्पर्श करिवे करी दूहव्या होय 'परियाविया सर्व प्रकारे ताप्या पीडा उपजावी होय 'किलामिया' गाढो दुख उपजाव्यो मृतप्रायकीधा 'उद्दविया' उ दवजते दुसको उपजायो होय त्रास देने हाली चाली सके नही एहवाकीधा 'ठाणाउ' एक स्थान थकी उ पाडीने 'ठाणं' बीजे ठिकाणे 'संकामिया' मूक्या होय 'जीवियाउ' जीव थकी 'ववरोविया' मारीया होय नाशकीधो 'तस्स' ते संबंधि 'मिच्छामि दुक्कडं' पाप कहिये ते दुष्कृत माहिरा मिथ्या एतले निष्फल थाउ ॥ अथ आगे इरियावहीके वास्ते काउसग्ग करणेमे आगार पाठ तिसके शद्दार्थः 'तस्स' ते पापनीज वली विशेप शुद्धिने अर्थे जे काई आग ले करवुं तेहने उत्तरी करण कहिए एतले तेने हि ज 'उत्तरी करणेणं' विशेपे करी वली ऊपर शुद्ध करवुं अर्थात जे अतिचारोने आलोयण प्रमुख पू र्वे कीधोछे तेहनी वली विशेप शुद्धिने अर्थे कायो त्सर्ग करुंछुं ते कायोत्सर्ग तो 'पायछित करणेणं' शुद्ध प्रायश्चित ते पापनी आलोयणा करवा से होय

ते प्रायश्चित पिण ॥ विसोहिकरणेणं ॥ विशुद्धि नि र्मलता करवे करीने होय वली विशुद्धि पिण विशल्य होय तो थाय माटे ॥ विसल्ली करणेणं ॥ माया १ नियाण २ मिथ्यात ३ ए तीन शल्य टालवा थकी थाय ए उत्तरी करणादिक च्यार हेतु ये करी स्युं करवोछे ते कहेछे ॥ पावाण कम्माणं ॥ संसार हेतु रूप जे पाप कर्म तेहने ॥ निग्घायणठाए ॥ निर्घातन एतले छेदन करवाने अर्थे ॥ ठामि ॥ कायाने एक ठामे करूं छुं ॥ काउसग्गं ॥ कायाने हलाववी नही ते रूप काउसग प्रते करूंछुं ॥ हिवे इहां काया हलाववी नही एवी प्रतिज्ञा करीछे ते माटे सरीरनुं कांई पिण हालवो थयांथी प्रतिज्ञातो भंगथाय तेहथी काउसग्गमा बारे आगार मोकला राख्याछे ॥ अनत्थ ॥ आगे कह्या मूजब कायाहले तेहनो आगार माफी ॥ उससिएणं ॥ ऊंचोश्वासलेवाथी ॥ निससिएणं ॥ नीचोश्वास मुकवाथी ॥ खासिएणं ॥ खासीखोकलाथी ॥ छीएणं ॥ छींक आवाथी ॥ जम्भाइएणं ॥ जांभली अगर वगासुं लेवाथी ॥ उडुएण ॥ ऊकार आयाथी ॥ वायनिसग्गेणं ॥ वायु निकलतासे ॥ भमलिए ॥ अकस्मात चक्री कर आववाथी ॥ पितमुछाए ॥ पित्तरा कोपसुं मुर्छा आयांसे ॥ सुहुमेहि ॥ सूक्ष्म थोडोक ॥ अंगसंचालेहिं ॥ शरीर हलाववाथी ॥ सुहुमेहि ॥ थोडो ॥ खेलसंचालेहिं ॥ श्लेष्म तथा मुखना थूकनो चालववाथी कफगिल

वाथी ॥ सुहुमेहिं ॥ सूक्ष्म थोडी ॥ दिहसंचालेहिं ॥ च क्षु द्रिष्ट हालववासे ॥ एवमाइएहिं ॥ ए आदि करी ने बीजा ॥ आगारेहिं ॥ आगारलेताथका सर्पादिक तथाभीत पडता तथा बिल्ली कोई जीव ऊपर ठल घाल्यो होय तथा आगलागी होय इतरा कामार्थे अधवीच कावसग्ग पारेतो भांगे नही ॥ अभग्गो ॥ भागे नही खंडित हुवे नही ॥ अविराहिउ ॥ हानी पहोचे नही ॥ हुज्ज ॥ होजो ॥ मे ॥ म्हारो ॥ काउ सग्गो॥ कायास्थिर राखवो ॥ जाव ॥ ज्यासुधी ॥ अ रिहंताणं भगवंताणं ॥ अरिहंत भगवानने ॥ नमुक्का रेणं ॥ नमस्कार करूं त्या सुधी ॥ नपारेमि ॥ पारू नही ध्यान संपूर्ण न करूं ॥ ताव ॥ त्यासुधी ॥ का य ॥ म्हारी कायाने सरीरने ॥ ठाणेणं ॥ एक ठिकाणे स्थिरपणे राखीने ॥ मोणेणं ॥ अबोल रहीने ॥ झाणे णं ॥ एकाग्र ध्यान तेणे करीने ॥ अप्पाणं ॥ म्हारी काया ते प्रते ॥ वोसरामि ॥ हुंतजूं ॥ आ पाठ क हीने काउसग्ग ॥ लोगस्स उज्जोयगरे ॥ इत्यादि म न मांहिं ध्यान करणा ॥ णमो अरिहत्ताणं ॥ कहिने काउसग्ग पारिए ॥ प्रश्न ॥ कितनेक साधु साधवी श्रा वक श्राविका इरियावहिके काउसग करणेने इच्छा कारेणाके पाठ का काउसग करतेहैं ॥ उत्तर ॥ इच्छा का रेणका ध्यान मनमे नही चिंतवणा इच्छाकारेण गुरु तथा अरिहंत महाराजकी आज्ञा मुजिब प्रश्न

म इरियावहीके वास्ते इच्छा कारेणका पाठ पढा ति स्मे रस्तेके चलनेकी क्रियाका मिच्छामि दुक्कड हुवा फिर तस्स उत्तरी करणका पाठ आगार रखणेका कह्या तो काउसग्ग पहिले इरिया वहीका पाठ कह्या था ते कथा वोही ध्यान अर्थात काउसग्गमे कहणा एसा नही कह्या नही परंतु इरियावहीके अर्थ चोवीस गुणस्तवन मनमे चिंतवन कर काउसग्ग करणा औं र इरिया वहीका पाठ प्रथम खुलासा पढणा और दूसरे तस्स उत्तरी करणेणं का पाठ पढकर काउस ग्गमे लोग्गस्स उज्जोयगरे इत्यादि ध्यान करणा तो येही इरियावही का काउसग्ग कहाताहै अब का उसग्गमे चोवीस जिनस्तवन पाठ तिस्के शब्दार्थः ॥ लोगस्स ॥ पंचास्ती कायात्मक लोकने ॥ उज्जोय गरे ॥ उद्योतना करणहार ॥ धम्मतित्थयरे ॥ धर्म रूप तीर्थना करणहार एवा ॥ जिणे ॥ राग द्वेषना जीतनहार जे ॥ अरिहंते ॥ श्री अरिहंत तेहनो ॥ कि त्तइस्सं ॥ कीर्तन करीसुं तेहमे ॥ चउविसंपि ॥ ऋप भादिक २४ परमेश्वरनो नामोच्चारण पूर्वक कीर्तन करसुं अने अपिशब्दथकी अन्य जिनानुं पिण कीर्त न करसुं ते केहवाछे तोके ॥ केवली ॥ केवल ज्ञानी छे ते तीर्थंकरनो हु कीर्तन करिसुं॥ १ ॥ हिवे ते २४ जिनना नाम कहेछे ॥ उसभ ॥ श्री ऋषभ देव स्वा मीप्रते ॥ मजियं ॥ श्री अजितनाथ प्रते ॥ च ॥ व

ली ॥ वंदे ॥ वादूंहूं ॥ संभव ॥ श्री संभवनाथ प्रते ॥ अभिनंदण ॥ श्री अभिनंदननाथ प्रते ॥ च ॥ वली ॥ सुमइ ॥ श्री सुमतिनाथने ॥ च ॥ वली ॥ पउमप्प हं ॥ श्री पद्म प्रभूस्वामी प्रते ॥ सुपासं ॥ श्री सुपार्श्वनाथजीने ॥ जिणं ॥ राग द्वेपना जीतनहार ॥ च ॥ वली ॥ चंदप्पहं ॥ श्री चंद्र प्रभुजीने ॥ वंदे॥ वांदूंछूं ॥ २ ॥ (सुविहं) श्री सुविधिनाथजीने (च) वली एहनुं बीजो नाम [पुप्फदंतं] श्री पुष्पदंतजीठे ते प्रते [सीयल] श्री शीतलनाथजीने (सिज्जंस) श्री श्रेयांसनाथजीने [वासपुज्जं] श्री वासपुज्य स्वामी प्रते (च) वली [विमल] विमलनाथजीने (मणंत) श्री अणंतनाथजीने (च) वली [जिण] राग द्वेपनाजीतनहार एहवा (धम्मं) श्री धर्मनाथजीने ॥ शांति ॥ श्री शांतिनाथजीने ॥ च ॥ वली ॥ वंदामि ॥ वांदुंछुं ३ ॥ कुंथुं ॥ श्री कुंथनाथजीने ॥ अर ॥ श्री अरहनाथजीने ॥ च ॥ वली ॥ मल्लि ॥ मल्लिनाथजीने ॥ वंदे ॥ वादुंछुं ॥ मुणिसुव्वयं ॥ श्री मुनिसुव्रतस्वामी प्रते ॥ नमिजिण ॥ श्री नमि जिनने ॥ च ॥ वली ॥ वंदामि॥ वांदुंछुं ॥ रिठनेमि ॥ श्री अरिष्टनेमिजी प्रते ॥ पास ॥ श्री पार्श्वनाथस्वामी प्रते ॥ तह ॥ तथा ॥ वद्धमाणं ॥ श्री वर्द्धमानस्वामी प्रते हुं वांदूंछुं ॥ च ॥ चकार शब्द पादपूर्णार्थठे ॥ ४ ॥ एवं ॥ ए प्रकारे ॥ मए ॥ म्हारे जीवे जे ॥ अभिथुआ ॥ ना

म पूर्वक स्तव्या ते २४ परमेश्वर केहवाछे तो के ॥ विहुय ॥ टाल्याछे ॥ रयमला ॥ कर्म रूपी रज तथा म ल जेणे एहवाछे वली ॥ पहीण ॥ अतिशये करीने क्षयकरयाछे ॥ जरमरणा ॥ जरा तथा मरण जेणे ए हवाजे ॥ चउवीसपि ॥ २४ तीर्थंकर तथा अपि श ब्दथी बीजा पिण तीर्थंकर पूर्ववत लेवा ते सर्व ॥ जि णवरा ॥ जिनवर ॥ तित्थयरा ॥ तीर्थंकरते ॥ मे ॥ म्हा रा ऊपर ॥ पसीयंतु ॥ प्रसन्नहो ॥ ५ ॥ कित्तिए ॥ कीर्तितछे ॥ वंदिए ॥ वंदितछे ॥ महिया ॥ पूज्यछे इं द्रादिक पूजे एहवा ॥ जे ॥ तीर्थंकर ॥ ए ॥ एप्रत्यक्ष ॥ लोगस्स ॥ लोकने विषे ॥ उत्तमा ॥ उत्तम एहवा ॥ सि द्धा ॥ सिद्धथया एतले सिद्धिपाम्या एहवा हे सिद्ध भ गवंत तुममुझने ॥ आरुग्ग ॥ रोग रहित निर्मल ए हवो सिद्धपणो जाणवुं ते सिद्धपणो तो ॥ बोहिला भं ॥ बोधबीज जे श्री जिन धर्मनी प्राप्ति थाय ते वारे प्राप्त थायछे ते माटे श्री जिन धर्मनी प्राप्ति नो लाभ थवाने अर्थे ॥ उत्तम ॥ प्रधान समाधि ते प्रते ॥ दिंतु ॥ देवो ॥ ६ ॥ चंदेसु ॥ चंद्रमासे ॥ नि म्मलयरा ॥ अत्यंत निर्मल ॥ आइच्चेसु ॥ सूर्य समु दायसे पिण ॥ अहियं ॥ अधिक ॥ पयासयरा ॥ प्र कासना करणहार ॥ सागरवर ॥ प्रधान स्वयंभुरमण समुद्र तेहनी परे ॥ गंभीरा ॥ गुणेकरी गंभीर एह वाजे ॥ सिद्धा ॥ सिद्धो ते ॥ सिद्धिं ॥ मुक्तिजे तेह

ने ॥ मम ॥ मुझप्रते ॥ दिसंतु ॥ देवो ॥ ७ ॥ अथ सामायिक करणेका पाठ तिस्का शब्दार्थ ॥ करेमिभंते सामाइयं ॥ इत्यादि ॥ भंते ॥ हे पुज्य ॥ सामाइयं ॥ समता परिणामरूप सामाइकने ॥ करेमि ॥ हुं करुंछुं ॥ सावज्जं ॥ पाप तेणे करी सहित एहवा ॥ जोगं ॥ मन बचन कायाना योग ते प्रते ॥ पचखामि ॥ निषेध करूंछु ॥ जाव ॥ ज्यांसुधी ॥ नियमं ॥ सामाइक ब्रतना नियमने ॥ पज्जवासामि ॥ हूंसेवुंछुं रहुं त्यांसुधी ॥ दुविहं ॥ दोयकरणसो करणो करावणो ॥ तिविहेणं ॥ तीन योगसुं ॥ नकरेमि ॥ हुं करूं नहीं ॥ नकारवेमि ॥ हुं दुजापासे न करावुं ॥ मणमा ॥ मने करी ॥ वयसा ॥ वचने करी ॥ कायसा ॥ कायाए करीने ॥ तस्स ॥ तेसावद्य व्यापार पापने ॥ भंते ॥ हे भगवंत ॥ पडिक्कमामि ॥ निवर्तुंछु ॥ निंदामि ॥ हुं आत्मानी साखे निंदुछुं ॥ गरिहामि ॥ गुरुनी साखे हुं बिशेषे निंदुछुं ॥ अप्पाणं ॥ म्हारी आत्माने ते दुष्ट क्रियाथकी ॥ वोसरामि ॥ वोसिरावुंछु एतले विशेष करीने तजुंछु ॥ अथ नमस्कार माहमा नमुत्थुणंका पाठ तिस्का शब्दार्थः ॥ नमुत्थुणं ॥ इहां नमोस्तु एतले नमस्कारहो अने ॥ णं ॥ कार जेछे ते वाक्यालंकारने माटे छे कोने नमस्कारहो तोके ॥ अरिहंताणं ॥ श्री अरिहंत देवने ॥ भगवंताणं ॥ भगवंतने ॥ आइगराणं ॥ धर्मना आदिनाकरणारेन ॥ ति

त्थयराणं ॥ तीर्थनास्थापनार एतले साधु, साधवी श्रावक श्राविका ए ४ जातिना तीर्थना स्थापनारने ॥ सयसुबुद्धाण ॥ पोताने मेले सम्यक्त प्रकारे तत्वना जाण थया ॥ पुरिसुत्तमाणं ॥ पुरस माहिं उत्तम ॥ पुरिससींहाणं ॥ पुरुष मांहे पुरुषार्थ सिंहसमान ॥ पुरिसवर पुंडरीयाणं पुरिसमाहे पुंडरीककमल समान ॥पुरिस ॥ पुरुष माहिं ॥ बर ॥ ॥ प्रधान गंधहत्थीणं गंध हस्ती समानछे॥ लोगुत्तमाणं ॥ लोक मांहिं उत्तमछे ॥ लोगनाहाण ॥ लोकना नाथछे ॥ लोगहियाणं ॥ लोकना हितकारीछे ॥ लोगपईवाणं ॥ लोकने विशे प्रदीप समानछे ॥ लोगपज्जोयगराणं ॥ लोकमाहे उद्योतना करणारछे ॥ अभयदयाणं ॥ अभयदानना देणारछे ॥ चखुदयाणं ॥ ज्ञानरूपी नेत्रोना देणारछे [मग्गदयाणं] मोक्ष मार्गना देणारछे (सरणदयाणं) सरणना देणारछे [जीवदयाणं] संजमरूप जीवतना दातारछे (बोहिदयाणं) समकितरूप बोधना दातारछे (धम्मदयाणं) धर्मना दातारछे ॥ धम्मदेसियाणं ॥ धर्मना उपदेसना दातारछे (धम्मनायगाणं) धर्मना नायकछे (धम्मसारहीण) धर्मरूपरथना सारथिछे (धम्म) धर्मने विशे (बर) प्रधान (चाउरंत) च्यार गतिना अंत करवा माटे (चक्कवट्टीणं) चक्रवर्ती समानछे (दिवोताणं) संसार समुद्रमां द्वीप समान दुखना निवार्ण करनारछे (सरण) आधार [गइ) चार गति

मांहि [पइठा) पडतां जीवने (अप्पडिहय) नही हणाय यहवो (वर) प्रधान [नाण] ज्ञान (दंसण) दर्शन एतले देखवो तेने (धराणं) धरणार ॥ वियट्ट ॥ गयुछे (छउमाणं) छद्मस्थपणो एतले कर्म रूपी आवर्ण जेहने एहवा ॥ जिणाणं ॥ रागद्वेषजीत्याछे जेणे (जावयाणं) बीजाने राग द्वेषथी जिताव्याछे ॥ तिन्नाणं ॥ संसार रूपी समुद्रसे पोते तरयाछे अने ॥ तारयाणं ॥ बीजाने संसार समुद्रथी तारनारछे ॥ बुद्धाणं ॥ पोते तत्व ज्ञानने समझयाछे ॥ बोहियाण ॥ बीजाने तत्व ज्ञान समझावणार ॥ मुत्ताणं ॥ पोते चातुर्गतिक विपाक विचित्र कर्मथी मुकाणाछे तथा ॥ मोयगाणं ॥ बीजा अन्य प्राणीने कर्मथी मुकावणारछे ॥ सवनुणं ॥ सर्वज्ञछे ॥ सबदरिसिणं ॥ सर्व पदार्थना देखणारछे ॥ सिव ॥ सर्व उपद्रव रहित एहवा ॥ मयल ॥ अचल ॥ मरूय ॥ रोग रहित ॥ मणंत ॥ अनंत अंत करी रहित ॥ मखय ॥ अक्षय सास्वताछे ॥ मव्वावाह ॥ व्याधि पीडा रहित ॥ मपुणरावति ॥ जे गतिसे फिर संसारने विशे अवतार लेवो नथी एहवी ॥ सिद्धिगइ ॥ सिद्ध गतिछे एहवो ॥ नामधेयं ॥ नाम जेहनु एहवा ॥ ठाणं ॥ स्थानकने ॥ संपत्ताणं ॥ पाम्याछे अर्थात मोक्ष नगर प्रते पाम्याछे एहवा अरिहंत भणी ॥ नमो ॥ म्हारे नमस्कार होजो ते जिन भगवांन केहवाछे तो के ॥ जि

णाणं ॥ कर्मरूपी शत्रुने जीतणार तथा ॥ जियन्न याणं ॥ इह लोकादिक सातत्रय प्रते जीतणारछे ॥ अथ सामाइक पारवानो पाठ तिसको शब्दार्थः ॥ नवमां सामायक व्रतके विषे जे कोई अतिचार लाग्यां होय ते आलोउं ॥ नोमा सामाइक व्रतमे जो कोई दोस लग्या होय ते कहुंउं ॥ मन १ वचन २ काया ३ जोग माठा वरताया होय ॥ मन वचन काय ए तीनो योग खोटे वरताये होय ॥ मामाइक मे समता न आणी होय ॥ सामाइक करतां समता भाव नही कीया होय ४ ॥ अण पूगीपारी होय ॥ महुर्त पूरा हुया पहिले पारी होय ५ ॥ तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ ते दुष्कृत मिथ्या होजो ॥ दस दोष मनके दस दोषवचनके बारे दोष कायाके ए ३२ दोषांमे जो कोइ पाप दोष लाग्या होय तस्स मिछामि दूकडं ॥ दस दोष मनके तेना नाम सामाइकमे जस बाछे १ वडाई बांछे २ लोभ बाछे ३ भयथीकरे ४ नियाणे सहित करे ५ संदेह करे ६ सामाइकनो फलछे वा नही ७ गुरुकी विने भक्ति रहित करे ८ अहंकार सहित करे ९ अकाले तथा औसर विनाकरे १० दस दोष वचनके चपलताई से बोले १ क्रोध वचन बोले २ विने रहित बोले ३ गुणगुणाट कर बोले ४ काम रागे कर बोले ५ कलहकारी वचन बोले ६ बाद कर बोले ७ हास्य करी बोले ८ विकथा कहे ९ असंजतीने आवो जा

वो कहे १० कायाके १२ दोष वाहनी तथा वस्त्रनी पालठी घालीने बैठे १ अथिर पणे बैसे २ दृष्टि विकारे करवो ३ अनेराकाम करवो ४ सहारा लेइ विना कार्णे ५ काया पसारे ६ अलस्य करे ७ कड़का मोडे ८ मैल उतारे ९ बिण पूंजें खाज करे १० विन कार्णे पग दबावे ११ ऊघवो १२ ए ३२ दोष टालकर १ सामाइक करतां ९२ क्रोड ५९ लाख हजार ९ से पचीस पल्ल एक पल्लका ८ भाग की जे जिस्मेसे तीन भाग ऊपर इतनो आउखो देव गतिनो बंधे नरक गतिरो आउखो इतनो क्षय करे यह एक सामाइकका फलछे इति सामाइक सूत्र शब्दार्थ संपूर्णम्

॥ अथ १० दश पच्चखाण सूत्र पाठ तथा शब्दार्थ सहित लिख्यते ॥ उग्गसूरे नमुक्कार सहियं पच्चखामि चउव्विहंपिआहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं १ सहसागारेणं २ वोसरामि ॥ १ ॥ भाषार्थः सूर्यउग्यापछे नवकार सहित दोघडी प्रमान पूरा थया पछे जिहां लगें ३ नवकार पढ्या बिना पारूं नहीं तालगे पचखुं ते ४ प्रकारे आहार अन्न १ पाणी २ मिठाइ ३ फलमेवादि ४ अजाणपणे भूलके मुखमे वस्तु पडेतो पचखाण फूटे नहीं १ जबरदस्त मुखमे घाले तो पचखाण फूटे नहीं ए दो आगारछे ॥ १ ॥ उग्गेसूरे पोरसी पच

खामी चउविहंपिआहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अणत्थणाभोगेणं १ सहस्सागारेणं २ पच्छिन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेणं ५ सवसमाहिवत्तीयागारेणं ६ वोसरामि एवं साढ पोरसीयं भावार्थ ॥ इहां आगारमे २ आगारार्थ पूर्ववत जाणने मेघधूंवारि करि सूर्य ढाक्या होय तिस वास्ते पूरी खबर पोरसीमे नपडे तो पचखाण पारता भंग नथी ३ दिसा भूला होय याने पूर्व पश्चिमकी खबर न रही भ्रमचित करी पचखाण भंग नथी ४ साधुकहे साधुसे पहर दिन तथा दोढ पहर दिन आयो इम सुणीने पचखाण पारे तो भंग नही ५ वली जिहांताई समाधि सरीरमे होवे तिहां ताई जिवारे सूलादिक अस्माध होवे तिवारे बिकल थयो रोग दूर करवाने अर्थे उपधी लेवोतो भंग नही ६ ॥ उग्गए सूरे पुरमढं पच्चखामि चउविहंपिआहारं असणं पाणं खाइम साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहस्सागारेणं २ पछन्न कालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेणं ५ महत्तरागारेणं ६ सवसमाहि वत्तीयागारेणं ७ वोसरामि ॥ ३ ॥ अर्थ इहा आगार ७ कहतो पूर्ववत जाणणे १ मोटो कोई धर्म कार्य वास्ते पचखाण पारे तो भंग नही मित्यर्थ ॥ उग्गए सूरे एगासणं बिआसणं पचखामि दुविहं तिविहं पिआहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अनत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ सागारियागारेणं ३ आउट्ट पसारेणं ४

गुरु नूठाणेणं ५ परिठावणियागारेणं ६ महत्तरागारे णं ७ सवसमाहिवत्तियागारेणं ८ बोसिरामि ॥ ४ ॥ नावार्थ इस एकासनमे एक वक्त आहारकरे वा दो वक्त ते उप्रांत पचखान जो दो आहार पचखेतो अ सनखादिम पचखे और तीन आहार पचखेतो अ सन खादिम स्वादिम पचखे तथा ४ आहार पाणी सहित पचखे तिसमे ८ आगार ४ आगारके अर्थ पहिले लिखआयेहै और ४ आगारार्थ येहै एक आ सन बेठा और गृहस्थ आवे तव आसन उरहा प रहा करता पचखान नंग नथी ३ हाथ पग संको चतां पसारता आसन चलावे तो नेम नंग नथी ४ एक आसन बेठ्या गुरु आवे तिनकी आसनसे उ तर कर विनयकरे तो नेम नंग नथी ५ आचार्य उ पाध्याय ग्लान थया ते आहारादिक आणो तिनके वास्ते पिण उनसे किया न जाय तो एकासनां मा हि वा आयंबल उपवास माहिं खाता नेम नंग नथी ए आगार साधुके पचखाणमेहै परंतु श्रावकके पचखान करानेमे नही [परिठावणियागारेणं] ६ मित्यर्थ सूरे उ ग्गे एकलठाणं पचखामि चउविहंपि आहारं असणंपाणं खाइमं साइमं अनत्थणा नोगेणं १ सहसागारेणं २ सा गारियागारेणं ३ गुरु नुठाणं ४ परिठावणियागारेणं ५ महत्तरागारेणं ६ सवसमाहि वत्तियागारेणं ७ वोसरामि ॥ ५ ॥ नावार्थ एक आसन पर बेठकर हाथपग घ

णा हलावे नहीं एक हाथसे जिमे फिर ४ आहारमे से कोईसा आहार करे नही तेह एकलठाणा इसमे आगार ७ है तिनके अर्थ पूर्ववत मित्यर्थ॥सूरे उग्गे आयंबिलं पच्चखामि तिविहंपि आहारं असणं खाइ मं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहस्सागारेणं २ लेवा लेवेणं ३ गिहत्थ संसठेणं ४ उखित्तविवेगेणं ५ परिठा वणियागारेणं ६ महत्तरागारेणं ७ सवसमाहि वत्ति यागारेणं ८ वोसरामि॥ ६॥ भावार्थ आंबिल ते घृता दि तथा रसादि रहित एक पाणीसेती आहार करे एक वार उप्रांत पाणी आगार रखकर तीन आहार का त्याग करे जिसमे ८ आगार माहिथी ५ आगा रार्थ पूर्ववत और तीन आगार अर्थ इस तरेहै ते ले प विगय खरड्यो वरतन वा सागादिक वरतन तथा हाथ खरड्या होय तिसके हाथसे तथा सागादिक र हित वरतनसे आहार कर्ता नेम भंग नही ३ और जो गृहस्थे अपने वास्ते हाथ वा करछा आदिक वि गयमे खरड्या होय तिसी हाथसे वा करछादिकसे आहार देयतो ते आहार करता नेम भंग नही ४ और जो घृतादि विगय वरतन ऊपरसे आहार लेइ तो नेम भंग नही ५ इत्यर्थ॥ उग्गएसूरे अभतठं पच्च खामी तिविहंपिआहारं असणं खाइमं साइमं अण त्थणा भोगेणं १ सहस्सागारेणं २ (परिठावणीयागारेणं ३) महत्तरागारेणं ४ सवसमाहिवत्तियागारेणं ५ वो

सरामि ॥ ७ ॥ भावार्थ सूर्यउदय पछे भक्तार्थ जिहां कोई भक्त नथी ते अभक्तार्थ उपवास कहिए जैसे उपवासकु चउथभक्त पचखाण कहतेहैं ते चार भक्त कौणसी प्रथम भक्तमे सांझके शेस दिनकीमे आहारादिक त्याग दूसरी भक्त वो जोकि ४ प्रहर रात्रीकी तिसरी भक्त वो जो कि ४ प्रहर दिन हुआ चोथी भक्त वह जोकि ४ प्रहर की अगली रात्री हुई और पांचमी भक्तके दिवसेमे आहार लेवे इसवास्ते उपवासकु चउथ भक्त आहारके त्यागनेसे अभक्तार्थ कहिये तिसमे च्यार आगार तथा ५ आगार (परिठावणीयागारेणं) ए पाठ गृहस्थके पचखाणमे नही इनके अर्थ पूर्ववत मित्यर्थः॥ उग्गएसूरे पाण अहार पुरमड्ढ पचखामि अन्नत्थणा भोगेणं १ सहस्सागारेणं २ पछन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेण ५ महत्तरागारेणं ६ सवसमाहि वत्तियागारेणं ७ पाणस्सलेवेणवा १ अलेवेणवा २ अछेणवा ३ बहुलेणवा ४ ससीत्थेणवा ५ असीत्थेणवा ६ वोसरामि भावार्थ सूर्यउदयसे दो प्रहर दिवस ताई पाणीनो पचखाण जिसमे ७ आगारार्थ पूर्ववत परंतु पाणी ६ प्रकारका आगार खजूर पाठा निगोथानो पाणी १ अलेपजल ते कांजी प्रमुख उकाल्यो पाणी २ घोलो चावलानो धोवण पाणी ३ उष्ण निर्मल पाणी ४ सथिसहित उसामणादि पाणी ५ सी

तते नाज आदिक अंस रहित मेवादि धोवण फा
सु पाणी ६ ए पाणी आगार उप्रांत ३ आहारका
नेम ॥ ७ ॥ दिवस चरम पचखामी चउविहंपि आ
हारं असणं पाणं खायमं साइमं अणत्थणाजोगेणं १
सहस्सागारेणं महत्तरागारेण सवसमाहिवत्तीयागारेणं
४ बोसरामि ॥ ८ ॥ जावार्थ इहा एकता दिवस चर्म
तथा जव चर्म दिवस चर्म त संध्यासमे पचखे जि
हांतक सूर्य उदय नही होय और जे जव चर्म जा
व जीव तांई करे ते संथारा कहिये अपनी आयूका
ओसर जाणीनें करे जिस दिवस चर्मके ४ आगार
तिनके अर्थ पूर्ववत मित्यर्थ उग्गए सूरे गांठि सहि
अं मुठि सहिअं पचखामि चउविहं पिआहारं असण
पाणं खाइमं साइम अन्नत्थणाजोगेणं १ सहस्सागारे
णं २ महत्तरागारेणं ३ सवसमाहि वत्तियागारेणं ४ वो
सरामि ॥ ९ ॥ जावार्थ इस पचखाणमे वस्त्र तथा डो
रेमे गांठ देई खोले तिहां तक पचखान तथा मुठि
पचखाण समे करी खोलते समे मुठि जीडीवर खोलुं
नही तिहांतक ४ आहारनो पचखाण ते इहां ४ आगा
र पूर्ववत इत्यादि अजिग्रह नेम मित्यर्थ ॥ उग्गए सूरे
निविगइ एकासणं पचखामि तिविहंपि आहारं अस
णं खाइमं साइमं अणत्थणाजोगेणं १ सहसागारेण
२ लेवालेवेणं ३ गिहत्थसंसठेणं ४ उखित्तविवेगेणं
५ पडुचमखिएणं ६ पारिठावणीयागारेणं ७महत्तरागा

रेणं ८ सवसमाहि वतियागारेणं ९ वोसरामि ॥ १०॥
भावार्थ इह विगय पचखानेमे तो यथा प्रमाण क
र्या होय तैसा करे ते दूध दही घृत तेल गुड ओ
९ निविगइनुं एकासण सहित ते उप्रांत तीन तथा ४
आहार नो पचखाण मे ९ आगार ते आठ आगार अर्थ
पूर्ववत (पडुचमखीएणं) ते रोटी करणे वाली स्त्री थोमा
सा मोंण रोटीमे दीधा होय तथा हाथ घृतका मसल्या
हो नरम रोटीके होणेकुं ते रोटी लेता पचखाण नं
गे नहीं ते आगारहे मित्यर्थ ॥ देसावगासीयं उ
वनोगं परिनोगं पचखामी अणत्थणा नोगेणं १ स
हसागारेणं २ महत्तरागारेणं ३ वोसरामि ॥ १ ॥
भावार्थ दिसनी मर्यादा जिस मांहिं करीये ते देसा
विगासी संवर नाम (उपनोग) एकबार जे वस्तु
नोगमे आवे दंतणादिक (परिनोग) जे वस्तु वा
रबार नोगनेमे आवे ते स्त्री वस्त्रादिक तेहनी मर्याद
करे जिसमे आगार ३ पूर्ववत इत्यर्थ ॥ अथ १४
नेम के नाम सचित १ दब २ बिगइ ३ पणही ४ तंबोल
५ वत्थ ६ कुसुमेसु ७ सयण ८ बाहण ९ बिलवण
१० अबंन ११ दिसि १२ न्हाण १३ नत्तेसु १४ इ
ति श्री प्रत्याख्यानागाराणि संपूर्णम्

अथ सामाइक करनेकि विधि लिख्यते

प्रथम तिखुतोके पाठसे बंदना करि निज गुरुकी
आज्ञा लेय जो अपने गुरु और किसी देसमे हो

यतो भावें करी आज्ञा लेवे क्योंकि गुरों का उपदे स और आज्ञा धर्म कार्यमे हमेसा करने कीहै तथा अपने नगरमे जो साधु होय तिनकी आज्ञा लेवे और नवकार एकओर पढे और अरिहंत्तो का पाठ इ च्छा कारेणका पाठ तिस्सउत्तरी का पाठ कहीने लोग स्स उज्जोयगरे के पाठका काउसग ३ करे पछे णमो अरिहताणं शद्द कहीने काउसग्ग पारे (ध्यानके विषे मन वचन कायाका जोग माठा वरता होय त स्स मिछामि दुक्कडं) कहे खुली लोगस्स उज्जोयगरे कहे गुरु तथा साधुकी आज्ञा लेईने करेमी भंते के पाठ से सामाइक करे आपकरे जिसमे तो (वोसरा मि) पाठ कहे और किसी साधर्मी भाई को पच खांन करावे तो वोसिरे २ कहे फिर वामा गोडा उ भा याने उंचा करीने दाहिणा गोडा जिमीसे लगाइ कर दोय वार नमुत्थुणं का पाठ पढे दूसरा नमुत्थु णं के आगे [ठाणं संपाविओ कामस्स नमोजिणा णं] इम कहे और सामाइक पारता इच्छा कारेण तस्स उत्तरी कहिकर पूर्ववत काउसग्ग करीने दोय नमुत्थुण पढीने नवमा सामाइक व्रतका पाठ पढक र तीन नवकार पढे ॥ इति श्री सामाइक अर्थ वि धि तथा दस पचखान शद्वार्थ संपूर्णम्

॥ अथ अष्टादश दोष रहित जिनस्तवन लिख्यते ॥

परमेष्ठी पद मनमे धारी, कहुं मे देव स्वरूप ॥

दोप अष्टादश रहित जिनेश्वर, सुंदररूप अनूप
१ ॥ चतुर नर वीतराग जिन सेवो, जिम उत्तम
द तुम लेवो ॥ चतुर० ॥ टेक ॥ दान लाभ भोग उ
भोगजु, बलवीर्य अंत्राय ॥ पाचोंक्षयकर अंनत ब
के, सुरनर सेवे पाय ॥ च० ॥ २ ॥ हास्य रतारी
भय दुगंछा, सोक नहीलवलेस ॥ मनमत्थ मोह
ग्यानरू निंद्रा, नही अविरत जिनेस ॥ च० ॥ ३
राग द्वेप ए दोप अठारे, त्यागे श्री जिनराय ॥ अ
र देव ऐसा नही जगमे, जो अरिहंत पदवीपाय ॥ च
॥ ४ ॥ अनंत ग्यान दरसनके धारी, चारित्र तप
अनंत ॥ अनंत वली तारक जग स्वामी, भय भंज
न भगवंत ॥ च० ॥ ५ ॥ नरक देव तिरयंच म
ष्यनी, आवा गमन विचार ॥ अविचलपदवी सिद्ध
णी तुम, पामी अधिक उदार ॥ च० ॥ ६ ॥ ऋपर
ज कहे करनाल नगरमे, देव स्वरूप बखान ॥ जि
न आग्या आराधिक प्राणी, पामे शिवसुखथान
॥ च० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ नमीराज ऋपीकी सिझाय लिख्यते ॥

॥ वीतराग पद सेवीयेजी, कीजे सुध परि
णाम ॥ नमी राजा मिथुला तणोजी, भोगे सुख अ
भिराम ॥ सोभागी धनधन नेमीराय ॥ १ ॥ पूर्व क
रम उदेथकीजी, उपन्यो दाघजु रोग ॥ नारी तव चं
दन घिसेजी, सीतलताके जोग ॥ सोभागी धनधन

नेमीराय ॥ २ ॥ शोर शद्द सुणता थकाजी, उप
ज्यो मन वैराग ॥ जीवसदाछे एकलोजी, इम
जाणी जग त्याग ॥ सो० ॥ ३ ॥ जातीसुमरण ज्ञान
सैजी, लीधो संजम भार ॥ नगरी बाहिर आवियाजी,
तनसे ममत निवार ॥ सो० ॥ ४ ॥ सक्रइंद्रातिहां आ
इकेजी, प्रश्न बहुविध कीध ॥ निर्मल बुद्धि जोगसें
जी, उत्तर सगले दीध ॥ सो० ॥ ५ ॥ अहो अच
जछे ताहिराजी, खिमावंतगुणगेह ॥ करजोडी सिर
नामकेजी, गयोसुधर्मे नेह ॥ ॥ सो० ॥ ६ ॥ नमी
ऋपीतपसाधकेजी, मुक्तगये महाराय ॥ जन्म मरण स
हु टालकेजी, अजर अमर पद पाय ॥ सो० ॥ ७ ॥
श्री जिन वाणीछे खरीजी, उत्राध्येनाविचार ॥ नोंमे
अध्ययने भाखीयाजी श्री जिन बहु विस्तार ॥ सो० ८ ॥
संवत उनीसे इक्यावनेजी, कठप नामे ग्राम ॥ नेमी
गुण चौमासमेजी, कहै ऋपरायजुस्वाम ॥ सो० ॥ ९ ॥

॥ श्री गुरुभ्योनमः ॥

॥ अथ रामचंद्र लक्ष्मण कथा सझाय लिख्यते ॥

कालसे डररे, नादान कालसे डररे ॥ कालका सब ज
गहै खाजा, कि खयगये बडे बडे राजा ॥ काललेगर
दन पकड उठावे इंद्र और चक्री राजाक्या कालसे
डररे ॥ १ ॥ निज समकितकु तुंगहिरे, निग्रंथ धर्म
तुलहिरे ॥ नर भवको सुफल करलेरे ॥ जगतका ख्या
ल सबकूठा ग्यानी निज आतम मीठा ॥ का० ॥ २ ॥

है क्रोधमान दुखदाई, मायाकी गिरहलगाइ, लालच से लाज गमाइ, हुवा मोहकरम विच अंधा, जगत का सब कुठा धंदा ॥ का० ॥ ३ ॥ नृमपरवडे चक्रधारी का पत जिन प्रथवीसारी, अरे तेरी कालसे यारी विचार कर मनमे तुं प्रानी सुफल कर अपनी जिंदगानी ॥ का०॥ ४ लंकाका राजा रावन, दल फौज घटा जिम साव न सुत, इंद्रजीत मेघवाहन, आनमरयादा जिन तोरी ॥ करी परनारीकी चोरी ॥ का० ॥ ५ ॥ कुंनकरन नविक्षन भाई, औरांकी गिनती नाही, सोनेकी लंकवनाई हु ॥ वा नृपत सिरताज करेता तीन खंडकाराज ॥ का० ॥ ६॥ एक दिन दरवार. सजीला कर रह्याथारावं हठीला, रंग विनोदमे खुसनीला राजतपरहाथा अखंडित आ या इक जोतिसका पंडित ॥ का० ॥ ७ ॥ नृपत कहे पांडे तसें यूं, मे तीन खंडराजा हुं, नही लडने लायक को इमोसुं ॥ पंडितकह आगमका हाल होवेगा, किस्के हा थसेरा काल ॥ का० ॥ ८ ॥ तबपंडित यूं वतलावे परनारी तुम मन भावे; तुं उस्को चराकरल्यावे, जद उसका पति चढि आवेगा ॥ दखल वहतेरा उठावेगा ॥ का० ॥ ९॥ हे सती सतवंती, उतकृष्टी सीलगुनवंती, तीन लोकमे जसवंती ॥ कंत उस्केका वीर होगा के, रावणसोतुजमारेगा ॥ का० ॥ १० ॥ नलकुवेर समान जोडी, जो धनुष अर्नवाव्रत मोडी, जोवर राय वंध तोमी ॥ संवुककासीसउतारेगा, कि रावण

सोतुझ मारेगा ॥ का० ॥ ११ ॥ जो भय सुग्रीव मि टावे, तारा उसकी दिलवावे, कपियोंको दासवनावे ॥ साहसकी विद्या भगावेगा के, रावण सोतुझमारेगा ॥ का० ॥ १२ ॥ औरे अंजनीसूत जाकापायक, हो तीन लोकमे नायक, परजा कहती सुखदायक ॥ सिला जो कोड उठावेगा के, रावनसोतुझमारेगा ॥ का० ॥ १३ ॥ लक्ष्मातेरी सक्तीसेती, जो सती बिसल्यावरसी, जो चक्रसुदर्सन लेसी, भविक्षनको दासवनावेगाके, रावनसोतुझ मारेगा ॥ का० ॥ १४ ॥ है नगर अजुध्यास्वामी, हो जसरथ के घर आमी, सुतराम लक्ष्मन दो नामी ॥ ले आठमा बासुदेव अवतार, करे रावन तेरा संहार ॥ का० ॥१५ ॥ जोतिसकी बाता सुनकर, भूपतगुस्सेमे भरकर, पंडितसें बोल्याबसकर सिरउन दोनोका मंगवाताहुं, कि निमतीको झूठकहलाता हु ॥ का० ॥ १६ ॥ मेरे बीर भविक्षन आओ तुम नगर अजुध्याजाओ, सिर जसरथजनक लेआओ ॥ चैनतो मुझे उसदम आवेगा, कि उनका खोज मिटावेगा ॥ का० ॥ १७ ॥ अरे होनहार नही मिटती, करमोकी बडीहै सकती, ततेबीर कुछ नही चलती ॥ भविक्षन गलसीर उतार आया, पर उनका भेद नपाया ॥ का० ॥ १८ ॥ तब हुवा नचिंता राजा कर आनंद मंगल बाजा, धन दौलत संपत साजा ॥ हुई रामलक्ष्मनकी जोडी, ाब मंदिरमे कोडी

॥ का० ॥ १९ ॥ वह जनक राजाकी जाई, जसरथ सुतको परनाई, सब लोगोंके मनभाई ॥ बढे दिन पर दिन हररोज, अनीतका नही राजमे खोज ॥का० ॥ २० ॥ जसरथ वैरागमे आया, रामजीको तिलक कराया केकईके मन नही भाया ॥ वचन पूरनश्री तमकीजे, भरथको राजतिलक दीजे ॥ का० ॥ २१ ॥ छत्रीयोंका वचनहै अणमिट्ट, मशहूर त्रियाकी ए हट्ट, दिख्यामे कर दई खटपट ॥ रामजी पिता पासआया, भरथको टीका दिलवाया ॥ का० ॥ २२ ॥ तव राम चलेथेवनको, लीयासाथ वीरलछमनको, सतवंती के हैथी उनको ॥ रामजी लारे मुकलीजे, दगा अबला को क्या दीजे ॥ का० ॥ २३ ॥ तव नगर रोवेथा सारा, रामज बनखंड सिधारा, परजाको कोंनसहारा ॥ भरथ सिरपीटे दोनु हाथा, गजबकरदीयाकेकई माता ॥ का० ॥ २४ ॥ परकारज जग करते, दूखीया जन के दूखहरते, जो दुरजन सो सहुभरते ॥ रामजी दंडक वनमे आये, कि जटायू पंख्यादि हरखाये ॥ का० ॥ २५ ॥ वनफलका आहारनितकरणा, अरिहंत देवका सरणा, सिंहोंको किससे डरणा ॥ गुजरे बरस जव बारा, तवमुनीये होनीका चारा ॥ का० ॥ २६ ॥ इक दिन लछमनजु अकेला, फल लेण गया अलवेला, हुआ खडग हांससे मेला ॥ परिख्या कार खड्ग चलाया, सीस संवूकका उडाया ॥ का० ॥ २७ ॥

जव सरूपनखा चढि आई, सिरकटा रहास सुतपाई जाय लंकादई दूहाई ॥ वीरातेरे राजमंझारे, मुऊप तिदेवर सुतमारे ॥ का० ॥ २८ ॥ हैं दडकमे दो आ दम, ऐसे को नही देखे हम, रूपतो उनका इंदरसम ॥ रावनमुजन जरआवे ऐसी, राजयह तेरा नही रह सी ॥ का० ॥ २९ ॥ इकबात मैं ओर कहतीहुं, नारी उ नकी इंद्राणीजुं, बरनन नही होवेमुझसु ॥ अगर तुं उसको देखेगा, कि राजकु साराभूलैगा ॥ का० ॥ ३० ॥ अबलाहे रूपें एहवी, मनपनी नही वइदेवी, एक बा रजो देखे तेवी ॥ मंदोदरि आदिकसबरानी, सगली जाय खिस्याणी ॥ का० ॥ ३१ ॥ अकासे मेह जिमगरजे, मोरसुनत हियोलरजे, अरेहोनी आके सरजे बैठी पु ष्पक नाम बिमान; वहरावन पहोचा अटवी आन ॥ का० ॥ ३२ ॥ तिहां देवी राव विचारो, कहो कारज हमरासारो, रामजीको इहांसेटारो ॥ रामजी जबतक नही जावे, हाथसीता नही आवे ॥ का० ॥ ३३ ॥ देवीने भेदवतायो, सिंघनाद करीभरमायो, हरलछम न पासे आयो॥ रावनने पकडसीयाकाहाथ, चलयो ले अपनीसाथ ॥ का० ॥ ३४ ॥ जिममूसापकड मंझारी, कु छ बस नही चलतानारी, योंतडफैथीराजदुलारी ॥ बा गमे लंकाके दरम्यान, उतारा पुष्पनाम विमाण ॥ का० ॥ ३५ ॥हुई रावन दिलखुस्याली, वो रोती सिता बाली, हरलछमन बिपतनिहाली ॥ फिरे सिता कार

न जमते, के आंसूहरके नहीथमते ॥ का० ॥ ३६ ॥
सुग्रीव कपियोकाराजा, आया निज दुखके काजा लख
मनजी दीना साजा ॥ साहसको परजव दिखलाई कि
ताराउनकी दिलवाई ॥ का० ॥ ३७ ॥ उपगार कपी
ने मान्या, वासुदेव आठमाजान्या, हुये एकठे सब
रांना ॥ लक्ष्मनने कोफ सिलाउठाई, कि संक्यासब
उनकी मिटाई ॥ का० ॥३८॥ लंकाकी करी तईयारे,
हुयेसुजट एकठे सारे, सबने फोजा श्रंगारे ॥ लंकाप
रचढकरआये, रामजी दलबादल ल्याये ॥ का० ॥ ३९ ॥
रावण घरमचती खलबल, जविक्कन आयाथाचल
वीरामोहिन पडतीकल ॥ सिता कारन पतिक्योंखो,
वे, हासिलइसमे क्याहोवे ॥ का० ॥ ४० ॥ रीसाना
रावहठीला, होकर कह्या नीलापीला, ते वचन घाव
क्योंमेला, जविक्कण सुहपति दिखलावे ॥ वचन मु
ऊ तेरा नही जावे ॥ का० ॥ ४१ ॥ खिस्यानाजवि
क्कन जाई, आया रामदलाके मांहिं, हरजीसुनमान व
धाई ॥ हुवापुन्य पूरा रावनका, बिगडाजब जाईतनका
॥ का० ॥ ४२ ॥ मंदोदरी यों समझावे, कंतसीया हा
थ नही आवे, सीता सतीसत न डिगावे ॥ जो आप
इंद्र घर आवे, तोजी सीया हाथ नही आवे ॥ का०
॥ ४३ ॥ हर जांतरावमे चेरी, प्रीतम तु मानलेमेरी,
यह हठ नही अगी तेरी ॥ सतीको जो सतावेगा,
कि चैन हरगिज नही पावेगा ॥ का० ॥ ४४ ॥

सीताको उलटी देकर, बिन अंदेसे राज अपनाक र, जो रामनमाने तिसपर ॥ निसंक तुं लमीयोउनसे तो. कवीन होगी तेरी हेठी ॥ का० ॥ ४५ ॥ सीता को जानले होनी, यह घरमेटीमीदेनी, तीन खंड की संपत खोनी ॥ कंथमे जोडु दोनो हाथ; छोडदें तु यह हठकी बात ॥ का० ॥ ४६ ॥ जब होनहार जो आवे, नावे कोई समझावे. हरगिज नही आडी आवे ॥ करम गति जब आके सरजे, चले नही कोई कितना वर जे ॥ का० ॥ ४७ ॥ वे येक समेमे नूपति, गरना या देखकर संपति, मान कीहै करमागति ॥ हठीला लडनेको ध्याया, साम्हने लछमनजी आया ॥ का० ॥ ४८ ॥ इंद्रकी दई जो सक्ती, जगमे बी जलीयों चमकती. लछमनके अंगे लगती ॥ बीर जब मरछामे आया, रामदलसारा घबराया ॥ का० ॥ ४९ ॥ है सील बिरत अधिकाई; जब सती बिसल्या आई, सक्तीको दई नगाई ॥ चेत हुवा दसरथराज कुंवार, रामके दलमे जै जै कार ॥ का० ॥ ५० ॥ जब मरन मोत दिन आया, रावणने चक्रचलाया; लछमनने हाथ फैलाया ॥ हाथपर चक्र आन बैठा, सोचैतवराव म न धेठा ॥ का० ॥ ५१ ॥ मेंझूठीराडउठाई, जो सीता सती चुराई, नाहकको लाजगमाई ॥ निमती होता दीसे साचा, कह्या था जो ज्ञानीने बाचा ॥ का० ॥ ५२ ॥ तिन औसर नाविद्यन बीरा. कहे नाई म

त होइ अधीरा, यह जान मतखोवे बीरा ॥ सीता तुं दे मिल हरसे, राजकर अपना सुखसे ॥ का० ॥ ५३ ॥ अयलोनी नरपत राजा, सवनर हे काल के खाजा, छत्रीयोको यह नही साजा ॥ होवैगी जो कुछ होनी, बात नही जीतो सीता देनी ॥ का० ॥ ५४ ॥ चक्रगयातो क्याहे, मेरा मुष्टप्रहार बुराहे, में छत्री जन्मलीयाहें ॥ नविछन जानदे वाको, मारुंगा हाथो हाथ ताको ॥ का० ॥ ५५ ॥ लछमनने चक्रचलाया, रावणने बहोत हठाया, आखिरको राव गिराया ॥ मारागयात्रिखंमी राजा, ये सब हे पुन्यके काजा ॥ का० ॥ ५६ ॥ ये जगहैं निसकासुपना. मूरख इसमे क्यों खपना, साचा है निज गुणका जपना मोहमे क्यों हो रह्या अंधा, जगतका सब झूठा धंधा ॥ का० ॥ ५७ ॥ सीताको रामजी लेकर; फिर आए अजुध्या चलकर, तब आनंद हुए घरघर ॥ काल जब लछमनका आया, धरी रही सब इहांकी इहां माया ॥ का० ॥ ५८ ॥ हारे झूठा जग यह जाना, जिन लियासाधका बाना, जाय सिवपुरकीना थाना ॥ रामकी कथा जो गावेगा, अचलपद निश्चे पावेगा ॥ का० ॥ ५९ ॥ पुज्य पंडित रतनचंद स्वामी जस कीरत जगमे नामी. सिख तारन नवियनकामी ॥ छत्रीसे इकीसके साल. आगरे आन पहुंचा काल ॥ का० ॥ ६० ॥ जिन समकित धर्म बताया, मिथ्यात अं

घेर मिटाया, दूखजामन मरण हटाया ॥ चैन तो उ
सदम पावेगा, ग्यानी निज आतमध्यावेगा ॥ का०
॥ ६१ ॥तु दान सुपातर देरे, तपकर लाहा लेरे, निज
शुक्ल भावनाकररे ॥ सीलसतसुखकाहै साजा, पूरण
हो मन वंछित काजा कालसे डररे ॥ ६२ ॥ इति ॥

॥ श्री वीतरागायनमः ॥

॥ अथ श्री कृष्ण जन्म सिझाय लिख्यते ॥

गाफिल मतिरहरे, नादान गाफिलमतरहरे ॥ गा
फिलगरवाणां, चलेगये वडे वडेराणा ॥ गाफिलमत
रहरे ॥ टेक ॥ साधांकी संगति गहिरे, जिनबानी
को सरदाहिरे, नरभवको सुफलकरलहिरे ॥ यह कुटंब
सब स्वार्थका, भला तु करलेनिजजीयका ॥ गा० ॥ १ ॥
हारेक्रोधमानवस डोले, मायाकी गाठ न खोले ॥ ला
लचसुं झुकता तोले ॥ बनातुंभावसुधजीका, तमासा
चहलवाजीका ॥ गा० ॥ २ ॥ हारे जुगां बीच वडेवड
राया, होगये दलबादलकी छाया, तुझेक्याबडाबनवा
या ॥ दिलोबीच खोजनाकीजे, किलाहासु मरण का
लीजे ॥ गा० ॥ ३ ॥ मथुराको राजा कंस, तेह उप
न्यो जादो वंस, पकडयो उग्रसेन अवतंस ॥ कुलकी
मर्यादा जिनमेटी, कि परण्या जरासिंधबेटी ॥ गा०
॥ ४ ॥ देवसेन नृपकी जाई, वसुदेवको परणाई, कं
सकी पूर्वमित्राई ॥ जीवजसा देवकी संगे, करती क्री
डा मनरंगे ॥ गा० ॥ ५ ॥ तब ऐवंता मुनिराय, तप

कर दुर्बलकाय, तिसही आंगणमे आय जीवजसाम दमे गाकी, मुनिवरमे बाणिकहें वांकी ॥ गा० ॥ ६ ॥ तुमने घर क्यों त्यागा, तप कठिन करणक्यों लाग्या, इमसुन मुनितामसजाग्या ॥ है मुग्धा कहें क्याबा णी, है कोई वरसाकी राणी ॥ गा० ॥ ७ ॥ यह है देवकी राणी, इसके पुन्यवंत ज्ञानी, गरम जनम सा तमो जाणी ॥ तुझ पतिको वो मारेगा, कि तेरा मान उतारेगा ॥ गा० ॥ ८ ॥ मुनिवरकीसुण इमबाणी, जीवजसा मन मुरझाणी, यह वाता कंसने जाणी ॥ जतन करे हो अगवांनी, झूठी करवा मुनवाणी ॥ गा० ॥ ९ ॥ हारे बसुदेव पै आवे, वातासुंललचावे, व सुदेव भेद नही पावे ॥ माग्या गरम देवकीका, सा तों तीन जवनटीका ॥ गा० ॥ १० ॥ सुलसा देव ता सुमरी, जिनमाग्या कुमरनेकुमरी, देवने सकहें जवरी ॥ छह नंदन डठवाया, किसेठ घर महोत्सव मडवा या ॥ गा० ॥ ११ ॥ जव जनमे सारंगपानी, तालोकी झडतो झलपानी, सिंहोंकी दाढा वंधानी ॥ ऐसे पु नवंत ज्ञांनी, कि जमना भेददीयो पानी ॥ गा० ॥ १२ ॥ जसोदा पुत्री जाई, तिसही रात्री माई, ते राजा देवे आई ॥ कंसके नर तव जागे, सातमा गर्भ तदा मागे ॥ गा० ॥ १३ ॥ कंसने कन्या ली धी, तस छिन्ननासिका कीधी, अवलाजाणी छीधी ॥ मनसे भय सहुजाग्या, कि सुखमे राज करणलाग्या

॥ गा० ॥ १४ ॥ मुरारी नंद घर आया, गवालन
नाला बिदवाया, जसोधा हाथाहुलराया ॥ कान्हजी
कुनर पद खेले, कि माखन गौरसमे मेले ॥ गा०
॥ १५ ॥ कदोही सापनको साहे, कदोही महीगाहि
लावे, कदोही अंगनजलवाहे ॥ फिरेलालजी निसंका,
बजावे कंसपरडंका ॥ गा० ॥ १६ ॥है पिताम्बर तन
धारी, तस सूरति मोहनप्यारी, देखे सहूनरओरनारी,
अधरपर वंसरीरागे कि, दान महियनका मागे
॥ गा० ॥ १७ ॥ देवकी दरसनको आवे, नवीनवी
वस्तुजु ल्यावे, भले भले वस्त्र पहिरावे ॥ चिरजीवो
नंदके लालकि, बैरी भंजन जदूपाला ॥ गा० ॥ १८॥
एक दिन सभापुरानी, तिहां आया जोतिसग्यानी,
तिहां बोले नृपतिवानी ॥ नहीकोई या जगमे ऐसा,
कि मुझसुं जंगकरे जैसा ॥ गा० ॥ १९ ॥ तव बिबु
ध बचन इम बोले, नृपतिनाश्रुत पटखोले, तुम भो
ले भावे भोले ॥ जो जादो बंस उद्धारेगा कि, नृप
ति सो तुझ मारेगा ॥ गा० ॥ २० ॥ हारे पूतना द
मसी ॥ जाकी नीतमे दष्टीजमसी, जो विंद्रावनमे रम
सी, गोवरधन गिरधारेगा कि, नृपत सो तुझमारे
गा ॥ गा० ॥ २१ ॥ हारे नाग है काली, नाथेगा
नाथा डाली, अरी जन पै नजर कराली ॥ गोकलगा
म वधारेगा कि, नृपतसो तुझमारेगा ॥ गा० ॥ २२ ॥
हारे जु मल्लसे जंगी, त होइकरंगी, जाकी

गमे कीरतचंगी ॥ जो गज दंत उखाडेगा कि, नूपति सो तुझ मारेगा ॥ गा० ॥ २३ ॥ हांरे सोवैनाग की सिज्या, जाकी सतन्नामा होय नज्जा, धारे तीन खंडीकी लज्जा ॥ जो मनमान बिडारेगाकि, नूपति सो तुझ मारेगा ॥ गा० ॥ २४ ॥ हांरे सारंग धनुप चढावे, जो गवाकोमदी बाहे, पंचायन संख बजावे ॥ ऐसा बलधारक प्रानी, अज्ञा तीन खंडमे मानी ॥ गा० ॥ २५ ॥ हांरे देवकी नंदा; वसुदेवतनुज आनंदा, द्वारापति तेज दिनंदा यह सुनी विबुधतनी वानी कंसकी गाती धुजाणी ॥ गा० ॥ २६ ॥ गोवरधन धारयो निजहाथे, ते काली नागने नाथे, गोपीया फिरती हरी साथें ॥ ऐसे पुन्यके पुंजे कि, फिरतेमधुबनके कुंजे ॥ गा० ॥ २७ ॥ नाई बलभद्र सहाई, किस को संक्या नही काई, गुजरी दधि वेचन जाई ॥ मुरारीकाण नही राखे, कि दहिनर अंगुलीया चाखे ॥ गा० ॥ २८ ॥ लालजी मुझकुं मत छेडे, कंसकी नगरी अतिनेडे, वध्यो तुं गूजरके खेडे ॥ कंसकी चढती पुन्याई, कि फिरे तीन खंड दूहाई ॥ गा० २९ ॥ कहे कृष्णमे किस्से डरहुं; कंसको कीटोमे करहुं, अवरनको राज पद धरहुं ॥ जाय पुकारो कंस आगें के, मोपे डंड सदामागे ॥ गा० ॥ ३० ॥ इम वरस सोलाजववीते, कंसको वांता सवचिते, नामाकाव्याह मंडलीते ॥ सब नूपत मंडप मं

डाए ॥ गा० ॥ ३१ ॥ हांरेनृपते सब बैठे. मुरारी मथुरामे पैठे, मल्लसे युद्ध करणसेठे ॥ कंसकी नजरादआया, खड गल्ल मारणको ध्याया ॥ गा० ॥ ३२ ॥ कर मांहिं वांसकी लकरी, कंसकी चोटी तब पकडी, फिरतजुं डोरकी चक्री ॥ माराहै घाव लकरीका, चलाजु चाक चक्रीका ॥ गा० ॥ ३३ ॥ हारे सनासबसंकी आई जीवजसा सकलंकी, बोले वांणी बंकी मारयामुझप्राण अति प्यारा, ऐसा अहीर हत्यारा ॥ गा० ॥ ३४ ॥ बुलाया उग्रसेन राजा. कंसको अवकारि काजा, वजायाजीतकावाजा ॥ जीवजसा कहे इमबानी, करूंगी मोसमसबरांनी ॥ गा० ॥ ३५ ॥ तब उग्रसेन वो हक्कारी पिता पै जाय पुकारी, कहीवात तिन विस्तारी ॥ सुनीने जरासिंधकोप्यो, के जादोंपे क्रूरोप्यो ॥ गा० ॥ ३६ ॥ सना सब मिलमसलतकीनी, विबुधपे वात पुछलीनी, भोंमकी ममता तजदीनी ॥ दिसाश्रुध पश्चिमको जाना; जिहांहै खारा महिराना ॥ गा० ॥ ३७ ॥ हारे जादो सब भाजे, राजाके बेटे गाजे, जादो जाय किहां पाजे ॥ जोर कर काली कुमर चढीयो, विचमे देवी भूगडीयो ॥ गा० ॥ ३८ ॥ हारे समुद्र पै आये, तप तेला करवाये, लौनास्थित देवन आये ॥ तिन इंद्रपै विनती कीनी, यांतो नगरी वसादेनी ॥ गा० ॥ ३९ ॥ हारे सोवनमई दगरे, जहां है मनीके कंगुरे, सोवनमई घरसगरे ॥ नौ जोजनकी चौडाईके, लंबो

वारे जोजनताई ॥ गा० ॥ ४० ॥ वसे जादो इस पुरमे, ऐसी नगरी नही कोई दूरमे, कीये गोख जा लीयां जरमे ॥ यह सुरगपुरी समनगरी, वस्तु तिन मांहिं भरी सगरी ॥ गा० ॥ ४१ ॥ रवी किरण कांति समदीसे, हरि मंदिर अधिक जगीसे. सवब्यानवे सहस वतीसे ॥ सवही महिल ऊंचेके, इकवीस मज लोके ॥ गा० ॥ ४२ ॥ हारे मंदिरकीसानी, सव सप्त भून गिणलीनी, वसे जहां पुन्यवंत प्रानी ॥ जहां है राज भाधोंका, जगमे जोरा जादोंका ॥ गा० ॥ ४३ ॥ तहा जव नदीपके जाये, व्योहारी चलकर आये, निजवस्तमोल नही पाये ॥ सव-ही राजग्रहीआवे, जीवजसासे वतलावे ॥ गा० ॥ ४४ ॥ हांरे जव न दीपकी वाता, हम देखी द्वारका आतां हरिजसको पारन पाता ॥ यह सुनी जीव जसा वानी, कि मनमे री स बहुआणी ॥ गा० ॥ ४५ ॥ तिहां जरासिंध चढध्या, यो. हरजी पिन साम्हो आयो, हरजोर देख दुख पायो ॥ तिन तव विद्या जरा मूंकीके, गिरे सव पत्थ रकीटूंकी ॥ गा० ॥ ४६ ॥ तव नेमनाथ वरदीनो, हरजी सव जाग्रतकीनो, कर चक्र सुदरसन लीनो ॥ हरजी पर आय जसथुनी[illegible] वलतो जरासिंध हणीयो ॥ गा० ॥ ४७ ॥ [illegible] नयो नाथ सकल [illegible] ॥ उदय जव [illegible]

॥ गा० ॥ ४८ ॥ हारे हरिसम सूरा, यह तो राज गुणाकरपूरा, पिण करम कटे नहीं कूरा तिने ॥ पिण ए ह दसा पामीके, अवरा केमटले खामी ॥ गा० ॥ ४९ ॥ भजो श्री नेमनाथ राया, सब पापपटलहटाया, अचल सुख मोखना पाया ॥ दिलोधर विने चंद वंदे कि, म न मांहिं अती आनंदे॥ गाफिल मति रहोरे ॥ ५० ॥

॥ अथ उपदेशी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ चतुर नर चेतीए, नीकोनर भव पाया रे ए देशी ॥ मनुष जमारो पायकेरे, सेवो श्री अरिहंत ॥ निर्ग्रंथ गुरु मन धारकेरे, दयाधर्म स्योतंत ॥ १ ॥ मिथ्यामत त्याग जो. सुधसमकित धारोरे ॥ टे क धर्म विहुणी जेघडीरे, वीतो निर्फल होय ॥ धर्म सहित जे मानवीरे, सुफल जनम तसुजोय ॥ मि० ॥ २ ॥ अलप पुण्ये नर ऊपजेरे, पंचमदुखम काल ॥ धर्म पावे ते दोहिलारे, पडे मोहके जाल ॥ मि० ॥ ॥ ३ ॥ कुविश्वभ रातारहेरे, सेवे चार कषाय ॥ दान सील तपकिमरुचेरे, सुद्ध भाव नही भाय ॥ मि० ॥ ४ ॥ निंद्या विकथानातजेरे, पाप अठारा सेय ॥ सुमता मनसे वीसरीरे, कुमतामे चितदेय ॥ मि० ॥ ५ ॥ तन धन जोवनपाईकेरे, करे अती अभिमा न ॥ पर भवका तसडर नहीरे, ते मूरख अज्ञान ॥ मि० ॥ ६ ॥ थोडी उमरके वीचमेरे; बांधे गाढा पा प ॥ दुरगतिमे ते ऊपजेरे, भोगे बहु संताप ॥ मि०

॥ ७ ॥ नर तिर्यंच और नारकीरे, किलमुखी देव सुजान ॥ च्यारो गतिके दुखकार, श्री जिन कियाहै बखान ॥ मि० ॥ ८ ॥ दोस नदीजे परसिरेरे-भोगवता दुखकार ॥ सुभ करणीकर निर्मळीरे- पर भवको आधार ॥ मि० ॥ ९ ॥ मात पिता सुत भारजारे, उनका स्वारथ प्यार ॥ परभव साथीको नहीरे, एक धर्मछे सार ॥ मि० ॥ १० ॥ बिक्रम संवत आवीयारे, उन्नीसे सेतीस ॥ ऋखराज कहै जिन धर्मथीरे. पूगेम नकी जगीस ॥ मि० ॥ ११ ॥ ये सेनपुर ग्रामेरे, कह्यो तिहां सुविचार ॥ सुणता भणता भावसुंरे, आत्मको निस्तार ॥ मि० ॥ १२ ॥ इति

॥ अथ बारे भावना सिज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ जीवरे तु सीलतणा कर संग, एदेसी ॥ सकल करम दल जीतकेरे, सिद्धथये जिनराय ॥ भाखी भावनारे भविजनने सुखदाय ॥ १ ॥ जीवरे तु भावन ज्ञान बिचार ॥ टेक ॥ तन धन जोबन थिर नहीरे, अथिर कह्या भगवांन ॥ इण ऊपर मुरछो मतीरे, रंग पतंग समान ॥ जी० ॥ २ ॥ मात पिता सुत कामनीरे, इणमे सर्णन कोय ॥ च्यारो सर्णे धारतारे, निश्चेकु गति न होय ॥ जी० ॥ ३ ॥ नरसुरपशु भव नारकीरे, इन च्यारो गतिमे होय पुन्य पाप करमा वसेरे. हिये विचारी जोय ॥ जी० ॥ ४ ॥ धनधा कुटंबजेरे. कोईन साथी होये ॥ पुन्य पाप निज भो

गवेरे, सदाही इकेलो जोय ॥ जी० ॥ ५ ॥ जीव देहमे रम रह्यारे, ज्यूं फूलनमे बास ॥ ममता तज समता करोरे. सुध चेतनपरकास ॥ जी० ॥ ६ ॥ सरीर अपावन जाणीयेरे, गर्वन घर मनमांय ॥ शुद्ध आत्माधर्मथीरे. कहै श्री जिन राय ॥ जी० ॥ ७ ॥ करम आवे अविरतथीरे, तेहनो आश्रवनाम ॥ जैसें नावा छिद्रमेरे. पाणी आवणरो काम ॥ जी० ॥ ८ ॥ समकित सूधी बिरतसेरे, आवतरोके कर्म ॥ ज्ञानी भाखे एहवारे, संवर मोटो धर्म ॥ जी० ॥ ९ ॥ पूर्वे कर्म कीया घणारे, कहत न आवे पार ॥ द्वादस तपसे निर्जरारे, कर्ता करम निवार ॥ जी० ॥ १० ॥ धर्म विना इस जीवकूंरे; कोई न राखणहार ॥ नर्क कूप दुखजाणकेरे, धर्म ग्रहो सुखकार ॥ जी० ॥ ११ ॥ स्वर्ग मृत रचना कहीरे. और पाताल बिचार ॥ इनमे अनादी वायरारे, धन तन दधिआधार ॥ जी० ॥ १२ ॥ उत्तम कुल संगत मुनीरे, श्रद्धापावन सार ॥ दूर्लभ श्री जिनवर कहीरे, मनुष जनम मतिहार ॥ जी० ॥ १३ ॥ एकही बारे भावनारे, भावतां जन्म सुधार ॥ ऋपराज कहे सुधभावसुंरे, करनाल नगरमंझार जी० ॥ १४ ॥ संवत उनीसे कह्यारे, उपरअधिक पंचास तव कहीबारे भावनारे ॥ भाविजन पुरण आस ॥ १५

॥ अथ बारे भावनाके नाम लिख्यते ॥

अनित्य भावना ॥ असर्ण भावना-२ संसार भा

वना ३ एकत्व भावना ४ अन्य भावना ५ अशु चि भावना ६ आश्रव भावना ७ संवर भावना ८ निर्जरा भावना ९ धर्म भावना १० लोक स्वरूप भावना ११ बोध दुर्लभ भावना १२ इति

॥ अथ स्याद्वाद सिज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ जिनेस्वर धन धन थारा ज्ञान ॥ एदेसी ॥ सत गुरु चरण. नमी करीजी, ॥ जिन वाणी मनधार ॥ स्याद्वाद वाणी कहीजी ॥ नही एकत विचार, चतुर नर जोवो जिन उपदेश ॥ १ ॥ एटेक ॥ एकांत मती मिथ्यामतीरे, नही समझे जिणवैण ॥ सूत्र सिद्धांत सहु देखताजी, खुले अभित्रनैण ॥ च० ॥ २ ॥ स्त्री वासोमुनी तजेजी, उत्राध्येन विचार ॥ साध साधवी रहे एकठाजी, ठाणांगे पंचप्रकार ॥ च० ॥ ३ ॥ असंखजीव अपभिंदमेजी, कहे पन्नवणामांय ॥ कल्प सूत्रमाहे कहेजी, नदी उलंघीजाय ॥ च० ॥ ४ ॥ श्रावक करमादानकाजी. त्रिविधेकर परिहार ॥ हलनिहावा, सातमेजी. अंग मांहिं अधिकार ॥ च० ॥ ५ ॥ करफरसंतांहो सहीजी, बहुवेदन हरीकाय ॥ फरूतां मुनिवरते ग्रहेजी, आचारांगे माहिं ॥ च० ॥ ६ ॥ नूणलीयो अणजाणतेजी, ते भोगे अणगार ॥ आचारांगे इम कह्याजी, स्याद्वाद अधिकार ॥ च० ॥ ७ ॥ समय मात्र परमादकुंजी, न करे उत्राध्येन ॥ तीजो पोरसी परमादमेजी

दसविकालक वेण ॥ च० ॥ ८ ॥ अंधाने अंध नही कहेजी, दसविकालक मर्याद ॥ न्याता सूत्रमे मुनि कहेजी, नाग श्री अवगुनवाद ॥ च० ॥ ९ ॥ सहस वती से कृष्णकेजी, नारी न्याता माय ॥ सोलासहस अंतगढजी, साखी श्री जिनराय ॥ च० ॥ १० ॥ अबिरती सुरसूत्रमेजी, पिणसीलव्रत तप जाण ॥ ठाणांगे साष्यासहीजी, एस्याद्वाद परिमाण ॥ च० ॥ ११ ॥ आठमे अंगे जिन कह्याजी कृष्ण बारमाजाण ॥ चोथे अंगे तेरमाजी, दोनो सत्य व्याख्यान ॥ च० ॥ १२ ॥ असंघेणि सुरनारकीजी, जीवाभीगम मांहिं ॥ उत्राध्येन उनीसमेजी, मासजु पिंडकहाय ॥ च० ॥ १३ ॥ बिराधक पंचमांगमेजी, भवनपती सुरथाय ॥ ज्ञाता मे सुकमालिकाजी, दूजेस्वरगे जाय ॥ च० ॥ १४ ॥ बिनव्याकरणे अर्थेजजी, करे ते अनर्थ होय शब्द शास्त्र जिसरी तिसेजी, तिसवीध अर्थज जोय ॥ च० ॥ १५ ॥ हेय त्याग गेय जाणीयेजी, और उपादेय साध उत्सर्ग अने अपवादनेजी, विधि चरितानुवाद ॥ च० ॥ १६ ॥ नय संस्थित निश्चै वलीरे; नयविवहार मर्याद ॥ जिनवर आगममे कह्याजी, अनेकांत विधिवाद ॥ च० ॥ १७ ॥ बहुश्रुती जाणेसहीजी जिन बाणी रसस्वाद ॥ मूरख तो समझे नहीजी, झूठोकरे बिवाद ॥ च० ॥ १८ ॥ ज्ञानी गुरुने सेवताजी: कुमती जावे दुर ॥ सुमती आवे शुध मनेजी,

यावे सुखभरपूर ॥ च० ॥ ॥ १९ ॥ ऋपराज कहे भ
वियन भलजी, न करोखेचातान ॥ जिन बाणी जैवं
तछेजी; ल्यो तुम धर्म पिछान ॥ च० ॥ २० ॥ वि
क्रम संवत वरतताजी, उन्नीसे पंचास ॥ चतुर मास
करनालमेजी, तिहां स्याद्वाद प्रकास ॥ च० ॥ २१ ॥

अथ स्याद्वाद के प्रश्न उत्तर लिख्यते

॥ प्रश्न ॥ श्री कृष्णके ३२ हजार तथा १६ हजा
र राणी किसतरे ॥ उत्तर ॥ सोले तो बडी रा
णी गिण लिधी १६ हजार छोटी राणी न गिणी ते
कार्णे १६ हजार और ३२ हजार हजारमे दोनो तरे
की गिणलीधी १ ॥ प्रश्न ॥ कृष्णजीका जीव बारवा
तथा तेरवां तीर्थंकर किसतरे ॥ उत्तर ॥ अवसर्प्पणी
कालके हिसावसे १२ उतसर्प्पणी कालके हिसावसे १३
आदनाथजी अवसर्प्पणी कालके प्रथम भगवान हु
ये इनके गिणतसे बारमे और उतसर्प्पणी कालमे
जैसे महाबीर सरीखे प्रथम श्रेणक राजाकाजी पद्म
नाभ भगवान होवेंगे इनकी गिणतसे तेरवा १३ कृ
ष्णजीव भगवान होवेंगे २ ॥ प्रश्न ॥ देव वा ना
रकी संघणी असंघेणी किसतरे ॥ उत्तर ॥ देव वा
नारकीमे सक्तिरूपहे हाडरूपनही तिस वास्ते संघेणी
वा असंघेणी दोनो कह्या ३ ॥ प्रश्न ॥ ४ विराधक
सुकमालको साधवी दुसरे स्वर्गमे गई ते किसतरे
॥ उत्तर ॥ मुल महाव्रताम दोस नही लगाया उत्तर

गुण बाधक हुई ४ इत्यादि सूत्रोमे अनेक अपेक्षा अर्थात रीती है तो बुद्धीमान पुरुषो के समझने योग्य है

॥ अथ ग्रंथ पूर्ण संग्रह करके विषे वर्णन लिख्यते ॥

॥ श्री जिन धर्म मांहि मोक्षमारग ग्यान दर्सन चारित्र तप इनकारणसे जब आत्मानिर्मल करिके अनंत ज्ञान अनंत दर्सनका धारक होताहै इस वास्ते इहां इन प्रश्नोमे सूत्राके पाठ विशेष करिके लिखेहै दया धर्ममे प्रणाम स्थिर करणे वास्ते क्यों कि जब प्रणाम धर्ममे स्थिर होय तब व्रतादि धर्म करणेका विशेष लाभ होताहै और यहां जो सूत्र सिद्धातसे विरुद्ध लिख्याहै तथा सूत्र पाठ वा अर्थमे जो कोई तरेका फर्क लिख्य होय तिस्की साध साधवी श्रावक श्राविका इन च्यार तीर्थोंकी शाखसे मुझको तस्स मिछामि दूकड और सत्यार्थ सागर नाम ग्रंथ अनेक सूत्र वा शास्त्राके अनुसार संग्रह कर लिख्याहै सोई इसमे तुछ बुद्धी करिके कोई वचन अजाणते अशुद्ध लिखहो यतो सूत्रानुसार सुधारकर चतुरविध संघ मेरे ऊपर क्षिमा करे और मेने यह ग्रंथ किसीसे चरचा के लीये नही लिखा और न वाद विवाद के वास्ते सिर्फ एक स्वधर्मी जनोंके स्वधर्म जाणने के लिये लिखाहै परंतु मेरी जो कोई अज्ञान बुद्धी का लेख होय तो तिसपर कोई ख्या